हँसती हुई जिंदगी

परमगुरु ओशो के श्री चरणों में समर्पित

श्री रजनीश ध्यान मंदिर
कुमाशपुर–दीपालपुर रोड
जिलाः सोनीपत, हरियाणा 131021

 contact@oshofragrance.org

 www.oshofragrance.org

+91 7988229565
+91 7988969660
+91 7015800931

अनुक्रमांक

हँसती हुई जिंदगी

संपादकीय

इस प्राकृतिक जगत में सब कुछ हंस रहा है। चांद-तारे हंस रहे हैं। सूरज की किरणें नाच रही हैं, पवन नृत्य कर रहा है। बादल मल्हार गा रहे हैं। मयूर थिरक रहे हैं। कोयल पंचम सुर में गा रही है। भौंवरे गुनगुना रहे हैं। चिड़ियां चहचहा रही हैं। फूल खिलखिला रहे हैं। जिधर नज़र डालो उधर आनन्द-उत्सव चल रहा है। किन्तु आश्चर्य है कि इस प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ जीव- मनुष्य सर्वाधिक उदास है। न उसके ओठों पर हंसी है और न ही उसके पैरों में थिरकन। क्या हो गया है आदमी को?

ऐसा लगता है कि आदमी की इस उदासी के पीछे तथाकथित धर्मगुरुओं का हाथ है। धार्मिक होने में और उदास होने में एक गहरा संबंध हो गया है। गम्भीर होना जैसे धार्मिक होने की निशानी हो गयी है। तथाकथित संत, महात्माओं ने आनन्द और उत्सव की तरफ से अपनी आंखें ही बंद कर ली हैं। वे रुग्ण चित्त से ग्रस्त हैं। संसार से दुखी होकर धर्म की खोज में निकले हैं। धर्म-क्षेत्र को भी उन्होंने रुग्णता से भर दिया है। उनका चिंतन, उनकी सोच ही नकारात्मक है। वे कहते हैं कि पहले मन को शांत करो फिर मंदिर में आओ। मन ही शांत हो गया तो मन्दिर में जाने की आवश्यकता ही क्या है? वे कहते हैं पहले काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि को दूर करो, फिर ध्यान करो। उनको नहीं पता

कि ध्यान करने से ही ये अवगुण मिटते हैं। वे कहते हैं पहले संसार का त्याग करो फिर परमात्मा मिलेगा। उन्हें नहीं पता कि यह विराट साकार जगत, परमात्मा का ही रूप है। भला इसका त्याग करके परमात्मा को और कहां ढूंढेंगे? उन्हें न संसार मिलता है, न परमात्मा और घेर लेती है एक स्थायी उदासी और वितृष्णा। फिर वे अपनी उदासी को सारे संसार में फैलाते हैं।

भगवान कृष्ण नाचते हुए धर्म के प्रतीक थे। उनका जीवन आनन्द और उत्सव से भरा था। लगभग पांच हजार वर्ष बाद ओशो ने पुनः धर्म को हास्य, नृत्य और संगीत से ओतप्रोत कर दिया। वे कहते हैं– 'मैं एक जागते हुए, जीते हुए, हंसते हुए, नाचते धर्म को पृथ्वी पर फैलता हुआ देखना चाहता हूं। ऐसा धर्म जो जीवन को अंगीकार करे, आलिंगन करे। जो जीवन के प्रति परमात्मा का अनुग्रह प्रकट करे। जो जीवन का त्यागी न हो। जो जीवन का निषेध न करता हो। जिसमें जीवन के प्रति अहोभाव हो। जो यह जीवन पाकर अपने को धन्यभागी समझे।'

सभी कार्यक्रमों में ओशो की यह देशना प्रेरणा का कार्य करती है। यहां का धर्म ही जैसे हंसी है। आश्रमों में धर्म और समाधि के गहनतम प्रयोग किये जाते हैं। उन्हीं प्रयोगों की भूमिका रूप में खूब उत्सव मनाया जाता है। सारे कार्यक्रम नृत्य और संगीत से सराबोर होते हैं। हंसी के फव्वारे छूटते हैं। यहां उदासी का प्रवेश निषेध है। गंभीरता आश्रम की चारदीवारी के बाहर रहती है। यहां सदैव अनहद नाद गूंजता है। नूर नाचता है। राम नाम का अमृत पिलाया जाता है। दिव्य स्वाद, दिव्य सुगंध और दिव्य ऊर्जा से अंतस्चेतना भर जाती है। शुद्ध चैतन्य का साक्षात्कार होता है और रोम-रोम से प्रेम और आनन्द प्रस्फुटित होता है।

आइये, मानव जीवन के प्रति अहोभाव से भरकर इन सबका रसास्वादन करें।

—मा ध्वनि

नया धर्म

जीवन में एक विधायक प्रफुल्लता चाहिए।
लेकिन हंसते हुए संत पैदा ही नहीं हुए,
प्रफुल्लित लोग पैदा ही नहीं हुए,
मुस्कुराते हुए लोग पैदा ही नहीं हुए।
जितना रोता हुआ आदमी हो
उतना ही ज्यादा संत मालूम होता है।
जितना उसके जीवन का सारा रस सूख गया हो
उतना ही महान मालूम होता है।
कैसा है मनुष्य, कैसा है पागलपन?
हंसते हुए लोग छोटे मालूम पड़ते हैं
और उदास लोग ऊंचे और महान मालूम पड़ते हैं।
जिस दिन हम हंसते हुए लोगों को भी
महानता की दिशा में अभिमुख कर सकेंगे,
जिस दिन हम हंसने को, आनंद को, अहोभाव को भी
ईश्वर का विरोधी मानने की मूढ़ता छोड़ देंगे,
उस दिन तीसरा द्वार खुलता है।
ऐसे मंदिर चाहता हूं मैं–
जो नृत्य के, संगीत के, हंसने के मंदिर हों।
ऐसा धर्म चाहता हूं मैं–
जो मुस्कुराहटो का, प्रफुल्लता का,
प्रमुदित होने का धर्म हो।

–ओशो

हँसता–नाचता धर्म

मैं एक जागते हुए, जीते हुए, हंसते हुए,
नाचते धर्म को पृथ्वी पर फैलता हुआ देखना चाहता हूं।
ऐसा धर्म,
जो जीवन को अंगीकार करे, आलिंगन करे!
जो जीवन के प्रति परमात्मा का अनुग्रह प्रकट करे!
जो जीवन का त्यागी न हो।
जो जीवन का निषेध न करता हो।
जिसमें जीवन के प्रति अहोभाव हो।
जो धन्यभागी समझे अपने को।
जो हल्का–फुल्का हो, भारी–भरकम नहीं।
पुराने सब धर्म बहुत भारी–भरकम सिद्ध हुए।
शुरुआत में तो ऐसे न थे।
मगर यही तो दुर्भाग्य है कि
आदमी के हाथ में जो चीज पड़ जाती है, वहीं बिगड़ जाती है।
महावीर के साथ तो धर्म हंसता हुआ रहा होगा।
बुद्ध के साथ तो हंसता हुआ रहा होगा।
जीसस के साथ तो हंसता हुआ रहा होगा।

नानक के साथ तो हंसता हुआ रहा होगा।

अगर कबीर के साथ न हंसा होगा धर्म, तो फिर किसके साथ हंसेगा?

फरीद के साथ न हंसा होगा, तो फिर किसके साथ हंसेगा?

लेकिन पीछे जो लोग आते हैं, वे करीब–करीब विपरीत होते हैं। हर धर्म को जन्म देने वाले व्यक्ति के आसपास पंडितों की भीड़ इकट्ठी हो जाती है।

मैं बहुत सावधान हूं। इसलिए पंडितों को यहां टिकने ही नहीं देता। पंडितों को प्रवेश ही नहीं है। पंडित आ जाएं तो उन्हें ऐसा झकझोरता हूं, ऐसी उनकी पिटाई होती है कि वे भाग ही जाते हैं। फिर वे लौटकर कभी दोबारा नहीं आते। पंडितों से मैं सावधान हूं। मैं नहीं चाहता कि मेरे पीछे, मैं जो कह रहा हूं, वह पंडितों के हाथ में पड़े। क्योंकि उन्होंने सारे धर्मों को नष्ट किया है।

पंडित गुरु–गंभीर होता है। उसे कुछ सत्य का तो पता होता नहीं। उसे कुछ जीवन का अनुभव तो होता नहीं। उसके पास शब्द होते हैं, तर्कजाल होते हैं। और तर्कजाल और शब्दों का वह धनी होता है। वह ऊंची–ऊंची बातें करता है, बड़े गहरे और उलझे सिद्धांतों की चर्चा करता है। उन सिद्धांतों की चर्चा करना और हंसने का मेल नहीं हो सकता। हंसना और ब्रह्मज्ञान की उलझी–उलझी बातें...जान कर उलझाता है, क्योंकि लोगों पर उलझी बातों का प्रभाव पड़ता है। जो बात लोगों की समझ में आ जाए, वे समझते हैं उसमें क्या रखा है। जो बात लोगों की समझ में न आए, लोग समझते हैं होगा कुछ रहस्य। लोग भी बहुत अद्भुत हैं।

सत्य तो सीधा–सरल है। झूठ होते हैं इरछे–तिरछे। झूठ होते हैं उलझे हुए, पहेलियों जैसे। सत्य में क्या पहेली है? सत्य तो खुले आकाश जैसा है, कोरी किताब जैसा है। बेपढ़ा–लिखा भी पढ़ ले। कोरी किताब में पढ़े–लिखे होने की क्या जरूरत है?

सत्य तो तुम्हें चारों तरफ से घेरे हुए है– बाहर–भीतर। दूर नहीं है। जैसे मछली सागर में है, ऐसे तुम सत्य में हो। लेकिन पंडित सत्य को बहुत दूर बताता है– दूर कहीं, आसमान पर, बहुत दूर, लंबी यात्रा। नक्शे देता है, मार्ग समझाता है।

सब नक्शे व्यर्थ, सब मार्ग झूठे; क्योंकि सत्य वहां है जहां तुम हो। जहां तुम हो वहीं जाग जाओ, बस वहीं जरा होशपूर्वक देख लो, वहीं जरा टटोल कर देख लो और तुम परमात्मा को पा जाओगे। न कहीं जाना है– न काशी, न काबा, न कैलाश। न कुरान में, न बाइबल में, न गीता में।

अपने भीतर जाना है। वहीं से उठेगा कुरान। वहीं से उठेगी गीता। वहीं से जन्मेंगे उपनिषद्। वहीं बज रही है बांसुरी कृष्ण की। अभी भी बज रही है। सदा बजती रही है। तुम्हारे भीतर अनाहत नाद हो रहा है।

मगर पंडित अगर दूर की बात न करे तो पंडित की जरूरत क्या? पंडित अगर उलझी बात न करे तो तुम पंडित को मूल्य क्या दोगे। पंडित का धंधा है– उलझाए। सुलझी बातों

को जो उलझा दे, उसका नाम पंडित। सीधे–साफ को जो इरछा–तिरछा कर दे, उसका नाम पंडित। जिसके पास जाकर तुम गुरु–गंभीर होकर लौटो, उसका नाम पंडित।

गए थे तो शायद कुछ समझ भी थी; लौटो तो वह भी गंवा कर आ जाओ– उसका नाम पंडित। गए थे तो थोड़ा बोध था और बुद्धु होकर लौटो, उसका नाम पंडित। हां, कूड़ा–करकट पकड़ा देगा, सिद्धांतों के जाल पकड़ा देगा– ऐसे जाल जिनसे कुछ हल नहीं होता। जालों में से जाल निकलते आते हैं। ऐसे उत्तर पकड़ा देगा, जिनसे हजार प्रश्न खड़े होते हैं। तुम एक प्रश्न पूछते थे, वह ऐसे उत्तर पकड़ाएगा कि जिनसे हजार प्रश्न खड़े हो जाएंगे। तुम्हारा एक प्रश्न तो अपनी जगह खड़ा है सो खड़ा ही रहेगा। अब उसके उत्तर तुम्हें दिक्कत में डालेंगे।

ज्ञानी और पंडित में भेद है। ज्ञानी वह है, जिसने जाना। पंडित वह है, जो उधार बातों को दोहरा रहा है।

पंडित के हाथ में धर्म पड़ जाता है कि बस उसकी हंसी खो जाती है, मुस्कुराहट खो जाती है। जिस दिन धर्म की हंसी खो जाती है, उसका नृत्य खो जाता है पैर में घूंघर नहीं बजते, हाथ में बांसुरी नहीं रह जाती– बस उसके बाद फिर लाश है। फिर पूजो। फिर करते रहो हवन–यज्ञ, हाथ कुछ भी न लगेगा, बस राख ही राख है। फिर राख का ही प्रसाद है। फिर राख को तुम चाहे विभूति कहो, जो तुम्हारी मर्जी। तुम्हारे विभूति कहने से राख कुछ विभूति नहीं हो जाती। मगर कैसे–कैसे लोग हैं, राख को विभूति कह रहे हैं। राख को सिर पर डाल रहे हैं, माथे पर लगा रहे हैं और सोच रहे हैं कि बड़ा पुण्य–कर्म किया होगा पिछले जन्मों में। इससे यह राख माथे पर लगी, सिर पर पड़ी। पुण्य–कर्म से राख बरसती है? न मालूम किन पापों का फल भोग रहे हो! लेकिन कहते हो– विभूति! अच्छे–अच्छे नाम व्यर्थ की बातों को हम दे लेते हैं।

नहीं, यह कोई नहीं है। हंसो, जी भर कर हंसो! और हंसी के संबंध में कंजूसी मत करना। लोग बहुत कंजूस हो गए हैं, हर चीज में कंजूस हो गए हैं। उन चीजों के संबंध में भी कंजूस हो गए हैं, जिनमें तुम्हारा कुछ खोता नहीं। उन चीजों में भी कंजूस हो गए हैं जिनमें कौड़ी नहीं लगती। उन चीजों तक में कंजूस हो गए हैं, जिनको बांटने से वे चीजें बढ़ती हैं, घटती नहीं।

–ओशो प्रीतम छवि नैनन बसी–16

ओशो की अति–विशिष्ट कला चुटकुलों के माध्यम से धर्म के गंभीर रहस्य समझाने की कला

ओशो के पूर्व कभी किसी मनीषी ने कल्पना भी न की होगी कि हास्य–प्रसंगों द्वारा अध्यात्म के गंभीर रहस्यों को उजागर किया जा सकता है। मानवता के इतिहास में ओशो प्रथम सद्‌गुरु हैं जिन्होंने 'मुल्ला नसरुद्दीन' 'सेठ चंदूलाल' 'सरदार विचित्तरसिंह' 'लाल बुझक्कड़' आदि हास्य–पात्रों की कथाओं में अनूठे अर्थ भरकर उन्हें प्रेरक घटनाओं में परिणत कर दिया। ओशो के जीवन की खुद की घटनाएं भी अक्सर उनके प्रवचनों में आती हैं, जो अत्यंत मजेदार होने के संग–संग शिक्षाप्रद भी हैं। कथा का आनंद लेते–लेते श्रोताओं के मन में कब गहन दार्शनिक बात प्रवेश कर जाती है, उन्हें आभास भी नहीं हो पाता! प्रवचन देने की यह अद्भुत कला ओशो की अपनी मौलिक शैली है।

प्रस्तुत है एक उदाहरण–

प्रश्न–भगवान, इस संसार की उत्पत्ति की घटना किस प्रकार घटी? पृथ्वी पर पहले पुरुष आया कि पहले स्त्री? कृपया हम अज्ञानियों को विस्तारपूर्वक समझाइए!

ओशो– तुमने तो सोचा होगा कि बड़ा दार्शनिक प्रश्न पूछ रहे हो। यह दार्शनिक प्रश्न नहीं है; यह बहुत बचकाना प्रश्न है। यह छोटे–छोटे बच्चों की बातें हैं।

अगर कोई तुमसे कह भी दे कि संसार की घटना यूं घटी, तो तुम पूछोगे कि यूं ही क्यों

घटी! और तरह क्यों न घटी? कोई कहे कि संसार को परमात्मा ने बनाया, तो प्रश्न का हल हो जाएगा! तुम पूछोगे, क्यों बनाया? किसलिए बनाया? क्या परमात्मा लोगों को कष्ट देना चाहता है, दुख देना चाहता है? क्यों बनाया?

और धर्मगुरु तो कहते हैं कि संसार से मुक्त होना है, भवसागर से मुक्त होना है– और यह परमात्मा क्या अधार्मिक है, जो संसार बनाता है? परमात्मा संसार बनाता है; महात्मा समझाते हैं, संसार से मुक्त होना है! कौन सच्चा है? महात्माओं की सुनें कि परमात्मा की मानें? और फिर परमात्मा इतने दिन क्या करता रहा! संसार नहीं बनाया होगा, फिर एक दिन बना दिया एकदम! एकदम झक आ गई; क्या हुआ! किस कारण झक आई? भांग पी गया था? भांग कहां से आई?

सवाल पर सवाल उठते चले आएंगे। इससे कुछ हल नहीं होगा। यह बच्चों जैसी बातें हैं। इसमें दर्शन कुछ भी नहीं है। मगर बहुत से लोग इन्हीं बातों को दार्शनिक ऊहापोह समझते हैं! यह शेखचिल्लियों की बकवास है। इसमें मत पड़ो।

यह गाय और बछड़ा किसका है? पुलिस वाले ने गांव वालों से पूछा।

गाय का पता नहीं साहब, पर बछड़ा किसका है, यह बता सकता हूं– एक बच्चे ने कहा।

किसका है?

बच्चे ने कहा, गाय का! गाय किसकी है यह मुझे पता नहीं!

एक गांव में चोरी हो गई। बहुत लोगों ने खोजबीन की। पुलिस इंस्पेक्टर आए; यह हुआ, वह हुआ; पता ही न चले चोर का। आखिर गांव के लोगों ने कहा, कि हमारे गांव में लाल बुझक्कड़ जी रहते हैं, वे हर चीज को बूझ दें! जिसको बूझ सके न कोय– उसको लाल बुझक्कड़ तत्क्षण बूझ देते हैं। अरे, एक दफे गांव से हाथी निकल गया था। गांव वालों ने कभी हाथी देखा नहीं था; रात निकल गया। सुबह उसके पैर के चिह्न दिखाई पड़े। बड़ी गांव में चिंता फैली कि किसके पैर हैं! इतने बड़े पैर! तो जानवर कितना बड़ा होगा!

फिर लाल बुझक्कड़ ने सूझा दिया। उसने कहा कि कुछ घबड़ाने की बात नहीं। अरे हरिण चक्की पैर में बांध कर। सीधी–सी बात है; चक्की के निशान हैं। और उछला है, तो हरिण रहा होगा। पैर में चक्की बांध कर हरिणा उछला होय!

हल कर दिया मामला लाल बुझक्कड़ ने! आप क्या इधर–उधर पूछ रहे हैं; लाल बुझक्कड़ से पूछ लो!

इंस्पेक्टर ने कहा, यह भी ठीक है। चलो, देखें। शायद कुछ बता दे!

लाल बुझक्कड़ ने कहा, बता तो सकता हूं, मगर सब के सामने नहीं बताऊंगा। क्योंकि मैं झंझट नहीं लेना चाहता। मैं तो बता दूं फिर कल मैं मुसीबत में पड़ूं! अरे, किसने चोरी की है, मुझे मालूम है। मगर उसका मैं नाम लूं, तो फिर मेरी जान आफत में आए। मैं सीधा–सादा आदमी, मैं झंझट में नहीं पड़ना चाहता। कान में कहूंगा, एकांत में कहूंगा। और कसम खाओ कि किसी को कहोगे नहीं।

इंस्पेक्टर ने स्वीकृति दी कि किसी को कहूंगा नहीं; कसम खाता हूं। मगर तुम बता तो दो भैया!

उसको लेकर लाल बुझक्कड़ एकांत में गए, गांव के बाहर जंगल में ले गए। वे बोले कि अब बता दो। यहां कोई भी नहीं है। पशु-पक्षी तक नहीं हैं सुनने को!

तो कान में फुसफुसा कर कहा कि मैं पक्का कहता हूं; देखो बताना मत। किसी चोर ने चोरी की है!

इस तरह की बकवास में न पड़ो। ये छोटे-छोटे बच्चों की बातें हैं।

अध्यापक ने पूछा, राजेश, बताओ, सारस एक टांग पर क्यों खड़ा होता है?

राजेश ने कहा, सर उसे पता है कि अगर वह दूसरी टांग उठाएगा, तो गिर पड़ेगा!

सेठ चंदूलाल गांव में आए एक महात्मा के पास गए थे। पूछने लगे, महात्मा जी; क्या यह सही है कि हर व्यक्ति को मरना है?

महात्मा ने कहा कि हां, यह तो निश्चित ही है। अरे, मृत्यु से कौन बचा है! सभी को मरना है। प्रत्येक मरणधर्मा है।

चंदूलाल ने सिर खुजलाया और कहा कि मैं सोचता हूं कि जो व्यक्ति आखिर में मरेगा, उसे शमशानघाट कौन ले जाएगा?

देखते हो, कैसे-कैसे कठिन सवाल उठते हैं आदमियों के दिमाग में! यह बात तो बड़े पते की है!

एक मित्र दूसरे से कह रहा था, तुम्हारे उस वैवाहिक विज्ञापन का कोई जवाब आया? जिसमें तुमने छपवाया था कि एक सुंदर, सुशील और कमाऊ युवक जिंदगी में रोशनी की एक किरण चाहता है!

दूसरे ने कहा, हां, आया। एक जवाब आया था- बिजलीघर के दफ्तर से!

इस तरह के प्रश्न! तुम पूछते हो कि इस संसार की उत्पत्ति की घटना किस प्रकार घटी?

एक बात पक्की समझो कि शिवजी का धनुष मैंने नहीं तोड़ा!

मैंने नहीं बनाया यह संसार! मैं पहले ही अपने को अलग कर लेता हूं। नहीं तो लोग तरह-तरह के इल्जाम मेरे ऊपर लगाते हैं! कोई यही कहने लगे कि इसी की हरकत! कि इसी ने उपद्रव किया होगा!

तो इतना मैं पक्का कह देता हूं कि इसमें बिल्कुल मेरा हाथ नहीं है। दूर का नाता-रिश्ता भी नहीं है इसके बनाने में। न मुझे इसके बनने में उत्सुकता है, न इसके मिटने में उत्सुकता है। जब नहीं था, तब मुझे कोई अड़चन नहीं थी। जब नहीं हो जाएगा, तब मुझे कुछ अड़चन नहीं होगी। है- तो मुझे कोई अड़चन नहीं है। मैं पूरे मजे में हूं। रहे, तो ठीक। न रहे, तो ठीक।

तुम कैसी चिंताओं में पड़े हो! और तुम सोचते हो कि इन बातों को जान लोगे; तो तुम्हारा अज्ञान मिट जाएगा? इन बातों को जान लिया, तो उससे सिर्फ इतना ही सिद्ध होगा कि तुम

सच्चे ही पक्के अज्ञानी हो। ये बातें कुछ जानने की नहीं हैं।

बुद्ध जिस गांव में आते थे, पहले खबर करवा देते थे कि ग्यारह प्रश्न कोई मुझसे न पूछे। उनमें से एक प्रश्न यह भी था कि संसार की उत्पत्ति किसने की! पूछे ही नहीं कोई। क्योंकि ये बुद्धुओं के प्रश्न हैं; और बुद्ध इनके उत्तर नहीं देते।

मेरे दादा मुझसे पूछा करते थे अकसर; औरों से भी पूछा करते थे। लेकिन जब उन्होंने मुझसे पूछा, तो फिर पूछना बंद कर दिया। वे पूछा करते थे कि अक्ल बड़ी कि भैंस?

अब उनको कौन उत्तर दे! मुझसे एक दिन पूछ बैठे। मैंने कहा, भैंस।

उन्होंने कहा, क्यों?

मैंने कहा, क्योंकि भैंस यह सवाल नहीं पूछती! यह खुजली तुम्हारी अक्ल में ही चलती है। भैंस तो बिल्कुल परमहंस दशा में है! मैं कई भैंसों के पास जाकर कई घंटे खड़ा रहा। कोई भैंस नहीं पूछती कि अक्ल बड़ी कि भैंस! अरे, भैंस को पता ही है कि हम बड़े हैं। क्या पूछना!

फिर उनने नहीं पूछा। फिर मैं कई दफे उनसे पूछता था कि पूछो न! अक्ल बड़ी कि भैंस!

वे कहते, तू चुप रह!

वे मुझे कहीं नहीं ले जाते थे। वे बड़ा सत्संग करते थे; महात्माओं के पास जाते थे। वे जब भी जाएं, मैं बैठा रहता था कि आया मैं भी!

कहते कि नहीं, तुझे ले जाना नहीं। तू कुछ न कुछ उलटी-सीधी बात कह देगा!

मैंने कहा, उलटी-सीधी बातें तुम लोग करते हो! मैं सीधी-सादी बात करता हूं। अब तुम यह बात पूछते हो कि अक्ल बड़ी कि भैंस! और मैंने सीधा उत्तर दे दिया कि भैंस- तो तुमको लगता है कि उलटी-सीधी बातें कर रहा हूं! अरे, आने दो, मैं भी तुम्हारे महात्मा को जरा देख आऊंगा।

एक दफा मुझे ले गए; सिर्फ एक दफा ले गए। एक महात्मा के पास गए वे मिलने। मुझे ले गए। महात्मा की उम्र रही होगी कोई तीस साल। मेरी उम्र रही होगी मुश्किल से कोई पंद्रह साल। और मेरे दादा की उम्र रही होगी कम से कम साठ साल। महात्मा ने उनसे कहा, आओ बच्चा, बैठो! मैंने कहा- ठीक!

मेरे दादा ने मुझसे कहा, तुम्हें कुछ पूछना हो, तुम पहले ही पूछ लो। नहीं तो फिर गड़बड़ हो जाएगी। फिर मैं पूछ लूं!

मैंने उनसे पूछा कि बच्चा, एक जवाब दो!

महात्मा बहुत नाराज हुए। कहने लगे, मुझसे बच्चा कहते हो!

मैंने कहा, तुम मेरे दादा को बच्चा कह रहे हो, हरामजादे! साठ साल की उम्र के बूढ़े को बच्चा कह रहे हो। तीस साल के तुम हो, पंद्रह साल का मैं हूं, तो कोई गणित में गलती कर रहा हूं? तुम बच्चा नहीं, महा बच्चा हो!

मेरे दादा ने मुझे फौरन बाहर निकाला कि तू जा भैया! तू घर जा, और कभी मेरे साथ मत आना!

क्या बातें पूछ रहे हो! सृष्टि को किसने बनाया? जान भी लोगे, तो क्या करोगे! क्या

फिर से बनाना है? एक से ही मन नहीं भरा!

अरे इतना ही जान लो कि अपना अज्ञान कैसे मिटे! यह जानने से नहीं मिटेगा। ध्यान का दीया जला लो, अज्ञान मिट जाता है। यह सारी जानकारी तुम्हारे अज्ञान को नहीं मिटा पाएगी; अज्ञान को और बूढ़ा बना देगी। पंडित हो जाओगे। पंडित यानी महा अज्ञानी।

पापी तो पहुंच भी जाएं परमात्मा तक, पंडित कभी नहीं पहुंचते।

आज इतना ही।

–ओशो, जो बोलैं तो हरिकथा–8

फोटो 'नेचरल' आएगा

चंदूलाल अपनी पत्नी के साथ फोटो खिंचवाने जा पहुँचे। फोटोग्राफर– 'आप जरा अपने पतिदेव के निकट आ जाएँ और अपना हाथ उनके हाथ में डालें तो फोटो ज्यादा 'नेचरल' आएगा।'

चंदूलाल ने दर्द से कराहते हुए कहा– फोटो बाबू... बेहतर होगा आप इनका हाथ मेरी जेब में डलवा दें। फोटो तब ज्यादा नेचरल आएगा।

अब कुछ गंभीर बातें हो जाएं....

कुँवारी जवान बेटी

पत्नी–अजी घर में जवान बेटी बैठी है और तुम्हें तो जैसे उसके ब्याह की परवाह ही नहीं।

पति–मुझे तुमसे ज्यादा परवाह है, पर क्या करूँ, जो भी लड़का मिलता है, बेवकूफ ही मिलता है।

पत्नी–ओह! अगर मेरे पापा भी तुम्हारी तरह सोच–विचार करते रहते, तो मैं आज तक कुँवारी ही बैठी रह जाती।

प्रेमी और प्रेमिका

प्रेमिका (गुस्से में)– आज के बाद मैं तुमसे कभी भी बात नहीं करूँगी।

प्रेमी– क्या, तुम गूँगी होने वाली हो?

प्रेमिका– नहीं..., मैं तुम्हें बहरा करने वाली हूँ।

बेईमान लव सीन

चिंटूजी अपनी बीवी और बच्चे के साथ फिल्म देखने गए। फिल्म चलते–चलते एक 'लव सीन' आ टपका। जैसे ही हीरोइन और हीरो गले मिलकर प्यार करने लगे। बच्चा जोर से चिल्लाया– मम्मी, पापा! देखो– देखो! ये बेईमान तो सरासर आपकी नकल कर रहे हैं।

ऐजी! पता है...

चिकी– ऐ... जी! सम्मोहन किसे कहते हैं, पता है? किसी आदमी को अपने प्रभाव से वश में करके उससे अपना मनचाहा कार्य करा लेने को सम्मोहन कहते हैं।

चिंटू– झूठ...।! उसे तो शादी कहते हैं।

मीठी–मीठी बातें

जब मियाँ–बीवी जमकर लड़ चुके तो बीवी ने पैर पटकते हुए कहा– 'मैं जा रही हूँ मायके और वहाँ जाकर तलाक के लिए मुकदमा दायर कर दूँगी, हाँ!'

मियाँ ने कहा–चलो हटो! अब ऐसी झूठी–झूठी, मीठी–मीठी बातें करके रिझाने की कोशिश मत करो।'

प्रेमी की लिस्ट

चिकी– चिंटू...! मुझे विश्वास दिलाओ तुम बस मुझसे, बस मुझसे और मुझसे ही प्यार करते हो। चिंटू– हाँ... हाँ...! बिल्कुल पक्का! तुम घबराओ मत, कल ही मैंने अपनी लिस्ट फिर से चेक की है।

शादी के तीन मायने

प्रेमी जो, शादी के खिलाफ था अपनी प्रेमिका को समझा रहा था– प्रेम शराब पीने के समान है, शादी अगली सुबह का सरदर्द है और तलाक है एस्प्रिन की पुड़िया।

रिप्लेशमेंट

चंदूलाल– मुर्गियाँ रखे बगैर अंडे नहीं लिए जा सकते!

मुल्ला– लेकिन मैं तो ले सकता हूँ!

चंदूलाल– वो कैसे?

मुल्ला– बतखें रखके!

दीदी

बिट्टू के घर कन्या ने जन्म लिया तो चिंटू ने कहा– जब लड़की बड़ी होगी तो लड़के उसे रोज छेड़ेंगे।

बिट्टू– मैंने इसका इन्तजाम कर दिया है।

चिंटू– वह कैसे?

बिट्टू – मैंने उसका नाम 'दीदी' रख दिया है।

क्रिकेट मैच

क्लास में क्रिकेट मैच पर निबंध लिखने को कहा गया। सभी छात्र लिखते रहे लेकिन एक छात्र बैठा रहा। अन्य छात्र ने पूछा– तुमने निबंध नहीं लिखा?

छात्र– लिखा तो।

अन्य– लेकिन तुम तो बैठे हुए थे। इतनी जल्दी कैसे लिखा?

छात्र– मैंने लिखा– 'बारिश की वजह से आज मैच रद्द।'

प्रार्थना

हॉस्टल में पढ़ने वाला छात्र रात को तीन बजे भगवान से प्रार्थना करने लगा– हे भगवान मुझे पास कर देना। देखो सब सो रहे हैं और मैं पढ़ाई भी कर रहा हूँ और आपसे प्रार्थना भी कर रहा हूँ। तभी पास वाले पलंग पर सोया दूसरा छात्र चिल्लाया– अबे तू भगवान से अपनी प्रार्थना कर ना... हमारी शिकायत क्यों कर रहा है!

उत्तर पुस्तिका

गुलाबोरानी– मैंने गधों पर रिसर्च की है, वो अपनी गधी के अलावा दूसरी गधी को देखता भी नहीं।

चंदूलाल– इसीलिए तो वो गधा है।

परंपरा

पिता–बेटा, तुम्हारे दादाजी ने शादी की और पछताए। मैंने शादी की और पछता रहा हूँ। अब तुम क्या करोगे?

पुत्र–और कर ही क्या सकता हूँ। वंश परंपरा निभाऊँगा। शादी करूँगा और पछताऊँगा।

छल–कपट

छात्र––यार धोखा हो गया। मेरे घर वालों ने छल किया।

दोस्त––क्या हुआ?

छात्र––मैंने घर से किताबों के लिए पैसे मँगवाए थे। घरवालों ने किताबें ही भेज दीं।

उधार

चंदूलाल– इस महीने मैं तुम्हें और एक पैसा भी नहीं दूँगा।

गुलाबोरानी – तो ठीक है! आप मुझे 500 रुपए उधार दे दीजिए। मैं आपकी तनख्वाह मिलने पर आपको वापिस कर दूँगी।

गरीब से विवाह

प्रेमी– मान लो, अगर मुझे करोड़ों रुपए का घाटा हो जाए तो तुम फिर भी मुझसे शादी करोगी? बस मैं ऐसे ही पूछ रहा था।

प्रेमिका– तब ठीक है तुमसे ही शादी करुँगी, मान लो। बस मैं भी ऐसे ही बता रही हूं।

नौकरी

प्रेमी– चलो... जल्दी से शादी कर लेते हैं।

प्रेमिका– पहले अपने आर्थिक हालात तो ठीक हो जाएँ।

प्रेमी– तुम क्यों फिक्र करती हो। शादी से कोई असर नहीं पड़ेगा। तुम अपनी नौकरी जारी रखना, मैं अपनी नौकरी जारी रखूँगा।

मेरा दिल

प्रेमिका– कोई ऐसी बात कहो जानम कि मेरा दिल जोर–जोर से धक–धक करने लगे।

प्रेमी– हाथ में डंडा लिए, पीछे से तुम्हारे पापा आ रहे हैं।

देश की खुशी

दो मंत्री हेलीकाप्टर में बैठे बाढ़ग्रस्त क्षेत्र का दौरा कर रहे थे। पहला मंत्री बोला, यदि मैं यहां पचास रुपए का नोट फेंक दूं तो लोग कितने खुश होंगे?

दूसरा मंत्री बोला, यदि मैं यहां सौ रुपए का नोट फेंक दूं तो लोग और भी ज्यादा खुश हो जाएंगे। उन दोनों की बेतुकी बातें सुनकर पायलट चुप न रह सका। वह झल्लाकर बोला, यदि मैं आप दोनों को उठाकर नीचे फेंक दूं तो देश के सबसे ज्यादा लोग खुश होंगे।

फिफ्टी परसेंट

एक बजाज की दुकान में आग लग गई। ढब्बूजी उसके मालिक से सांत्वना प्रकट करने गए। बोले, आपकी साड़ियों की दुकान जल जाने से आपको काफी नुकसान हुआ होगा।

जी नहीं, सिर्फ आधा ही नुकसान हुआ, दुकानदार ने कहा।

ढब्बूजी– वह कैसे?

बजाज– भाई साहब, वह तो अच्छा हुआ कि आग तब लगी, जब सेल के कारण साड़ियों पर पचास प्रतिशत की छूट चल रही थी।

पत्नी की डिमांड सस्ती

रोगी– डॉक्टर साहब मेरी मरहम पट्टी पर कुल कितना खर्चा आएगा?

डॉक्टर– करीब 500 रुपए।

रोगी– उफ! इससे अच्छा तो मैं पत्नी को 200 रुपए दे देता तो इतने घाव ही न होते।

उच्च कोटि की

एक साहब अपने दोस्तों के बीच बैठे हुए अपने साले की लड़की की बड़ी बड़ाई कर रहे थे। कह रहे थेः लड़की का कद भी बहुत ऊंचा है। उसकी नाक भी बहुत ऊंची है। उसने शिक्षा भी बहुत ऊंची प्राप्त कर रखी है। उनके परिवार का स्टैंडर्ड ही बहुत ऊंचा है। और तो और...इतने में ही एक आदमी ने कहा कि हां, वह सुनती भी बहुत ऊंचा है।

खड़े रहें या जाएं?

एक बार सड़क पर कालेज की दो लड़कियां जा रही थीं। अचानक किसी बात पर उनकी तू-तू मैं-मैं हो गई। पहली ने कहा, तुझे अंधा पति मिलेगा। दूसरी ने उत्तर दिया, तुझे लंगड़ा पति मिलेगा। यह बात पास से गुजरते हुए दो भिखारियों ने भी सुनी, जिनमें से एक अंधा था और दूसरा लंगड़ा। वे यह वार्तालाप सुन कर ठहर गए। जब काफी देर तक मामला नहीं सुलझा, तो दोनों भिखारी भीड़ को चीरते हुए उन लड़कियों के पास पहुंचे और बोले, देवियों आप बाद में चाहे जितनी देर लड़ती रहें, लेकिन हमें यह बता दें कि हम खड़े रहें या जाएं?

दुष्ट धोखेबाज

मुल्ला नसरुद्दीन रास्ते से गुजर रहा था। पत्नी के साथ था। एकदम झपट्टा मार कर आगे बढ़ा, कुछ उठाया झुक कर सड़क से, फिर क्रोध से बड़ी वजनी गाली दी और जो उठाया था उसे फेंका। और कहा कि अगर यह आदमी मुझे मिल जाए तो इसकी गर्दन काट दूं।

पत्नी ने कहा, मामला क्या है? किसकी गर्दन काट रहे हो? क्या उठाया, क्या फेंका?

उसने कहा कि कोई दुष्ट धोखेबाज इस तरह से खंखार कर थूकता है कि अठन्नी मालूम पड़ती है।

मेरी बुराई!

एक फेरीवाला एक स्त्री को कुछ सामान बेच रहा है। बोला, बीबी जी, क्या आपको बिजली की स्त्री लेनी है?

गृहस्वामिनीः नहीं, पड़ोसियों को दे दो। क्योंकि उनकी पुरानी स्त्रियां खराब हो गई हैं, हम तो उन्हीं से मांग कर काम चला लेते हैं।

फेरीवालाः मगर बीबी जी, मैंने तो आपके पतिदेव को यह कहते सुना था कि उनकी पुरानी स्त्री बहुत ही खराब है और वे अब एक नई स्त्री चाहते हैं।

गृहस्वामिनीः अच्छा, तो वह अब घर के बाहर भी मेरी बुराई करने लगा।

अनावश्यक सूचना

एक यात्री ने अपनी कार पहाड़ के एक ढलान पर रोकी, बहुत घबड़ा कर रोकी। पास में ही बैठे एक देहाती से कहा कि भई, यह तो बहुत खतरनाक ढलान है, यहां सावधानी का बोर्ड

क्यों नहीं लगाया गया है? यहां से तो कोई गिरे तो सीधा पाताल जाए। नीचे इतना बड़ा गड्ढा है कि बचना असंभव है। यहां सावधानी का बोर्ड तो होना ही चाहिए।

उस ग्रामीण ने कहा कि जी हां, यह खतरनाक तो जरूर है और यहां सावधान रहने का बोर्ड भी लगाया गया था, लेकिन जब दो साल तक कोई दुर्घटना नहीं हुई तो उसे अनावश्यक समझ कर अलग कर दिया गया है।

रांग नंबर

चंदूलाल की पत्नी फोन पर लंबी बातें करने की आदत से परेशान थीं। कम से कम एक घंटा तो लग ही जाता। ज्यादा भला लग जाए, कम तो नहीं। एक दिन संयोग से पंद्रह मिनट में ही फुरसत पा गई, तो चंदूलाल ने पूछा, आज तो बड़ी जल्दी बात खत्म कर दी, क्या तबियत ठीक नहीं है?

श्रीमती जी ने इत्मीनान से जवाब दिया, अजी रांग नंबर लग गया था।

चंदूलाल ने कहा, गजब है देवी, रांग नंबर फिर भी पंद्रह मिनट बात चली!

गलत से सही का आभास

मुल्ला नसरुद्दीन से किसी ने पूछा : 'सफलता का रहस्य क्या है?'

'सही निर्णय पर काम करना,' नसरुद्दीन ने कहा।

'लेकिन सही निर्णय किये कैसे जाते हैं? '

'अनुभवों के आधार पर।'

'और अनुभव किस प्रकार प्राप्त होते हैं? '

नसरुद्दीन ने कुछ सोचा और फिर कहा : 'गलत निर्णयों पर काम करके।'

निमित्त मात्र

प्रश्न–मैंने सुना था कि भगवान सब कर्म करता है, हमें केवल निमित्त मात्र बनना है। मैं ऐसी शिक्षा मानकर जीती रही हूं मगर इससे कोई लाभ नहीं हुआ।

ओशो शैलेन्द्र– देवीजी, यह भी सुन लो कि लाभ पर नजर रखोगी, तो लाभ नहीं होगा।

वैद्यराज मुल्ला नसरुद्दीन बड़ा गीता–पाठी था। उसके एक मित्र ने पूछाः 'मुल्ला, न तो तुम हिंदू हो और न ही धार्मिक, फिर तुम्हें गीता से क्या प्राप्ति होती है? '

नसरुद्दीन ने कहाः 'मुझे गीता के उन श्लोकों से बड़ी प्रेरणा मिलती है, जिनमें कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया है कि तुम्हें तो कौरवों की मृत्यु के लिए केवल निमित्त मात्र बनना है। मृत्यु तो इनकी पहले ही मेरे हाथों तय हो चुकी है। किसी मरीज को दवाई देते समय मुझे भी कृष्ण का यह वचन सदैव याद रहता हैः 'निमित्त मात्रं भव।'

मित्र ने पूछाः फिर आपके हाथ में भी कुछ है या नहीं?

नसरुद्दीन ने कहाः है न! दवा लिखना और फीस लेना।

दुख सिकोड़ता है आनन्द फैलाता है।
दुख अपने में बंद करता है,
दुख अहंकार में केंद्रित कर देता है,
आनंद अहंकार को तोड़ डालता है।

बह जाती है गंगा प्राणों की चारों तरफ, सब तरफ एक हंसता हुआ धर्म चाहिए, एक धर्म जो हंस सके। अब तक जो धर्म रहा है वह उदास है।

निश्चित ही जो आदमी पूरे जीवन को एक खुशी और एक आनंद बनाना चाहता है वह आदमी भूलकर भी दूसरे को दुख नहीं दे सकता। क्योंकि दूसरे को दुख देना अपने लिए दुख को आमंत्रण भेजना है। जो आदमी फूलों में जीना चाहता है वह किसी के रास्ते पर कांटा नहीं रख सकता, क्योंकि दूसरे के रास्ते पर कांटा रखना, दूसरे को चुनौती देना है कि मेरे रास्ते पर कांटे रखो। जो आदमी उदास रहना चाहता है वही दूसरे लोगों से दुर्व्यवहार कर सकता है, लेकिन जो आदमी प्रफुल्लित होना चाहता है उसे तो अपने चारों तरफ हंसी फैलानी पड़ेगी। जो आदमी खुश रहना चाहता है उसे चारों तरफ खुशी बांटनी पड़ेगी, क्योंकि कोई आदमी अकेला खुश नहीं रह सकता। यह जरा समझ लेना जरूरी है।

अकेला आदमी उदास रह सकता है। लेकिन खुशी, आनंद में, प्रसन्नता में अकेला आदमी नहीं रह सकता है। अगर आप अकेले बैठे हैं एक कोने में उदास, दुखी, पीड़ित परेशान तो कोई भी आपसे यह नहीं पूछ सकता आकर कि अरे! तुम अकेले बैठे हो और उदास बैठे हो। लेकिन अगर अकेले में हंस रहे हैं आप जोर से खिलखिलाकर तो कोई भी आकर पूछेगा कि दिमाग खराब हो गया है, अकेले और हंस रहे हो? लेकिन अकेले में उदास होने पर कोई नहीं पूछता कि इसमें कोई गड़बड़ है? अकेले में हंसते हुए आदमी पर शंका पैदा होती है।

इसका कारण है। क्योंकि खुशी...खुशी एक कम्युनिकेशन है, खुशी एक संवाद है, खुशी एक समष्टि की घटना है। आदमी उदास अकेला हो सकता है, लेकिन आनंदित होना एक शेयरिंग है, एक बंटवारा है। इसलिए जितना खुश आदमी होगा उतना विराट मित्रों का उसका समूह होगा, क्योंकि जितना बड़ा समूह होगा मित्रों का उतनी गहरी और बड़ी खुशी प्रकट हो सकती है। अगर उदास होना हो तो अकेले में जाना जरूरी है और अगर आनंदित होना है तो विराट से विराट होते जाना जरूरी है।

जो आदमी परम आनंद को उपलब्ध होते हैं उनके लिए इस जगत का कण–कण मित्र हो जाता है। तभी वे परम आनंद को उपलब्ध होते हैं, उसके पहले नहीं। आनंद एक शेयरिंग है, आनंद है मित्रों के बीच एक बंटवारा। दुख है अकेलापन। कभी आपने ख्याल नहीं किया होगा जब आप दुखी होते हैं तो लोगों से कहते हैं मुझे छोड़ दें अकेला। मुझे अकेला छोड़ दें। जब दुखी होते हैं तो द्वार–दरवाजे बंद कर लेते हैं, खिड़की बंद करके एक कोने में पड़े रह जाते हैं, क्योंकि

दुखी होने के लिए अकेले होने में सर्वाधिक सुविधा होती है। लेकिन जब आप आनंद से भर जाते हैं तो द्वार-दरवाजे तोड़ देते हैं, आ जाते हैं बाजार में, आ जाते हैं लोगों के बीच और पुकारने लगते हैं कि आओ मैं खुश हूं, आओ मेरे करीब। खुशी बांटनी पड़ती है, दुख अकेला भोगना पड़ता है- कभी आपने शायद न सोचा होगा।

महावीर, बुद्ध और क्राइस्ट, या मोहम्मद जिस दिन आनंद से भर गये, उस दिन अपने पहाड़ों और जंगलों को छोड़कर भागे बस्तियों की ओर। जब तक दुखी थे तब तक गये जंगल में, पहाड़ पर। जब भर गये आनंद से तो भागे बस्तियों की ओर लोगों के बीच। शायद ही किसी ने कभी सोचा है कि यह क्यों हुआ? बुद्ध को, महावीर को, मोहम्मद को, क्राइस्ट को, सबको लोगों ने एकांत की तरफ जाते देखा है और फिर एकांत से आते भी देखा है। जो आदमी गया था एकांत की तरफ वह उदास था, दुखी था। जो आदमी लौटकर आया है वह एक और ही तरह का आदमी था, वह आनंद से भरा था, प्रफुल्लित था। जैसे ही आनंद आया, भागे वहां जहां बंट सके, जहां बांटा जा सके।

दुख सिकोड़ता है, आनंद फैलाता है। दुख अपने में बंद करता है, दुख अहंकार में केंद्रित कर देता है, आनंद अहंकार को तोड़ डालता है। बह जाती है गंगा प्राणों की चारों तरफ, सब तरफ। परमात्मा की तरफ जाना है तो फैलना पड़ेगा इतना-इतना कि अपने जैसा कुछ भी न रह जाये, फैलाव रह जाये; विस्तीर्ण हो जायें प्राण। और सहभागी बनना होगा इतना कि सारा जगत सहभागी बन जाये। सारा जगत, चांद, तारे, सूरज मित्र बन जायें।

लेकिन इसकी जो... जो बुनियादी दृष्टि है, जो बेसिक फिलासफी है, वह क्या है? वह है एक हंसता हुआ व्यक्तित्व, एक प्रफुल्लित व्यक्तित्व, एक नाचता हुआ व्यक्तित्व, एक नृत्य करता हुआ व्यक्तित्व। और जैसा मैंने कहा जितने आनंदित आप होना चाहते हैं- स्मरण रखें, उतना ही आनंद आपको चारों तरफ बांटना पड़ेगा तब आनंद आपकी तरफ बहना शुरू होता है। हम जो बांटते हैं वही लौट आता है हम जो देते हैं वही गूंजता है वापस और हमारे प्राणों की तरफ बह आता है।

-ओशो, साधना पथ, प्रवचन 29

मुल्ला नसरुद्दीन : एक सूफी फकीर

प्रश्न- मुल्ला नसरुद्दीन काल्पनिक है या कोई वास्तविक पात्र है? कृपया समझाएं।

ओशो शैलेन्द्र- ओशो ने नसरुद्दीन को रूप दिया वह तो काल्पनिक है परन्तु वास्तव में मुल्ला नसरुद्दीन हुआ है। बगदाद में उसकी जन्मस्थली है, वहीं उसकी कब्र भी है। वह एक सूफी फकीर था। उसका सिखाने का ढंग बिल्कुल अलग था। वो अपने ही ऊपर मजाक करके दूसरों को शिक्षा देता था ताकि किसी को बुरा न लगे। जैसे कबीर करते हैं न अपने ऊपर मजाक।

कहै कबीर दीवाना ,
सारी दुनिया भयी सयानी,
मैं हीं इक बौराना।

मजाक कर रहे हैं, व्यंग्य कर रहे है। सीधे–सीधे नहीं कह रहे हैं। आप लोग बहुत सयाने हैं एक मैं ही बौरा गया हूं। मैं ही पगला गया हूं। मुल्ला नसरुद्दीन की भी आदत ऐसे ही समझाने की थी। अपने ऊपर, खुद की ही मजाक उड़ाकर।

एक दिन नसरुद्दीन अपने गधे पर भागा जा रहा था। उन दिनों गधे और घोड़े ही मुख्य वाहन हुआ करते थे। वह भागा जा रहा था और चिल्ला रहा था रास्ता छोड़ो, मै बहुत जल्दी में हूं। लोग रास्ता देते जा रहे थे कि पता नहीं क्या संकट की स्थिति आ गयी! एक आदमी ने चिल्लाकर पूछा कि मुल्ला कौन सी मुसीबत आ गयी? मुल्ला बोला, क्या बताऊं आज सुबह से ही मेरा प्यारा गधा नहीं मिल रहा, पता नहीं कहां खो गया! उस आदमी ने कहा भले मानस तुम उसी गधे पर तो सवार हो। मुल्ला ने नीचे को देखा और धन्यवाद दिया कि तुमने अच्छा बता दिया, वरना न जाने कितने मील चक्कर लगाना पड़ता।

यह मुल्ला व्यंग्य कर रहा है। वह कह रहा है कि तुम जिस आनंद, जिस परमात्मा को ढूंढ रहे हो, ''मैं कौन हूं'' पूछ रहे हो, पागल तुम वही तो हो। किसे खोज रहे हो? उपनिषद् के ऋषि इसी बात को बड़े गंभीर दार्शनिक अंदाज में कहेंगे– अहं ब्रह्मास्मि, तत्वमसि श्वेतकेतु, तुम भी वही ब्रह्म हो। नसरुद्दीन जरा मजाक के लहजे में कह रहा है कि तुम जिस परमात्मा को ढूंढ रहे हो, तुम वही तो हो।

मेरा गधा तो फिर भी मुझसे दूर है। मैं उसे भूल भी सकता हूं। जैसे चश्मा लगाने वाले लोगों के साथ प्रायः होता है न कि चश्मा लगाए हैं और चश्मा ढूंढ रहे हैं। और उसी चश्मे के माध्यम से ढूंढ रहे हैं। तो नसरुद्दीन मजाक कर रहा है कि तुम जिसे ढूंढ रहे हो वह तुम्हीं हो। उसका अन्दाज बड़ा निराला है।

एक बार अपने मित्र से मिलने शहर गया था। चलते समय मित्र ने भेंट में मांस दिया और एक कुकिंग बुक भी दी, पाक–कला पुस्तक, जिसमें विधि लिखी थी कि स्वादिष्ट व्यंजन कैसे बनाएं। मुल्ला खुशी–खुशी अपने गांव वापस जा रहा है कि पत्नी को दूंगा घर जाकर। एक हाथ में किताब रखे हुए और एक हाथ में मांस रखे हुए मस्ती से गांव की ओर लौट रहा है। अचानक 2–3 चीलों ने ऊपर से देखा। वे चीलें इक्ट्ठी आईं और झपट्टा मारकर मांस उठा ले गयीं। मुल्ला ने आश्चर्य से ऊपर की ओर देखा और कहा– मूर्खो, अरी भूखी चीलों, असली महत्वपूर्ण किताब तो मेरे पास है। नासमझो, विधि तो इसमें लिखी है।

नसरुद्दीन मजाक कर रहा है पण्डितों की, मौलवियों की, ध्यान–विधियों की, कर्मकाण्डों की। वह कह रहा है कि विधि तो हमारे पास है। मांस का क्या करोगे? कोई चील इतनी मूर्ख नहीं जितना आदमी। शास्त्रों में किताबों में हमारा बड़ा रस है। इन किताबों के पीछे क्या–क्या हुआ है जानते हो? बड़े–बड़े युद्ध हुए हैं।

किसी ने कुछ कटुवचन कह दिए किसी धर्मशास्त्र के खिलाफ और धर्मयुद्ध, जेहाद शुरू

हो गया। बड़ा खून–खराबा हुआ है किताबों के पीछे... हजारों जिंदा आदमी मर जाएं तो कोई बात नहीं, हम अपनी भी जान गंवाने को तैयार हो जाते हैं। नसरुद्दीन मजाक कर रहा है... किताब का महत्व! ... वास्तविकता से अधिक हमारा दार्शनिकता में रस है। पीछे एक मित्र ने पूछा था कि 'लोग मन्दिरों में परमात्मा को ढूंढ़ रहे हैं। मूर्तियां बनाकर लड़ रहे हैं कि इस मूर्ति में भगवान है, मेरी मूर्ति सुन्दर है। वास्तविक भगवान कौन है?' कितने युद्ध हुए मूर्तियों के पीछे, सिद्धांतों के पीछे।

मुल्ला नसरुद्दीन का तरीका ऐसा था, वह स्वयं पर व्यंग्य करके सिखाता था। वह एक वास्तविक व्यक्ति था, एक सूफी फकीर था। परमगुरु ओशो ने उसी के उद्धरण देकर और नए–नए किस्से जोड़े। ओशो ने जो चरित्र बनाया, मुख्यतः वह उनकी कल्पनाशक्ति का नमूना है; परन्तु उसमें कुछ वास्तविक घटनाएं भी शामिल हैं। अभी मैंने जो चुटकुले सुनाए वे वास्तविक घटनाओं वाले हैं।

नसरुद्दीन पर कई किताबें लिखी गयी हैं। एक रशियन लेखक की किताब का अनुवाद कृष्ण कुमार ने हिन्दी–उर्दू में किया है; उसका नाम है 'दास्तानेनसरुद्दीन'। बड़ी अच्छी किताब है।

उसमें किस्सा है कि नसरुद्दीन एक नाव में जा रहा था। उसने ज्ञान बधारने के लिए मल्लाह से पूछा कि 'भई, कुछ पढ़े–लिखे हो? ' मांझी ने कहा, मैं तो अनपढ़ गंवार हूं। मेरा बाप भी नाव चलाता था। मै भी यहीं करता हूं। मुल्ला बोला, तेरी चार आना जिन्दगी बेकार गयी, गैर पढ़े–लिखे व्यक्ति का जीवन भी कोई जीवन है। फिर पूछा, क्यूं रे, गुणा – भाग, जोड़ना–घटाना कुछ तो हिसाब–किताब करना आता होगा? मांझी कहने लगा मुझे तो कोई गणित नहीं आता। बस 10 तक उंगलियों पर गिन लेता हूं। आगे गिनती भी नहीं आती। मुल्ला ने कहा तब तो तुम्हारी 8 आना जिन्दगी बेकार गयी। कुछ आता ही नहीं तुम्हें। मुल्ला ने समय काटने के लिए और उसे अपमानित करने के लिए पूछा, कुछ जनरल नॉलेज तो होगी? इस समय देश का राजा कौन है, बताओ। मांझी बोला मुझे तो नहीं पता। मुझे क्या लेना देना कौन राजा है, कौन प्रधानमंत्री है। मुझे क्या लेना देना! नसरुद्दीन ने कहा– तुम्हारी बारह आना जिन्दगी बेकार गयी। फिर थोड़ी देर बाद नदी में तूफान आया। नाव डोलने लगी... अब डूबी कि तब डूबी। मांझी बोला– मुल्ला साहब, तैरना आता है कि नहीं? मुल्ला ने कहा कि भई, हम शास्त्रीय व्यक्ति हैं, किताबों में ही व्यस्त रहे। तैरना सीखने का तो अवसर ही नहीं आया। ज्ञान में रस था हमें तो, बस! मांझी ने कहा कि मैं तो तैरकर जाता हूं। अब आपकी सोलह आना जिन्दगी बेकार गयी।

नसरुद्दीन का सिखाने का तरीका थोड़ा अनोखा था।

एक बार उसके पास एक व्यक्ति आया। बोला कि आप तो पहुंचे हुए फकीर हैं, कृपाकर कुछ मंत्र–वंत्र हमें भी दें। कोई सिद्धि, कोई शक्ति हमें भी प्राप्त हो। नसरुद्दीन ने बहुत समझाया कि मुझे कोई सिद्धि नहीं आती। लेकिन आदमी का दिमाग ऐसा है कि जितना मना करो वह उतना ही सोचता है कि जरूर आती होगी तभी मना कर रहे हैं, बता नहीं रहे। उसने खूब

चमचागिरी, खुशमाद की। नसरुद्दीन तंग आ गया, रोज–रोज की मिन्नतों से। एक दिन बोला, आओ, आज तुम्हें बता ही देते हैं। लिखो, यह छोटा सा मंत्र है। उसे लिखवा दिया। कहा कि इस मंत्र का 100 बार उच्चारण कर लेना, तुम्हें सिद्धि प्राप्त हो जाएगी। तुम जो चाहोगे वहीं होने लगेगा। वह आदमी तो लेकर चलने लगा। मुल्ला ने कहा, अरे नालायक रुक, भागता कहां है? कम से कम शुक्रिया तो अदा कर, और पूरी बात तो सुन जा। रात को 12 बजे स्नान करके, नए कपड़े पहनकर इस मंत्र का उच्चारण करना और ऐसा करते समय बन्दर का ख्याल तेरे मन में नहीं आना चाहिए। उस आदमी ने कहा बन्दर का ख्याल तो मुझे कभी नहीं आया। क्यों आएगा? माना कि डार्विन ने बताया कि हम बन्दर की औलाद हैं मगर मुझे अपने पूर्वजों से कोई खास लगाव नहीं है। आप चिन्ता न करें।

12 बजे का इन्तजार होने लगा। रात ठीक वक्त पर रगड़–रगड़ कर स्नान किया और नए कपड़े पहने, जैसा कि नसरुद्दीन ने कहा था। और फिर अंधेर में, अकेले कमरे में जाकर उच्चारण शुरू किया। जैसे ही उसने 2–3 बार उच्चारण किया उसे लगा कि बन्दर की आवाज आ रही है कहीं से। उसने लालटेन जलाई और खिड़की से झांक कर देखा। बाहर तो कोई बन्दर नहीं था। उसने सोचा, लगता है वहम हो गया। लेकिन शर्त तो टूट गयी। सोचा, कोई अशुद्धि रह गयी शायद। जाकर फिर साबुन रगड़ा। आकर कमरे में बैठा। इस बार तो लगा कि कमरे में ही बन्दर है। उसे समझ में न आए कि बन्दर का ख्याल मुझे क्यों आ रहा है। जरूर पिछले जन्म के किसी दुष्कर्म का कोई फल है। पहले तो कभी ख्याल नहीं आया। जरूर कुछ पाप किए होंगे। चलो एक बार फिर नहा लेते हैं! अब तो लगा जैसे बाथरूम में भी बंदर मौजूद हैं। बेचारा रात भर परेशान रहा। सुबह नसरुद्दीन के पास गया। आंखे लाल, सूजी हुई। नसरुद्दीन ने पूछा–क्यों, पूरा हो गया मंत्र? बोला–शायद पिछले जन्म का कोई कर्मफल है। मैं पापी आत्मा हूं। आपने तो कृपा करके बता दिया परन्तु मैं मंत्र पूरा नहीं कर पाया। बन्दर का ख्याल आ जाता है। नसरुद्दीन ने कहा मैंने तो तुम्हें 'कंडीशन' बता दी। अब, कैसे पूरी करनी शर्त... ये तुम जानो। मेरा पिंड छोड़ो।

मुल्ला बताना चाह रहा है कि तुम जिस–जिस चीज का निषेध करोगे वही–वही तुम पर हमला करेगी। जिस विचार को निकालना चाहोगे उसी में फंस जाओगे। निषेध आमंत्रण है। किसी चीज को रोको अगर, तो फिर वह तुम्हें बहुत आकर्षित करेगी।

जरा कल्पना करें आप रोज एक सड़क पर से गुजरते हैं एक दिन उस सड़क पर एक मकान के आगे बैनर लगा है कि खिड़की के भीतर झांकना मना है, सख्त मना है। आप सोचिए आपके मन के भीतर क्या होगा? जरा कल्पना करें। मन होगा कि जरा देखें भीतर आखिर ऐसा भी क्या है कि देखना सख्त मना है!

आपने देखा जिस–जिस दीवार पर लिखा रहता है कि यहां पेशाब करना मना है तो उस सूचना को पढ़कर जिसको नहीं भी लगी थी, तो लग आती है। पढ़कर याद आ जाती है। और लगता है कि यहां लिखा है... इसका मतलब लोग यहां करते ही होंगे। वैसे भले–चंगे जा रहे थे, लघुशंका नहीं लगी थीं। अचानक लगता है कि बड़ा प्रेशर बन गया है। निषेध आकर्षण बन

जाता है।

बैनर पढ़कर बड़ा आर्कषण बन जाएगा। यदि आप सज्जन आदमी हुए तो सीधी नजर करके निकल जाएंगे। दुर्जन आदमी हुए तो परदा उठाकर देखेंगे। बेचारे सज्जन आदमी को रात को सपना आएगा। दमित वासना हो गयी कि उस खिड़की में आखिर हो क्या रहा था? सपना आएगा कि फिर उस सड़क से निकल रहे हैं और धड़ल्ले से परदा उठाकर देख लिया। इस सपने से बचना असंभव है। आएगा ही आएगा।

बुर्के में छुपी हुई स्त्री जितना आकर्षित करती है और सपने में डोलती है, उतना बगैर घूंघट वाली स्त्री आकर्षित नहीं करती; और पश्चिम में जहां कपड़े निरंतर कम होते जा रहे हैं स्त्री का आकर्षण भी कम होता जा रहा है। बुर्के में स्त्री आकर्षित करती थी सपनों में डोलती थी। यह स्त्रियों का ढंग था आकर्षित करने का, याद रखना।

घूंघट में छुपा चेहरा बड़ा आकर्षक लगता है। जहां घूंघट खुला वहां बात समाप्त हो गयी। तो मुल्ला यह बंदर वाली बात कहकर शिक्षा दे रहा है कि जिस भी विचार को तुम हटाओगे, वही तुम्हें तंग करेगा।

उसका उपदेश का तरीका बड़ा अनोखा था। उसकी कब्र भी बड़ी मजेदार है। समाने से जब जाते हैं तो दो बड़े मजबूत खंभे हैं और एक बहुत बड़ा दरवाजा लगा हुआ है। उस पर छः बड़े-बड़े मजबूत ताले लगे हुए हैं। ऐसे बड़ा द्वार है जैसे लाल किले का दरवाजा। मजबूत खंबे, विशालकाय दरवाजा, और उस पर छः मजबूत ताले... और शेष तीन तरफ से कब्र खुली हुई है। दीवार तक नहीं है! नसरुद्दीन ने मरते-मरते भी मजाक कर दी। कि तुम जीवन में कितनी ही सुरक्षा कर लो, वह ऐसे ही है कि एक तरफ से आड़ और बाकी सब तरफ से असुरक्षित। पागलो, जीवन में कहीं सुरक्षा हो सकती है क्या? मौत आ ही जाती है। हमारा सुरक्षा का इंतजाम बस ऐसा ही है... नसरुद्दीन की कब्र जैसा। तो उसने मरते-मरते भी मजाक कर दी।

नसरुद्दीन वास्तव में एक सूफी संत हुआ है और ओशो ने उसी की प्रचलित कहानियों को और नए रंग देकर, नई कथाएं जोड़कर, विस्तारपूर्वक बड़ी गूढ़ बातें समझाई हैं।

खुशबू की कीमत

राह चलते एक भिखारी को किसी ने चंद रोटियां दे दीं लेकिन साथ में खाने के लिए सब्जी नहीं दी। भिखारी एक सराय में गया और उसने सराय-मालिक से खाने के लिए थोड़ी सी सब्जी मांगी। सराय-मालिक ने उसे झिड़ककर दफा कर दिया। भिखारी बेचारा नज़र बचाकर सराय की रसोई में घुस गया। चूल्हे के ऊपर उम्दा सब्जी पक रही थी। भिखारी ने देग से उठती हुई भाप में अपनी रोटियां इस उम्मीद से लगा दीं कि सब्जी की खुशबू से कुछ जायका तो रोटियों में आ ही जायेगा।

अचानक ही सराय-मालिक रसोई में आ धमका और भिखारी का गिरेबान पकड़कर उसपर सब्जी चुराने का इल्ज़ाम लगाने लगा।

'मैंने सब्जी नहीं चुराई!'- भिखारी बोला- 'मैं तो सिर्फ उसकी खुशबू ले रहा था!'

'तो फिर तुम खुशबू की कीमत चुकाओ!'– सराय–मालिक बोला।

भिखारी के पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं थी। सराय–मालिक उसे घसीटकर काज़ी मुल्ला नसरुद्दीन के पास ले गया।

मुल्ला ने सराय–मालिक की शिकायत और भिखारी की बात इत्मीनान से सुनी।

'तो तुम्हें अपनी सब्जी की खुशबू की कीमत चाहिए न? '– मुल्ला ने सराय–मालिक से पूछा।

'जी। आपकी बड़ी महरबानी होगी'– सराय–मालिक बोला।

'ठीक है। मैं खुद तुम्हें तुम्हारी सब्जी की खुशबू की कीमत अदा करूँगा'– मुल्ला बोला– 'और मैं खुशबू की कीमत सिक्कों की खनक से चुकाऊँगा'।

यह कहकर मुल्ला ने अपनी जेब से कुछ सिक्के निकाले और उन्हें हथेली में लेकर जोरों से खनकाया और उन्हें वापस अपनी जेब में रख लिया।

ठगाया–सा सराय–मालिक और हैरान–सा भिखारी, दोनों अपने–अपने रास्ते चले गए।

गुरु की मज़ार

मुल्ला नसरुद्दीन इबादत की नई विधियों की तलाश में निकला। अपने गधे पर जीन कसकर वह भारत, चीन, मंगोलिया गया और बहुत से ज्ञानियों और गुरुओं से मिला पर उसे कुछ भी नहीं जंचा।

उसे किसी ने नेपाल में रहनेवाले एक संत के बारे में बताया। वह नेपाल की ओर चल पड़ा। पहाड़ी रास्तों पर नसरुद्दीन का गधा थकान से मर गया। नसरुद्दीन ने उसे वहीं दफ़न कर दिया और उसके दुःख में रोने लगा। कोई व्यक्ति उसके पास आया और उससे बोला– 'मुझे लगता है कि आप यहाँ किसी संत की खोज में आये थे। शायद यही उनकी कब्र है और आप उनकी मृत्यु का शोक मना रहे हैं।'

'नहीं, यहाँ तो मैंने अपने गधे को दफ़न किया है जो थकान के कारण मर गया'– मुल्ला ने कहा।

'मैं नहीं मानता। मरे हुए गधे के लिए कोई नहीं रोता। इस स्थान में ज़रूर कोई चमत्कार है जिसे तुम अपने तक ही रखना चाहते हो!'

नसरुद्दीन ने उसे बार–बार समझाने की कोशिश की लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। वह आदमी पास ही गाँव तक गया और लोगों को दिवंगत संत की कब्र के बारे में बताया कि वहां लोगों के रोग ठीक हो जाते हैं। देखते–ही–देखते वहां मजमा लग गया।

संत की चमत्कारी कब्र की खबर पूरे नेपाल में फ़ैल गयी और दूर–दूर से लोग वहां आने लगे। एक धनिक को लगा कि वहां आकर उसकी मनोकामना पूर्ण हो गयी है इसलिए उसने वहां एक शानदार मज़ार बनवा दी जहाँ नसरुद्दीन ने अपने 'गुरु' को दफ़न किया था।

यह सब होता देखकर नसरुद्दीन ने वहां से चल देने में ही अपनी भलाई समझी। इस सबसे वह एक बात तो बखूबी समझ गया कि जब लोग किसी झूठ पर यकीन करना चाहते हैं

तब दुनिया की कोई ताकत उनका भ्रम नहीं तोड़ सकती।

परंपरा

कई लोगों की भींड़ में मुल्ला नसरुद्दीन नमाज़ अदा करने के दौरान आगे झुका। उस दिन उसने कुछ ऊंचा कुरता पहना हुआ था। आगे झुकने पर उसका कुरता ऊपर चढ़ गया और उसकी कमर का निचला हिस्सा झलकने लगा।

मुल्ला के पींछे बैठे आदमी को यह देखकर अच्छा नहीं लगा इसलिए उसने मुल्ला के कुरते को थोड़ा नीचे खींच दिया।
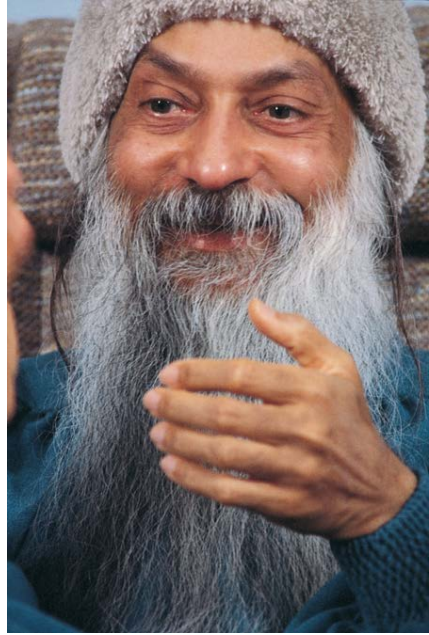
मुल्ला ने फ़ौरन अपने आगे बैठे आदमी का कुरता नीचे खींच दिया।
आगेवाले आदमी ने पलटकर मुल्ला से हैरत से पूछा– 'ये क्या करते हो मुल्ला? '
'मुझसे नहीं, पींछेवालों से पूछो'– मुल्ला ने कहा– 'शुरुआत वहां से हुई है'

जीवनः एक चुटकुला

चुटकुले केवल इतना दर्शाते हैं कि समाज हंसना भूल गया है। एक बेहतर जगत में लोग अधिक हंसेंगे और हम याद करेंगे कि चुटकुला भी कुछ होता था। कोई आवश्यकता नहीं होगी लोग हंसेंगे और आनंदित होंगे। क्यों? प्रत्येक क्षण हंसी का क्षण होगा। और यदि तुम जीवन को देख सको तो तुम पाओगे कि यह सब एक चुटकुला है।

–ओशो

2

चुटकुलों को गंभीरता से मत लो

सच तो यह है कि किसी भी चीज को गंभीरता से मत लो यदि तुम चीजों को गंभीरता से लेने लगते हो तो तुम चूक जाते हो।

शास्त्र भी गंभीरता से नहीं लेने चाहिए; मात्र तभी तुम समझ सकते हो। समझ गहन विश्राम गैर–गंभीर, खेलपूर्ण ढंग से आती है।

जब तुम गंभीर होते हो तो तुम तनाव से भर जाते हो। जब तुम गंभीर होते हो तब तुम बंद हो जाते हो।

जब तुम खेलपूर्ण हो तब बहुत कुछ होता है क्योंकि खेलपूर्ण होना सृजनात्मकता है।

–ओशो

मुल्ला के बेतुके से प्रतीत होने वाले किस्से भी झेन कथाओं की भांति कभी–कभी जीवन और संसार के किसी गहरे पक्ष की ओर इंगित करते हैं। ये हंसाते हुए अंतर्बोध देते जान पड़ते हैं– हमेशा! ओशो ने इन कटाक्षों में, व्यंग्यों में, प्रश्नों में और भी सूक्ष्म संकेत छिपाकर, इन्हें साधकों के लिए जीवंत उपदेश बना दिया।

यह कोई जरुरी नहीं कि ये किस्से वाकई मुल्ला के ही हों। यह भी तय नहीं है कि मुल्ला नसरुद्दीन नामक कोई शख्स वाकई कभी हुआ भी हो। कुछ लोग अभी भी तुर्की में उसकी कथित कब्र देखने जाते हैं। खैर, मुल्ला की मजेदार कहानियों की कड़ी में प्रस्तुत हैं कुछ और छोटे मनोरंजक, शिक्षाप्रद किस्सेः

जानने की जहमत

एक दिन मुल्ला नसरुद्दीन और उसका एक दोस्त साथ में टहलते हुए अपनी–अपनी

बीवी के बारे में बातचीत कर रहे थे। मुल्ला के दोस्त का ध्यान इस बात की ओर गया कि मुल्ला ने कभी भी अपनी बीवी का नाम नहीं लिया।

तुम्हारी बीवी का नाम क्या है, मुल्ला? '–दोस्त ने पूछा।

मुझे उसका नाम नहीं मालूम'–मुल्ला ने कहा।

क्या? '–दोस्त अचम्भे से बोला–तुम्हारी शादी को कितने साल हो गए? '

''अट्ठाईस साल'–मुल्ला ने जवाब दिया, फिर कहा–मुझे शुरुआत से हीं ये लगता रहा कि हमारी शादी ज्यादा नहीं टिकेगी इसलिए मैंने उसका नाम जानने की कभी जहमत नहीं उठाई।'

अदालत में इंतजार

एक दिन जब मुल्ला नसरुद्दीन बाजार में टहल रहा था, तब अचानक ही एक अजनबी उसके रास्ते में आ गया और उसने मुल्ला को एक जोरदार थप्पड़ रसीद कर दिया। इससे पहले कि मुल्ला कुछ समझ पाता, अजनबी फ़ौरन ही अपने हाथ जोड़कर माफ़ी मांगने लगा–मुझे माफ़ कर दें! मुझे लगा आप कोई और हैं।'

मुल्ला को इस सफाई पर यकीन नहीं हुआ। वह अजनबी को अपने साथ शहर काजी के सामने ले गया और उससे वाकये की शिकायत की।

चालाक मुल्ला जल्द ही यह भांप गया कि काजी और अजनबी एक दूसरे को भीतर–ही–भीतर जानते थे। काजी के सामने अजनबी ने अपनी गलती कबूल कर ली और काजी ने तुरंत ही अपना फैसला सुना दिया–मुल्जिम ने अपनी गलती कबूल कर ली है इसलिए मैं उसे हर्जाने के बतौर मुल्ला को एक रुपया अदा करने का हुक्म देता हूँ। अगर मुल्जिम के पास एक रुपया इस वक्त नहीं हो तो वह फ़ौरन ही उसे लाकर मुल्ला को सौंप दे।'

फैसला सुनकर अजनबी रुपया लाने के लिए चलता बना। मुल्ला ने अदालत में उसका इंतजार किया। देखते–देखते बहुत देर हो गई लेकिन अजनबी वापस नहीं आया।

काफी देर हो जाने पर मुल्ला ने काजी से पूछा–हुजूर, क्या आपको लगता है कि किसी शख्स को राह चलते बिना वजह थप्पड़ मार देने का हर्जाना केवल एक रुपया हो सकता है? '

हाँ'–काजी ने जवाब दिया–इतने छोटे से जुर्म के लिए एक रुपया बहुत बड़ी रकम है।'

काजी का जवाब सुनकर मुल्ला ने उसके गाल पर करारा चांटा जड़कर कहा–वह आदमी जब एक रुपया लेकर वापस आ जाये तो आप वह रुपया अपने पास रख लेना'–और मुल्ला वहां से चल दिया।

आजकल

बिट्टू ने एक खाली कागज को किस किया।

चिंटू– तू ये क्या कर रहा है?

बिट्टू– मेरी गर्लफ्रेंड का लेटर है।

चिंटू– मगर ये तो कोरा कागज है।

बिट्टू– दरअसल, आज कल हम एक दूसरे से बात नहीं कर रहे हैं।

कुँवारी

कुँवारी लड़की (भगवान से प्रार्थना करते हुए बोली)– हे प्रभो, मुझे अपने लिए कुछ नहीं चाहिए। बस कृपा करके मेरी माँ को एक, केवल मात्रा एक अमीर और सुंदर सा दामाद दे दो, बस।

पहली बार

चंदूलाल– वो सुंदर लड़की मुझको देखकर मुस्कुरा रही है।

गुलाबोरानी– वो तो बस मुस्कुरा रही है, मैंने तो जब तुझे पहली बार आपको देखा तो तीन दिन तक मेरी हँसी नहीं रुकी थी!

प्रॉमिस

डॉली– मैं एक बात बताती हूँ लेकिन प्रॉमिस मी, कि किसी से नहीं कहोगी।

रिया ने भोलेपन से कहा– ठीक है, मैं तो किसी से नहीं कहूँगी मगर जिसे मैं बताऊँगी, उसने कह दिया तो...?

कठोर श्रम का फल

जज– तुम्हारी शक्ल कुछ जानी पहचानी लगती है!

मुल्ला– जनाब मैं आपकी पत्नी को दो साल से गाना सिखाने का कठोर श्रम कर रहा हूँ!

जज– अच्छा तो वो संगीत शिक्षक तुम हो? पाँच साल कठोर श्रम सहित कैद!

केक

चंदूलाल– ये तुमने केक पर बल्ब क्यों लगाया?

मुल्ला– 60 मोमबत्तियों को लगाने में दिक्कत हो रही थी तो सोचा 60 वॉट का बल्ब ही लगा दूँ।

बहरी

चंदूलाल– ऐसा लगता है वो लड़की ऊँचा सुनती है। मैं कुछ और कहता हूँ... वो कुछ

और हीं बोलती है।

मुल्ला– वो कैसे?

चंदूलाल– मैंने कहा 'आई लव यू', तो वह बोली मैंने कल ही नए सैण्डल खरीदे हैं।

नाइट क्लब

एक प्रेमी गर्लफ्रेंड के साथ नाइट क्लब गया। डांस के दौरान गर्लफ्रेंड के कान में कहा, आई लव यू डार्लिंग।

प्रेमिका ने खुश होकर कहा– आई लव यू टू।

प्रेमी– जोश में आकर फिर बोला, डार्लिंग आई लव यू थ्री।

बातचीत

एक पड़ोसी दूसरे से– आज से तुम मुझसे बात मत करना।

दूसरा– क्यों? ऐसा क्या कर दिया मैंने।

पहला– कल तुमने मेरी प्रेमिका को आँख मारी थी।

दूसरा– अरे वो तो कल मारी थी यार। आज थोड़े ही मारी है। आज तो केवल चुंबन लिया है।

गिफ्ट

चंदूलाल– मुझे अपनी गर्लफ्रेंड को कोई गिफ्ट देना है, क्या दूँ?

मुल्ला– यार ऐसा कर एक 'गोल्ड रिंग' दे दे।

चंदूलाल– ये नहीं...! कोई बड़ी चीज बता।

मुल्ला– तो फिर एक एमआरएफ का टायर दे दे।

दो दोस्त

एक दोस्त ने दूसरे से कहा– यार, मरने के बाद हम स्वर्ग जाएँगे या नरक?

दूसरा– तुम्हें जहाँ अच्छा लगे चले जाना। पीने के बाद मुझसे तो कहीं आया–जाया नहीं जाता।

गर्लफ्रेंड

क्लास में पढ़ाई के दौरान टीचर ने छात्र से पूछा– यदि तुम्हारे पास 12 चॉकलेट हैं, उनमें 3 मीना को, 4 शीना और 5 रीमा को दे दीं, तो बताओ तुम्हें क्या मिलेगा?

छात्र– सर, तीन नई गर्लफ्रेंड्स मिलेंगी।

सम्यक् लेन–देन

एक छात्र ने परीक्षा में 100 रुपए का नोट उत्तर पुस्तिका के साथ रखा और कॉपी पर लिख दिया– 'एक रुपया प्रति नंबर'।

कॉपी जाँचने वाले ने 81 रुपए छात्र को वापस भेज दिए और नीचे लिखा 'आपको 19 नंबर मिले।'

कंकाल

एक छात्र से टीचर ने पूछा– बताओ, कंकाल मतलब क्या होता है?

छात्र– सर, कंकाल मतलब एक आदमी, जो डाइटिंग तो शुरू करता है, लेकिन फिर उसे बंद करना भूल जाता है।

कॉफी

भिखारी – साहब! बारह रुपए दे दो, कॉफी पीनी है।

साहब– लेकिन कॉफी तो 6 रुपए की आती है?

भिखारी – साहब मेरी एक गर्लफ्रेंड भी तो है।

साहब– वाह, भिखारी होकर भी गर्लफ्रेंड बना ली।

भिखारी– नहीं साहब, गर्लफ्रेंड ने भिखारी बना दिया!

बैंक

सोनीपत में चंदूलाल ने सेविंग अकाउंट खोलने के लिए स्टेट बैंक से फॉर्म लिया और सीधे दिल्ली के लिए रवाना हो गया– क्योंकि फॉर्म में लिखा था, कृपया फॉर्म 'कैपिटल' में भरें।

बेजोड़ जोड़ी

शिक्षक– बेटा, आज मौखिक परीक्षा के दिन एक काला और एक लाल जूता पहनकर स्कूल क्यों आए हो? जल्दी घर जाओ, बदलकर आओ।

फजलू– सर, कोई फायदा नहीं, घर में भी एक काला और एक लाल जूते की जोड़ी ही पड़ी है।

चुड़ैल कौन?

एक बार मुल्ला नसरुद्दीन अपनी बीवी के साथ होटल में गया तभी एक सुंदर महिला ने मुस्कुराकर नसरुद्दीन से हैलो किया।

बीवी आग बबूला होकर बोली– कौन थी वो चुड़ैल?

नसरुद्दीन– बेगम, तुम मेरा दिमाग खराब मत करो। मैं पहले ही परेशान हूं क्योंकि वो भी यही सवाल तुम्हारे बारे में पूछेगी। वह बेचारी मासूम औरत नहीं जानती कि मैं शादीशुदा हूं।

सब कुछ नया चाहिए

चंदूलाल जी के मकान में आग लग गई और पूरा का पूरा घर जल गया। दूसरे दिन बीमा कम्पनी से एजेंट आया और नुकसान का पूरी तरह से जायजा लेकर चंदूलाल से बोला– 'हमारी बीमा कंपनी की नीतियों के अनुसार जैसा आपका मकान था, हम वैसा ही मकान, वैसे ही मैटीरियल से नया बना कर दे देंगे। हम आपको नगद धन नहीं दे सकते।

चंदूलाल सख्त होकर बोले, 'यदि आपकी कम्पनी की यही नीति है, तो आप मेरी पत्नी का बीमा निरस्त कर दीजिए।'

गधा कौन?

एक आदमी अपने कुत्ते के साथ घूमने जा रहा था। राह में एक अन्य व्यक्ति ने पूछा – 'गधे के साथ घूमने जा रहे हो क्या? '

पहला आदमी बोला, 'अंधे हो क्या? दिखता नहीं, कुत्ता है, गधा नहीं!'

दूसरा व्यक्ति कुटिल मुस्कान लिए बोला, 'क्षमा करें मैंने आपसे नहीं पूछा है, कुत्ते से पूछा है।'

दुर्व्यसनहीनता का गर्व

'मुल्ला, मेरा सिर बहुत जोर से दुखा करता है, कोई इलाज बताइये' एक नये मरीज ने कहा।

'क्या आप सिगरेट बहुत पीते हैं? ' मुल्ला नसरुद्दीन ने पूछा।

'नहीं, मैं तम्बाखू को हाथ तक नहीं लगाता, शराब नहीं पीता और सब काम नियमित समय पर करता हूं। अपने जीवन में मैंने धर्मशास्त्रों में की गई किसी भी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया है।'

'तब आपकी बीमारी का एक ही कारण हो सकता है,' नसरुद्दीन बोला, 'कि अपनी दुर्व्यसनहीनता के गर्व से आपका सिर फिर गया है।'

परमात्मा से बेईमानी

मुल्ला नसरुद्दीन नदी में नहा रहा था। स्नान के पहले उसने कहा। 'या खुदा! यदि मुझे एक रुपया मिल जाये तो तेरे नाम पर चवन्नी की शीरनी चढ़ाऊंगा।'

संयोग की बात कि घर लौटते समय उसे राह में एक रुपया मिल गया। मुल्ला रुपया

लेकर बड़ा चिंतित बाजार पहुंचा। चिंता थी कि अब चवन्नी की शीरनी चढ़ानी पड़ेगी। उसने बहुत कोशिश की फिर भी रुपया घिसा–पिटा था और इसलिए पच्चतर पैसे में ही चला। तब नसरुद्दीन खूब प्रसन्न होकर बोलाः 'या खुदा! तू भी एक ही चालाक निकला, अपनी चवन्नी (पच्चीस पैसे) पहले ही काट लिये।'

आदमी की बेईमानी का कोई अंत नहीं है। परमात्मा के साथ भी वह बेईमानी में कोई कसर नहीं रखता है।

जीवन झूठ है

चुनाव का दिन निकट आ गया था और मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी का नाम मतदाताओं की सूची में नहीं निकला तो वह बहुत भिन्नाई। मुल्ला ने उसे बहुत समझाया, पर उसने एक न मानी तो मुल्ला को उसे लेकर बड़े चुनाव–अधिकारी को पास जाना ही पड़ा। चुनाव–अधिकारी ने जांच पड़ताल की और कहाः 'माफ कीजियेगा, पर आपका नाम तो सरकारी सूची में मरे हुए व्यक्तियों की सूची में है।'

'क्या? ' मुल्ला की पत्नी चीखी, 'मैं इतनी बड़ी जिन्दा खड़ी हूं और . . . .'

तभी नसरुद्दीन ने अपनी पत्नी को डांटा और कहा : 'क्या ज़बान लड़ा रही हो, इतने बड़े अधिकारी क्या झूठ बोलेंगे।'

गलत से सही का आभास

मुल्ला नसरुद्दीन से किसी ने पूछा : 'सफलता का रहस्य क्या है? '

'सही निर्णय पर काम करना,' नसरुद्दीन ने कहा।

'लेकिन सही निर्णय किये कैसे जाते हैं? '

'अनुभवों के आधार पर।'

'और अनुभव किस प्रकार प्राप्त होते हैं? '

नसरुद्दीन ने कुछ सोचा और फिर कहा : 'गलत निर्णयों पर काम करके।'

जीवन का मूल्य – पत्नी की नजर में

मरीज बोला : 'मुल्ला, मुझे कहते हुए दुख होता है, किंतु मेरी पत्नी सोचती है कि आप मेरे इलाज की जो फीस ले रहे हैं वह काफी अधिक है।'

'लेकिन जनाब,' पूछा मुल्ला नसरुद्दीन ने, 'क्या आप भी अपने जीवन का मूल्य अपनी पत्नी की तरह की कम लगाते हैं? '

भगवान की देन

बहुत देर से एक स्त्री मुल्ला नसरुद्दीन को अपने पति की बीमारी के संबंध में बता रही

थीं। 'मुझे डर है मुल्ला, कि उनके दिमाग में कुछ गड़बड़ हो गई है। मैं घंटों तक उनसे बातें करती रहती हूं और फिर देखती हूं कि उनके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ा है।'

'यह कोई बीमारी नहीं है,' ऊबा हुआ मुल्ला बोला, 'बल्कि यह तो भगवान की देन है।'

मग्नता में बाधा

मुल्ला नसरुद्दीन जब अपने विचारों में मग्न होता था, तो वह किसी तरह का व्यावधान पसंद नहीं करता था। और कोई उसकी मग्नता में बाधा पहुंचाता तो वह बुरी तरह बरस पड़ता था। एक रात उसकी पत्नी सिनेमा का अंतिम शो देख कर बड़ी देर से लैटी। उस समय मुल्ला अपने विचारों में मस्त था। वह चुपके से अपने कमरे में चली गई, पर वहां अपनी सारी पेटियां खुली देख कर एकाएक चिल्ला पड़ी, 'अरे, सुनते हो, मैं तो लुट गई, चोर सब कुछ लेकर भाग गया है ......'

उसकी चिल्लाहट सुन मुल्ला का माथा गर्म हो उठा और कमरे में आकर वह झल्ला कर बोला : 'बदतमीज औरत, जब चोर भी मेरा ख्याल रखते हुए इतनी शांति रख सका, तो क्या तू नहीं रख सकती? '

मूछों का फर्क

मुल्ला नसरुद्दीन अचानक ही सड़क पर खड़ा हो किसी अजनबी आदमी को घूरने लगा। उस आदमी ने परेशान हो पूछा : 'आप क्या देख रहे हैं?'

मुल्ला ने कहाः 'अगर मूछों का फर्क न होता तो तुम्हारी शक्ल बिल्कुल मेरी पत्नी से मिलती।'

'परन्तु मेरे तो मूछें नहीं हैं।' उस आदमी ने कहा। नसरुद्दीन ने कहाः 'वही तो मैं गौर कर रहा हूं। मेरी पत्नी के हैं।'

शुरुआत सदा दूसरा ही करता है

'क्या तुम अपना कुत्ता बेचने की कृपा करोगे, नसरुद्दीन?' पड़ोसी ने पूछा मुल्ला नसरुद्दीन से, 'कल मेरी पत्नी को गाने का अभ्यास रोक देना पड़ा, क्योंकि वह पूरे समय गुर्राता रहा।'

'माफ कीजिये,' कहा नसरुद्दीन ने, 'शुरुआत सदा आपकी पत्नी ही करती है।'

सपनों में गुलछर्रे

'मुल्ला, आखिर तुम इतने परेशान क्यों हो? ' एक मित्र ने पूछा मुल्ला नसरुद्दीन से, जो कि काफी हाउस में बड़ी देर से अत्यंत चिन्तामग्न बैठा था।

'रात मैंने एक सपना देखा है,' मुल्ला ने कहा। 'सपने में मैंने देखा कि पेरी पत्नी किसी

अन्य पुरुष के साथ गुलछर्रे उड़ा रही है।'

'लेकिन इसमें परेशान होने की क्या बात है?' मित्र ने कहा, 'ऐसे सपनों में बेवकूफ़ी के सिवा कुछ नहीं होता।'

'तुम भी क्या बातें करते हो?' मुल्ला बहुत नाराज हुआ? 'जब मेरे सपनों में वह ऐसी हरकतें करती है, तो अपने सपनों में क्या नहीं करती होगी?'

गलतफहमी

'क्यों महानुभाव, क्या यह आपका ही बच्चा है जो मेरा कोट बालू में गाड़ रहा है?' समुंद्र किनारे खड़े मुल्ला नसरुद्दीन से एक सज्जन ने अत्यंत तीखे स्वर में पूछा।

'जी नहीं, वह तो मेरा भतीजा है,' मुल्ला ने अत्यंत नम्रतापूर्वक कह कर दूसरी ओर इशारा किया? 'मेरा बच्चा तो वह रहा जो आपके जूतों में पानी भर रहा है।'

बंदर की संतान

मुल्ला नसरुद्दीन सृष्टि के निर्माण की कहानी सुना रहा था। एक छोटा बच्चा जो कि एक विचारक का पुत्र था, खड़ा होकर बोलाः 'लेकिन मेरे पिताजी तो कहते हैं कि हम सब बंदर की संतान हैं।

जो नहीं जानता है स्वयं को पहले, दूसरों को कैसे जान सकता है?

मुल्ला नसरुद्दीन के मकान के पीछे ही था एक मदिरालय। एक बार उसमें एक लाश मिली, जिसका सिर कटा हुआ था। जब पुलिस तहकीकात करने आई, तब उसने मुल्ला नसरुद्दीन को भी पहचानने के लिए बुलाया। मुल्ला ने लाश का बहुत गहरा निरीक्षण किया और तब बोलाः 'मैं इसे भली-भांति पहचानता हूं क्योंकि यह हमेशा मदिरालय में शराब पीने आया करता था,' और तब मुल्ला ने अचानक अपने सिर को ठीक से टटोला और फिर मदिरालय में लगे दर्पण में जाकर स्वयं को गौर से देखा और कहाः 'लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि इसके सिर था या नहीं, क्योंकि आज के पूर्व मुझे स्वयं के सिर का भी कोई पता नहीं था।'

बिना नाप के कपड़े

एक दर्जी ग्राहकों के कपड़े लेकर भाग गया। सारे ग्राहक इकठ्टे हुए और अपनी-अपनी दुख-कथा सुनाके रोने लगे। मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा, वह बदमाश मेरा कोट ले गया। ढब्बूजी बोले, साला मेरा नया-नया पैंट ले गया। मैंने तो बस बटन लगाने के लिए ही उसे दिया था। चंदूलाल ने अपनी चांद पर हाथ फेर कर कहा, मैंने अपनी पीढ़ियों से चली

आ रही परंपरागत टोपी उसे दी थी, थोड़ी सी रफू करने के लिए, मैं तो लुट गया हाय! विचित्तर सिंह ने अपनी मूछों को मरोड़ते हुए कहा, हरामजादा मिल भर जाए, उसे मैं जिंदा नहीं छोडूंगा, मेरा तो उसने सत्यानाश कर दिया। दोस्तों ने पूछा, आपका क्या ले गया? विचित्तर सिंह जी बोले, वह मेरा नाप ले गया। अब मैं कपड़े किससे बनवाऊं? और कैसे बनवाऊं?

उल्टा सीधा सच्च

विचित्तर सिंह अपने मित्र प्यारा सिंह के साथ पहली बार बंबई आए और एक होटल में गये। वे जिस होटल के टेबल पर बैठे थे, वहां एक गिलास उल्टा कर रखा था। विचित्तर सिंह के मित्र प्यारा सिंह ने कहा, हद हो गयी, इस गिलास का तो मुंह ही नहीं है! विचित्तर सिंह ने गिलास उठाया, पलट कर देखा और भी अधिक आश्चर्य से बोले, ओ जी गजब है, कमाल है जी, इस गिलास में तो पेंदी भी नहीं है!

अब मामला कुछ गंभीर

विचित्तर सिंह और प्यारा सिंह खूब पीकर लौट रहे थे। तभी प्यारा सिंह नाली में गिर पड़े। विचित्तर सिंह ने उन्हें उठाते हुए कहा, उठ यार, उठ, तेरा कसूर नहीं है, ये साले नगरपालिका वाले रात को नालियां उठा कर सड़क पर बीच में रख देते हैं।

कोई फरक नहीं पड़ता

विचित्तर सिंह अहमदाबाद गये। एक पतली और एक चौड़ी टांग वाली पैंट, खूबसूरत कोट और नयी चमकदार जूतियां पहने नशे में धुत वे अहमदाबाद की सड़कों पर भ्रमण करते रहे; कई जगह गिरे, ठोकरें खाई और अंततः एक जगह नशे में बिल्कुल धुत होकर चारों खाने चित गिर पड़े। एक गुजराती भाई आया और अकेले में इस मदहोश आदमी को पाकर उसके महंगे जूते और कोट उतार ले गया और अपने फटे-पुराने जूते विचित्तर सिंह को पहना गया। घंटे भर बाद जब थोड़ा होश आया, तो देखा कि एक कार बिल्कुल उसके सामने खड़ी पों-पों-पों-पों कर रही है। कार के ड्राइवर श्री अहमक अहमदाबादी ने खिड़की में से झांक कर कहा, ओए, रास्ते से हट जा! जानता नहीं मैं कौन हूं? तेरी टांगों पर से कार चढ़ा दूंगा। विचित्तर सिंह ने एक नजर अपने पैरों पर डाली और जवाब दिया, चढ़ा दे, चढ़ा दे, यहां डर किसको पड़ा है; अरे, ये मेरी टांगें ही नहीं है। मेरी टांगे तो नयी जूतियों वाली थीं।

मेरी तो भैण लगती है!

विचित्तर सिंह साइकिल पर तेजी से भागे जा रहे थे। पीछे कैरियर पर एक स्त्री बैठी हुई थीं। अचानक हवा के तेज झोंके में स्त्री के हाथ से रूमाल छूट कर गिर गया। एक दूसरे

व्यक्ति यह देख रहा था, चिल्लाकर बोला ओए, तेरी बीबी का रूमाल उड़ गया। साइकिल रोक! इस पर विचित्तर सिंह ने क्रोध भरी निगाहों से पीछे मुड़ कर देखा और जवाब दिया, ऐ जरा सोच–समझ कर जबान खोला कर! शर्म नहीं आती, बदतमीज, इसको मेरी बीबी कहता है! अरे, बीबी होगी तेरी, हरामजादे, मेरी तो भैण लगती है!

शादी और प्रेम

विचित्तर सिंह की प्रेमिका ने उससे कहा, क्या तुम शादी के बाद भी मुझे इतना ही प्यार करोगे? विचित्तर सिंह ने कहा, अवश्य, अरे निश्चय! सच बात तो यह है कि शादीशुदा औरतों पर जान छिड़कता हूं।

सिर और पैर का र्दद एक समान अर्थात बौना

सर्कस के एक मैनेजर से एक दर्शक ने पूछा, 'आप कैसे कह सकते हैं कि आपके सर्कस का बौना संसार का सबसे छोटा बौना है? '

'वह तो है'– मैनेजर बोला– 'जब उसके पांव में दर्द होता है तो वह समझता है कि सिर में दर्द हो रहा है।'

एक गलती जीवन भर का गिला

मैंने मुल्ला नसरुद्दीन से पूछा कि स्त्रियां आपको नमस्कार करती हैं, आप जवाब क्यों नहीं देते? उन्होंने कहा, बीस साल पहले एक स्त्री को जबाव दिया था, उसका फल अभी तक भोग रहा हूं। अब और नहीं! अब मैं जवाब ही नहीं देता! एक दफा भूल कर ली, वहीं बहुत है! अब तो इससे ही किसी तरह बच जाऊं तो काफी है! परन्तु दिखता नहीं, कोई आशा भी नजर नहीं आती! यह मेरी पत्नी तो मुझे मारकर ही मरेगी!

भेड़ें भीड़ में चलती हैं

एक स्कूल में एक शिक्षक ने अपने एक विद्यार्थी से पूछा कि तेरे घर में तो भेड़ें हैं, एक सवाल का जवाब दे। अगर बाड़े में दस भेडें हैं और एक भेड़ बाड़े के बाहर निकल जाए, तो कितनी पीछे बचेंगी? उस लड़के ने कहा, एक भी नहीं बचेगी। शिक्षक ने कहा, तू कुछ होश की बातें कर! मैं कह रहा हूं कि एक भेड़ बाहर निकले और दस भेड़ें बंद हैं! तूने प्रश्न सुना कि नहीं? उसने कहा, मैंने प्रश्न सुना। तो उसके शिक्षक ने कहा, तुझे गणित आता है कि नहीं फिर? इतना भी गणित नहीं आता सीधा–सा कि जब एक भेड़ बाहर निकलेगी तो कितनी पीछे बचेंगी? उस लड़के ने कहा, गणित की फिक्र करूं कि भेड़ों की फिक्र करूं! मेरे घर में भेड़ें हैं। यह प्रश्न आप किसी उससे पूछना जिसके घर में भेड़ें न हों; तो वह कहेगा, नौ बचेंगी; क्योंकि वह सिर्फ गणित को समझ कर चलेगा। मेरी मजबूरी यह है कि मैं भेड़ों को

जानता हूं। अगर एक बाहर कूद गयी, तो बाकी नौ भी कूद जाएंगी। भेड़ें तो अंधी होती हैं, भीड़ में चलती हैं। एक भेड़ चली की बाकी भेड़े भी चल पड़ी। एक भेड़ गई की बाकी भी गईं।

कोउ समझे जब सभी सयाने

मुल्ला नसरुद्दीन के गांव में एक हाथी बिकने आया। मुल्ला ने पहले कभी हाथी नहीं देखा था। वह भी हाथी देखने बाजार में पहुंचा। वह कभी हाथी को सूड़ की ओर जाकर देखता और कभी पूंछ की ओर। हाथीवाला समझा कि यह बड़ा पारखी है, और ऐसा न हो कि कोई ऐब ढूंढ निकाले और हाथी न बिके। सो उसने चुपचाप सौ रुपये की थैली निकाली और मुल्ला को दे दी। मुल्ला थैली घर रख आया और आकर फिर वैसा ही करने लगा। हाथीवाले ने डर कर फिर उसे सौ रुपये की थैली दे दी। लेकिन मुल्ला थैली रख कर पुनः लौट आया और लगा हाथी के चारों ओर चक्कर काटने। तब तो हाथीवाले ने झुंझलाकर उससे कहा : 'बताओ तो कौन सा ऐब ढूंढ रहे हो? ' मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा : 'मैं जानना चाहता हूं कि इसका मुंह किधर है?'

(मंदिर में खड़े लोगों को देख कर यह मत समझ लेना कि वे परमात्मा को ही खोजने के लिए वहां गये हैं।)

घूंघट की आड़ में

एक अधेड़ अवस्था की स्त्री मुल्ला नसरुद्दीन के पास पहुंची और बोली : 'मुल्ला, अपनी किसी दवा से मेरा चेहरा सुन्दर बना दीजिए। और बताइये कि आपकी फीस क्या होगी? '

मुल्ला नसरुद्दीन ने स्त्री का चेहरा गौर से देखा और कहा : 'कार्य अति कठिन है। भगवान से ही टक्कर लेनी होगी। फिर भी मैं कोशिश करुंगा। हां फीस होगी पांच हजार रुपये।'

स्त्री आश्चर्य से बोली : 'मुल्ला, यह तो बहुत ज्यादा है। कोई सस्ता नुस्खा नहीं है? '

मुल्ला बोलाः 'है क्यों नहीं? बिल्कुल है। आप घूंघट काढ़ना शुरू कर दीजिए।'

कृपया सहायता भी ध्यान से कीजिए

'माफ कीजिये' पूछा मुल्ला नसरुद्दीन ने 'क्या आप ही वह सज्जन हैं जिन्होने कल मेरे लड़के को नदी में डूबने से बचाया था? '

उन सज्जन ने विनम्र बनते हुए कहाः 'जी हां। लेकिन यह तो मेरा फर्ज था, आप उस बात को भूल जाइये।'

मुल्ला ने तेजी से कहाः 'क्या कहते हैं भूल जाइये! मैं पूछता हूं की लड़के की टोपी कहां है?'

मौत को बुलावा

मरीज के पास मुल्ला के पहुंचते ही मरीज कराहते हुए बोलाः 'मुल्ला! मुझे बहुत पीड़ा हो रही है। मैं उसे सहन नहीं कर सकता और मैं मर जाना चाहता हूं।'

मुल्ला नसरुद्दीन ने इतमिनान से कहाः 'तुमने बहुत अच्छा किया जो मुझे बुलवा भेजा!'

स्पेशलाइज़्ड डाक्टर

एक आदमी मुल्ला नसरुद्दीन के पास आया। 'मुल्ला', उसने कहा, 'मुझे बहुत जोर का जुकाम और सर्दी है।'

मुल्ला बोलाः 'जाकर झील के बर्फीले ठंडे पानी में स्नान करके उघाड़े बदन खुली हवा में घंटे भर बैठे रहो।'

उस आदमी ने हैरानी से पूछाः 'क्या इससे मेरा जुकाम और सर्दी ठीक हो जायेगी? '

मुल्ला बोलाः 'नहीं। मुझे खेद है कि सर्दी की मेरे पास कोई दवाई नहीं है। लेकिन यदि आपको निमोनिया हो जाए तो उसकी रामबाण दवा मेरे पास है।

हंसने से मिलता है मानसिक स्वास्थ्य

प्रसिद्ध स्टानफोर्ड मैडिकल स्कूल, अमरीका के मनोवैज्ञानिक डॉ। विलियम फाय के अनुसार हंसने से रोगी स्वस्थ होते हैं और जो रोगी हंसते नहीं है, उनका रोग बढ़ जाता है। इसीलिए रोग निवारण का अचूक उपाय है हंसना।

सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक नार्थन कर्जिस ने अपनी पुस्तक Anatomy of an Illness में लिखा है कि 20 मिनट की उन्मुक्त हंसी के बाद हम दो घण्टे की चैन की नींद सो सकते है। हंसना सकरात्मक सच का प्रतीक है और हम सभी जानते हैं कि सकारात्मक सोच मानसिक और शारीरिक तौर पर हमें स्वस्थ रखती है।

एक नए अध्ययन के अनुसार हंसने की बात महज सोचने से ही आदमी अच्छा महसूस करने लगता है। हास्य फिल्में देखने से 21 प्रतिशत अधिक बीटा–एण्डोरफिन और 89 प्रतिशत अधिक मानव विकास हारमोन पैदा होता है।

फीलगुड के ये तत्व फिल्म देखने के 12–14 घण्टे बाद भी इसी स्तर पर कायम रहते हैं।

हंसी करे मोटापा कम

जापान के ओसाका स्थित मोरी गूवीं अस्पताल में एक अध्ययन से पता चला है कि हंसने से मां के दूध में ऐसे हारमोन बढ़ जाते हैं जो बच्चे को शांति, सुख और आनन्द की अनूभूति देते हैं और त्वचा एलर्जी से दूर रखते हैं। अथवा एलर्जी के प्रभाव को कम कर देते है।

एक हास्य फिल्म देखने के बाद जब मां अपने बच्चे को दूध पिलाती है तो ऐसा होते देखा गया है। अमरीका में नैशविले विश्वविद्यालय में एक अध्ययन में यह पाया गया कि हंसने से मोटापा भी कम होता है। 1 मिनट रोजाना हंसने से आधे मील सैर का लाभ मिल जाता है – ज्यादा कैलोरी खर्च होती है जिसके परिणाम स्वरूप वर्षभर में 2 किलो वज़न कम हो जाता है।
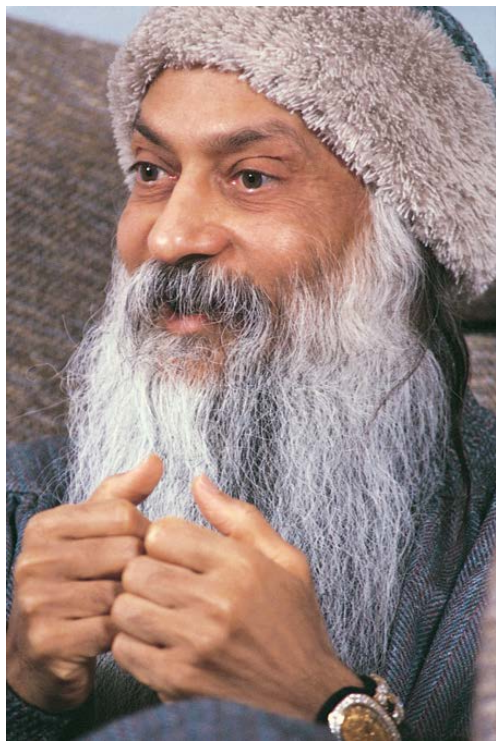
हंसने से बढ़ती है आयु

जब हम हंसते है तो हमारी श्वांस प्रश्वांस की गति भी तीव्र होती है और हमें वही लाभ मिलता है जो कपालभाति और भस्त्रिका प्राणायाम से मिलता है।

जब हम मुख खोलकर हंसते हैं तो तेजी से कार्बन डायक्सायड बाहर निकलती है और हमें प्लाविनी प्राणायाम का लाभ मिलता है।

हंसने से पसीना अधिक आता है, शरीर की गन्दगी पसीने द्वारा बाहर निकलती है।

हंसने से नीरवता एकाकीपन नैराश्य भावना, थकान, मानसिक तनाव और शरीर के सभी दर्द दूर होते हैं।

हंसने से जब थकान दूर होती है तो मन एवम् शरीर में स्फूर्ति आ जाती है जिससे हमारी कार्यक्षमता बढ़ती है।

मनोवैज्ञानिक प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि जो बच्चे हंसते रहते है, वे अधिक बुद्धिमान होते है, अधिक व्यवहार कुशल होते है।

इसीलिए जापान में लोग अपने बच्चों को शैश्वकाना से ही हंसना सिखाते है, उन्हें हंसते रहने की शिक्षा देते है। शायद यही कारण होगा कि विश्वभर में सबसे ज्यादा आयु जीने वाले जापानी ही है।

3

चुटकुले सुंदर माहौल निर्मित करते हैं

मानव के इतिहास में पहली बार मैं चुटकलों का उपयोग कर रहा हूं, क्योंकि इतने सुंदर चुटकुले... और किसी ने इनका ध्यान के लिये उपयोग ही किया।

और वे चारों तरफ सुंदर माहौल निर्मित करते हैं, व्यक्ति पूरी तरह निर्भीक हो जाता है। हंसता हुआ चित्त ज्यादा निर्भीक होता है, उदास चित्त से। उदास चित्त संदेह करता है, हिचकता है, दो बार सोचता है।

हंसते हुए व्यक्ति का हृदय जुआरी का होता है, वह बस कूद जाता है। और ध्यान अज्ञात में छलांग लगाने की तो बात है। –ओशो, : द एंप्टी मिरर

ऐसे मंदिर चाहता हूँ मैं– जो नृत्य के, संगीत के, हंसने के मंदिर हों।

आज तक धर्म के नाम पर सिखाई गई है उदासी, सिखाया गया है एक बोझिल गंभीरता। सिखायी गयी है एक तरह का संताप, सिखाई गई है एक तरह की चिंता। धार्मिक होने में और उदास होने में कोई गहरा संबंध पिछले पांच हजार वर्षों से स्थापित हो गया। इस संबंध ने, इस गलत संबंध ने परमात्मा का एक द्वार बंद ही कर दिया, जिस द्वार को पार किए बिना कोई प्रभु तक नहीं पहुंचता है।

आदमी को छोड़कर शायद जगत में और कुछ भी उदास नहीं है। आदमी को छोड़कर जगत में और कुछ भी बोझिल, गंभीर नहीं है। सारा जीवन गीत गाता हुआ जीवन है। सारा जीवन रंगों में, ध्वनियों में, कितने नृत्यों में प्रकट होता है। आदमी पर बोझिल है, उदास है। यह उदासी, यह बोझिलता, यह दुख भाव, यह दबा हुआ मन, यह अपने आपको बंद कर लेना और कहीं से फूल प्रकट न हो जाए, कहीं से मुस्कराहट न प्रकट हो जाए, यह इतना

भय भाव कैसे पैदा हो गया है?

धर्मों ने, तथाकथित संतों और अंधे महात्माओं ने क्यों यह उदासी की इतनी बात प्रचलित की है? सुख के प्रति, आनंद के प्रति, अहोभाव के प्रति इतना विरोध क्यों है? असल में रुग्ण चित्त, दुखी चित्त, परेशान चित्त, ऐसे लोग ही धर्म की खोज में जाते रहे। जिनका चित्त दुखी है, पीड़ित हैं, परेशान हैं, संताप से घिरे हैं; वे ही अपने संताप, दुख और पीड़ा से छुटकारा पाने के लिए धर्म की यात्रा करते रहे हैं। स्वभावतः धर्म के जगत की भी हवा वैसी ही हो गई है जैसी अस्पतालों की होती है। और वे लोग जो उदासी, चिंता और अशांति से बचने के लिए धर्म की तरफ गए थे वे अशांति, उदासी से बच गए– ऐसा नहीं; उन्होंने धर्म को भी अशांत और उदास कर दिया।

स्वस्थ चित्त व्यक्ति, आनंदित व्यक्ति, गीत गाते हुए लोग, नृत्य करते हुए लोग, धर्म की तरफ नहीं गए। और जब तक वे लोग धर्म की तरफ नहीं जाएंगे, तब तक यह पृथ्वी धार्मिक नहीं हो सकती। जिस दिन हंसते हुए लोग धर्म के मार्ग पर बढ़ेंगे, उस दिन वह मार्ग फूलों से भर जाएगा।

नहीं, रुग्ण, अशांत और उदास चित्त खोजता है मार्ग कि मैं कैसे मुक्त हो जाऊं अशांति से, उदासी से और वही धर्म की यात्रा करने लगता है। मेरी दृष्टि में यह कोण, यह दृष्टि, यह खोज का प्रारंभिक बिंदु, यह प्रस्थान ही गलत है। अशांति कैसे कम हो, दुख कैसे कम हो इस भाव में जो धर्म के पास जाएगा वह धर्म को भी विकृत करता है, परवर्ट करता है। जाना चाहिए धर्म की खोज में कि शांति कैसे बढ़े, आनंद कैसे बढ़े, अहोभाव कैसे गहरा हो। अशांति कम हो इस दृष्टि से धर्म के पास यह नाकरात्मक दृष्टि लेकर जाना गलत है। शांति कैसे बढ़े, कैसे गहरी हो, आनंद कैसे बढ़े– दुख कैसे कम हो, यह भाव नहीं। ऊपर से देखने में ये दोनों बातें एक जैसी लगती हैं। आप कहेंगे कि दुख कम हो या आनंद बढ़े एक ही बात है। नहीं, ये दोनों बातें भाषा में एक जैसी लगती हैं, ये एक नहीं हैं।

एक आदमी के घर में अंधकार घिरा है। वह दो तरह से सोच सकता है– अंधकार कैसे कम हो और प्रकाश कैसे बढ़े? अगर उसने यह सोचा कि अंधकार कैसे कम हो तो अंधकार कैसे कम किया जाए इस दिशा में उसका चिंतन चलेगा। अंधकार को कैसे हटाया जाए, अंधकार को कैसे मिटाया जाए, अंधकार से कैसे लड़ा जाए?

और स्मरण रहे, अंधकार है ही नहीं। अगर अंधकार होता तो हम लड़ सकते थे, तोड़ सकते थे, मिटा सकते थे। जिसने अंधकार कैसे दूर किया जाए इस दिशा में खोज–बीन शुरू की, वह अंधकार पर अटक जाएगा; उसे प्रकाश का ख्याल भी आने को नहीं है; उसका चित्त अंधकार पर अपने आप केंद्रित हो जाएगा। वह सोचेगा अंधकार को कैसे मिटाऊं, कैसी तलवार ईजाद करूं, कितनी शक्ति इकट्ठी करूं कि अंधकार को निकालकर घर के बाहर कर दूं। वह मर जाएगा, अंधकार नहीं मिटा पाएगा। उसने अंधकार को मिटाने के लिए जो सीधा चिंतन शुरू किया है वह गलत है, क्योंकि अंधकार की कोई सत्ता नहीं है। इसलिए अंधकार

पर सीधे कुछ भी नहीं किया जा सकता है।

सत्ता है प्रकाश की। अंधकार सिर्फ प्रकाश का अभाव है, अनुपस्थिति है, एब्सेंस है। एब्सेंस के साथ आप कुछ भी नहीं कर सकते हैं। प्रकाश जला लिया जाए तो अंधकार मिट जाता है, अंधकार को मिटाना नहीं पड़ता। प्रकाश आ जाए तो अंधकार नहीं है। इसलिए अंधकार को मिटाने की भाषा में; निषेध की, निगेटिव की भाषा में जो लोग सोचते हैं, वे अंधकार से ही घिरे रहते हैं। अंधकार तो नहीं मिटता, वे खुद ही मिट जाते हैं और गल जाते हैं। जो सोचते हैं प्रकाश कैसे लाया जाए, प्रकाश कैसे बढ़ाया जाए, प्रकाश कैसे जलाया जाए; वे पॉजिटिव, विधायक भाषा में सोचते हैं।

आज तक का धर्म नकारात्मक, निगेटिव साइड की वजह से विकृत और गलत हो गया है। वे लोग जो कहते हैं अंधकार कैसे हटाया जाए, हिंसा कैसे छोड़ी जाए, बेईमानी कैसे छोड़ी जाए, असत्य कैसे छोड़ी जाए, वासना कैसे छोड़ी जाए, पाप कैसे छोड़ा जाए; इस भाषा में सोचने वाले जो–जो नकारात्मक बुद्धि के लोग हैं, उन लोगों ने धर्म के सारे मंदिर को घेर लिया है। अंधकार उससे नष्ट नहीं हुआ, असत्य उससे नष्ट नहीं हुआ, दुख उससे नष्ट नहीं हुआ बल्कि अंधकार से लड़ते–लड़ते वे सारी आत्माएं भी अंधकार से भर गई, उदास हो गई, दुखी हो गई, अंधेरी हो गई और उन्हीं अंधेरी आत्माओं की छाया पूरी मनुष्य जाति पर पड़ रही है।

अंधेरे को अलग करने की भाषा में सोचना विक्षिप्तता है। प्रकाश को जलाने और जगाने की भाषा में सोचना वैज्ञानिकता है।

प्रकाश जलाया जा सकता है। निश्चित ही प्रकाश के जानने पर अंधकार नहीं होता है। अंशाति भी अभाव है, अनुपस्थिति है। दुख भी अभाव है, अनुपस्थिति है। घृणा भी अभाव है, अनुपस्थिति है। वे किनकी अनुपस्थितियां हैं? ... उन्हें बढ़ाने का विचार– घृणा विलीन हो जाएगी। असत्य किसकी अनुपस्थिति है। सत्य बढ़े, विकसित हो, असत्य क्षीण हो जाएगा। अशांति किस की अनुपस्थिति है? शांति की अनुपस्थिति है। शांति जगे, विकसित हो, अशांति नहीं गई जाएगी।

मुदिता का तीसरा द्वार कहता है विधायकता, पॉजिटिव्नेस प्रफुल्लता। आनंद को खोजो, अशांति से बचने की फिक्र छोड़ो। अशांति से मुक्त होने का भाव छोड़ो, शांति को बढ़ाओ और जगाओ। नकार और निषेध की तरफ आंख भी मत दो। विधेय को, विधायक को, जो है उसको पुकारो, उसको चुनौती दो, उसको जगाओ सोने से। मुदिता का अर्थ है : पॉजिटिविटी। जीवन में एक विधायक प्रफुल्लता चाहिए। लेकिन हंसते हुए संत पैदा ही नहीं हुए, प्रफुल्लता चाहिए। लेकिन हंसते हुए संत पैदा ही नहीं हुए, प्रफुल्लित लोग पैदा ही नहीं हुए, मुस्कुराते हुए लोग पैदा ही नहीं हुए। जितना रोता हुआ आदमी हो उतना ही ज्यादा संत मालूम होता है। जितना उसके जीवन का सारा रस सूख गया हो उतना ही महान मालूम होता है। कैसा है मनुष्य। कैसा है पागलपन! हंसते हुए लोग छोटे और बोझिल मालूम पड़ते हैं

और उदास लोग ऊंचे और महान मालूम पड़ते हैं।

जिस दिन हम हंसते हुए लोगों को भी महानता की दिशा में अभिमुख कर सकेंगे; जिस दिन हम हंसने को, आनंद को, अहोभाव को भी ईश्वर का विरोधी मानने की मूढ़ता छोड़ देंगे उस दिन तीसरा द्वार खुलता है।

ऐसे मंदिर चाहता हूं मैं– जो नृत्य के, संगीत के, हंसने के मंदिर हो।

ऐसा धर्म चाहता हूं मैं– जो मुस्कुराहटों का, प्रफुल्लता का, प्रमुदित होने का धर्म हो। लेकिन रुग्ण लोगों ने घेर रखा है धर्म को। उनसे उसका छूटकारा चाहिए, रुग्ण लोगों से धर्म का छूटकारा चाहिए।

–ओशो, साधना पथ

क्या बोलेगी?

चंदूलाल– यार मुल्ला, अगर किसी कंगारू का बच्चा खो जाए तो वो क्या बोलेगी?

मुल्ला– मुझे नहीं पता, तू ही बता दें।

चंदूलाल– वो बोलेगी... आइला, किसी ने मेरा पॉकेट मार दिया।

जुगनू

बारिश के दिनों में रमेश मच्छरदानी लगाकर सो रहा था। अचानक अंदर एक जुगनू घुस आया। रमेश बोला– बड़ा ही खराब मच्छर है। मुझे लालटेन लेकर खोज रहा है।

पड़ोसी अंकल

टैक्सी से उतरते हुए युवक से पड़ोसी अंकल ने पूछा– कहाँ से आ रहे हो बेटा। कहीं बाहर गए थे क्या?

संजू– नहीं अंकल! मैं तो 'वॉक व्हेन यू टॉक' विज्ञापन से प्रभावित होकर अपनी गर्लफ्रेंड से बात करते–करते 8–10 किलोमीटर दूर तक निकल गया था...

ओके...!

चंदूलाल ने एयरपोर्ट फोन लगाकर पूछा– मुंबई से अमेरिका जाने में कितना टाइम लगता है?

रिसेप्शन पर बैठी युवती ने फोन उठाया और कहा– एक मिनट सर...।

चंदूलाल– ओके... थैंक यू मैडम! कहकर फोन रख दिया।

अंदर क्या है!

चंदूलाल बिना छिलका उतारे केला खा रहा था।

बंटू– तूने केला खाने से पहले छिलका क्यों नहीं उतारा?

चंदूलाल– क्या जरूरत है, मुझे पता है इसके अंदर क्या है!

सफाई

माँ– मैं घूमने जाने से पहले तुमसे कह कर गई थी कि कॉलेज से आने के बाद यहाँ की साफ–सफाई कर देना। और तुम बैठे–बैठे टीवी देख रहे हो?

नरेश– हाँ आपने कहा तो था... लेकिन मैं तो आज कॉलेज गया ही नहीं मां, तबसे टीवी ही देख रहा हूं।

मैसेज

चिंकी को पिछले कई दिनों से कोई मोबाइल पर तंग कर रहा था। चिंकी ने तंग आकर एक नई सिम खरीद कर नंबर बदल लिया और उसे मैसेज किया, मैंने अपना वह पुराना नंबर बंद कर दिया है। दुष्ट, अब तुम मुझे कभी भी तंग नहीं कर सकते।

चुटकुले

एक लड़की– (संता से) आप पर इतने सारे चुटकुले बनते हैं, कैसा लगता है आपको?

संता– अरे नहीं, चुटकुले तो दो–चार ही बने हैं, बाकी सब तो सच्ची कहानियाँ हैं!

प्यार...!

चंदूलाल– आई लव यू... का मतलब क्या होता है?

गुलजान– मुझे तुमसे प्यार है।

चंदूलाल– कमाल है! तुमसे इंग्लिश में एक सवाल क्या पूछ लिया, तुम्हें मुझसे प्यार ही हो गया।

रुचि किसमें?

एक दोस्त (दूसरे से)– तुम तो बहुत बड़े क्रिकेटर बनना चाहते हो ना...? वैसे तुम्हारी रुचि किसमें है? बेटिंग या बॉलिंग में।

दूसरा– मॉडलिंग में। धोनी की तरह...।

बातचीत

चंदूलाल– क्या मिसेज गुप्ता का पति मरने के बाद उसके लिए कुछ छोड़ गया है?

मुल्ला– मरने के बाद तो कुछ नहीं छोड़कर गया पर जब वह जिन्दा था तो उसे कई

बार छोड़ के गया था!

लड़का–लड़की में भेद

चंदूलाल– पता है! बस, ट्रेन और लड़की एक जैसे होते हैं, एक जाती है तो दूसरी आती है।

गुलाबो– रिक्शा, टैक्सी और लड़के एक जैसे होते हैं एक को बुलाते है तो चार आ जाते हैं।

बस–चालक

चाय पीने नीचे उतरे आदमियों ने भीड़ भरी बस में अंदर घुसने की कोशिश की, तो एक दुबले–पतले इंसान को लोगों ने धक्का देकर नीचे गिरा दिया।

वह चिल्लाया– मुझे अंदर जाने दो...

पास खड़ा यात्री बोला– यहाँ पाँव रखने की भी जगह नहीं है। तुम अंदर क्या करोगे?

वह चिल्लाया– तो फिर ठीक है, खुद ही बस चला लो। मैं बस–चालक हूं।

सलाह

दीपू– मेरी एक आदत है! मैं जो भी काम करता हूँ, उसमें पूरी तरह डूब जाता हूँ!

बिट्टू– अरे वाह...। तो तू कुआँ क्यों नहीं खोदता?

पसंद और शादी

मोना– पता है, मेरी माँ को तुम बहुत अच्छे लगते हो, वे तुम्हें बेहद पसंद करती है।

सोनू– तुम चिंता मत करो, मैं शादी तो तुम्हीं से करूँगा!

अपराध–बोध से छुटकारा

मुल्ला नसरुद्दीन भागता हुआ पोस्ट ऑफिस में घुसा और चिल्लाकर बोलाः दो दिन से मेरी झगड़ालू दुष्ट बीवी लापता है। सर, प्लीज रिपोर्ट लिखिए।

पोस्ट मास्टरः यह पोस्ट ऑफिस है। भाई साहब, पुलिस थाने जाओ।

नसरुद्दीनः ओह सॉरी, कहाँ जाऊं, खुशी के मारे कुछ समझ नहीं आ रहा! और दूसरा कारण यह है कि पांच साल पहले एक बार और वह मेले में खो गई थी। तब थाने में रिपोर्ट लिखाई थी। वो साले, पुलिस वाले चार घंटे में उसे खोजकर ले आए थे। अब भूलकर भी वहां न जाउंगा।

पोस्ट मास्टरः जब तुम उसे वापस पाना ही नहीं चाहते तो रिपोर्ट लिखाने यहां भी क्यों आए हो?

मुल्ला नसरुद्दीनः सर, अगर रिपोर्ट न लिखवाउंगा, तो 'गिल्ट फीलिंग' होगी। अपराध–बोध महसूस होगा। आप लिख लीजिए न! मुझे तसल्ली हो जाएगी!

बामुश्किल

एक जगह एक मनुष्य गुप्त रूप से शराब बेचा करता था। एक दिन उसने अपने नौकर से कहा– 'जरा देख कर तो आ आज सड़क पर कोई पुलिसमैन तो नहीं है।' लगभग दो घंटे बाद जब वह आदमी कुछ लोगों को शराब बेच रहा था, तब वह नौकर दरोगा के साथ वहां पहुंचा और बोला– 'मालिक, मैं ढूंढ़ते–ढूंढ़ते थक गया, जब कहीं पुलिसमैन नहीं मिला, तब बहुत कह–सुनकर बामुश्किल इन दरोगा साहब को ले आया।'

अधूरी नहीं, पूरी

एक प्रेमी झिझकता हुआ अपनी प्रेमिका के बाप के पास पहुंचा और बोला– 'जी, मैं आपकी लड़की का हाथ मांगने आया हूं।'

'सिर्फ हाथ नहीं मिलेगा।' उत्तर मिला– 'मांगनी है तो पूरी लड़की मांगो।'

रेडीमेड उत्तर

एक विवाहित धनी व्यापारी, जो लड़कियों से प्रेम करने में बड़े माहिर थे, किसी होटल में रुके हुए थे। होटल के नए मैनेजर को समझाते हुए बोले– 'देखो, मैं आज किसी भी लड़की से मिलना नहीं चाहता, यदि कोई लड़की आकर मेरे बारे में पूछे और कहे कि मुझे जरूरी काम है तो तुम कह देना कि ऐसा तो सभी कहती हैं।'

संयोगवशात् थोड़ी देर बाद एक सुन्दर लड़की उन महाशय से मिलने आयी। मैनेजर ने उसे व्यापारी महाशय से मिलने से रोका तो वह झल्लाकर बोली– 'तुम्हें मालूम नहीं, मैं उनकी पत्नी हूं।'

'अच्छा तो आप पत्नी हो...हा हा हा... ऐसा तो सभी लड़कियां कहती हैं।' मैनेजर का रेडीमेड उत्तर था।

सपना शादी हुए नौ साल बीत गए, परंतु पति–पत्नी में न तो कभी मनमुटाव हुआ, न कभी झगड़ा, किंतु एक दिन भोजन के समय पति ने अपनी पत्नी के स्वभाव में विचित्र परिवर्तन पाया।

पति ने बड़ी शांति से पूछा– 'आखिर क्या बात है?'

पहले तो पत्नी ने बताना स्वीकार नहीं किया, किंतु कई बार पूछने पर आंखों में आंसू भरकर कहा– 'अगर फिर कभी अपने सपने में मैंने तुम्हें किसी पराई स्त्री को, 'किस' करते देखा तो मैं जिंदगी–भर तुमसे बात नहीं करूंगी।'

कर्नल– तुमने मुझे नदी में डूबने से बचाया है यह बात मैं कल सुबह की परेड में सबको बताऊँगा।

फौजी– ऐसा मत कीजिए सर। अगर दूसरे फौजियों को पता चल गया तो वे मुझे नदी में फेंक देंगे।

कारण

टीचर– तुमने इस सवाल को हल क्यों नहीं किया, यह सवाल इतना सरल है कि इसका हल तो कोई मूर्ख व्यक्ति भी बड़ी आसानी से कर सकता है।

छात्र ने हँसकर जवाब दिया– तभी तो मैंने नहीं किया सर...!

रिकार्ड

रोगी– डॉक्टर साहब! मुझे कितने डिग्री का बुखार चढ़ा है?

डॉक्टर– एक सौ चार डिग्री।

रोगी– ठीक है। यह भी बता दीजिए कि गिनीज बुक की खातिर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के लिए कितने डिग्री का बुखार आवश्यक है?

कंजूस दानी

होटल में खाना खाने के बाद सेठ चंदूलाल और उनके मारवाड़ी मित्र उठकर खड़े हुए तो बैरे ने बिल चुकाने वाले को कोट पहनाया। बिल देने वाले व्यक्ति ने उसे टिप के तौर पर दस रुपए का नोट थमाया। बैरा खुश हो गया। चंदूलाल के समझ में कुछ नहीं आया तो उसने पूछा– अरे मारवाड़ी, तुमने टिप में दस रुपए क्यों खर्च किए? मित्र बोला– दस रुपए में इतना शानदार कोट मँहगा है क्या? पता नहीं किस बेचारे का है!

सांत्वनाओं का सत्य से क्या संबंध

मृत्यु की भयंकरता और उसके डर पर बहुत देर तक व्याख्यान झाड़ने के बाद मुल्ला नसरुद्दीन ने कहाः 'परमात्मा की कैसी अपार दया है कि मृत्यु सदा जीवन के अंत में ही आक्रमण करती है। यदि मृत्यु जीवन के आरम्भ में या मध्य में होती तो हम लोगों को कैसा कष्ट उठाना पड़ता? 'श्रोता जो पहले मृत्यु से भयभीत थे व्याख्यान के बाद सांत्वना पा शांती से घरों को लौट रहे थे, परन्तु मुल्ला को उसके मित्र ने गंभीर पाकर पूछाः 'मुल्ला! श्रोताओं को शांत कर भेजने के बाद तुम किस चिन्ता में डूबे हो? '

मुल्ला ने कहाः 'जो तथ्य मैंने श्रोताओं से कहे वे तो सब जानते हैं, परन्तु सत्य तो मैं भी नहीं जानता कि यह सांत्वना मैं श्रोताओं को दे रहा था या अपने आप को!'

सौ वर्ष तक जीने की कामना

सौ वर्ष तक जीने की कामना करने वाले एक रोगी को मुल्ला नसरुद्दीन ने सलाह दी कि वह शराब पीने, धुम्रपान करने और स्त्रियों के पीछे घूमने आदि की आदतें छोड़ दे।

'मुल्ला, तब क्या मैं निश्चय हो सौ वर्ष का हो सकूंगा?' रोगी ने अति उत्सुक्ता से पूछा।

'नहीं,' नसरुद्दीन ने उत्तर दिया, 'मगर अपने आपको सौ वर्ष का महसूस करने लगोगे।'

सभी सयाने एक मत

एक सभा में धर्मगुरु ने कहाः 'मुझे मालूम है नाम उस पुरुष का जो दूसरे आदमी की स्त्री से प्रेम करता है। अगर वह दान–पात्र में आज पांच रुपये का नोट नहीं डालेगा, तो कल उसका नाम बता दिया जायेगा।'

उस दिन दान–पात्र में बीस पांच–पांच रुपये के नोट थे, तथा एक दो रुपये के नोट के साथ यह पर्चा लगा हुआ थाः 'बाकी तीन पहली तारीख को तनखा मिलने पर – मुल्ला नसरुद्दीन।'

मूर्च्छित डाक्टर मूर्च्छित मरीज

एक स्त्री को अपने रुग्ण होने का संदेह हो गया था। वह मुल्ला नसरुद्दीन के पास गई।

मुल्ला ने उसे देख कर गंभीरता से कहाः 'सचमुच ही तुम भयंकर व्याधि से ग्रस्त हो। मैं अभी परीक्षा करता हूं। इधर आओ और इस मेज के सामने खड़ी हो जाओ।'

औरत उस मेज के सामने खड़ी हो गई।

'अब अपने दायें पैर को मेज पर रखो।'

औरत ने ऐसा ही किया।

'अब बायां पैर भी रखो।'

औरत ने ऐसा करने की कोशिश की और धड़ाम से जमीन पर गिर गई।

मुल्ला बोलाः 'देखो मैं पहले ही कहता था न कि तुम भयंकर व्याधि से ग्रस्त हो! कितने समय से तुम्हें इस तरह की मूर्च्छा आती है कि तुम खड़े–खड़े ही जमीन पर गिर जाती हो।'

अंग्रेजी में?

शिक्षक– जो आदमी सुनता नहीं, उसे अंग्रेजी में तुम क्या कहोगे? जल्दी बोलो। मैंने कल ही तुम्हें बताया था।

फजलू– सर, उसे क्या फर्क पड़ेगा, हम तो कुछ भी कह देंगे। आखिर वह बेचारा तो बहरा है न!

अथ हास्य–पुराणम् कथा– मेरा भारत महान!

'प्रत्येक बात के पक्ष में तर्क जुटाए जा सकते हैं। तर्कों से सत्य सिद्ध नहीं होता। केवल इतना सिद्ध होता है कि जो जीत गया वह तर्क करने की कला में ज्यादा निष्णात है। जो हार गया वह तर्क करने में उतना कुशल नहीं है।' ओशो के इस वक्तव्य को प्रमाण मुझे भरतू ने दिया।

'भिक्षु श्री श्री भारत भूषण, एम.ए., एल.एल.बी.' का बोर्ड लगाकर भीख मांगने वाला वह तार्किक बेरोजगार नवयुवक बैंक की शाखा के सम्मुख प्रायः दिखाई देता है। बैंक के आसपास की एक फर्लांग दूरी तक कोई अन्य भिखारी भीख नहीं मांग सकता। भारत भूषण किस प्रकार बैंक–एरिया का सेल्फ–अपाइंटेड ऑथोराइज्ड भिखमंगा बना, इस संबंध में अनेक किवदंतियां प्रचलित हैं। ज्यादातर लोग मानते हैं कि उसे यह मोहल्ला अपने पिता की वसीयत के रूप में मिला। भारत के पिता मोहनदास गंजेड़ी शहर के प्रतिष्ठित भिखारियों में से थे, तथा दिन में बैंक के समक्ष, सुबह–शाम रेलवे स्टेशन पर, एवं ओवर–टाइम में बस स्टैंड पर लोगों को दान देने हेतु मजबूर करके उनके स्वर्ग की टिकिट बुक कराते थे। मरणोपरांत बैंक का क्षेत्र बड़े बेटे 'भरतू' को और स्टेशन व बस स्टैंड छोटे सुपुत्र 'पाकू' को बंटवारे में प्राप्त हुआ। मगर बाद में स्टैंड वाला दरिद्र मोहल्ला लड़–झगड़कर मोहनदास गंजेड़ी के एकमात्र दामाद 'बंगू' ने हड़प लिया।

एक दिन मैंने कुतूहलवश भरतू से पूछा– 'तुम्हें शर्म नहीं आती सड़क के किनारे भीख मांगते? '

वह बोला– 'इसमें भला शर्म कैसी! अरे स्वामीजी, सड़क के किनारे बैठकर नहीं तो क्या एयर–कंडीशंड दफ्तर खोलकर भीख मांगू? '

'मेरा मतलब है कि भीख मांगने की जगह कुछ मेहनत का काम क्यों नहीं करते? '

'यह मेहनत नहीं है क्या? एक दिन आप मांगकर देखो तो पता चलेगा कि कितनी कड़ी मेहनत का काम है! शर्म तो सरकारी कर्मचारियों को आनी चाहिए जो बिना परिश्रम किए इतनी तनख्वाह पाते हैं, ऊपर से घूसखोरी भी करते हैं, छिः छिः... सुनते हैं कि आजकल इतनी बेईमानी फैल गई है कि रिश्वत देने पर भी काम नही होता।'

'हां भरतू,' मैने स्वीकृतिपूर्वक सिर हिलाया – आजकल ईमानदार अफसर की परिभाषा बदल गई है। जो आदमी रिश्वत खाकर काम कर दे उसे ईमानदार समझो।'

'भ्रष्टाचार से तो हमारा भिक्षु समाज भी नहीं बच पाया स्वामीजी। हमारे पूर्वजों के समय सीनियरिटी और अपंगता–दुर्बलता आदि गुणवत्ताओं के आधार पर शहर के भिक्षाटन

क्षेत्र बंटे थे तथा यदा–कदा ट्रांसफर भी होते थे; मगर जब से भिखारियों में पार्टीबाजी शुरू हुई है तब से रंगदारी, नेतागिरी, दादागिरी, और कमीशनखोरी का बोलबाला हो गया है। मैं तो 'युवा भिखारी संघ' का नेता हूं, इसलिए बैंक के इस 'कम मेहनत में अधिक आमदनी' वाले मोहल्ले में स्थापित हूं, क्योंकि बैंक आने–जाने वालों की जेब हमेशा गर्म रहती है? '

'कितनी पार्टियां हैं तुम्हारे समाज में? '

'मुख्य रूप से तो तीन दल हैं, किन्तु धूमिल छवि वाले छुटभैये नेताओं ने प्रतिदिन नये–नये दलों का निर्माण कर भिखारियों में दलदल यानी कीचड़ मचा दी है। भिक्षुओं की महान परंपराएं, संस्कृतियां, गौरवशाली स्मृतियां सब खतरे में पड़ गई हैं। भाभिपा, रायापा और दासंस, ये तीन मुख्य...'

'इन तीनों के फुल–फार्म्स क्या हैं? ' मैंने आश्चर्य से पूछा।

वह बोला–'भारतीय भिक्षु पार्टी, राष्ट्रीय याचक पार्टी और दान संचायक समाज। परंतु भाचोपा और भाडापा यानी भारतीय चोर पार्टी और भारतीय डाकू पार्टी के इशारों पर भी हमें नाचना पड़ता है। भाजेस अर्थात भारतीय जेबकतरा संघ वाले अलग अपनी टांग अड़ाते हैं। नए भिखारी का जमना, नए अफसर के जमने जैसा ही कठिन कार्य होता हैः खूब रैगिंग और टांग–खिंचाई होती है। सत्ता पार्टी वाली सरकार हम लोगों से इन्कम–टैक्स के समान ही 'भिक्षाटन टैक्स' वसूलती है। सीनियर भिखारी गुंडागर्दी करते हैं, बाल भिखारियों से आय का 50 प्रतिशत तक प्रशिक्षण–शुल्क के नाम पर लूट लेते हैं। 'इंग्लिश याचना ट्रेनिंग सेंटर' वालों ने तो बड़ी अनुदान–राशि लेनी शुरू कर दी है। परन्तु एक बात है, उनके यहां से शिक्षा–दीक्षा प्राप्त किए बच्चे अंग्रेजी बोलकर विदेशी पर्यटकों से अच्छी कमाई कर लेते हैं। कुछेक तो देश का नाम रोशन करने यूरोप–अमरीका भी चले गए हैं।'

मैंने जिज्ञासा की– 'अपने देश में कुल कितने भिखारी होंगे? '

'एक अरब के लगभग।' भारत भूषण ने उत्तर दिया।

'नहीं ... इतनी तो देश की जनसंख्या है!'

'स्वामीजी, हमारे मुल्क में कौन भिखारी नहीं है... जरा सोचिएः कोई नोट मांगता है। कोई वोट मांगता है। किसी को धन–धान्य चाहिए, किसी को ध्यान चाहिए। कोई शांति के लिए तो कोई क्रांति के लिए मरा जा रहा है। नाम भले ही कुछ हों– दान, फीस, घूस, रिश्वत, वेतन, हफ्ता, कमीशन, मुनाफा, डोनेशन, चंदा, टैक्स, पूजा, प्रार्थना, भक्ति–भावना अथवा कुछ और– जब तक मनुष्य के मन में वासना है वह भिखमंगा सा मांगता ही रहता है।'

'भरतू तुम तो बड़े दार्शनिक हो... मंदिर के सामने क्यूं नहीं बैठते? '

वहां बड़े–बड़े अमीर, पदासीन, प्रतिष्ठित–लोग तक परमात्मा के सामने गिड़गिड़ा कर घुटने टेककर मांगते हैं। उन उच्च कोटि के भिखमंगो से मांगने में मुझ तुच्छ भिखारी को संकोच सा लगता है। स्वामीजी आप बातें बहुत करते हैं, चलिए फटाफट पांच रूपये दीजिए।'

'अरे, तुम तो अठन्नी या एक रूपया मांगते थे, यह अचानक पांच रूपये कैसे? '

'मंहगाई की मार को देखते हुए युवा भिखारी संघ की जिला शाखा ने डी. ए. बढ़ा दिया है। अब पांच रुपये से कम स्वीकार करना हमारी प्रेस्टिज के खिलाफ है। केवल नौसिखिए जूनियर छोकरे ही छोटी रकम से राजी होते हैं। जल्दी दीजिए स्वामीजी, धंधे का समय है।'

'पांच–पांच रुपये करके तो तुम दिन भर में हजारों कमा लोगे। आखिर इतने पैसों का क्या करते हो? '

'आप तो जानते ही हैं मुझे लॉटरी टिकिट खरीदने का बेहद शौक है।'

'पर लॉटरी का नंबर तो तुम्हारा कभी फंसा नहीं, क्यूं पैसा बर्बाद करते हो? '

'बर्बाद कहां होता है...मैं तो राष्ट्रीय–कर्तव्य समझकर लॉटरी में पूंजी लगाता हूं...यही तो इकलौती चीज है जिसमें सरकार को फायदा होता है, मुल्क की आर्थिक स्थिति सुधरती है, सरकारी कर्मचारियों को पेमेंट बंटता है, विदेशी कर्ज उतारने में मदद मिलती है। मेरी मेहनत की गाढ़ी कमाई पर अफसर–सांसद–मंत्रीगण ऐश करते हैं; यहां तक की कभी–कभार राष्ट्रीय आमदनी का कुछ अंश देश के विकास–कार्य में भी लग जाता है।'

'फिर भी भारत का नाम ऊंचा होगा, उसने अपनी कालर खड़ी कर गर्व से कहा 'स्वामीजी मेरा नाम भारत है न! लॉटरी फंस गई तो इम्पार्टेड कार खरीदकर दूर–दूर तक भीख मांगने जाऊंगा...फिलहाल आप पांच रुपये तो दीजिए।'

'अभी मेरे पास खुले नहीं हैं, अगली बार दस ले लेना।'

'हे भगवान, इसी तरह तो उधारी में लाखों रुपये डूब गए हैं।'

'अच्छा यह लो दस का नोट, अगली बार मत मांगना।'

भारत से पिंड छुड़ाकर आगे बढ़ते हुए मैं सोचने लगा कि सरकार हर स्थान पर आफिशियल भिखारियों की पोस्टिंग करके इस व्यवसाय से लाभ क्यूं नही कमाती? भिखारियों को वेतन देने की जरूरत नहीं। हर गांव–शहर में प्रतिवर्ष भीख का ठेका नीलाम करके देश की आय में वृद्धि की जा सकती है जिसके फलस्वरूप आम जनता पर अतिरिक्त करों का बोझ बढ़ने से बचेगा, बजट का घाटा पूरा होगा। इसी प्रकार यदि चोर–डाकुओं–जेबकतरों को भी बाकायदा अपाइंट किया जाए और उनकी आमदनी का एक

निश्चित प्रतिशत राष्ट्रहित में वसूल लिया जाए तो कैसा रहे!

मैंने अपने ये विचार स्थानीय विधायक महोदय को बताए। वे गुस्से में बोले– 'स्वामीजी, चोर–डाकू नियुक्त करने की क्या आवश्यकता! आखिर पुलिस और प्रशासन किस मर्ज की दवा हैं? ... फिर भी आपका सुझाव मैं वित्तमंत्री तक पहुंचाऊंगा; फिलहाल तो वे विश्व बैंक से कर्ज और अनुदान मांगने विदेश यात्रा पर गए हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों को पूंजी निवेश के लिए आमंत्रित करके आएंगे, आशा है कि बाहर का बहुत सा पैसा बटोर कर लाएंगे। उनके लौटने पर मैं जरूर चर्चा चलाऊंगा, शायद आपका मशविरा उन्हें पसंद आए।'

मैने पूछाः 'स्वतंत्रता प्राप्ति के 57 साल बाद क्या यह सब हमारे देश को गरिमापूर्ण लगता है कि हमारे नेतागण कटोरा लिए परदेशों में घूमें? '

विधायकजी बोलेः 'लेना और देना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अगर कोई लेगा नहीं तो देने वाला देगा किसे? यह तो हमारे देश की आध्यात्मिक परंपरा रही है। यहां महावीर और बुद्ध ने न केवल स्वयं भींख मांगी, वरन लाखों भिक्षुओं को पैदा किया। क्या संन्यासियों को कभी इन्फीरियरिटी काम्पलैक्स पैदा हुआ है? इस मुल्क में तो संन्यासी सदा से सुपीरियर महसूस करता रहा है, समाज को सेवा का मौका देकर। दान के बाद, धन्यवाद स्वरूप दक्षिणा देने की अदभुत रीति हमने चलाई। आप के मन में यह गरिमापूर्ण न लगने का प्रश्न कहां से उठ आया? ये भौतिकवादी पश्चिमी देश हम पर कोई उपकार नहीं कर रहे हैं, बल्कि उनका धन स्वीकार करके हम उन्हें स्वर्ग भेजने का इंतजाम कर रहे हैंः वरना बेचारे नरक में सड़ेंगे। यह तो हमारी विनम्रता, ग्राहकता, स्वीकार–भाव व तथाता का ख्याल है कि...'

बीच में टोककर मैं बोला– 'अच्छा मै चलता हूं, फिर कभी मिलूंगा।'

उनके घर से बाहर निकला तो मेरा प्रिय दार्शनिक भिखमंगा भारत भूषण सड़क पर मिल गया। वह किसी भीख न देने वाले व्यक्ति को बुरी तरह कोस रहा था– 'अरे लोभी–लालची, पापी; पांच रुपये देने में प्राण निकले जाते हैं! अरे मोहमाया में उलझे जीव; अपना परलोक सुधार, अन्यथा चौरासी लाख योनियों में भटकता रहेगा! कंजूस कहीं के! नरक के कीड़े; तेरी मुक्ति संभव नहीं। अगले जन्म में दीमक बनेगा। दीमक बनकर सड़े–गले नोटों में लगेगा। याद रखना ईसामसीह का वचन– भले ही ऊंट सुई के छेद से निकल जाए पर अमीर आदमी स्वर्ग के द्वार से अंदर प्रवेश नहीं कर सकता।'

(ओशो शैलेन्द्रजी द्वारा रचित उपरोक्त व्यंग्य कथा अनेक हिन्दी साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित और प्रशंसित हुई है।)

4

नरक भी स्वर्ग बन जाएगा

मैं चाहता हूं कि मेरे लोग इस जगत को हंसी से, खुशी से, गीतों से और नृत्यों से भर दें। हम किसी स्वर्ग की तलाश में नहीं हैं, हमारी तो सारी खोज इस बात की है कि अभी और यहीं कैसे स्वर्ग निर्मित किया जाए, क्योंकि मृत्यु के पश्चात् क्या होगा उसमें हमारी उत्सुकता ही नहीं है। जब हम यहां, अभी स्वर्ग बना सकते हैं, तो निश्चित ही अगर हमारी फिर नर्क में मुलाकात हुई तो हम वहां भी स्वर्ग खड़ा कर देंगे।

सारे धर्म मेरे लोगों की निंदा करते हैं, आलोचना करते हैं; तो उम्मीद तो यही है कि हम लोग नर्क ही पहुंचेंगे।

लेकिन मैं उन धर्म के ठेकेदारों को चेता देना चाहता हूं कि मेरे लोगों को नर्क में मत भेजना, वरना पछताओगे, क्योंकि वे नर्क को तुम्हारे स्वर्ग से भी ज्यादा सुंदर और रसपूर्ण बना देंगे।

तुम्हारे स्वर्ग में रहता कौन है– बुड्ढे – खूसट संत, महात्मा, सूखे हड्डी–हड्डी हो चुके मुनि महाराज, गंदे तपस्वी, और नीरस लोग जो मुस्कुराना भी नहीं जानते।

मुझे पूरा भरोसा है कि जब मेरे दस लाख संन्यासी नाचते–गाते, गिटार बजाते, हंसते हुए अपने चुटकुलों सहित नर्क में प्रवेश करेंगे, तो वहां का पूरा वातावरण ही बदल जाएगा, पूरी हवा ही बदल जाएगी। और मेरा विचार है कि शैतान भी तुम्हारे आनंद–उत्सव में शामिल हो जाएगा। वह भी संन्यास ले लेगा। उसका नाम होगा– स्वामी आनंद शैतान।

– ओशो, मैं धार्मिकता सिखाता हूं धर्म नहीं।

रेलवे का एक रूट था, जिस पर गाड़ी बहुत ही सुस्त रफ्तार से चलती थी और चलते–चलते कहीं भी रुक जाती थी तो चलने का नाम ही नहीं लेती थी।

एक बार ऐसी ही एक गाड़ी एक उजाड़ स्थान पर रुकी कि फिर चलने का नाम नहीं ले

रहीं थीं। परेशान हाल मुसाफिर खिड़कियों से बाहर झांक रहे थे। एक खिड़की के पास से गार्ड गुजरा तो एक मुसाफिर बोला– 'गार्ड साहब, अगर इजाजत हो तो मैं गाड़ी से उतरकर एक फूल तोड़ लाऊं।'

'लेकिन यहां फूल कहां हैं? ' गार्ड दूर तक दृष्टि दौड़ाते हुआ बोला।

'अभी नहीं हैं, लेकिन हो जाएंगे।' मुसाफिर इत्मीनान से बोला– 'मेरे पास अच्छी क्वालिटी के बीज हैं।'

गर्लफ्रेंड

बिल्लू– यार! गर्लफ्रेंड और एग्जाम एक जैसे ही होते हैं।

बंटी– वो कैसे?

बिल्लू–दोनों में ढेर सारे सवाल होते हैं, ज्यादातर समझ में नहीं आते, जरूरत से ज्यादा समझाना पड़ता है। और अंततः नतीजा भी एक जैसा ही आता है– फेल!

दादी की शादी

बॉस– तुम चार बार अपने दादा के मरने के कारण छुट्टी ले चुके हो। अब फिर क्या हुआ?

चंदूलाल (शरारत से)– बॉस, इस बार मेरी दादी की पांचवी शादी है।

शादी के बाद भी प्यार

युवती– क्या तुम मुझसे शादी के बाद भी प्यार करते रहोगे?

युवक– ये सब तो तुम्हारे पति के ऊपर है, अगर वो मंजूरी देगा तो मैं तुम्हे जरूर प्यार करूँगा।

चिट्ठी

मुल्ला– मैं अपनी गुलजान को चिट्ठी लिख रहा हूँ!

चंदूलाल– पर आपको तो लिखना नहीं आता!

मुल्ला– तो उसे कौन–सा पढ़ना आता है!

पोस्ट बॉक्स

चंदूलाल– मुल्ला, आज मैं तुमको बहुत सारे ई–मेल भेजने वाला हूँ।

मुल्ला– घबराओ मत...! मैं उन्हें आज ही ठीक से पोस्ट बॉक्स में डाल आऊँगा।

सारी दुनिया अंधी है

चंदूलाल– देख यार! जब मैं रोता हूँ, हँसता हूँ, दुःखी होता हूँ, गुस्सा करता हूँ तो किसी को दिखाई नहीं देता। मानो, सारी दुनिया अंधी है! लेकिन अगर...

मुल्ला– अगर क्या? बोल न मेरे यार...?

चंदूलाल– लेकिन अगर किसी लड़की के साथ घूमने जाऊँ तो सारी दुनिया देख लेती है।

मैरिज ब्यूरो

चंदूलाल– मैंने मोबाइल मैरिज ब्यूरो शुरू किया है। रिश्ते के लिए 1 दबाएँ, मंगनी के लिए 2 दबाएँ, और शादी के लिए 3 दबाएँ।

मुल्ला– और दूसरी शादी के लिए क्या दबाएँ।

चंदूलाल– दूसरी शादी के लिए पहली वाली का गला दबाएँ।

समझदार

गुलाबो– चंदूलाल ने मुझे कहा तुम सबसे ज्यादा खूबसूरत और समझदार लड़की हो!

सहेली– और तुम उसके साथ जिन्दगी बिताने की सोच रही हो जो आदमी शुरू से ही तुमसे झूठ बोल रहा है।

चंदूलाल– आप मुझ पर बिल्कुल गलत आरोप लगा रही हैं कि मैं उस चोर से डर गया था।

गुलाबो– तो तुम उस गाड़ी के पीछे क्यों छिपे थे?

चंदूलाल– अच्छा इसलिए शक करने लगीं, जानेमन, मैं तो वहाँ कुत्ता देखकर छिपा था।

पाँच जानवर

चंदूलाल– पाँच जानवरों के नाम बताओ जो पानी में रहते हैं?

बिट्टू– एक मेंढक।

चंदूलाल– ठीक है और चार।

बिट्टू– मेंढक के दो भाई, बहन और उसकी माँ।

चीनी

चीनी लड़की को अपने बेटे के साथ आती देखकर माँ बोली– बेटा ये क्या ले आए हो?

चंदूलाल– माँ आपने खुद ही कहा था कि घर आते हुए चीनी लेते आना।

संख्या

एक दोस्त ने दूसरे से कहा– यार, मैं सोच रहा हूँ कि इस दुनिया में बेवकूफों की

संख्या कितनी होगी? दूसरा दोस्त– यार, अपने बारे में ही सोचते रहते हो, कभी दूसरों के बारे में सोचा करो।

महँगाई का दोष

जज ने चोर से कहा– क्या तुम कुछ दिन पहले सौ रुपए चुराने के आरोप में पकड़े गए थे?

चोर– जी साहब! इस महँगाई के जमाने में सौ रुपए भला कितने दिनों तक चलते हैं। इसमें तो गर्लफ्रेंड के एक दिन का भी खर्चा नहीं निकलता।

आज्ञा

चंदूलाल (गेट पर खड़े व्यक्ति से)– क्या तुम्हें पता नहीं कि बिना आज्ञा के अन्दर आना मना है।

व्यक्ति– जनाब! आप समझे नहीं... मैं आज्ञा लेने के लिए ही अन्दर आया हूँ।

पत्नी– 'आज आफिस में एक अजीब पार्टी का आयोजन किया गया है। प्रत्येक आमंत्रित व्यक्ति से कहा गया है कि अपने साथ एक बेकार चीज जरूर लाना।'

पति– 'हमारे पास तो कोई ऐसी फालतू चीज नहीं है, फिर तुम क्या ले जाओगी?

पत्नी– 'कुछ नहीं है तो क्या हुआ जी, तुम तो साथ चल ही रहे हो?

स्त्रियों से डर

ढब्बू जी अपने मित्र चंदूलाल से कह रहे थे कि विवाह मैं इसलिए नहीं करना चाहता, क्योंकि मुझे स्त्रियों से बहुत डर लगता है।

चंदूलाल ने उसे समझाया और कहा, यह बात है तब तो तुरंत विवाह कर डालो। मैं तुम्हें अनुभव से कहता हूं, क्योंकि विवाह के बाद एक ही स्त्री का भय रह जाता है।

हिम्मत

संता अस्पताल में भर्ती था, बंता उसकी हालत जानने पहुंचा।

बंता: ओए, ये सब कैसे हो गया?

संता: यार, कल एक आदमी अपनी पत्नी को पीट रहा था।

बंता: तो तू अस्पताल में कैसे पहुंचा?

संता: पता नहीं। मैंने ललकार कर उससे कहा, क्या अबला औरत को पीट रहे हो, हिम्मत है तो किसी मर्द से लड़ो। फिर जब मुझे होश आया तो मैं इस अस्पताल में था।

गाड़ी के दो पहिये

मटकानाथ ब्रह्मचारी ने ढब्बू जी को समझाते हुए कहा, बेटा, अपनी पत्नी से लड़ना नहीं चाहिए, क्योंकि पति–पत्नी गृहस्थ जीवन रूपी गाड़ी के दो पहियों के समान हैं।

ढब्बू जी बोले, गुरुदेव, यह बात तो ठीक है, परंतु जब एक पहिया साइकिल का हो और एक ट्रैक्टर का, तो आप ही बताइए गाड़ी कैसे चलेगी?

घर की याद

चंदूलाल को सरकारी काम से पंद्रह दिन के लिए बंबई जाना पड़ा। सरकारी भत्ते पर ही उन्हें एक आलीशान होटल में रहने को मिला। पांच–छह दिन में ही वे बहुत परेशान हो उठे। एक दिन झल्लाकर वेटर से गुस्से में बोले, सुनो मिस्टर, मेरे लिए जल्दी से दो जली हुई रोटियां, एक प्लेट कंकड़ों से भरी हुई दाल, एक प्लेट अधकच्चे चावल और बुरी तरह जली हुई मिर्चदार सब्जी लेकर आओ।

वेटर ने बाइज्जत सिर झुकाकर पूछाः साहब, कुछ और?

चंदूलाल बोलेः हां, सब चीजें लाने के बाद तुम मेरे सामने की कुर्सी पर बैठकर घर–गृहस्थी का रोना रोओ, मेरा सिर चाटो, मुझे सताओ, क्योंकि मुझे घर की याद सता रही है!

राह चलते भिखारी ने बड़े से बंगले के बाहर खड़े होकर आवाज दी– 'अल्लाह के नाम पर कुछ दे दो बाबा।'

बंगले के अंदर से मालिक ने कहा– मेरी बीवी अभी बाहर गई है। शोर न करो, मैं टीवी देख रहा हूं।

भिखारी बोला– मुझे नहीं चाहिए आपकी बीवी, न चाहिए आपकी टीवी, रोटी चाहिए बस रोटी!

ओवर टाइम

मुल्ला– तुम्हारी उम्र कितनी है?

विचित्तरसिंह– 45 साल।

मुल्ला– इस ऑफिस में पिछले कितने साल से नौकरी कर रहे हो?

विचित्तरसिंह– पचास साल से।

मुल्ला– वो कैसे?

विचित्तरसिंह– वो मैंने बहुत ओवर टाइम किया है न!

यदि आप कृपा करें तो...

शिक्षक– तुम मेरी क्लास में नींद नहीं ले सकते मिस्टर फजलू।

छात्र (फजलू)– सर, मैं आराम से नींद ले सकता हूँ। अगर आप जोर से बोलना बंद कर दें तो।

कौन अधिक बलवान?

संता– ऐसा कौन से काम हैं जो रावण अकेला ही कर सकता है, राम नहीं?

बंता– राम तो सर्वशक्तिमान भगवान हैं। वे सब कुछ कर सकते हैं।

संता– वे दसरथ के पुत्र अवश्य हैं, किंतु दशानन की तरह सामूहिक चर्चा और कान्फ्रेंस काल नहीं कर सकते।

जीवन का मूल्य – पत्नी की नजर में

मरीज बोला : 'मुल्ला, मुझे कहते हुए दुख होता है, किंतु मेरी पत्नी सोचती है कि आप मेरे इलाज की जो फीस ले रहे हैं वह काफी अधिक है।'

'लेकिन जनाब,' पूछा मुल्ला नसरुद्दीन ने, 'क्या आप भी अपने जीवन का मूल्य अपनी पत्नी की तरह ही कम लगाते हैं?'

भगवान की देन

बहुत देर से एक स्त्री मुल्ला नसरुद्दीन को अपने पति की बीमारी के संबंध में बता रही थीं। 'मुझे डर है मुल्ला, कि उनके दिमाग में कुछ गड़बड़ हो गई है। मैं घंटों तक उनसे बातें करती रहती हूं और फिर देखती हूं कि उनके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ा है।'

'यह कोई बीमारी नहीं है,' ऊबा हुआ मुल्ला बोला, 'बल्कि यह तो भगवान की देन है।'

असली–नकली

प्रश्न– भगवान, आप कहते हैं कि पंडित–पुरोहितों द्वारा चलाए जा रहे धर्म नकली हैं। फिर वे सदियों–सदियों से चले आ रहे हैं। क्यों?

ओशो–धर्मज्योति, इसीलिए! असली को चलाना मुश्किल है, क्योंकि असली को खरीदने वाले मुश्किल से मिलते हैं। असली जरा महंगा सौदा है। असली चुकानी पड़ती है। नकली सस्ता मिल जाता है।

मुल्ला नसरुद्दीन एक स्त्री के प्रेम में था। एक हीरे की अंगूठी लाकर भेंट की। बड़ा हीरा! बेर के बराबर हीरा होगा। स्त्री भी चौकीं। सोने में जड़ा, ऐसे चमकता था! खुश हो गयी, उंगुली में पहनाया जब नसरुद्दीन ने उसे। एकदम नसरुद्दीन के गले लग

गयी और कहा : 'नसरुद्दीन, तुम सच ही मुझे प्रेम करते हो! तुम जैसा मुझे कोई प्रेम नहीं करता। मगर एक बात तो बताओ, क्या यह हीरा असली है? '

नसरुद्दीन ने कहा : 'अगर असली नहीं है तो जिस हरामजादे से खरीदा, वह डेढ़ रुपए मेरे मुफ्त खा गया।'

डेढ़ रुपए में असली हीरा – बेर के बराबर! वह भी सोने में जड़ा! नसरुद्दीन बोला कि अगर नकली हो तो तू बता, खोपड़ी खोल दूंगा उसकी जिसने मुझे बेचा है, असली कह कर बेचा है। और नगद डेढ़ रुपए दिए हैं। हालांकि जो डेढ़ रुपए मैंने उसे पकड़ाए हैं, वे भी कोई असली नहीं थे। इसलिए अगर नकली भी है तो अपना कुछ गया नहीं, अपना कुछ खोया नहीं। मगर उसको मजा चखा कर रहूंगा!

नकली हैं धर्म पण्डित–पुरोहितों द्वारा चलाए हुए, इसीलिए चलते हैं। मगर तेरा पूछना भी ठीक है कि फिर सदियों–सदियों से क्यों चलते हैं? यह सवाल उठता है कि जब इतनी सदियों से चल रहे हैं तो जरूर कोई सचाई होगी! हमारा गणित ऐसा है कि जब इतनी पुरानी कोई बात चलती है तो इसमें सच्चाई होनी ही चाहिए।

पुरानी बात में सच्चाई का कोई संबंध नहीं है। पुराने होने से सत्य का कोई नाता नहीं है। पुराना सिर्फ इतना ही बताता है कि भीड़ को जचता रहा है। और भीड़ को सत्य से क्या लेना–देना है। भीड़ को असत्य जचता है। भीड़ को चाहिए सांत्वना, संतोष। और असत्य बड़े संतोषदायी हैं। असत्य बड़ी सांत्वना देते हैं। सत्य कमाना हो तो कीमत चुकानी पड़ती है – शायद जीवन से कीमत चुकानी पड़े; शायद अपने को कुरबान करना पड़े; शायद गर्दन उतार कर रखनी पड़े। असत्य कुछ नहीं मांगता तुमसे। असत्य तुमसे मांगता है कि कुछ चढ़ा दो दो पैसे। और तुम भी होशियार हो, तुम दो पैसे भी नकली चढ़ा आते हो।

मेरे गांव में झांकियां कृष्ण की बड़े जोर–शोर से मनायी जाती थीं। वह उस गांव की खास बात थी। आसपास दूर–दूर से गांव के लोग झांकियें को देखने आते थे। कृष्णाष्टमी के समय सावन में जब झूले पड़ते तो मन्दिर ऐसे सज जाते और बड़ी भीड़ लगती। तो मैं भी चार–छः बच्चों का झुंड बना कर झांकियों में पहुंचता था। और हमने एक तरकीब निकाल रखी थी। उस समय दो पैसे का एक सिक्का चलता था, जो करीब–करीब रुपए के बराबर होता था। उस पर हम चांदी का वर्क चढ़ा लेते थे, तो बिल्कुल रुपया मालूम होता था। और झांकियों में इतनी भीड़ होती थी और इतने पैसे चढ़ते थे कि सवाल ही नहीं था हाथ में देने का पुरोहित के, लोग यूं फेंकते थे। सो वह नकली दो पैसे का जो सिक्का होता था, चांदी का वर्क चढ़ा, उसको हम भी फेंकते थे जोर से, काफी खनखना कर, ताकि पुजारी को दिखाई पड़ जाए कि रुपया फेंका

गया है। और तत्क्षण मांगते कि आठ आने वापिस!

सो झांकियों के दिन बड़े लाभ के दिन थे। एक-एक मन्दिर में चार-चार छः-छः दफे जाते। फिर पुजारियों को थोड़ा शक होने लगा कि मामला क्या है! यह लड़का छः-छः दफे आता है एक ही रात में! और हर बार रुपया और क्या खनक कर फेंकता है! फिर वे जब रात को इक्ट्ठे होकर पैसे गिनते होंगे तो उनको पता चलना शुरू हुआ कि ये छः दो-दो पैसे के सिक्के नकली हैं और इन पर चांदी का वर्क चढ़ाया हुआ है। एक दिन एक पुजारी ने, जैसे ही मैंने रुपया फेंका, उसने तत्क्षण वह रुपया पकड़ा और कहा कि तुम रुको, आज धोखा न दे सकोगे। नकली दो पैसे पकड़ा जाते हो और साथ में अठन्नी भी हमसे ले जाते हो।

मैंने उनसे कहा कि तुम जो झूला लटकाए हो, इसमें कोई असली कृष्ण बैठे हैं? किसको झूला झुला रहे हो तुम? हम वही कर रहें हैं जो तुम कर रहे हो। तुम जरा बड़े पैमाने पर कर रहे हो, हम जरा छोटे पैमाने पर। हमारी उम्र भी अभी कम है; जब बड़े हो जाएंगे, हम भी बड़े पैमाने पर करेंगे। अभ्यास तो करने दो जी! अभी से अभ्यास करेंगे, तभी तो करते-करते बात बनेगी।

वह भी हंसने लगा। उसने कहाः 'यह बात तो ठीक है। यह ले भैया अठन्नी। तू औरों को मत बताना। यह राज़ अपने तक रखना।

और मैंने कहा कि तुम्हीं को हम थोड़े ही धोखा देते हैं; कोई गांव में कोई तीस-पैतीस मंदिर हैं, सबको समान भाव से देते हैं। हम सबको समदृष्टि से देखते हैं। यही तो गीता में कहा है कृष्ण ने कि सबको समदृष्टि से देखो।

यह धोखाधड़ी चलती है। और जब तुम धोखाधड़ी चलाओगे तो जनता भी जानती है। चार पैसे में मिल जाता है पुरोहित, सत्य नारायण की कथा करा जाता है। मोक्ष भी सध गया। चार पैसे में मोक्ष साध रहे हो! महावीर मूर्ख थे, जो बारह वर्ष मेहनत की, ध्यान पर सिर पटका! बुद्ध बुद्धू थे, छः वर्ष तक जान दाव पर लगायी, तब कहीं ध्यान को उपलब्ध हुए। और तुम सत्यनारायण की कथा करवा रहे हो चार पैसे में – उस आदमी से, जिसको सत्य का कोई पता नहीं। तुम भी जानते हो। चार पैसे में कोई सत्यनारायण की कथा कहने आएगा! और उस सत्यनारायण की कथा को तुमने कभी सुना है? न उसमें सत्य है, न कहीं नारायण है। मगर सुनता कौन है! किसको पड़ी है सुनने की! किसको लेना-देना है। झूठ का व्यापार काफी गरम है। झूठ चलना बड़ा आसान है।

–ओशो

5

लाफिंग मेडिटेशन में सद्गुरु स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती जी द्वारा सुनाए गए कुछ लतीफे

ध्यानी साधकों की एक ही प्रार्थना रहती है– हे सर्वशक्तिमान प्रभु, मच्छरों को शाकाहारी बना दे!

हरियाणा के अखबार में छपा वैवाहिक विज्ञापन – युवा कृषक हेतु सुंदर वधू चाहिए। दहेज में एक नया ट्रैक्टर और चार तंदुरुस्त भैंसें अनिवार्य हैं। कृपया शीघ्र फोटो भेजिए,' ट्रैक्टर और भैंसों की।'

जब पत्नी किसी बात पर आपसे सहमत हो जाए तो भलीभांति समझ लीजिए कि आपकी विचारधारा गलत है।

कम्युनिस्ट देशों में सभी जमीन–जायदाद सरकार की होती है जबकि प्रजातांत्रिक मुल्कों में सारी संपत्ति पत्नी की होती है।

कर्मयोगियों और हठयोगियों को महाआलसी नसरुद्दीन की सलाह– यदि व्यायाम करने की इच्छा कभी जागे तो शवासन में लेटकर तब तक विश्राम करो जब तक कि वह इच्छा समाप्त न हो जाए।

आश्चर्य...एक घनघोर निराशावादी ने एक दिन अचानक बड़ी उत्साहवर्धक बात कहीं– आज हंस लो प्यारे, मुस्कुरा लो। क्या पता आने वाला कल आज से भी बदतर हो!

सुखमय दाम्पत्य जीवन का एक ही रहस्य है। गौर से सुन लो फिर नहीं बताऊंगा... सुखमय दाम्पत्य जीवन का एक ही रहस्य है। और वह रहस्य किसी को भी नहीं मालूम। यदि मालूम हो जाता तो फिर वह रहस्य ही क्यों कहलाता!

डाक्टर– ये पत्र किसे लिख रहे हो?
पागल– अपने आप को।
डाक्टर– इसमें क्या लिखा है?
पागल– जी, मालूम नहीं।
डाक्टर– क्यों?
पागल– डाक्टर साहब, अभी चिट्ठी मुझे मिली कहां है!

एक लड़के ने अपने दोस्त से कहा– मैं और मेरी गर्लफ्रैंड एक माह के भीतर शादी कर रहे हैं। अब हम दोनों जिंदगी भर खुश रहेंगे क्योंकि...। मेरी शादी 12 दिसंबर को दिल्ली में है, और उसकी 4 जनवरी को मुंबई में।

चंदूलाल– सुना है कि स्वर्ग में पति–पत्नी को साथ नहीं रहने देते।
मुल्ला– हां भाई साहब, इसीलिए तो उसे स्वर्ग कहते हैं।

आदमी शादी क्यूं करता है? ताकि मरकर स्वर्ग जाए तो अच्छा महसूस करे और यदि नर्क जाए तो घर जैसा माहौल पाकर प्रसन्न हो।

दिमाग सर्वाधिक अद्भुत यंत्र है। प्रकृति द्वारा निर्मित सबसे नाजुक और कॉम्पैक्ट कंप्यूटर है। यह जन्म के पहले से ही काम करना शुरु कर देता है। 24 घंटे रोज, सप्ताह में सातों दिन, साल में 52 हफ्ते यह बिना रुके कार्य करता ही जाता है जब तक कि बेचारे इंसान की शादी नहीं हो जाती।

शुरू में हर बीबी अपने पति को 'जी, ओ, डी गॉड' मानती है। कुछ साल बाद सिर्फ शब्द उलट जाता है–'डी, ओ, जी डॉग' हो जाता है।

मिसेज चंदूलाल– डॉ. साहब, पांच दिन से अस्सी रुपये प्रतिदिन की दवा खा रही हूं, मगर कोई फायदा नजर नहीं आ रहा है।

डॉक्टर– फिक्र मत करिए मैडम, आज से ही मैं दवा का डोज घटा देता हूं। अब केवल पचास रुपये प्रतिदिन की दवा खानी पड़ेंगी तो आपको तीस रुपये प्रतिदिन का फायदा तुरंत नजर आने लगेगा।

नसरूद्दीन अपने बेटे फजलू से– इतने कम नंबर! हरामजादे, गधे की औलाद, उल्लू के पट्ठे, ठीक से पढ़ता क्यों नहीं?

मित्र चन्दूलाल– अरे भाई, ये गालियां लगेंगी किसे?

नसरूद्दीन– जिसे समझ में आएंगी उसे और किसे?

विचित्तरसिंह– अगर शादियां परमात्मा की मर्जी से तय होती हैं तो फिर शैतान के हाथ में क्या है?

ज्योतिषी– शैतान के हाथ में है– शादी के बाद से लेकर मृत्यु तक का समय।

विचित्तरसिंह– बेटा, यह तू कैसी माचिस लाया है? इसकी एक भी तीली नहीं जलती। सामान परखकर खरीदने की आदत डाल।

बेटा– ऊ, मैनें तो हर एक तीली जलाकर देखी थी। जो नहीं जलीं, वो नहीं लीं। केवल वही खरीदीं, जो जल सकीं।

विचित्तर सिंह बड़ी मुश्किल से पहली बार नारियल के झाड़ पर चढ़ा।

गिलहरी ने पूछा– तू ऊपर क्यों आया?

विचित्तर सिंह– केला खाने।

गिलहरी– मगर यह तो नारियल का वृक्ष है!

विचित्तर सिंह– केला तो मेरी जेब में रखा है।

यार, तू मुझे हर मैसेज दो बार क्यों भेजता है? ताकि एक तू फार्वर्ड भी कर दे तो कम से कम दूसरा तो तेरे पास रहे।

मुल्ला के एक कुत्ते का नाम टेंशन और दूसरे का कामन सेंस था। एक दिन रेलवे प्लेटफार्म पर टेंशन भीड़ में कहीं खो गया। मुल्ला उसकी खोज में यहां–वहां भागने लगा।

किसी ने पूछा– क्या ढूंढ़ रहे हो?

मुल्ला ने बताया मैं अपने प्रिय टेंशन की तलाश में हूं। हाय, मेरा टेंशन गुम गया!
उसने कहा–अरे! क्या कह रहे हो, कामन सेंस है कि नहीं?
मुल्ला बोला– है, कामन सेंस है; मगर आज उसे मैं घर ही छोड़कर आया हूं।

'मुझे बहुत डर लग रहा है, मुल्ला!' मरीज ने कहा। 'यह मेरी पहली ही बीमारी है।'
'व्यर्थ ही डर रहे हैं महाशय।' मुल्ला नसरुद्दीन बोला। 'मुझे देखिये, मैं तो कहीं नहीं डर रहा, मेरे भी तो आप पहले ही मरीज हैं।'

रात को एक चोर सेठ चंदूलाल के घर में घुसकर उनकी छाती पर बंदूक लगाकर पूछता है–'सेठजी, जल्दी बोलो सोना कहां है? ' चंदूलाल ने कहा–'अबे उल्लू के पट्ठे, इतना बड़ा घर खाली पड़ा है कहीं भी मजे से सो जा!

शत प्रतिशत इलाज

रोगी ने मुल्ला नसरुद्दीन से पूछाः 'मुल्ला, सच–सच बताओ, मेरे अच्छे होने की क्या संभावना है? '
'शत प्रतिशत' नसरुद्दीन ने कहा। 'आंकड़ों से पता चलता है कि इस रोग में से नौ रोगियों की मृत्यु हो जाती है। मेरे इलाज से नौ रोगी इस रोग से पहले ही मर चुके हैं। आप दसवें हैं।'

विज्ञान की तरक्की से पेशे की इज्जत

'मुल्ला, रात को ढंग से नींद न आये तो उसके लिए मुझे क्या करना चाहिए? '
'आप सोने से पहले एक गिलास गरम दूध और सेब ले लिया करें,' मुल्ला नसरुद्दीन बोला।

'मगर मुल्ला, छः महीने पहले तो आपने कहा था कि मुझे सोने से पहले कुछ भी नहीं खाना चाहिए!'
'मगर भाई' नसरुद्दीन ने अपने पेशे की इज्जत बचाने के लिए बात बनाते हुए कहा, 'यह भी तो सोचो कि उन छः महीनें में चिकित्सा विज्ञान उन्नति करके कहां से कहां जा पहुंचा है।'

तकलीफ का पूर्व ज्ञान

मुल्ला नसरुद्दीन : 'कहिए, आपको क्या तकलीफ है? '
रोगी : 'मुल्ला, मेरी कमर में कभी–कभी अचानक दर्द होने लगता है।'
नसरुद्दीन: 'अच्छा, तो आपको मैं यह गोलियां दे देता हूं। दर्द शुरू होने के ठीक बीस

मिनट पहले गोली खा लेना।'

पत्नी का डर

मुल्ला नसरुद्दीन को एकदम शराब छोड़ते सुन कर उसके मित्रो को बड़ा अचंभा हुआ। उन्होंने पूछा : 'मुल्ला, तुमने यह प्रण क्यों लिया? '

नसरुद्दीन ने कहा, 'मैं एक पत्नी से ही काफी परेशान हूं इसलिए।'

लेकिन मित्र कुछ समझे नहीं। बोले, 'एक पत्नी या ज्यादा पत्नियों से शराब का क्या संबंध?'

नसरुद्दीन ने कहा : 'मैं जब भी पीता हूं, तब एक ही जगह तीन–तीन पत्नियां दिखाई पड़ने लगतीं हैं।'

अड़ और अहंकार का पेच

मुल्ला नसरुद्दीन और उसकी पत्नी, दोनों ही तलाक के लिए जिद्द में थे। जज ने पूरी कोशिश की कि दोनों में कोई समझौता हो जाय, लेकिन वे दोनों एक दूसरे का मुंह देखने के लिए भी राजी नहीं थे।

'अच्छा, तो मैं तलाक की कार्यवाही पूरी कर देता हूं, नसरुद्दीन।,' जज ने कहा, 'लेकिन जो कुछ भी तुम्हारे पास है वह बराबर बंट जाएगा।'

'हमारे सात बच्चों का क्या होगा?' पत्नी ने चिंतित होकर पूछा।

'उन्हें बांटने की तुम्हीं लोग कोई राह सुझाओ,' जज ने कहा।

मुल्ला तत्काल निश्चय पर पहुंच गया। वह पत्नी के पास जा हाथ खींचता हुआ बोला : 'चलो, घर चलो। अब हम अगले साल अदालत में आयेंगे, जब हमारे आठ बच्चे हो जायेंगे।'

अपनी टोपी दूसरे का सिर

मुल्ला अपने लड़के फजलू का रिपोर्ट कार्ड देखकर बोला गणित में इतने कम नम्बर आने पर तो खूब जोर से चपत लगनी चाहिए। फजलू तो जैसे मुल्ला का बाप हो, (जो अभी भी इसे अध्यापक की गल्ती समझ रहा था) एक दम से छूटते ही बोला 'हां नहीं तो क्या! पप्पा जल्दी से चलिए, मैंने तो उस साले मास्टर का घर पहले से ही देख रखा है।'

दूसरे की पीड़ा में बहादुरी

मुल्ला दांतो के डाक्टर के यहां पहुंचा और आते ही बोला डाक्टर साहब कहीं जाना है बहुत जल्दी में हूं और एक दांत बहुत तकलीफ दे रहा है जल्दी से निकलवाना है।

डाक्टर ने कहा भाई मसूड़ा सुन्न करने में कुछ समय तो लगेगा ही।

मुल्ला बोला अरे डाक्टर साहब सुन्न करने की कोई जरुरत नहीं है, बस जल्दी से निकाल दीजिए।

डाक्टर मुल्ला की ऐसी बहादुरी देख कर बहुत प्रभावित हुआ और बोला अच्छा वह दांत दिखाओ जिसे निकलवाना है?

मुल्ला पीछे को पलटा और पत्नी गुलजान को आवाज लगाई, अरे भई सुनती हो, जरा जल्दी से आगे आओ और अपना दांत दिखाओ!

मौत की गारंटी

धनी मरीज ने परेशानी के स्वर में मुल्ला नसरुद्दीन से पूछा : 'सच–सच बताइये, क्या मैं अच्छा हो जाऊंगा? मैंने सुना है कि चिकित्सक अक्सर रोग का गलत अनुमान लगा लेते हैं। इलाज निमोनिया का करते हैं और जब रोगी की मृत्यु हो जाती है तो पता चलता है कि उसे टाइफाइड बुखार था।'

'क्या बकवास करते हैं आप? ' मुल्ला क्रोधित होकर बोला, 'जब मैं किसी रोगी का निमोनिया का इलाज करता हूं तो उसकी मृत्यु निश्चित ही निमोनिया से ही होती है।'

विज्ञान से उम्मीदें : विश्वास और अविश्वास

मुल्ला नसरुद्दीन कॉफी हाउस में कह रहा था : 'विज्ञान की प्रगति का क्या कहना! विज्ञान दिन दूनी, रात चौगुनी तरक्की कर रहा है। शीघ्र ही एक ऐसा तेजाब खोजा जा रहा है जो हर चींज को––मोम, लकड़ी, शीशा, प्लास्टिक, लोहा अर्थात सभी वस्तुओं और धातुओं को गलाने में समर्थ होगा।'

लेकिन तभी एक अविश्वासी ने पूछा। 'लेकिन मुल्ला, उस तेजाब को रखेंगे किस चीज में? '

नसरुद्दीन गंभीरता से बोलाः 'इस के बारे में बाद में खोज की जायेगी!'

सावधानी चाहिए प्रतिपल!

एक दिन मुल्ला नसरुद्दीन सिर झुकाये बड़ी तोजी से पांव बढ़ाता जा रहा था। किसी ने पूछा : 'नसरुद्दीन, यह क्या मामला है? इस प्रकार सिर झुकाये कहां तश्रीफ ले जा रहे हो? '

मुल्ला ने अत्यंत गंभीरता से कहा : 'एक मित्र के घर जा रहा हूं। और मालूम नहीं कब कैसा ख्याल रहता है। जिनके घर जा रहा हूं उनका दरवाजा बहुत छोटा है। और समय पर ख्याल न रहा तो सिर टकरा जायेगा तो खोपड़ी गंजी हो जायेगी न! सावधानी हटी और दुर्घटना घटी, इसीलिये पहले से ही सावधानी पूर्वक अपना सिर झुकाये हुए जा रहा हूं।'

पहले से ही होशियार रहो

मुल्ला देर रात शराबखाने से झूमता हुआ घर की ओर आ रहा था। रास्ते में उसने किसी को पोस्टर लगाते हुए देखा। पीनक वश मुल्ला उधर बढ़ा और उत्सुकता से पोस्टर को देखने लगा। पोस्टर किसी मोस्ट वांटेड, इनामी मुज़रिम का था जिसकी शक्ल–सूरत मुल्ला को अपने से मिलती हुई सी लगी। पीनक में तो पहले ही था फिर और बहकते हुए पोस्टर लगाने वाले व्यक्ति पर गुस्सा कर बोला, 'अरे मूर्खो अगर यह आदमी इतना ही बड़ा मुज़रिम है तो जब इसकी फोटो खिंची थी तब ही पकड़े रखते इसे जाने क्यों दिया।'

मां और पत्नी में अन्तर

अपनी पत्नी गुलजान से उलझ के बाद तमतमाया हुआ मुल्ला नसरुद्दीन बैठकखाने में आकर बैठ गया तभी उसका बेटा फजलू बाहर से एक बेतुका सा दार्शनिक सवाल लेकर आ गया और पूछने लगा कि अब्बा ये पत्नी और मां के बीच क्या अन्तर होता है। मुल्ला तमतमाया हुआ तो पहले ही से था एक दम ऊंची आवाज में बोला – ताकि उसकी पत्नी भी सुन सके, कि 'बेटा मां वह होती है जो तुम्हें इस दुनियां में रोता हुआ लाती है और पत्नी वह होती है जो तुम्हें ता–उमर वैसा ही करने पर मजबूर करती है तुम्हें जीवन भर रूलाती रहती है।'

बुद्धि की परीक्षा

एक पार्टी में मुल्ला नसरुद्दीन की भेंट मनोविज्ञान के एक प्रसिद्ध पंड़ित से हुई। मुल्ला ने उस मनोवैज्ञानिक से पूछाः प्रोफेसर साहब, यह बताइये कि किसी की बुद्धि की परीक्षा कैसे ली जाती है? देखिये, कोई आसान सा तरीका बताइये।'

'आप उससे एक सीधा–सादा सवाल पूछ लीजिए, यदि वह फौरन जवाब न दे सके तो समझ लीजिये उसमें अक्ल की कमी है।'

'किस प्रकार का प्रश्न? ' मुल्ला ने पूछा।

'जैसे आप पूछ सकते हैं कि कर्नल बर्ड ने तीन बार हवाई जहाज से पृथ्वी को बिना कहीं रुके परिक्रमायें कीं और उनमें से एक में वह मारा गया! बताइये कौन सी उड़ान में वह मारा गया?'

मुल्ला कुछ देर खामोश रहा और फिर बड़ी झिझक के साथ बोलः 'सच कहें तो प्रोफेसर साहब, मुझे खुद ही नहीं मालूम कि कर्नल बर्ड किस उड़ान में मारा गया। फिर इतिहास का ज्ञान हुये बिना यह मालूम भी कैसे हो सकता है?'

आप ही गुरु आप ही चेला

मुल्ला नसरुद्दीन की बैठक के सामने से निकलते हुए उसके मित्र शेख फरीद ने अंदर बड़ी भयंकर बहस की आवाज सुनी। घबरा कर वह अंदर पहुंचा। अंदर धर्मशास्त्रों के बीच में घिरा हुआ नसरुद्दीन बैठा था।

'नसरुद्दीन तुम किससे बहस कर रहे थे?' उसने पूछा। 'तुम तो अकेले हो? '

'आज किसी बकवासी के न आने के कारण मैं ऊब गया था इसलिए अपने आप से बातें कर रहा था,' नसरुद्दीन ने जवाब दिया।

'यह तो माना कि तुम अपने आप से बातें कर रहे होगे,' फरीद ने कहा, 'लेकिन उसमें बहस का क्या सवाल था? '

'क्यों नहीं? ' नसरुद्दीन गुर्राया, 'मैं बकवासियो के बोल कभी नहीं सह पाता हूं।'

फौजदारी करने वाला वकील

एक आदमी को फौजदारी मुकद्में लड़ने वाला वकील करना था। वह अपने मोहल्ले के सबसे वृद्ध व्यक्ति मुल्ला नसरुद्दीन से सलाह लेने गया। उसने कहा मुल्ला से : 'क्या आप इस मोहल्ले के सब व्यक्तियों को जानते हैं? '

'हां–हां, क्यों नहीं? मैं इस मोहल्ले में पचास साल से रह रहा हूं।' मुल्ला ने कहा।

'क्या इस मोहल्ले में कोई फौजदारी वकील भी है?' उस व्यक्ति ने पूछा।

'क्यों नहीं, सब हैं,' मुल्ला बोला, 'असल में जिस वकील को भी पूरी फीस नहीं मिलती, वही फौजदारी पर उतर आता है।'

'मेरा मतलब क्रिमनल वकील से था।' व्यक्ति बोलो।

'यह तो वे सभी होते हैं,' मुल्ला ने कहा, 'लेकिन इसे सिद्ध करना जरा मुश्किल है।'

आत्मवंचना संकल्प नहीं है

मुल्ला नसरुद्दीन गया था तीर्थ को। वहां उसने संकल्प किया––आज से मछलियां नहीं खाऊंगा, लेकिन घर आकर पहले दिन ही उसने अपनी पत्नी से मछलियों का शोरबा बनाने को कहा। ऐसे उसे मछलियां बहुत पसंद न थीं और इसीलिए उसने संकल्प कर भी लिया था, परन्तु संकल्प करके फंस भी गया था क्योंकि संकल्प के बाद से ही मछलियां उसका पीछा करने लगीं और उनके स्वप्न भी उसे अति स्वादिष्ट लगने लगे थे।

पत्नी ने मछलियों का नाम सुना तो बोली : 'अरे! कहते क्या हो? तुम तो उन्हें तीर्थ में न खाने का संकल्प कर आये हो?' पर मुल्ला बोला 'अरी पगली, मछलियां छोड़ने की कसम खाई हैं, कुछ उनका शोरबा छोड़ने की कसम तो खाई नहीं है।'

तब स्त्री ने शोरबा बनाया। लेकिन परोसते समय उसने कटोरे के किनारे हाथ लगा

लिये जिससे कि मछली के कतरे न गिर पड़ें। इससे नसरुद्दीन बहुत नाराज हुआ और बोला: 'अरी भागवान हाथ से क्यों रोकती है, जो अपनी तबियत से आप ही आवें उन्हें आने दे। कुछ इस रोका–राकी का संकल्प तो किया नहीं है।'

स्वास्थ्य–संवर्धन में सहयोगी – हंसने की कला

लाफ्टर इज द बेस्ट मेडिसिन। जो मस्त है वही स्वस्थ है। ये सिर्फ कहने की बात नहीं है। आसपास देखें तो हम यह महसूस करेंगे कि जो भी खुश रहते हैं वो बीमारियों से ग्रसित नहीं होते। जब दोस्तों या परिवारजनों के साथ हम खुशियां बांटते हैं तो हमारे रिश्ते और मजबूत होते हैं। दिल से निकला एक ठहाका आपके शरीर में ऐसे परिवर्तन लाता है जो आपके स्वास्थ्य को बेहतर बना सकता है।

चेहरे पर खिली मुस्कुराहट आपके इम्यून सिस्टम को शक्तिशाली और आपको अधिक ऊर्जावान बनाती है। साथ ही आजकल के तनाव से भरे जीवन से जूझने में हमें सक्षम बनाती है। हँसना संक्रामक है। आपकी हँसी माहौल को खुशनुमा बना देती है। आपके मन और शरीर को तुरंत संतुलन में लाने के लिए आपकी हँसी से ज्यादा कारगार कोई दवा नहीं। सरलता और आसानी से हँस पाना भी एक कला है और जो इसमें महारत हासिल कर लेता है उसे जीवन जीने की कला भी स्वतः आ जाती है।

हँसी हमें शारीरिक तनाव से मुक्त करती है और हमारे शरीर की मांसपेशियों को 45 मिनट तक आराम देता है। शोधकर्ताओं ने भी दावा किया है कि एक दिन में मात्र 30 मिनट तक ठहाके लगाने से आप तंदुरुस्त रह सकते हैं। ऐसा भी जरूरी नहीं है कि ये ठहाके एक साथ लगाए जाएं लेकिन नियमित अंतराल पर हंसना भी दवा का काम कर सकता है। इसके लिए आप कोई लाफ्टर क्लब ज्वाइन कर सकते हैं।

हँसी तनाव के हार्मोन को कम करता है और संक्रमण से लड़ने वाले एंटीबॉडी को बढ़ाता है जिससे बीमारी के होने की सम्भावना कम हो जाती है। हंसने से एंडोर्फिन नामक 'फील–गुड' रसायन पैदा होता है जो आपको अच्छा महसूस करने में मदद देता है। हँसी रक्त का प्रवाह बढ़ाता है और हृदय की समस्याओं से हमारी रक्षा करता है।

हास्य आपको कठिन परिस्थितियों और निराशा से दूरकर एक सकारात्मक, आशावादी दृष्टिकोण रखने में मदद करता है। जब आप हँस रहे होते हैं तो उदास नहीं रह सकते। अगर अपनी बैटरी रिचार्ज करनी है तो मुस्कराने की कला सीखनी होगी। अपने जीवन में ह्यूमर को बढ़ावा देने से हर परिस्थिति को आप एक अलग दृष्टिकोण से देख सकते हैं। कई बार हास्य के परिप्रेक्ष्य में किसी घटना को देखा जाये तो उससे हम कम प्रभावित होते हैं।

हास्य सकारात्मक भावनाओं को ट्रिगर करता है और हमारे भावनात्मक संबंधों को

मजबूत करता है। जब हम एक दूसरे के साथ हँसते हैं तो एक सकारात्मक बंधन बन जाता है। यह बंधन तनाव, असहमति और निराशा के खिलाफ एक मजबूत बफर के रूप में कार्य करता है। सदैव प्रसन्न रहना और अपने आसपास के लोगों को भी खुश रखना एक कला है।

सौंदर्य बढ़ाने के लिए भी हंसना जरूरी है। खुलकर हंसने और प्रसन्न रखने वाले व्यक्ति का वृद्धत्व आने पर भी स्वास्थ्य व सौंदर्य बना रहता है। हंसने से चेहरे को कसरत मिलती है। फलस्वरूप चेहरा कांतिमय बना रहता है। हंसमुख व्यक्ति के चेहरे पर झुर्रियां भी बहुत कम पड़ती हैं। हंसना और मुस्कुराना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। हमारे पास दो विकल्प हैं। हम तब मुस्कराएँ जब हम खुश हों, दूसरा यह कि हम मुस्कराएँ और आनंद हमारा सहज ही स्वभाव बन जाये।

6

ऊर्जा जगाने का एक अति–सुंदर उपाय

ऊर्जा को जगाने का एक और बहुत सुंदर उपाय जो ओशो ने शायद धर्म के जगत में पहली बार किया और वह है हंसी का उपयोग, हास्य का उपयोग। पहली बार ओशो ने इतिहास में चुटकलों का उपयोग ऊर्जा के जागरण में और ध्यान में डुबाने के लिए किया। आश्चर्य की बात है कि किसी को पहले यह बात ख्याल क्यों नहीं आई। प्राणायाम साधने में व्यायाम करने में अन्य विधियों में बहुत देर लगेगी। एक चुटकला आधा मिनट के भीतर ऊर्जा को वैसे ही उर्ध्वगामी कर देता है और न केवल उर्ध्वगामी करता है फैला भी देता है। वह प्रसन्नता का भाव, वह आनंद का भाव वह दोनों काम कर देता है जो ध्यान व प्रेम मिलकर करते हैं। ऊर्जा ऊपर की ओर भागती सहस्रार की तरफ और साथ–साथ विस्तृत भी होती है, फैलती भी है।

–ओशो शैलेंद्र

क्या अंतर है, सुनो–

लव मैरिज में आप अपनी गर्ल फ्रेंड से शादी करते हो और अरेंज मैरिज में आप किसी और की गर्ल फ्रेंड से शादी करते हो!

ग्रहण का दान

ग्रहण के बाद दरवाजे पर भीख माँगने आया भिखारी बोला–भगवान के नाम पर कुछ दे दो...।

महिला हजार का नोट दिखाते हुई बोली– क्या तुम्हारे पास 500 रुपए हैं?

भिखारी (खुशी से)– जी हैं।

महिला– तो पहले वो खर्च कर लो। दान तो मैं किसी और को भी दे सकती हूँ।

फर्क

चंदूलाल– पता है आदमी एक कान से सुनते हैं, दूसरे कान से निकाल देते हैं।
गुलाबो– और महिलाएं दोनों कानों से सुनती हैं, मुँह से निकाल देतीं हैं।

फूल

चंदूलाल– अपनी प्रेमिका के लिए फूल लेकर आया!
प्रेमिका– मुझे यह फूल नहीं कोई सोने की चीज चाहिए।
चंदूलाल– यह लो तकिया और मजे से सो जाओ!

जन्मदिन

चंदूलाल– गुलाबो, इस बार आप अपने जन्मदिन पर कम ही चीजें खरीदना क्योंकि महँगाई बहुत बढ़ गई है।

गुलाबो– ठींक है। पिछले साल मैंने 32 मोमबत्तियाँ जलाई थीं, इस बार 16 ही जलाऊँगी।

कॉलेज

प्रोफेसर– आज तुम इतनी देर से क्यों आए हो? कॉलेज तो सात बजे ही शुरू हो जाता है।

छात्र– आप मेरी फिक्र न किया करें सर, अपना कॉलेज समय पर शुरू करवा दिया कीजिए।

कटिंग

एक आदमी जिसके सिर पर दो बाल थे। कटिंग करवाने नाई की दुकान गया।
नाई ने गुस्से में पूछा– गिनूँ या काटूं...?
यह सुनकर वह आदमी उदास होकर बोला– कलर कर दो यार। होली के दिन हैं न!

आदत

चंदूलाल– मेरा बेटा दिन भर नाखून कुतरता था, मैंने तो उसकी यह आदत छुड़वा दी!
मुल्ला– अच्छा! वह कैसे? चंदूलाल– उसके दाँत तोड़ के!

हारमोनियम

'सर! मैं आपका हारमोनियम ठीक करने आया हूँ।'

'पर हमने तो आपको बुलाया ही नहीं!'

'जी वो... आपके पड़ोस में रहने वाली युवतियों ने एडवांस देकर बुलाया है।'

प्यार

मुल्ला– मैंने शादी से पहले अपनी पत्नी को एक बार भी प्यार नहीं किया था! क्या तुमने किया था?

टिल्लू गुरु– तुम पहले अपनी पत्नी का नाम बताओ तो ही बता सकता हूँ।

झूठी

चंदूलाल– पता है! मेरी पत्नी एकदम झूठी और वायदे से मुकरने वाली है।

मुल्ला– ऐसा क्या कर दिया उसने?

चंदूलाल– शादी से पहले उसने कहा था कि मैं तुम्हारे लिए जान भी दे सकती हूँ। पर अब तक उसने जान, दी तो है नहीं।

दिलजला

एक दिलजला अपने दोस्त से कह रहा था, अपनी प्रेमिका की उटपटाँग बातें सुनकर कभी–कभी तो जी चाहता है कि उसे उठाकर चौथी मंजिल से नीचे फेंक दूँ। मगर मैं ऐसा कर नहीं सकता।

'क्यों, क्या वह बहुत मोटी है?'

'नहीं यार, सोचता हूँ कि अगर वह बच गई तो मेरा क्या होगा?'

चंदूलाल– यार तेरी गाड़ी का नाम क्या है? किस कंपनी की है?

मुल्ला– नाम तो मैं भूल गया, लेकिन कंपनी... टी से चालू होती है।

चंदूलाल– अच्छा, तो तेरी गाड़ी चाय से स्टार्ट होती है... मेरी तो पेट्रोल से होती है।

ट्रेन

स्टेशन मास्टर से एक यात्री ने सवाल किया– आज कल ट्रेन इतनी लेट क्यों आ रही है?

मास्टर– क्या है ना कि सरकार ने अब जगह–जगह बड़े–बड़े प्रतीक्षालय बनवा दिए हैं। अगर ट्रेन समय पर आ जाएगी तो प्रतीक्षालयों पर इतना खर्च करने का क्या फायदा?

दादा अपने पोते सेः बेटे, जल्दी से छुप जाओ, आज तुम स्कूल से भाग कर आये हो, और मैंने खिड़की से देखा कि तुम्हारे टीचर यहीं आ रहे हैं!

पोताः आप छुप जाईये, क्योंकि उन्होंने छुट्टी तब दी जब मैंने उन्हें बताया था कि आपका देहांत हो गया है!

एक बार आदमी ने भगवान से कहा– आपने औरत को इतना खूबसूरत क्यों बनाया है?

भगवान बोले ताकि तुम उनसे प्यार कर सको।

आदमी बोला– तो फिर उन्हें इतना बेवकूफ क्यों बनाया है?

भगवान ने जवाब दिया– ताकि वो तुमसे प्यार कर सके।

मुल्ला नसरुद्दीन पर अदालत में मुकदमा था कि उसने दो शादियां कर लीं, जो कानून के खिलाफ है। उसके वकील ने सिद्ध किया कि यह बात गलत है। और मुल्ला ने कहा कि नहीं, मैंने दो शादी नहीं की, मेरी तो एक ही पत्नी है। वकील होशियार था, झूठ चल गया। उसने कानून की बड़ी बारीकियां निकालीं और सिद्ध हो गयी बात, और मजिस्ट्रेट ने कहा कि ठीक है नसरुद्दीन, यह सिद्ध हो गया कि तुम्हारी एक ही पत्नी है, तुम जुर्म से बरी किए जाते हो; अब तुम घर जा सकते हो।

नसरुद्दीन ने कहाः हुजूर, एक बात और। मैं किस घर जाऊं? क्योंकि दोनों पत्नियां राह देख रहीं होंगीं।

नसरुद्दीन प्रतिदिन अपने गधे को सरहद के पार ले जाता था। उस पर घास लदी होतीं थीं। सरहद के सिपाहियों के सामने वह स्वीकार करता था कि वह तस्कर है, इसलिए वे लोग उसकी रोज तलाशी लेते थे। उसकी घास उछालते, कभी जला देते तो कभी पानी में डालते। इधर नसरुद्दीन धनी से धनी होता जा रहा था।

फिर वह वहां से दूसरे देश में रहने गया। वर्षों बाद उसे सरहद की रक्षा करने वाले पुराने अफसरों में से एक मिला। उसने कुतूहलवश पुछा, 'नसरुद्दीन, तुम ऐसी कौन सी चीज की तस्करी करते थे कि तुम्हें कभी पकड़ नहीं सके?'

नसरुद्दीन ने कहा, 'गधों की।'

एक दंपत्ति की शादी को कई साल हो गए पर उनका कोई बच्चा नहीं हुआ। डॉक्टरों की मदद ली पर व्यर्थ। आखिरकार वे ईश्वर की मदद लेने के लिए एक साधु के पास पहुंचे।

साधु ने कहा– बेटे, तुम बहुत ही सही समय पर आए हो। मैं कुछ सालों के लिए तपस्या करने हिमालय पर्वत जा रहा हूं। उस तपस्या के दौरान मैं एक दीप प्रज्ज्वलित करूंगा जिससे तुम्हें अवश्य ही संतान प्राप्त होगी।

तपस्या खत्म करके जब साधु महाराज लौटे तब तक पंद्रह साल बीत चुके थे। यह जानने के लिए कि उनके कोई संतान हुई या नहीं, अगले ही दिन वे उन दंपत्ति के घर पहुंचे। जैसे ही दरवाजा खुला तो साधु ने देखा कि लगभग एक दर्जन बच्चे आंगन में धमाचौकड़ी कर रहे हैं और हैरान–परेशान सी पत्नी उनके बीच खड़ी हुई है।

साधु ने पूछा–क्या ये सब तुम्हारे ही बच्चे हैं?

महिला–हां।

साधु– प्रभु को कोटि कोटि धन्यवाद। मेरी तपस्या सफल हुई। अच्छा यह बताओ, तुम्हारे पति दिखाई नहीं दे रहे, कहां गए हैं?

महिला– हिमालय पर्वत।

साधु– हिमालय पर्वत! क्यों?

महिला– जो दीपक आपने जलाया था, उसे बुझाने के लिए!

शादी के बाद पहले पांच सालों तक पत्नी अपने पति को कैसे बुलाती है इसकी एक बानगी प्रस्तुत है –

पहला सालः जानू!

दूसरा सालः ओ जी!

तीसरा सालः सुनते हो?

चौथा सालः ओ मुन्ने के पापा!

पांचवा सालः कहां मर गए?

संतरी के काम के लिए एक व्यक्ति ट्रेनिंग ले रहा था। उसे बताया गया कि वह केवल ऐसी ही कारों को अंदर आने दे, जिन पर एक खास तरह का निशान हो। अचानक उसे एक बिना निशान वाली कार आती दिखाई दी।

संतरी ने रोकने पर उसमें बैठे उच्चाधिकारी ने ड्राइवर को कार आगे बढ़ाने की आज्ञा दी।

एक मिनट साहब! नया संतरी सैल्यूट मारकर बोला– दरअसल इस काम के लिए मैं नया हूं। यह बताइए कि गोली मैं आप पर चलाऊं या आपके ड्राइवर पर?

दफ्तर में आई एक नई टाइपिस्ट ने दूसरे कोने में बैठी एक खूबसूरत लड़की से पूछा– तुम हमेशा निठल्ली क्यों बैठी रहती हो?

बॉस को यही पसंद है। मेरा विभाग शिकायतों का विभाग है।

सूचना विभाग मंत्रालय से संबंधित एक व्यक्ति की सालीजी मेहमान बन आई हुई थी।

नगर में प्रेस वर्कर्स की हड़ताल के कारण जब सालीजी को सुबह अखबार नहीं मिला

तो उन्होंने जीजाजी के सेक्रेटरी को बुलाकर पूछा– अखबार न आने की वजह?

प्रेस वर्कर्स की हड़ताल।

जीजाजी के पद का रौब गालिब करने के इरादे से सालीजी ने समाचार पत्र के संपादक को फोन किया। उधर से भी वही जवाब मिला– प्रेस में हड़ताल हो गई है। अतः पांच–सात दिन अखबार नहीं छप सकता।

जवाब में सालीजी बोलीं– जब आपको पता था कि हड़ताल है तो आपने पहले ही बहुत से अखबार छपवाकर क्यों नहीं रख लिए थे?

तुमने अपनी खूबसूरत रिसैप्शनिस्ट को नौकरी से क्यों निकाल दिया? एक व्यक्ति ने अपने डॉक्टर मित्र से पूछा।

मेरा धंधा बिगड़ रहा था उसकी वजह से। डॉक्टर बोला।

अच्छा! वह कैसे?

मैंने अपने कई मरीजों को कहते सुना था कि उनकी आधी बीमारी तो उसकी एक मुस्कुराहट से ही दूर हो जाती थीं।

एक बहुत बड़ी कंपनी के डायरेक्टर मेटरनिटी होम में पत्नी के बच्चा होने की राह देख रहे थे। बैठे–बैठे उसने अपना ब्रीफकेस खोला और दफ्तर की फाइलें पढने् में तल्लीन हो गया, तभी साली ने आकर प्रसन्नता भरी सूचना दी– जीजाजी...। लड़का।

डायरेक्टर साहब अपने ख्यालों में खोए हुए थे। फाइल पर निगाह जमाए बोले– उनसे कहो, कल आना, इस समय मैं व्यस्त हूं।

भोंदूलाल– पापा, आपको क्या लगता है? मैनेजमेंट बेहतर है या आई.टी. करूं?

चंदूलाल– बेटा, कहाँ ज्यादा अच्छा पैकेज मिलने की संभावना है?

भोंदूलाल– इस ख्याल से तो पॉलिटिक्स सर्वश्रेष्ठ विकल्प है। अपना पैकेज खुद ही तय कर लो।

महिला– पहले मेरे पति भाग–भाग कर मेरी सारी फरमाइशें पूरी करते थे।

सहेली– और अब?

महिला– अब फरमाइश सुनते ही भाग जाते हैं

एक घर से पति–पत्नी के हँसने की कुछ ज्यादा ही आवाजें आती रहती थीं।

मौहल्ले के कई लोग एकत्रित होकर उनके यहाँ इस खुशहाली का राज़ जानने पहुंचे।

मौहल्ले वालों की जिज्ञासा को शांत करते हुए पति बोला– 'बहुत सरल है, हमारे यहाँ

मेरी बीबी बेलन, चिमटा आदि फेंककर मारती है। अगर मुझे लग जाता है तो वो हंसती है नहीं तो में हँसता हूँ।'

शराबी संता ने पत्नी को फोन किया– 'घर नहीं आ सकता। कार की स्टीयरिंग, गियर, ब्रेक सब चोरी हो गए।'

एक घंटे बाद पत्नी के पास फिर उसका फोन आया– 'आ रहा हूँ। गलती से कार की पिछली सीट पर बैठ गया था!'

पत्नी– अजी सुनते हो? आपका दोस्त एक पागल लड़की से शादी करने जा रहा है। आप उसे रोकते क्यों नहीं?

पति– क्यों रोकूँ? उस कमीने ने मुझे रोका था क्या।

एक महिला के छह बच्चे थे। जब भी कोई बच्चा रोता वह महिला कहती थी– देखो गलती करके रोते नहीं। हमेशा वह यही समझाती थी बेटा गलती करके रोते नहीं।

एक दिन छहों बच्चे उसे बहुत तंग कर रहे थे और उस महिला ने कहा – तुम्हारे जैसे बच्चे पैदा करने से तो बेऔलाद रह जाना ज्यादा ठीक था। उसकी छोटी बेटी बोली – मम्मी गलती करके रोते नहीं।

सेठ चंदूलाल बस से उतरकर अपनी पत्नी के लिए एक पान खरीद कर लाये। खूब बड़े साइज का पान, किंग साइज पान। उससे कहा– लो भागवान, यह पान खाओ।

श्रीमती चंदूलाल ने कहा – यह पान सिर्फ मेरे लिए क्यों लाए अपने लिए क्यों नहीं लाए? सेठ चन्दूलाल ने कहा – मैं बिना पान खाए भी चुप रह सकता हूं।

वैद्य राज ने बहुत ही कड़वे स्वाद का काढ़ा बनाकर सरदार विचित्र सिंह को देकर कहा – इससे दो दिन के अंदर ही खांसी ठीक हो जाएगी।

दूसरे दिन सरदार विचित्र सिंह बाजार में घूमते हुए वैद्य राज जी से मिले! वैद्य राज ने पूछा – खांसी में कुछ कमी हुई कि नहीं, काढ़ा पी रहे हो न। विचित्र सिंह ने कहा – यह काढ़ा पीने की बजाय खासना ही मैंने ज्यादा श्रेष्ठ समझा है। काड़े से तो खांसी ही भली!

दो महिलाएं ट्रेन में सफर कर रही थीं। एक ने फुसफुसाकर अपनी बगल में बैठी स्त्री से कहा–देखो सामने की सीट पर बैठा वह आदमी आधे घंटे से मुझे घूर–घूर कर देख रहा है। कुछ न कुछ करना होगा।

दूसरी महिला ने उसे जवाब दिया – कुछ करने की जरूरत नहीं, वह आदमी कबाड़ी

है। उसे पुरानी सड़ी गली रद्दी बेकार चीजों को घूरकर देखने की आदत है।

पापा– बेटा, अमेरिका में साल के बच्चे भी अपने पैरों पे खडे हो जाते हैं।
बेटा– लेकिन पापा भारत में तो एक साल का बच्चा भागने भी लगता है।

एक आईसक्रीम वाला बार–बार चिल्ला रहा था– एक बार खाएगा तो हजार बार खाएगा। यह सुन कर एक लडके से रहा नहीं गया। वह उसकी नकल करते हुए बोला–मुफ्त में खिलाएगा तो लाख बार खाएगा।

मुझे भी देखने दो किसका एक्सिडेन्ट हुआ है। एक आदमी भीड़ हटाते हुए बोला। जब कोई हटा नहीं तो वह चिल्लाते हुए बोला–जिसका एक्सिडेन्ट हुआ है मैं उस का पिता हूँ। रास्ता मिल गया। अदंर देखा तो एक गधा मरा पडा था।

पापा–प्रियंका, तुम्हारे गणित में इतने कम नम्बर क्यों आए?
प्रियंका–गैर हाजिरी के कारण!
पापा–क्या तुम गणित की परीक्षा के दिन गैर हाजिर थी।
प्रियंका–मैं नहीं, मेरे बगल में बैठने वाली लड़की गैर हाजिर थी।

टीचर–विनोद, एक मुर्गी रोज दो अण्डे दे तो वह सप्ताह में कितने अंडे देगी।
विनोद–सर, बारह। टीचर–वह कैसे। विनोद–जी, वह रविवार की छुट्टी भी तो मनाएगी न सर।

मेरा एक मित्र विश्वविद्यालय के परीक्षा में बैठा। उस विभाग के बारे में अक्सर यह सुनने में आता था कि वहां परीक्षाफल में भारी गड़बड़ होती है। उसे जल्द ही इसका परिणाम भी मिल गया। बीमारी की वजह से वह अंतिम पेपर नहीं दे पाया था, लेकिन फिर भी वह पास हो गया। उसने पत्र लिख कर पूछा, ऐसा कैसा हुआ? वहां से छपा–छपाया जवाब आया, यह बोर्ड का अंतिम निर्णय है।

एक बार एक व्यक्ति भैंस खरीदने के लिए उसके मालिक के घर गया। हेमन्त भाई साहब, इस भैंस की कीमत क्या है?
मालिक–तीन हजार रुपये।
हेमन्त–भैय्या, तीन हजार रुपये तो इस भैस के हिसाब से बहुत ज्यादा हैं।
मालिक –वह कैसे?

हेमन्त–इस की एक आंख भी नहीं है।

मालिक–तुम्हे भैंस दूध देने के लिए चाहिए या इससे कशिदाकारी करवानी है?

एक आया मैडम से कहती है, क्या बात है मैडम जी, आप तो एक स्वैटर सिर्फ तीन दिन में तैयार कर लेती हैं। इस बार तो पंद्रह दिनो में भी पूरा नहीं हुआ?

मैडम, वह क्या है न कि मैं पिछले दस दिनों से स्कूल नहीं गयी हूँ न इसलिए।

एक युवक अपनी प्रेमिका के लिए एक अंगूठी खरीदने के विचार से ज्यूलर के शोरुम में गया। उसने शोकेस में रखी अंगूठी के बारे में पूछा, इस की क्या कीमत है?

पांच हजार रुपए सेल्जमैन ने बताया।

इतनी अधिक कीमत सुनकर युवक के मुँह से सीटी निकल गई। फिर उसने एक अंगूठी की ओर इशारा करके पूछा, इसकी? दो सीटियां–उत्तर मिला।

रेलगाडी की बर्थ पर संदूक रखकर एक व्यक्ति बैठने लगा तो पास बैठी मोटी महिला बोली–इसे यहां से हटा लो, कहीं मेरे ऊपर गिर गया तो?

यात्री लापरवाही से बोला–कोई बात नहीं इसमें टूटने वाली कोई चीज नहीं है।

दिल्ली जाने वाली एक बस खचाखच भर चुकी थी। एक बुढ़िया बस रुकवा कर चढ़ गई। कंडक्टर के मना करने पर उसने कहा मुझे जरुरी जाना है। किसी ने बुढ़िया को सीट नहीं दी। अगले बस स्टैंड से एक युवा सुंदर लडकी बस में चढ़ी तो एक दिल फैंक युवक ने अपनी सीट उसे आफर कर दी और खुद खड़ा हो गया। युवती ने बुढ़िया को सीट पर बैठा दिया और खुद खड़ी रही। युवक अहिस्ता से बोला–मैंने तो सीट आप को दी थी। इस पर युवती बोली–धन्यवाद, लेकिन किसी भी चीज पर बहन से ज्यादा मां का हक होता है।

एक समारोह में नेता जी भाषण दे रहे थे, हमें खुराक की समस्या के हल के लिए ज्यादा से ज्यादा अनाज ऊगाना चाहिए। तभी एक शरारती उठ कर खडा हो गया और बोला श्रीमान जी, घास उगाने के बारे में आप का क्या विचार है?

नेता जी उसे बेठाने का इशारा करते हुए बोले–पहले मैं इन्सानों की खुराक के बारे में बता लूं, तुम्हारी खुराक के बारे में बाद में बताऊंगा।

पत्नी अपने लिए बाजार से एक नई ड्रैस लेकर आई तो उस ड्रैस को देखकर पति गुस्से में बोला–यह तुम क्या पारदर्शी ड्रैस उठा लाई हो, इसमें तो आर–पार सब दिखाई देता है। पत्नी मुस्कुराकर बोली–आप भी बड़े भोले हो, भला जब मैं इस ड्रैस को पहन लूंगी तो

आर–पार क्या दिखाई देगा?

सड़क पर एक मजमेबाज–यह दवा जरुर लीजिये। आपकी जवानी लौट आयेगी। मुझे देखिए इस दवा के कारण ही तीन सौ साल की उमर तक पहुँच गया हूँ।

क्या यह तीन सौ साल का हो सकता है? मजमे में से एक व्यक्ति ने उसके नौजवान सहायक से पूछा। कह नहीं सकता। क्योकि मैंने सिर्फ सवा सौ साल से ही इसके साथ काम किया है। सहायक ने जवाब दिया।

दुख के दरवाज़े

प्रश्न– स्वामी जी, मौत के बाद कर्म के अनुसार स्वर्ग या नर्क मिलता है अथवा किस्मत के मुताबिक, या कि परमात्मा में विश्वास और श्रद्धा, आस्तिकता–नास्तिकता के आधार पर? आत्मा को चुनाव की स्वतंत्रता होती है या अस्तित्व तय करता है? एक धार्मिक व्यक्ति को शत्रुओं के संग कैसा व्यवहार करना चाहिए?

ओशो शैलेन्द्र– एक कहानी सुनाता हूं उसमें आपके सवाल का जवाब मिल जाएगा।

मरने के बाद आदमी ने स्वयं को अनेक दरवाजों के बीच खड़े पाया। एक पर लिखा था 'लालसा', दूसरे पर 'भय' तीसरे पर 'अभिमान' चौथे पर 'प्रेम–संबंध' पांचवें पर 'सम्पत्ति' और आगे के द्वारों पर शक्ति, बुद्धि, मूढ़ता, गरीबी, कमजोरी, सौंदर्य, कुरूपता, इत्यादि लिखा था। वह विचारने लगा, क्या मैं कहीं भी जाने के लिए आजाद हूं? जैसा धरती पर सुना था कि कर्मों का लेखा–जोखा होता है, वैसा तो यहां कुछ नजर नहीं आ रहा। आश्चर्य भी हो रहा था कि मूढ़ता, गरीबी, कमजोरी, कुरूपता, भय आदि द्वारों से भला कोई क्यों प्रवेश करेगा! इनकी जरूरत ही क्या है?

उसे चिंतामग्न देखकर एक देवदूत उस तक आया और बोला, 'तुम किसी भी द्वार को चुन सकते हो। तुम्हें मनपसंद जगह पहुंचने की सुविधा है। ये मार्ग निर्देशित मंजिल पर जाकर खुलते हैं'।

आदमी ने बहुत सोचा पर उसे तय करते नहीं बना। उसने देवदूत से ही पूछा, 'मैं तो सोचता था कि मुझे मजबूर किया जाएगा नर्क में जाने के लिए, क्योंकि मेरे विचार, भाव, संकल्प, कर्मादि शुभ नहीं रहे। कृपया आप ही बताएं कि मुझे कौन सा दरवाज़ा चुनना चाहिए? मैं बड़े द्वन्द्व में पड़ गया हूं। क्या पकडूं, क्या छोडूं?'

देवदूत ने मुस्कुराते हुए कहा, 'उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। कामनाओं के मार्ग पर सभी यात्राओं की अनिवार्य परिणति दुःख में होती है।'

एक दूसरी कहानी सुनो–

'क्या आप उचित–अनुचित में, शुभ–अशुभ में विश्वास करते हैं?' युवक ज़ेन संन्यासी ने अपने गुरु से पूछा।

गुरु ने उत्तर दिया, 'नहीं, मैं इनमें भरोसा नहीं करता।'

'लेकिन कल ही मैंने आपको एक निर्धन व्यक्ति को दान देते देखा। यदि आप उचित और अनुचित, सही और गलत आदि में आस्था नहीं रखते हैं तो आप हमेशा उचित और सही कर्म ही क्यों करते हैं? क्या आप मरने के पश्चात् निर्वाण प्राप्त करना चाहते हैं,' युवक संन्यासी ने पूछा?

गुरु ने कहा, 'अब तुम मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो, कल मैंने तुम्हें चावल खाते देखा था और आज सुबह तुम सेब खा रहे थे। तुम इन सब चीजों में श्रद्धा रखते हो? क्या तुम्हारे मन में कभी पत्थर खाने की इच्छा पैदा होती है?'

युवक संन्यासी ने कहा, 'यह तो बहुत अलग बात है! चावल या सेब खाने का संबंध उनमें विश्वास या आस्था रखने से थोड़े ही है!'

'बिल्कुल वही!' गुरु ने कहा, 'सही या उचित कर्म करने के लिए उनमें विश्वास रखना ज़रूरी नहीं है। जागरूकता की स्थिति में पुण्य ही होते हैं, पाप नहीं होते। मूर्च्छित अवस्था में पाप ही होते हैं, पुण्य नहीं। सजगता का परिणाम आनंद है, प्रमाद का फल दुख है।'

आपने पूछा है कि आत्मा को चुनाव की स्वतंत्रता होती है या अस्तित्व तय करता है? अस्तित्व नियम से चल रहा है। व्यक्ति को चुनाव की स्वतंत्रता है, लेकिन परिणाम समष्टि के हाथों में हैं।

लो, तीसरी कहानी सुनो–

एक व्यापारी ने ज़ेन गुरु से पूछा, 'आप कैसे कह सकते हैं कि हमारे जीवन में नियंत्रण का अभाव है? यह मैं ही निश्चित करता हूँ कि मुझे नींद से कब जागना है, कब सोना है, कहां जाना है, अन्य कोई व्यक्ति मुझे यह सब करने के लिए नहीं कहता।'

गुरु ने कहा, 'यदि मैं तुम्हें प्रतिदिन एक निश्चित रकम दूं जिसे तुम जैसे चाहे खर्च कर सको तो वास्तविक नियंत्रण किसके हाथ में होगा?'

व्यापारी ने कहा, 'यदि आप मुझे रकम देंगे तो नियंत्रण आपके हाथ में ही होगा। मगर आप यह क्यों पूछ रहे हैं?'

गुरु ने कहा, 'जीवन ने ही तुम्हें हाथ–पैर, आँख, कान, हृदयगति, और विचार–शक्ति दी है। अब बताओ, तुम किसके नियंत्रण में हो?'

अंतिम, चौथी कहानी और सुनो–

एक ज़ेन संन्यासी ने अपने गुरु से पूछा, 'हमें अपने शत्रुओं से कैसा व्यवहार करना चाहिए?'

गुरु ने कहा, 'तुम अपने शत्रुओं से केवल घृणा ही कर सकते हो?'

शिष्य ने अचरज से कहा, 'ऐसा कहकर क्या आप घृणा का समर्थन नहीं कर रहे?'

गुरु ने कहा, 'नहीं। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि तुम उनसे घृणा करो। मेरे कहने का अर्थ यह है कि जब तुम किसी व्यक्ति को अपना शत्रु जानने लगते हो तब तुम उससे केवल घृणा ही कर सकते हो। '

अंत में सद्गुरु ओशो के एक अनूठे वचन पर अपनी बात पूरी करता हूं। वे कहते हैं कि स्वर्ग यानि मित्रों के बीच रहना, नर्क यानि शत्रुओं के बीच जीना। और दोस्त या दुश्मन कौन निर्मित करता है? हम खुद। अर्थात् हम स्वयं अपने स्वर्ग या नर्क के निर्माता हैं। ये हमारे चुनाव हैं। स्वर्ग तथा नर्क कोई भौगोलिक स्थल नहीं हैं, जहां मरने के पश्चात् हम जाते हैं। ये तो मनस्थितियां हैं, जिनमें हम जीते हैं। इन्हें हम अपने संग लिए फिरते हैं। ये हमारे दृष्टिकोण हैं, जिन चश्मों के माध्यम से देखने पर यही जगत स्वर्ग या नर्क सा दिखाई देने लगता है। धन्यवाद।

मुल्ला जी की दावत

खुशी की बात यह है की मुल्ला नसरुद्दीन खुद हमें यह कहानी सुना रहे हैंः–

'एक दिन ऐसा हुआ कि किसी ने किसी से कुछ कहा, उसने किसी और से कुछ कहा और इसी कुछ–के–कुछ के चक्कर में ऐसा कुछ हो गया कि सब ओर यह बात फैल गई कि मैं बहुत ख़ास आदमी हूँ। जब बात हद से भी ज्यादा फ़ैल गई तो मुझे पास के शहर में एक दावत में ख़ास मेहमान के तौर पर बुलाया गया।

मुझे तो दावत का न्योता पाकर बड़ी हैरत हुई। खैर, खाने–पीने के मामले में मैं कोई तकल्लुफ़ नहीं रखता इसीलिए तय समय पर मैं दावतखाने पहुँच गया। अपने रोज़मर्रा के जिस लिबास में मैं रहता हूँ, उसी लिबास को पहनकर दिनभर सड़कों की धूल फांकते हुए मैं वहां पहुंचा था। मुझे रास्ते में रूककर कहीं पर थोडा साफ़–सुथरा हो लेना चाहिए था लेकिन मैंने उसे तवज्जो नहीं दी। जब मैं वहां पहुंचा तो दरबान ने मुझे भीतर आने से मना कर दिया।

'लेकिन मैं तो नसरुद्दीन हूँ! मैं दावत का ख़ास मेहमान हूँ!'

'वो तो मैं देख ही रहा हूँ'– दरबान हंसते हुए बोला। वह मेरी तरफ झुका और धीरे से बोला– 'और मैं खलीफा हूँ।' यह सुनकर उसके बाकी दरबान दोस्त जोरों से हंस पड़े। फिर वे बोले– 'दफा हो जाओ बड़े मियां, और यहाँ दोबारा मत आना!'

कुछ सोचकर मैं वहां से चल दिया। दावत खाना शहर के चौराहे पर था और उससे

थोड़ी दूरी पर मेरे एक दोस्त का घर था। मैं अपने दोस्त के घर गया।

'नसरुद्दीन! तुम यहाँ!'– दोस्त ने मुझे गले से लगाया और हमने साथ बैठकर इस मुलाक़ात के लिए अल्लाह का शुक्र अदा किया। फिर मैं काम की बात पर आ गया।

'तुम्हें वो लाल कढ़ाईदार शेरवानी याद है जो तुम मुझे पिछले साल तोहफे में देना चाहते थे?'– मैंने दोस्त से पूछा।

'बेशक! वह अभी भी आलमारी में टंगी हुई तुम्हारा इंतज़ार कर रही है। तुम्हें वह चाहिए?'

'हाँ, मैं तुम्हारा अहसानमंद हूं। लेकिन क्या तुम उसे कभी मुझसे वापस मांगोगे?' – मैंने पूछा।

'नहीं, मियां! जो चीज़ मैं तुम्हें तोहफे में दे रहा हूं उसे भला मैं वापस क्यों मांगूंगा?'

'शुक्रिया मेरे दोस्त'– मैं वहां कुछ देर रुका और फिर वह शेरवानी पहनकर वहां से चल दिया। शेरवानी में किया हुआ सोने का बारीक काम और शानदार कढ़ाई देखते ही बनती थीं। उसके बटन हाथीदांत के थे और बैल्ट उम्दा चमड़े की। उसे पहनने के बाद मैं खानदानी आदमी लगने लगा था।

दरबानों ने मुझे देखकर सलाम किया और बाइज़्ज़त से मुझे दावतखाने ले गए। दस्तरखान बिछा हुआ था और तरह–तरह के लज़ीज़ पकवान अपनी खुशबू फैला रहे थे और बड़े–बड़े ओहदेवाले लोग मेरे लिए ही खड़े हुए इंतज़ार कर रहे थे। किसी ने मुझे ख़ास मेहमान के लिए लगाई गई कुर्सी पर बैठने को कहा। लोग फुसफुसा रहे थे– 'सबसे बड़े आलिम मुल्ला नसरुद्दीन यही हैं'। मैं बैठा और सारे लोग मेरे बैठने के बाद ही खाने के लिए बैठे।

वे सब मेरी और देख रहे थे कि मैं अब क्या करूँगा। खाने से पहले मुझे बेहतरीन शोरबा परोसा गया। वे सब इस इंतज़ार में थे कि मैं अपना प्याला उठाकर शोरबा चखूं। मैं शोरबा का प्याला हाथ में लेकर खड़ा हो गया। और फिर एक रस्म के माफिक मैंने शोरबा अपनी शेरवानी पर हर तरफ उड़ेल दिया।

वे सब तो सन्न रह गए! किसी का मुंह खुला रह गया तो किसी की सांस ही थम गई। फिर वे बोले– 'आपने ये क्या किया, हज़रत! आपकी तबियत तो ठीक है!?'

मैंने चुपचाप उनकी बातें सुनीं। उन्होंने जब बोलना बंद कर दिया तो मैंने अपनी शेरवानी से कहा– 'मेरी प्यारी शेरवानी। मुझे उम्मीद है कि तुम्हें यह लज़ीज़ शोरबा बहुत अच्छा लगा होगा। अब यह बात साबित हो गई है कि यहाँ दावत पर तुम्हें ही बुलाया गया था, मुझे नहीं।'

मुल्ला नसरुद्दीन की दो बीवियाँ

मुल्ला नसरुद्दीन की दो बीवियाँ थीं जो अक्सर उससे पूछा करती थीं कि वह उन दोनों में से किसे ज्यादा चाहता है।

मुल्ला हमेशा कहता– 'मैं तुम दोनों को एक समान चाहता हूँ'– लेकिन वे इस पर यकीन नहीं करतीं और बराबर उससे पूछतीं रहतीं– 'हम दोनों में से तुम किसे ज्यादा चाहते हो?'

इस सबसे मुल्ला हलाकान हो गया। एक दिन उसने अपनी प्रत्येक बीवी को एकांत में एक–एक नीला मोती दे दिया और उनसे कहा कि वे इस मोती के बारे में दूसरी बीवी को हरगिज़ न बताएं।

और इसके बाद जब कभी उसकी बीवियां मुल्ला से पूछतीं– 'हम दोनों में से तुम किसे ज्यादा चाहते हो?'– मुल्ला उनसे कहता– 'मैं उसे ज्यादा चाहता हूँ जिसके पास नीला मोती है'।

दोनों बीवियां इस उत्तर को सुनकर मन–ही–मन खुश हो जातीं।

,,,,,

मुल्ला की दो बीवियां थीं जिनमें से एक कुछ बूढ़ी थी और दूसरी जवान थी।

'हम दोनों में से तुम किसे ज्यादा चाहते हो?'– एक दिन बूढ़ी बीवी ने मुल्ला से पूछा।

मुल्ला ने चतुराई से कहा– 'मैं तुम दोनों को एक समान चाहता हूँ'।

बूढ़ी बीवी इस जवाब से संतुष्ट नहीं हुई। उसने कहा– 'मान लो अगर हम दोनों बीवियाँ नदी में गिर जाएँ तो तुम किसे पहले बचाओगे?'

'अरे!'– मुल्ला बोला– 'तुम्हें तो तैरना आता है न?'

वास्तव में 'रोटी क्या है?'

एक बार मुल्ला नसीरुद्दीन पर राजदरबार में मुकदमा चला की वे राज्य की सुरक्षा के लिए खतरा बन गए हैं और राज्य भर में घूमकर दार्शनिकों, धर्मगुरुओं, राजनीतिज्ञों और प्रशासनिक अधिकारियों के बारे में लोगों से कह रहे हैं की वे सभी अज्ञानी, अनिश्चयी और सत्य से अनभिज्ञ हैं। मुक़दमे की कार्रवाई में भाग लेने के लिए राज्य के दार्शनिकों, धर्मगुरुओं, नेताओं, और अधिकारियों को भी बुलाया गया।

दरबार में राजा ने मुल्ला से कहा– 'पहले तुम अपनी बात दरबार के सामने रखो'।

मुल्ला ने कहा– 'कुछ कागज़ और कलमें मंगा लीजिये।' कागज़ और कलमें मंगा ली गईं।

'सात बुद्धिमान व्यक्तियों को एक–एक कागज़ और कलम दे दीजिये'– मुल्ला ने कहा। ऐसा ही किया गया।

'अब सातों तथाकथित बुद्धिमान सज्जन अपने–अपने कागज़ पर इस प्रश्न का उत्तर लिख दें– 'रोटी क्या है?''

बुद्धिमान सज्जनों ने अपने–अपने उत्तर कागज़ पर लिख दिए। सभी उत्तर राजा और दरबार में उपस्थित जनता को पढ़कर सुनाए गए। पहले ने लिखा– 'रोटी भोजन है'।

दूसरे ने लिखा– 'यह आटे और पानी का मिश्रण है'।

तीसरे ने लिखा– 'यह ईश्वर का वरदान है'।

चौथे ने लिखा– 'यह पकाया हुआ आटे का लौंदा है'।

पाँचवे ने लिखा– 'इसका उत्तर इस पर निर्भर करता है कि 'रोटी' से आपका अभिप्राय क्या है?' छठवें ने लिखा– 'यह पौष्टिक आहार है'।

और सातवें ने लिखा– 'कुछ कहा नहीं जा सकता'।

मुल्ला ने सभी उपस्थितों से कहा– 'यदि इतने विद्वान और गुणी लोग इस पर एकमत नहीं हैं कि रोटी क्या है तो वे और दूसरी बातों पर निर्णय कैसे दे सकते हैं? वे यह कैसे कह सकते हैं कि मैं लोगों को गलत बातें सिखाता हूँ? क्या आप महत्वपूर्ण मामलों में परामर्श और निर्णय देने का अधिकार ऐसे लोगों को दे सकते हैं? जिस चीज़ को वे रोज़ खाते हैं उसपर वे एकमत नहीं हैं फिर भी वे एकस्वर में कहते हैं कि मैं लोगों की मति भ्रष्ट करता हूँ!'

7

अपना हास्य प्रार्थना में बदलना होगा

हंसना अधार्मिक नहीं है। हंसना मानव जीवन की सर्वाधिक विकसित घटना है और कोई प्राणी हंस नहीं सकता सिवाय मनुष्य के। अकेला मनुष्य है जो हंस सकता है। तुम्हें अपना हास्य प्रार्थना में बदलना होगा। सिर्फ तुम्हीं बदल सकते हो। और कोई जानवर ऐसा नहीं है जो ऊबा हुआ है। तो मनुष्य ये दो विशिष्ट बातें कर सकता है : या तो वह ऊब महसूस कर सकता है या हंस सकता है। पुराने धर्मों ने ऊब का चुनाव किया है। मैं हंसने को चुनता हूं। और मैं नहीं समझता कि परमात्मा तुम्हारे मंदिर–मस्जिदों से प्रसन्न होगा। वे इतनी ऊब पैदा कर रहे हैं। परमात्मा के पास तुम्हारे मंदिरों से अधिक विनोद बुद्धि होनी चाहिए; अन्यथा वह मनुष्य को पैदा ही नहीं करता। उसने मनुष्य बनाया और अदम से कहा, 'ज्ञान वृक्ष का फल मत खाना।' फिर उसने ईव को बनाकर उपद्रव की जड़ पैदा की... और फिर उसने एक सांप बनाया ताकि वह ईव को और तब ईव अदम को फुसलाये। उसके पास कुछ विनोदप्रियता जरूर रही होगी। यह संसार एक महान सुखांत कहानी है– बड़ी हास्यास्पद!

–ओशो

नेता (डाक्टर से)– मेरी रिपोर्ट जरा मेरी भाषा में समझाने की कृपा करें।

डाक्टर– तो सुनिए, मेरी रिपोर्ट के अनुसार आपका ब्लड प्रेशर घोटालों की तरह बढ़ रहा है, फेफड़े झूठे आश्वासन दे रहे हैं तथा हृदय त्याग–पत्र देने वाला है।

एक नए स्टेनोग्राफर को बुला कर साहब ने लंबा पत्र लिखवाया और अंत में कहा– कुछ पूछना है?

जी, जरा ये बता दीजिए कि 'प्रिय मित्र' और 'सदैव आपका' के बीच क्या बोले थे? स्टेनोग्राफर ने पूछा।

मुल्ला नसरुद्दीन नामक घोर शराबी अभियुक्त पर आरोप था कि उसने नशे में अपनी सास पर गोली चलायी। वह तो निशाना चूक गया, वरना सास की जान चली जाती। अंत में जज ने अपराधी को समझाया कि– 'देखो भाई, थोड़ा सोचो। शराब के कारण ही तुममें सास के प्रति इतनी घृणा पैदा हुई। शराब के कारण ही यह घृणा इस हद तक बढ़ी कि तुम पिस्तौल खरीदने पर मजबूर हुए। शराब के कारण ही तुम पिस्तौल लेकर सास के घर तक गये। शराब के कारण ही तुमने सास को पिस्तौल का निशाना बनाया। और शराब के कारण ही तुम निशाना भी चूक गये। 'सलाह का अंतिम वाक्य सुनकर महाशराबी मुल्ला नसरुद्दीन ने फौरन मद्यपान छोडने का व्रत ले लिया।

दादा चूहड़मल फूहड़मल नशे की पीनक में ऊंघ रहे थे। मैं पास ही बैठा अखबार पढ़ रहा था। एक खबर पढ कर मैंने कहा, 'दादा, देखो किसी ने कुएं में गिर कर जान से हाथ धो लिए।'

दादा बोले, 'कोई पागल था, अरे जब कुएं में गिर ही गया तो जान से हाथ क्यों धोए, पानी से धो लेता।'

आनंद समाधि में डूबकर ब्रह्मानंद रसपान के पश्चात् विषयानंद में रुचि समाप्त होने लगती है। सरदार विचित्तरसिंह जब छठे तल का यह कार्यक्रम करके माधोपुर से होशियारपुर लौट रहे थे, तो रास्ते में कार खराब हो जाने के कारण बीच जंगल में रुकना पडा। उस सुनसान इलाके में एक छोटी सी आदिवासी किस्म की झोंपडी में लालटेन जलती देख सरदारजी वहां पहुंचे। द्वार खटखटाया। एक ग्रामीण सुंदरी ने स्वागत किया। घर में वह अकेली थी। विचित्तरसिंह को रात्रि सोने की अनुमति मिलने में ज्यादा कठिनाई नहीं आई। वे समाधि में तल्लीन हो शीघ्र ही स्वप्नरहित सुषुप्ति में जाने की तैयारी करने लगे। किंतु भडकीले पारदर्शी वस्त्र धारणकर वह खुबसूरत युवती भिन्न–भिन्न बहानों से सरदारजी के कमरे में बारम्बार आती–जाती रही। बेचारे विचित्तरसिंह सुरति साधे हुए शवासन में लेटे रहे। उस महिला की बेचैनी पर उन्हें बहुत करुणा आई।

सुबह उस सुंदरी ने पूछा– 'हुजूर, नाश्ते में क्या लीजिएगा?'

सरदारजी ने कहा– 'चाय, टोस्ट, और आमलेट मिल जाएं तो बडी मेहरबानी होगी जी।'

गृहिणी बोली– 'आमलेट नामुमकिन... अंडे नहीं हैं।'

'अंडे नहीं हैं, आश्चर्य! '–सरदारजी ने आंखें फाडी– 'आपके आंगन में कम से कम

पचास मुर्गे–मुर्गियां घंटे भर से बांग दे रहे हैं! '

'माफ कीजिए हुजूर, अंडे नहीं हैं'–उदासी भरा जवाब मिला– 'क्योंकि हमारी मुर्गियां तो सब भली–चंगी हैं, मगर सारे मुर्गे आनंद समाधि स्नातक हैं। '

एक आदमी सरकस से एक खतरनाक शेरनी खरीदकर घर ले आया। इस विचित्र खूंखार जानवर को खरीदने का कारण पूछने पर वह मासूमियत से बोला– पिछले माह मेरी बीबी की मृत्यु हो जाने से घर में सूनापन काटने को दौड़ता है।

पत्नी : पालक में आयरन होता है।

पति : तो क्या मेरी पॉटी से लोहे का सरिया निकलवाओगी?

पत्नी– अगर मैं मर जाऊं तो तुम क्या करोगे?

पति– मैं भी मर जाऊंगा।

पत्नी– क्यों?

पति– कभी–कभी ज्यादा खुशी भी जान ले लेती है!!!

सहेली 1: अगले महीने मैं अपनी तीसरी शादी करवा रही हूँ!

सहेली 2: अच्छा! तुम्हारे पहले 2 पतियों का क्या हुआ?

सहेली 1: एक भगवान को प्यारा हो गया! : दूसरा पड़ोसन को प्यारा हो गया!

कोर्ट में तलाक़ के मुक़दमे के दौरान–

पति– माय लॉर्ड, मैं अपनी पत्नी से खुश नहीं हूँ इसलिए तलाक़ चाहता हूँ।

पत्नी– झूठ बोलता है कमीना! मुझसे सारा मोहल्ला खुश रहता है और ये कहता है कि ये खुश ही नहीं है!!

प्रश्न–क्रोध, लोभ, मोह आदि से एक–एक करके लड़ने पर भी हार ही हाथ लगी। ओशो कहते हैं कि सबसे इक साथ छुटकारा संभव है। भला वह कैसे?

ओशो शैलेन्द्र– सारे उपद्रव इकट्ठे आते हैं, वे रिश्तेदार हैं। आत्म–अज्ञान मूल रोग है।

'क्यों महानुभाव, क्या यह आपका ही बच्चा है जो मेरा कोट बालू में गाड़ रहा है? ' समुंद्र किनारे खड़े मुल्ला नसरुद्दीन से एक सज्जन ने अत्यंत तीखे स्वर में पूछा।

‘जी नहीं, वह तो मेरा भतीजा है,’ मुल्ला ने अत्यंत नम्रतापूर्वक कह कर दूसरी ओर इशारा किया? ‘मेरा छोटा बच्चा तो वह रहा जो आपके जूतों में पानी भर रहा है। मेरा भानजा वहां आपके पेंट शर्ट को समुद्री लहरों के हवाले कर आया। और वह मेरा बड़ा बच्चा है जो आपके कार के टायर में सुई घुसाने की कोशिश कर रहा है।’

प्रश्न–क्या यदाकदा छुटपुट झूठ बोलना भी पाप है?

ओशो शैलेन्द्र– अपराध छोटे बड़े होते होंगे, किंतु पाप सदा बराबर होते हैं। पाप, विचार या भाव तल की बातें हैं।

विद्वान न्यायाधीश ने टेबल पर जोर से हाथ पटककर घोषणा की– मुजरिम पर छह शादियों का आरोप लगाया गया था, लेकिन प्रर्याप्त सबूत न मिलने के कारण अदालत मुजरिम को बाइज्जत बरी करती है। पक्ष के वकील ने प्रसन्न होकर कहा, जाओ नसरुद्दीन, अब तुम खुशी–खुशी घर जा सकते हो, तुम्हारी बीबी बेताबी से तुम्हारा इंतजार कर रही होगी। मुल्ला बोला, सत्य की सदा विजय होती है। और मैं जानकर आनंदित हुआ कि हमारे कानून, संविधान, पुलिस और अदालत सभी सत्य की सेवा में समर्पित हैं। आप लोगों ने सिद्ध कर दिया सत्यमेव जयते। बाद में कोई कानूनी झंझट न हो इसलिए कृपाकर एक बात और बता दीजिए कि छह में से मैं कौन–सी बीबी के घर जाऊं?

प्रश्न–मैंने वंदांत की किताबें पढ़ने की कोशिश की, कुछ समझ में नहीं आया। मुझ जैसे कम बुद्धि वाले नासमझ को भी भगवान मिल सकता है क्या?

ओशो शैलेन्द्र– बहुत देर से एक स्त्री मुल्ला नसरुद्दीन को अपने पति की बीमारी के संबंध में बता रही थी। ‘मुझे डर है मुल्ला, कि उनके दिमाग में कुछ गड़बड़ हो गई है। मैं घंटों तक उनसे बातें करती रहती हूं और फिर देखती हूं कि उनके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ा है।’

‘यह कोई बीमारी नहीं है,’ ऊबा हुआ मुल्ला बोला, ‘बल्कि यह तो भगवान की देन है।’

प्रश्न–बारंबार संकल्प टूट जाता है, क्या करूं?

ओशो शैलेन्द्र– विधायक सकल्प लें। समझ व भाव से लें, अहंकार से नहीं। आत्म–सम्मोहन एवं ध्यान साधना के संग संकल्प जोड़ें। ध्यानसूत्र नामक प्रवचनमाला के प्रथम प्रवचन में बताई गई विधि करें।

चंदूलाल गया था तीर्थ को। वहां उसने संकल्प किया––आज से मछलियां नहीं खाऊंगा, लेकिन घर आकर पहले दिन ही उसने अपनी पत्नी से मछलियों का शोरबा बनाने को कहा। ऐसे उसे मछलियां बहुत पसंद न थीं और इसीलिए उसने संकल्प कर भी लिया

था, परन्तु संकल्प करके फंस भी गया था क्योंकि संकल्प के बाद से ही मछलियां उसका पीछा करने लगीं और उनके स्वप्न भी उसे अति स्वादिष्ट लगने लगे थे।

पत्नी ने मछलियों का नाम सुना तो बोलीः 'अरे! कहते क्या हो? तुम तो उन्हें तीर्थ में न खाने का संकल्प कर आये हो?' पर चंदूलाल बोल 'अरी पगली, मछलियां छोड़ने की कसम खई है, कुछ उनका शोरबा छोड़ने की कसम तो खाई नहीं है'

तब स्त्री ने शोरबा बनाया। लेकिन परोसते समय उसने कटोरे के किनारे हाथ लगा लिये जिससे कि मछली के कतरे न गिर पड़ें। इससे चंदूलाल बहुत नाराज हुआ और बोलाः 'अरी भागवान हाथ से क्यों रोकती है, जो अपनी तबियत से आप ही आवें उन्हें आने दे। कुछ इस रोका-राकी का संकल्प तो किया नहीं है।'

प्रश्न-निगेटिव थिंकिंग को कैसे पहचानें?

ओशो शैलेन्द्र- परिणाम दुख आए तो जानना कि सोच नकारात्मक थीं। फल से ही बीज की पहचान होती है।

मुल्ला नसरुद्दीन ने लाटरी के एक-एक रुपसे वाले दो टिकट मोल लिए, जिनमें से एक पर उसे एक लाख रुपये का इनाम मिला। लेकिन जब उसके मित्र उसे बधाई देने आये तो वह बेहद उदास बैठा हुआ था। कारण पूछने पर उसने कहाः ''पता नहीं मैंने दूसरे टिकिट पर पैसे क्यों बरबाद किये। इनाम तो एक पर ही मिल जाता।''

प्रश्न-ऐसी ध्यान साधना बताइए कि मरने के बाद स्वर्ग मिले।

ओशो शैलेन्द्र- जीवन को अभी स्वर्ग बना लो, बाद में भी वही मिलेगा।

चंदूलाल जी के मकान में आग लग गई और पूरा का पूरा घर जल गया। दूसरे दिन बीमा कम्पनी से एजेंट आया और नुकसान का पूरी तरह से जायजा लेकर चंदूलाल से बोला- ''हमारी बीमा कंपनी की नीतियों के अनुसार जैसा आपका मकान था, हम वैसा ही मकान, वैसे ही मैटीरियल से नया बना कर दे देंगे। हम आपको नगद धन नहीं दे सकते।

चंदूलाल सख्त होकर बोले, ''यदि आपकी कम्पनी की यही नीति है, तो आप मेरी पत्नी का बीमा निरस्त कर दीजिए।''

प्रश्न-आत्मग्लानि से कैसे मुक्ति मिले?

ओशो शैलेन्द्र- धर्म, गुरु, समाज, परिवार द्वारा दी धारणाओं से मुक्त होना पड़ेगा, लेकिन कठिन कार्य है।

चंदूलाल बोलाः ''डॉक्टर, मुझे कहते हुए दुख होता है, किंतु मेरी पत्नी सोचती है कि आप मेरे इलाज की जो फीस ले रहे हैं वह काफी अधिक है।''

''लेकिन जनाब,'' पूछा डॉक्टर ने, ''क्या आप भी अपने जीवन का मूल्य अपनी पत्नी की तरह कम आंकते हैं? ''

प्रश्न—मेरी विवाह की उम्र आ गई किंतु चारों तरफ लोगों का दुखी दाम्पत्य जीचन देखकर हिम्मत नहीं पड़ती कि शादी करूं। आपका क्या मंतव्य है?

ओशो शैलेन्द्र– अपने विवेक से चलो, हर व्यक्ति अनूठा)

मुल्ला नसरुद्दीन और उसकी पत्नी, दोनों ही तलाक के लिए जिद्द में थे। जज ने पूरी कोशिश की कि दोनों में कोई समझौता हो जाये, लेकिन वे दोनों एक दूसरे का मुंह देखने के लिए भी राजी नहीं थे।

'अच्छा, तो मैं तलाक की कार्यवाही पूरी कर देता हूं, नसरुद्दीन।,' जज ने कहा, 'लेकिन जो कुछ भी तुम्हारे पास है वह बराबर बंट जाएगा।'

'हमारे सात बच्चों का क्या होगा? ' पत्नी ने चिंतित होकर पूछा।

'उन्हें बांटने की तुम्हीं लोग कोई राह सुझाओ,' जज ने कहा।

मुल्ला तत्काल निश्चय पर पहुंच गया। वह पत्नी के पास जा हाथ खींचता हुआ बोलाः 'चलो, घर चलो। अब हम अगले साल अदालत में आयेंगे, जब हमारे आठ बच्चे हो जायेंगे।'

प्रश्न—ध्यान करते तीन दिन हो गए अभी तक मन शांत नहीं हुआ। कब तक लाभ होगा?

ओशो शैलेन्द्र– अधैर्य ही तो अशांति का मूल कारण है। जितनी जल्दी मचाओगे, उतनी ज्यादा देर लगेगी। जितनी प्रतीक्षा को राजी हाओगे, उतने शीघ्र परिणाम आ जाएंगे। धैर्यवान कैसे अशांत हो सकता है? किसी भी कामना से ग्रसित मन, यहां तक कि ध्यान की वासना से भरा चित्त भी लक्ष्य–केंद्रित एवं तनावयुक्त हो जाता है। धीरज स्वयं में स्थित करता है, 'स्वस्थ' करता है। सुनो यह लतीफा–

मिसेज चंदूलाल– डॉक्टर साहब, पांच दिन से अस्सी रुपये प्रतिदिन की दवा खा रही हूं, मगर कोई फायदा नजर नहीं आ रहा है।

डॉक्टर– फिक्र मत करिए मैडम, आज से ही मैं दवा का डोज घटा देता हूं। अब केवल पचास रुपये प्रतिदिन की दवा खाना पड़ेंगी तो आपको तीस रुपये प्रतिदिन का फायदा तुरंत नजर आने लगेगा।

मुझे मालूम नहीं, तुम्हारी लाभ की परिभाषा क्या है? चमत्कार की आशा में, आशीर्वाद की कामना से भरे लोग कभी–कभी आ जाते हैं। वे अध्यात्म की बात पकड़ ही नहीं पाते। समझो– ध्यान यानी धैर्य, अर्थात् लक्ष्य से मुक्त वर्तमान–केंद्रित चेतना... वह स्वयं ही स्वयं का लक्ष्य है। कुछ पाने की भाषा में, फायदे की भाषा में सोचने वाला मन कभी ध्यानस्थ नहीं हो सकता। कब तक का प्रश्न न पूछो। अभी और यहीं– तत्काल शांति घटित हो सकती है, बशर्ते कि भविष्य की चाहना न हो। यहां तक कि शांति की लालसा भी न हो।

प्रश्न–आप अव्यस्तता एवं एकांत–रस की चर्चा करते हैं, फिर मुझे अकेले और खाली रहने में भय क्यों लगता है?

ओशो शैलेन्द्र– हम स्वयं को भूलना चाहते हैं, भीड़ में खो जाना चाहते हैं, खुद के आमने–सामने होने से बचना चाहते हैं। अकेलेपन में खुद को भुलाना मुश्किल है। अपनी असलियत का बोध होता है। दूसरों के सम्मुख हम एक प्रकार के अहंकार के नशे में चूर रहते हैं। मैंने सुना है कि–

पत्नी बोली– ससुराल में आकर इतने सहमे–सहमे, परेशान और निराश से क्यों रहते हो? जब शादी करने आए थे तब कितनी अकड़ से सीना फुलाए आए थे... याद करो वो दिन।

पति ने कहा– हां याद हैं, वो दिन, उस समय मेरे संग बाराती जो थे।

अकेलेपन में और एकांत में अंतर समझना। अकेलेपन में दूसरे की अनुपस्थिति खटकती है। एकांत में स्वयं की उपस्थिति का सुखद अहसास होता है। लेकिन एकांत का आनंद तो वही ले सकते हैं जिन्होंने ध्यान साधना की है। ध्यान यानी स्वयं से प्रेम, आत्म–रमण की कला। अकेलेपन में मृत्यु का स्मरण आ जाता है। एकांत में अमृत का बोध होता है।

एक और मजेदार घटना–

किसी की मृत्यु हो जाने पर गांव के स्कूल में छुट्टी हो जाती थी। एक बार तीन माह तक कोई नहीं मरा। एक दिन शिक्षक ने बताया कि धूम्रपान से कैंसर हो जाता है। उस दिन कमर झुके दो बूढ़ों को बीड़ी पीते देखकर बच्चे प्रसन्न होकर कहने लगे– वो देखो, अपनी दो संभावी छुट्टियां बीड़ी पी रही हैं।

अकेले में जीवन की असारता, व्यर्थता, और संभावी छुट्टी नजर आने लगती है। व्यस्त रहकर हम स्वयं को सार्थक व उपयोगी समझते रहते हैं– चाहे सिगरेट पीने लगें या शतरंज खेलने लगें। व्यस्तता में मौत का विस्मरण हो जाता है। वह विस्मरण खतरनाक है।

शुतुरमुर्ग द्वारा शत्रु को देखकर रेत में मुंह गड़ाने जैसा है। चाहे भय ही क्यों न लगे, स्वयं से बचना और मौत को झुठलाना नासमझीपूर्ण मंहगा सौदा है।

प्रश्न–जीवन क्या है? यह संपूर्ण अस्तित्व क्या है?

ओशो शैलेन्द्र– 'जो है' उसका नाम जीवन या अस्तित्व है। इसी कारण उसकी परिभाषा नहीं हो सकती। परिभाषा के लिए कम से कम दो तो चाहिए। संपूर्ण के बाहर कुछ भी नहीं है, इसलिए उसकी परिभाषा असंभव है।

यदि तीसरा विश्वयुद्ध हो जाए और धरती पर केवल एक ही मनुष्य बचे तो उसकी जमीन–जायदाद की सीमा क्या होगी? जब कोई पड़ोसी ही नहीं है तो उसका खेत या बगीचा कितना बड़ा होगा? उसके देश का नक्शा कैसा होगा?

पड़ोसी से ही सीमा निर्धारित होती है, और 'संपूर्ण' का कोई पड़ोसी नहीं हो सकता। जीवन असीम है, अनादि–अनंत है, इसीलिए अपरिभाष्य है। इन्हीं मित्र का एक और सवाल है–

प्रश्न–क्या संपूर्ण जीवन का उद्देश्य शांति पाना है?

ओशो शैलेन्द्र– संपूर्ण का कोई लक्ष्य नहीं हो सकता, क्योंकि उसके बाहर कुछ शेष नहीं बचता। अगर उसके अतिरिक्त भी कुछ है, तो फिर वह संपूर्ण नहीं कहा जा सकता। पाने की भाषा में यदि सोचोगे तो तनाव पैदा होगा। इच्छा भविष्य निर्मित करती है। गलत सवाल पूछोगे तो कोई न कोई गलत जवाब देने वाला मिल जाएगा। कुछ शार्टकट बताने वाला मिल जाएगा। सावधान! समझो। समझ के अतिरिक्त, जागरण के सिवाय कोई और बात काम न आएगी। लक्ष्यहीन, खेलपूर्ण यह अस्तित्व शांत ही है। झूठे लक्ष्य निर्मित करोगे तो अशांति उत्पन्न हो जाएगी। यह कविता सुनो–

विवाह से पूर्व पिताजी ने कहा– बेटा आजाद!
विवाह कर तो रहे हो लेकिन विवाह के बाद
घर में शांति का साम्राज्य रहना चाहिए,
तुम्हें ऐसी वधू खोजकर लाना चाहिए।
पुत्र ने पितृ–आदेश का अक्षरशः पालन किया
और शांति नाम की लड़की से विवाह कर लिया।

प्रश्न–क्या शास्त्रों से ज्ञान हासिल नहीं हो सकता? गुरु अनिवार्य है?

ओशो शैलेन्द्र– हो तो सकता है, मगर उसके लिए भी पहले से कुछ ज्ञान चाहिए। शास्त्रों से सीखने के लिए अद्भुत प्रतिभा चाहिए। उतनी प्रतिभा होती तो यह सवाल भी न पूछते! गुरु का मतलब है जिससे पूछना पड़े। शिष्य का अर्थ है जिसे स्वयं समझ न आए, किसी का सहारा खोजना पड़े। स्कूल–कालेज में साधारण सांसारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी शिक्षक की जरूरत पड़ती है न? फिर भी सभी लोग कहां हासिल कर पाते हैं! मैंने सुना है–

होम साइंस में एम. ए. पास नई बहुरानी जब मेहमानों के लिए गर्म हलवा बनाकर निर्वस्त्र हालत में परोसने आई तो पति चिल्लाया– यह क्या कर रही हो? वह बोली– नई कुकिंग बुक की रेसीपी में लिखा है 'सर्भ हॉट विदाउट ड्रेसिंग।'

शास्त्रों में से तुम वही तो समझोगे न जो तुम समझ सकते हो! समझ ही होती तो शास्त्र की भी क्या आवश्यकता पड़ती? जब संसार का ज्ञान तक स्वयं पाना कठिन है, तो अध्यात्म का गुह्य ज्ञान कैसे उपलब्ध कर पाओगे! मगर अहंकार आड़े आता है, वह कहता है कि मैं खुद ही सब कुछ कर लूंगा। और यही अहंकार आत्मज्ञान में बाधा है।

प्रश्न– अध्यात्म में दृष्टिकोण अथवा गेस्टॉल्ट परिवर्तन का क्या अर्थ है?

ओशो शैलेन्द्र– अपने अतीत के संस्कारों से मुक्त होकर देखने की क्षमता। अपने नजरिये की बदलाहट– ताकि सत्य जैसा है, वैसा दिखाई दे सके। धारणाओं एवं मान्यताओं के रंगीन चश्में उतारकर देखने की कला। अनुभवों, स्मृतियों, विचारधाराओं, विश्वासों को एक ओर खिसकाकर निरीक्षण करना सीखना होगा। हमारी मान्यताएं ही हमारे आत्मज्ञान में दीवारें बनकर खड़ी हैं। तथाकथित ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान में बाधक है।

अमीर की नजर में गरीबी

कान्वेंट स्कूल की एक अमीर शहजादी को 'गरीब परिवार' पर निबंध लिखने को कहा गया। उसने इस प्रकार वर्णन किया– एक बहुत ही गरीब परिवार था। पिताजी तो गरीब थे ही, माताजी भी अत्यंत दरिद्र थीं। उनके तीनों बेटे और चारों बेटियां तक गरीबी से इतने परेशान थे कि उन्होंने कभी फाइव स्टार होटल में प्रवेश नहीं किया था। बेचारे थ्री स्टार में ही गुजारा करते थे। इस दुखियारे परिवार के माली और रसोइया भी गरीब थे। परिवार में तीन नौकर और आठ नौकरानियां थीं, मगर बदकिस्मती से सभी गरीब और अनपढ़ भी। अशिक्षित होने के कारण उन्हें माइक्रोवेव ओवेन, टेलीविजन, रेफ्रीजिरेटर,

वाशिंग मशीन का उपयोग करना नहीं आता था। बेचारे ड्राइवर की हालत सबसे खराब थी। गरीबी की वजह से पुरानी रोल्स रायस ही चलाता था। बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने वाले शिक्षकों की अवस्था दयनीय थी। किताब खरीदने के पैसे उनके पास नहीं थे, कम्प्यूटर पर इंटरनेट से ही कोर्स मटेरियल डाउनलोड करके काम चलाते थे। दुर्भाग्यवश इस परिवार के रिश्तेदार भी गरीब थे, उन लोगों के पास पुराने मॉडल के मोबाइल फोन, वीडियो गेम्स, कैमरे, फैक्स मशीन, और सस्ती कीमत वाले ए. सी. थे। इन्हीं कारणों से वे लोग शर्म की वजह से किसी मेहमान को अपने बंगले पर नहीं बुला पाते थे। बंगले के कालीन, सोफे, परदे इत्यादि दरिद्रता के प्रतीक थे। बेचारे गरीब परिवार के सदस्य हर साल एरोप्लेन में इकोनॉमी क्लास में ही वर्ल्ड-टूर की यात्रा करते थे। हमारी सरकार को ऐसे परिवारों की तुरंत सहायता करनी चाहिए।

प्रश्न–आचार्य जी, कामन सेंस किसे कहते हैं?

ओशो शैलेन्द्र– वह सेंस जो कामनली नहीं पाया जाता, कामन सेंस कहलाता है। पता नहीं क्यूं ऐसा है, मगर तथ्य ऐसा है। इट इज वेरी रेयर सेंस! सच्चाई यह है कि वह विरले लोगों में ही देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए मुल्ला नसरुद्दीन के बेटे फजलू का कामन सेंस बड़ा अद्भुत है! उसकी 'परीक्षा–कथा' का सार संक्षेप सुनो–

शिक्षक– बेटा, आज मौखिक परीक्षा के दिन एक काला और एक लाल जूता पहनकर स्कूल क्यों आए हो? जल्दी घर जाओ, बदलकर आओ।

फजलू– सर, कोई फायदा नहीं, घर में भी एक काला और एक लाल जूते की जोड़ी ही पड़ी है।

शिक्षक– कोई बात नहीं। अपने पापा मुल्ला नसरुद्दीन जी से कहना कि आगे से कोई भी सामान दुकान से देखकर खरीदें।

शिक्षक– कुत्ते पूछ क्यों हिलाते हैं?

फजलू– कामन सेंस सर! पूछ तो कुत्ते को हिला नहीं सकती।

शिक्षक– शाबास। बायोलाजी के बाद धर्म संबंधी सवाल, बताओ रामनवमी क्या है?

फजलू– इस दिन श्री रामचंद्रजी आठवीं पास करके नवमी कक्षा में दाखिल हुए थे।

शिक्षक– और कृष्ण जन्माष्टमी से क्या समझते हो?

फजलू– भगवान कृष्ण जन्म भर आठवीं कक्षा में ही पढ़ते रहे।

शिक्षक– बहुत बढ़िया। अब विज्ञान के बारे में पूछूंगा, बोलो बिजली कहां से आती है?

फजलू– मेरे मामाजी के घर से।

शिक्षक– कैसे?

फजलू– जब भी बिजली जाती है पापा कहते हैं सालों ने बिजली काट दी!

शिक्षक– बिजली कटने से अंधेरा हो जाता है। चलो अंधेरे से संबंधित एक सवाल– तमसो मा ज्योतिर्गमय का अर्थ बताओ।

फजलू– तमसो मा ज्योतिर्गमय यानी... तुम सो जाओ मा, मैं ज्योति के घर जा रहा हूं।

शिक्षक– मान लो तुम ज्योति के घर या कहीं और आवश्यक कार्य से जा रहे हो और काली बिल्ली रास्ता काट जाए तो इस मुहावरे का क्या अर्थ है?

फजलू– सर, सीधी सी बात है– काली बिल्ली भी आवश्यक कार्य से कहीं जा रही होगी।

शिक्षक– वेरी गुड। अब अंग्रेजी की परीक्षा, 'आई मेड ए मिस्टेक' का पैसिव व्हाइस बनाओ।

फजलू– 'आई वाज मेड बाइ मिस्टेक'।

शिक्षक– बेटा, दिल लगाकर पढ़ाई करो।

फजलू– सर, शायद आपको मालूम नहीं कि दिल लगाने के बाद पढ़ाई बिल्कुल नहीं होती।

शिक्षक– अच्छा, ऐसा लगता है कि तुम्हें कुछ आता–जाता नहीं, बड़े होकर नेता बनोगे! चलो, ईमानदार राजनेता की परिभाषा बोलो।

फजलू– सर, ईमानदार राजनेता वह है जो अभी तक पकड़ा नहीं गया।

शिक्षक– तुम परीक्षा में असफल हुए। लेकिन बेटा गमगीन न होना, रोना मत। किस्मत में पास होना नहीं था। भाग्य को कौन पलट सकता है!

फजलू– अच्छा हुआ सर, गम की नहीं यह तो खुशी की बात है कि मैंने पढ़ाई नहीं की वरना सब मेहनत बेकार जाती। किस्मत में तो फेल होना लिखा ही था।

शिक्षक– बेटा, तुम इतने आलसी क्यों हो?

फजलू– सर, आलसी नहीं, मैं तो समन्वयवादी हूं। पंडित जवाहरलाल नेहरूजी ने कहा– आलस्य हमारा सबसे बड़ा शत्रु है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी बोले– हमें अपने शत्रु से भी प्रेम करना चाहिए। मैंने दोनों महापुरुषों की बात एक साथ मान ली।

शिक्षक– तुम्हारे पड़ौसी की बेटी रेशमा को देखो, महमूद की बहन को देखो, वे दोनों पास हो गईं।

फजलू– सर, दिन–रात उन्हीं दोनों को देखता रहता हूं, इसीलिए तो मैं फेल हो गया।

शिक्षक– अरे मोटूराम, पेट में खाने के अलावा खोपड़ी में कभी ज्ञान भी ठूंसा करे।

परीक्षा में असफल होकर भी इतने खुश क्यों हो रहे हो?

फजलू– मोटे लोग सदा प्रसन्न रहते हैं सर। क्योंकि जिस सख्श को अपनी भारी–भरकम तोंद से तकलीफ नहीं, इस दुनिया में उसे भला और किस चीज से तकलीफ होगी? शिकायत भाव नहीं, मुझे सब स्वीकार है। तथाता– यही तो भगवान बुद्ध का संदेश है, जिसे मैं जी रहा हूं। ओ. के. सर, बाय–बाय।

पर्यटक को यह सुनकर अच्छा लगा लेकिन अगले ही पल उसके चेहरे पर अविश्वास का भाव आ गया। पर्यटक ने मुल्ला से कहा– 'लेकिन मेरी जानकारी के हिसाब से तो सिकंदर महान यूनानी था, मुस्लिम नहीं था।'

मुल्ला ने मुस्कुराते हुए कहा– 'हूँ, तो आप कुछ–कुछ जानते हो। दरअसल, उस जंग में सिकंदर महान को इतनी दौलत मिली कि उसने अल्लाह के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिए इस्लाम कबूल लिया।'

'ओह हो!'– पर्यटक आश्चर्य से बोला– लेकिन सिकंदर महान के वक़्त में तो इस्लाम दुनिया में आया ही नहीं था!?'

'बहुत सही!'– मुल्ला ने कहा– 'असल में, सिकंदर महान अपने प्रति अल्लाह की दानशीलता से इतना प्रभावित हुआ कि उसने जंग के खात्मे के फ़ौरन बाद नए मज़हब को चलाया और वह इस्लाम का प्रवर्तक बन गया।'

पर्यटक ने नवीनीकृत आदर के साथ मस्जिद पर अपनी निगाह डाली। लेकिन इससे पहले कि मुल्ला इस सबसे बोर होकर भीड़ में खिसक लेता, पर्यटक ने फिर से अपने मन में उठते हुए नए प्रश्न को उसके सामने रख दिया– 'लेकिन इस्लाम के प्रवर्तक तो हजरत मोहम्मद थे न? इसे तो मैंने निश्चित रूप से एक किताब में पढ़ा है कि हज़रत मोहम्मद ने ही इस्लाम धर्म की नींव रखी थी, सिकंदर महान ने नहीं।'

मुल्ला ने कहा– 'भाई खूब! तुम तो वाकई बहुत जानकार आदमी लगते हो! मैं इसी बात पर आ रहा था। दरअसल, सिकंदर महान को लगा कि वे नई शख्सियत अपनाने के बाद ही पैगम्बर बन सकते थे इसीलिए उन्होंने अपने पुराने नाम को त्याग दिया और फिर ताज़िंदगी मोहम्मद ही कहलाये।'

'सच में!?'– पर्यटक हैरत से बोला– 'ये तो बहुत प्रेरणादायक बात हैः लेकिन, सिकंदर महान तो हजरत मोहम्मद से कई सदियों पहले हुए थे! क्या मैं गलत हूँ? '

'सौ फीसदी!'– मुल्ला हंसते हुए बोला– 'तुम किसी दूसरे सिकंदर महान के बारे में बात कर रहे हो। मैं तो तुम्हें उसके बारे में बता रहा था जिसे लोग मोहम्मद कहते थे!'

मुल्ला नसरुद्दीन की बीवी का नाम

एक दिन मुल्ला नसरुद्दीन और उसका एक दोस्त साथ में टहलते हुए अपनी–अपनी बीवी के बारे में बातचीत कर रहे थे। मुल्ला के दोस्त का ध्यान इस बात की ओर गया कि मुल्ला ने कभी भी अपनी बीवी का नाम नहीं लिया।

'तुम्हारी बीवी का नाम क्या है, मुल्ला? '– दोस्त ने पूछा।

'मुझे उसका नाम नहीं मालूम– मुल्ला ने कहा।

'क्या!?'– दोस्त अचम्भे से बोला– 'तुम्हारी शादी को कितने साल हो गए?'

'अट्ठाईस साल'– मुल्ला ने जवाब दिया, फिर कहा– 'मुझे शुरुआत से ही ये लगता रहा कि हमारी शादी ज्यादा नहीं टिकेगी इसलिए मैंने उसका नाम जानने की कभी ज़हमत नहीं उठाई'।

मुल्ला नसरुद्दीन और भिखारी

एक दिन एक भिखारी ने मुल्ला नसरुद्दीन का दरवाज़ा खटखटाया। मुल्ला उस समय अपने घर की ऊपरी मंजिल पर था। उसने खिड़की खोली और भिखारी से कहा– 'क्या चाहिए? '

'आप नीचे आइये तो मैं आपको बताऊँगा'– भिखारी ने कहा।

मुल्ला नीचे उतरकर आया और दरवाज़ा खोलकर बोला– 'अब बताओ क्या चाहते हो।'

'एक सिक्का दे दो, बड़ी मेहरबानी होगी'– भिखारी ने फरियाद की। मुल्ला को बड़ी खीझ हुई। वह घर में ऊपर गया और खिड़की से झाँककर भिखारी से बोला– 'यहाँ ऊपर आओ'।

भिखारी सीढियाँ चढ़कर ऊपर गया और मुल्ला के सामने जा खडा हुआ। मुल्ला ने कहा– 'माफ़ करना भाई, अभी मेरे पास खुले पैसे नहीं हैं।'

'आपने यह बात मुझे नीचे ही क्यों नहीं बता दी? मुझे बेवज़ह इतनी सारी सीढियाँ चढ़नी पड़ गईं!'– भिखारी चिढ़कर बोला।

'तो फिर तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया'– मुल्ला ने पूछा– 'जब मैंने ऊपर से तुमसे पूछा था कि तुम्हें क्या चाहिए!?'

8

ध्यान : हंसी और विश्रांति

कुछ क्षण ऐसे होते हैं, जब अनजाने आप लेट–गो की स्थिति में होते हैं। उदाहरण के लिए, जब आप वास्तव में हंस रहे हैं, पेट में बल पड़ने वाली हंसी, सिर्फ मस्तिष्क से नहीं, लेकिन पेट से, आप बिना जाने ही रिलैक्सड होते हैं, आप लेट–गो में हो जाते हैं। इसीलिए हंसी इतना स्वास्थ्य देती है। कोई और दूसरी दवाई नहीं है जो कि आपका स्वास्थ बनाने में इतना मदद करती है। अगली बार आप हंसे तो सतर्क रहकर देखें कि आप कितने रिलैक्सड हैं।

यह विधि : रात में सोने से पहले और सुबह उठते ही करें।
अवधिः 10–40 मिनट।

चरण 1 : खिलखिलाओ

चुपचाप बैठे हुए बस अपने मन में खिलखिलाएं, जैसे कि सारा शरीर खिलखिला रहा हो, हंस रहा हो। हंसी के साथ लहराना शुरू करें; इसे अपने हाथों और पैरों में फैल जाने दें। यदि यह ठहाकों के साथ आता है, तो इसे आने दें; यदि यह धीमे–धीमे आता है, इसे आने दें। अपने पूरे शरीर को शामिल होने दें, सिर्फ ओंठों और गले को नहीं। हंसी आपके पैर के तलवों से ऊपर उठती जाए और उसकी सूक्ष्म लहरें पेट की ओर बढ़ने लगें। एक छोटे बच्चे के रूप में अपने आपको देखें और यदि आपको ऐसा लगे तो फर्श पर एक बच्चे की तरह लोटपोट होने लगें। आवाज करना इतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि समग्रता से सहभागी होना।

अपने आपको कठोर न रखें; ढीला छोड़ दें और सहयोग करें। यदि शुरूआत में आप इसे थोड़ा बढ़ा–चढ़ा कर करें तो यह सहायक होगा।

चरण 2 : धरती से संपर्क बनाओ

फर्श या पृथ्वी पर उलटे लेट जाओ, फर्श की ओर मुंह किए हुए; और सबसे अच्छा

होगा नग्न होकर। पृथ्वी के साथ संपर्क बनाओ, महसूस करो की पृथ्वी तुम्हारी मां है और तुम एक बच्चे हो। इस अहसास में खो जाओ। पृथ्वी के साथ सांस लो, पृथ्वी के साथ एकात्मता महसूस करो।

चरण ३ : नाचो

बीस मिनट के लिए नृत्य करो। संगीत और नृत्य शुरू कर दो यदि बाहर मौसम ठीक होगा, अन्यथा आंतरिक रूप से। पृथ्वी के साथ संपर्क के इस समय के बाद, तुम्हारे नृत्य में एक अलग गुणवत्ता होगी, क्योंकि पृथ्वी ऊर्जा प्रदान करती है।

छह से आठ महीनों के भीतर तुम पाओगे कि बड़े परिवर्तन हो रहे हैं। रात के समय हंसना तुम्हारी नींद में एक नये दौर की स्थापना करेगा। तुम्हारे सपने और ज्यादा आनंदमय, ज्यादा उत्तेजक हो जाएंगे, और वे आपकी सुबह की हंसी में मदद करेंगे; वे पृष्ठभूमि बनाएंगे। और सुबह की हंसी पूरे दिन की प्रवृति को एक दिशा देगी। दिन भर में, जब भी हंसने का अवसर मिले तो हंसें।

ओशो –दि सन बिहाइंड दि सन बिहाइंड दि सन

‘अस्तित्व तुम्हारी उदासी की परवाह नहीं करता है। अगर तुम पूरे संसार को अपने साथ करना चाहते हो, सिर्फ मुस्कुराओ, और चारों तरफ देखो और तुम देखोगे वृक्ष हंस रहे हैं, फूल हंस रहे हैं।’

–ओशो

मुल्ला का बेटा फजलू समोसे में से आलू निकालकर खा रहा था, बाहर का हिस्सा फेंक रहा था।

उसके दोस्त ने पूछा तुम सिर्फ आलू को क्यूं खा रहे हो?

फजलू जवाब देता है– क्योंकि मुझे डॉक्टर ने बाहर की चीज खाने से मना किया है।

प्रेमी जोड़ा आपस में बातें कर रहा था।

गुलजान– हम लोग दो साल से एक दूसरे से प्रेम करते हैं। क्या तुमने कभी शादी के बारे में नहीं सोचा?

नसरुद्दीन– दरअसल बात यह है कि मुझे गलत मत समझना। मुझे इस बारे में अपनी पत्नी से बात करनी पड़ेगी तभी मैं तुम्हें कुछ जवाब दे सकूंगा।

गुलजान–ओह, तो मेरी तरह तुम भी शादीशुदा हो।

एक मुर्गी ने बाज से शादी कर ली।

शादी के बाद एक मुर्गे ने मुर्गी से कहा– हम क्या मर गए थे जो तूने इस बाज से शादी कर ली?

मुर्गी बोली– शादी तो मैं तुमसे ही करना चाहती थी पर पिताजी की जिद्द थी कि लड़का एयरफोर्स में हो...!

पुलिस इंस्पेक्टर– तुम एक ही दुकान में तीन बार चोरी करने क्यों गए?

चोर– सर, चोरी तो मैंने पहली बार में ही अपनी पत्नी के लिए एक ड्रेस चुराकर कर ली थी... बाकी दो बार तो मुझे सिर्फ उसे बदलने के लिए जाना पड़ा...!

ब्वॉयफ्रेंड (फोन पर)– हाय स्वीटहार्ट क्या कर रही हो?

गर्लफ्रेंड– मेरी तबीयत खराब है जानू, सोने जा रही हूं। और तुम...?

ब्वॉयफ्रेंड– मैं सिनेमा हॉल में तेरे पीछे की सीट पर बैठा हूं। तेरे संग कौन बेवकूफ बैठा है आज?

भिखारी– अल्लाह के नाम पर कुछ दे दो बाबू जी!

मुन्ना– 100 के छुट्टे हैं बाबा?

भिखारी– हां, हैं।

मुन्ना– तो जाकर पहले इन्हें खर्च कर लो! फिर आना।

प्रेमी– तुम मेरे सपनों में, ख्वाबों में, जज्बातों में रहती हो।

प्रेमिका– तुमको किसी ने बेवकूफ बनाया है... मैं तो सिंधी कालोनी में रहती हूं।

पिता– बेटा, छोड़ दे यह फेसबुक, ये तुझे रोटी नहीं देने वाली।

बेटा– हां पापा, ये मुझे रोटी नहीं देने वाली, पर रोटी बनाने वाली अवश्य देगी।

एक दिन मैं घर आने में लेट हो गया तो पापा ने पूछा– अब तक कहां थे तुम?

मैंने कहा दोस्त के घर पर था।

पापा ने मेरे ही सामने मेरे 10 दोस्तों को फोन लगाया।

4 ने कहा हां अंकल, यहीं पर था।

3 ने कहा बस अभी-अभी निकला है।

2 ने कहा यहीं पढ़ रहा है।

लेकिन करूं तो क्या करूं... एक ने तो हद ही कर दी, मेरी जैसी आवाज निकाकर बोला– हां पापा, बोलो क्या?

फजलू स्कूल जाते हुए बहुत रो रहा था।

मुल्ला– चुप हो जा, शेर के बच्चे कभी रोते हैं!

फजलू–ठीक है, मैं चुप हो गया। मगर पापा, आपने कभी शेर के बच्चे स्कूल जाते देखे हैं..?

संता– 'पहले मैं अपनी बीवी को बी. ए. करवाऊंगा फिर एम. ए. करवाऊंगा और उसके बाद पी.एच. डी. करवाऊंगा। फिर उसे एक अच्छी सी नौकरी दिलवाऊंगा।'

बंता– 'फिर कोई अच्छा सा रिश्ता देखकर उसकी शादी भी करवा देना।

पत्नी (रसोई से) : अजी सुनते हो, आज मैं बहुत खूबसूरत लग रही हूँ।

पति : तुमने कैसे जाना?

पत्नी : आज मेरी खूबसूरती देखकर रोटी भी जल रही है।

संता : यार मेरी बीवी मर गई। मैंने बहुत चाहा कि मेरी आँखों में आंसू आ जाएँ, पर नहीं आए। मुझे क्या करना चाहिए?

बंता : कुछ नहीं, बस कल्पना कर ले कि वो वापिस आ गई है!

संता की बीवी ने फ्राईंग पेन उठाकर संता के सर पर दे मारी।

संता : क्यों मारा?

बीवी : तुम्हारी डायरी में किसी बसंती का नाम लिखा है। कौन है ये बसंती?

संता : कल मैंने रेस में जिस घोड़ी पर दांव लगाया था उसका नाम है।

बीवी : अच्छा, आई. एम. सॉरी!

अगले दिन संता की बीवी ने फिर मारा।

संता : अब क्यों मारा?

बीवी : तुम्हारी घोड़ी का फ़ोन आया है जाकर उठा लो!

एक मजाक

एक मजाक मैंने सुनी है। सच न भी हो फिर भी सच मालूम होती है। चूहों की बढ़ती के कारण सरकार बहुत बेचैन और व्यथित हो गई। क्योंकि पांच चूहे उतना भोजन कर जाते हैं, जितना एक आदमी। और आदमी से कहीं गुने ज्यादा चूहे हैं। कम से कम पच्चीस गुने ज्यादा चूहे हैं भारत में। तो घबड़ाहट तो स्वाभाविक है। लेकिन चूहे जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा उठाना भी खतरनाक है। क्योंकि इस मुल्क की बुद्धि का कोई हिसाब लगाना मुश्किल है।

तो मैंने सुना है, कि इंदिरा गांधी ने मुल्क के सारे विचारशील नेताओं को इकट्ठा किया, कि पहले हम सोच लें फिर कुछ कदम उठाएं। और इंदिरा ने कहा कि इन चूहों को मार डालना अब एकदम जरूरी है। एक महाअभियान चाहिए कि सब चूहे समाप्त कर दिए जाएं।

तत्क्षण कोलाहल और उपद्रव शुरू हो गया, जैसा कि भारत की सभी संसदों में, विधान–सभाओं में मचता है, वहां भी मच गया। घड़ी दो घड़ी तो पता ही नहीं रहा, कि क्या हो रहा है? बामुश्किल समझ में आया कि श्री अटल बिहारी बाजपेयी कह रहे हैं कि यह कभी नहीं

हो सकता। क्योंकि चूहा गणेशजी का वाहन है। क्या तुम गणेशजी को वाहन से च्युत करना चाहते हो? बिना वाहन के गणेशजी कैसे चलेंगे? और यह तो सरासर अधार्मिक है। यह तो हिंदू धर्म की हत्या है। तो यह कभी बर्दाश्त नहीं किया जा सकता, कि चूहे की हत्या की जाए।

कोई सुझाव मांगा गया, कि फिर कुछ उपाय? तो उन्होंने कहा, जैसा आदमियों के लिए हम कर रहे हैं, परिवार नियोजन का प्रचार किया जाए। हर चूहे के बिल पर लिखा जाए, हम दो, हमारे दो। समझाने बुझाने की जरूरत है। हत्या नहीं हो सकती।

लेकिन तभी जयप्रकाश ने खड़े होकर कहा, कि यह कभी नहीं होगा। गांधी–विनोबा के देश में परिवार–नियोजन? यह तो अनीति का मार्ग है। इससे तो लोग भ्रष्ट होंगे, भ्रष्टाचार फैलेगा। और डर यह है कि तुम चूहों के लिए तो प्रचार करोगे लेकिन गणेशजी तक भ्रष्ट हो सकते हैं सुनते–सुनते परिवार–नियोजन। क्योंकि परिवार–नियोजन का अर्थ है, कि स्त्री को बच्चा पैदा होने का भय तो रह नहीं जाता। उसी भय पर तो तुम्हारी सारी सभ्यता खड़ी है। उसी भय पर तो तुम्हारी नीति–नियम खड़े हैं। स्त्री पकड़ी जा सकती है, अगर वह किसी दूसरे व्यक्ति से संबंध बनाए। एक बार स्त्री मुक्त हो जाए, भय न रहे तो फिर कौन नियम रोकेगा? चूहे तो बिगड़ेंगे ही, डर यह है कि गणेशजी तक बिगड़ जाएं। तो जयप्रकाश ने कहा, सर्वोदयी इसको कभी बर्दाश्त नहीं करेंगे। पूछा गया क्या किया जाए? तो उन्होंने कहा, बजाय परिवार–नियोजन के अभियान के, ब्रह्मचर्य की शिक्षा दी जाए। ब्रह्मचर्य की शिक्षा– गांधी, विनोबा दोनों यही कहते हैं। बजाय तख्तियां लगाने के परिवार नियोजन के, ब्रह्मचर्य के वचन लिखे जाएं, कि ब्रह्मचर्य ही जीवन है।

किसी ने डरते–डरते कहा कि लेकिन चूहे अशिक्षित हैं। तो जयप्रकाश ने कहा कि विस्तार में जाने का मेरा प्रयोजन नहीं। हम केवल लोकनायक हैं, लोकनेता नहीं। हम मार्गदर्शन देते हैं। पूर्ण क्रांति की विस्तार की बातें आप लोग सोचें। यह सरकार का फर्ज है, कि वह पहले उनको शिक्षित करे– चूहों को, फिर उनको ब्रह्मचर्य समझाए। सिद्धांत की बात हमने कह दी। बाकी विस्तार में जाना सरकार का कर्तव्य है। अन्यथा सरकार किसलिए है? श्री अटल बिहारी बाजपेयीः यह तो हिंदू धर्म पर सीधा आघात है। यह कभी बर्दाश्त न किया जाएगा। हिंदुओं, इकट्ठे हो जाओ! तुम्हारा धर्म खतरे में है। और तक कम्युनिस्ट नेता श्रीपाद अमृत डांगे ने कहाः प्रश्न चूहों के मारने या न मारने का नहीं है। प्रश्न है कि यह गणेश कौन है जो गरीब सर्वहारा चूहों पर चढ़ा बैठा है? इस गणेश को नीचे उतारना होगा। यह वर्ग–संघर्ष है। गणेश मुर्दाबाद चूहों, विश्व के चूहों, इकट्ठे हो जाओ! तुम्हारे पास खोने को कुछ भी नहीं सिवाय गणेश के बोक्स के। श्री जयप्रकाश बोलेः मैं पूर्ण क्रांति चाहता हूं। चूहों में ब्रह्मचर्य का व्रत फैलाने से ही यह हो सकेगा। महात्मा गांधी और संत विनोबा के सारे जीवन का संदेश ही ब्रह्मचर्य है। और विस्तार की बातें मुझसे मत पूछो। मैं क्षुद्र बातों में उलझता ही नहीं। मैं तो केवल और केवल पूर्ण क्रांति के पक्ष में हूं।

और तभी लकीरों के फकीरों में मारपीट शुरू हो गई। जूते–चप्पल फेंके जाने लगे। पूर्ण क्रांति का ऐसा शुभ आरंभ देख कर श्री जयप्रकाश अति प्रसन्न हुए। और संपोपा नेता राजनारायण ने बीच में कूद कर, युद्ध शुरू कर दिया।

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी सम्मेलन के अपेक्षित अंत को देख कर सभा भवन के बाहर जाने लगीं। तभी श्री मोरारजी देसाई की आवाज उन्हें सुनाई पड़ीः मैं अल्टीमेटस देता हूं कि यदि वर्षा के पूर्व महात्मा गांधी के विचारानुसार चूहों में ब्रह्मचर्य और नसबंदी का प्रचार प्रारंभ न किया तो मैं आमरण अनशन प्रारंभ कर दूंगा।

वह सभा जैसी खत्म हो गई होगी, वैसे ही सब सभाएं इस मुल्क में खत्म होती हैं। लकीरें हैं! एक दफा लकीर को छू दो, फिर होश लोग खो देते हैं। इतना कहना काफी है, कि चूहा गणेशजी का वाहन है; फिर कोई होश की बात नहीं हो सकती। इतना कहना काफी है, कि गांधी–विनोबा क्या कहते हैं, कि यह देश गांधी बिनोबा का है। जैसे यह देश उन्हीं का है। किसी और का नहीं है।

लकीर से बंधकर जीनेवाला व्यक्ति सब भांति अंधा हो जाता है। और सभी लोग विचार की लकीरों से बंधे हैं।

–ओशो, कहै कबीर दीवाना, प्रवचन–7

बीरबल की पैनी दृष्टि

बीरबल बहुत नेक दिल इंसान थे। वह सैदव दान करते रहते थे और इतना ही नहीं, बादशाह से मिलने वाले इनाम को भी ज्यादातर गरीबों और दीन–दुखियों में बांट देते थे, परन्तु इसके बावजूद भी उनके पास धन की कोई कमी न थी। दान देने के साथ–साथ बीरबल इस बात से भी चौकन्ने रहते थे कि कपटी व्यक्ति उन्हें अपनी दीनता दिखाकर ठग न लें।

ऐसे ही अकबर बादशाह ने दरबारियों के साथ मिलकर एक योजना बनाई कि देखें कि सच्चे दीन दुखियों की पहचान बीरबल को हो पाती है या नहीं। बादशाह ने अपने एक सैनिक को वेश बदलवाकर दीन–हीन अवस्था में बीरबल के पास भेजा कि अगर वह आर्थिक सहायता के रूप में बीरबल से कुछ ले आएगा, तो अकबर की ओर से उसे इनाम मिलेगा।

एक दिन जब बीरबल पूजा–पाठ करके मंदिर से आ रहे थे तो भेष बदले हुए सैनिक ने बीरबल के सामने आकर कहा, 'हुजूर दीवान! मैं और मेरे आठ छोटे बच्चे हैं, जो आठ दिनों से भूखे हैं... भगवान का कहना है कि भूखों को खाना खिलाना बहुत पुण्य का कार्य है, मुझे आशा है कि आप मुझे कुछ दान देकर अवश्य ही पुण्य कमाएंगे।

बीरबल ने उस आदमी को सिर से पांव तक देखा और एक क्षण में ही पहचान लिया कि वह ऐसा नहीं है, जैसा वह दिखावा कर रहा है।

बीरबल मन ही मन मुस्कराए और बिना कुछ बोले ही उस रास्ते पर चल पड़े जहां से होकर एक नदी पार करनी पड़ती थी। वह व्यक्ति भी बीरबल के पीछे–पीछे चलता रहा। बीरबल ने नदी पार करने के लिए जूती उतारकर हाथ में ले ली। उस व्यक्ति ने भी अपने पैर की फटी पुरानी जूती हाथ में लेने का प्रयास किया।

बीरबल नदी पार कर कंकरीले मार्ग आते ही दो–चार कदम चलने के बाद ही जूती पहन लेता। बीरबल यह बात भी गौर कर चुके थे कि नदी पार करते समय उसका पैर धुलने के कारण वह व्यक्ति और भी साफ–सुथरा, चिकना, मुलायम गोरी चमड़ी का दिखने लगा था

इसलिए वह मुलायम पैरों से कंकरीले मार्ग पर नहीं चल सकता था।

‘दीवानजी! दीन–हीन की पुकार आपने सुनी नहीं? पीछे आ रहे व्यक्ति ने कहा।

बीरबल बोले, ‘जो मुझे पापी बनाए मैं उसकी पुकार कैसे सुन सकता हूँ?

‘क्या कहा? क्या आप मेरी सहायता करके पापी बन जांएगे?

‘हां, वह इसलिए कि शास्त्रों में लिखा है कि बच्चे का जन्म होने से पहले ही भगवान उसके भोजन का प्रबन्ध करते हुए उसकी मां के स्तनों में दूध दे देता है, उसके लिए भोजन की व्यवस्था भी कर देता है। यह भी कहा जाता है कि भगवान इन्सान को भूखा उठाता है पर भूखा सुलाता नहीं है। इन सब बातों के बाद भी तुम अपने आप को आठ दिन से भूखा कह रहे हो। इन सब स्थितियों को देखते हुए यहीं समझना चाहिये कि भगवान तुमसे रूष्ट हैं और वह तुम्हें और तुम्हारे परिवार को भूखा रखना चाहते हैं लेकिन मैं उसका सेवक हूँ, अगर मैं तुम्हारा पेट भर दूं तो ईश्वर मुझ पर रूष्ट होगा ही। मैं ईश्वर के विरूध्द नहीं जा सकता, न बाबा ना! मैं तुम्हें भोजन नहीं करा सकता, क्योंकि यह सब कोई पापी ही कर सकता है।

बीरबल का यह जबाब सुनकर वह चला गया।

उसने इस बात की बादशाह और दरबारियों को सूचना दी।

बादशाह अब यह समझ गए कि बीरबल ने उसकी चालाकी पकड़ ली है।

अगले दिन बादशाह ने बीरबल से पूछा, ‘बीरबल तुम्हारे धर्म–कर्म की बड़ी चर्चा है पर तुमने कल एक भूखे को निराश ही लौटा दिया, क्यों?

‘आलमपनाह! मैंने किसी भूखे को नहीं, बल्कि एक ढोंगी को लौटा दिया था और मैं यह बात भी जान गया हूँ कि वह ढोंगी आपके कहने पर मुझे बेवकूफ बनाने आया था।’

अकबर ने कहा, ‘बीरबल! तुमनें कैसे जाना कि यह वाकई भूखा न होकर, ढोंगी है? ’

‘उसके पैरों और पैरों की चप्पल देखकर। यह सच है कि उसने अच्छा भेष बनाया था, मगर उसके पैरों की चप्पल कीमती थीं।’

बीरबल ने आगे कहा, ‘माना कि चप्पल उसे भीख में मिल सकती थीं, पर उसके कोमल, मुलायम पैर तो भीख में नहीं मिले थे, इसलिए कंकड की गड़न सहन न कर सका।’

इतना कहकर बीरबल ने बताया कि किस प्रकार उसने उस मनुष्य की परीक्षा लेकर जान लिया कि उसे नंगे पैर चलने की भी आदत नहीं, वह दरिद्र नहीं बल्कि किसी अच्छे कुल का खाता कमाता पुरूष है।

बादशाह बोले, ‘क्यों न हो, वह मेरा खास सैनिक है।’ फिर बहुत प्रसन्न होकर बोले, ‘सचमुच बीरबल! माबदौलत तुमसे बहुत खुश हुए! तुम्हें धोखा देना आसान काम नहीं है।’

बादशाह के साथ साजिश में शामिल हुए सभी दरबारियों के चेहरे बुझ गए।

मनुष्य के विकास में मेरा महत्वपूर्ण योगदान है हास–परिहास का। किसी भी और धर्म ने, किसी भी और दर्शन ने हास–परिहास को धार्मिक नहीं माना। उन्हें लगता है कि यह कुछ अपवित्र है। मेंरे देखे हास–परिहास जीवन का अत्यधिक पवित्र अनुभव है। –ओशो उपनिषद

9

प्रत्येक क्षण हंसी का क्षण

चुटकुले केवल इतना दर्शाते हैं कि समाज हंसना भूल गया है। एक बेहतर जगत में लोग अधिक हंसेंगे और हम याद करेंगे कि चुटकुला भी कुछ होता था। कोई आवश्यकता नहीं होगी लोग हंसेंगे और आनंदित होंगे। क्यों? प्रत्येक क्षण हंसी का क्षण होगा। और यदि तुम जीवन को देख सको तो तुम पाओगे कि यह सब एक चुटकुला है।'

–भगवानश्री ओशो

संता प्रवचन सुनकर घर आया और पत्नी को गोद में उठा लिया।

पत्नी :–क्या गुरूजी ने रोमांस करने के लिए कहा है?

संता :–नहीं पगली, उन्होंने तो कहा है कि अपने दुख खुद उठाओ!

आधी रात हो चुकी थी। श्रीमती ढब्बूजी बेलन लिये द्वार पर ही बैठी थीं। ढब्बूजी आए तो दहाड़कर बोलीं, आज फिर देर से लौटे! कहां गए थे, श्रीमान?

देखो, ढब्बूजी ने संयत स्वर में कहा, एक समझदार पत्नी अपने पति से कभी भी ऐसा सवाल नहीं करती।

और एक समझदार पति को क्या करना चाहिए? आधी रात घर आना चाहिए! –श्रीमतीजी ने गुस्से में पूछा।

अब छोड़ो भी डार्लिंग– ढब्बूजी हाथ से बेलन खींचते हुए बोले– मैं तो नासमझ ठहरा, तुम्हारे सवाल का भला क्या जवाब दूंगा! किंतु इतना जरूर बता सकता हूं कि समझदार आदमी की पत्नी ही नहीं होती।

मुल्ला नसरुद्दीन अपने डॉक्टर से बोलाः डॉक्टर, मेरी पत्नी तीन दिन से बिल्कुल चुप बैठी है, कुछ बोल नहीं रही। मुझे क्या करना चाहिए?

डॉक्टर बोलाः मियां, मेरे पास क्यों आए? आपको तो गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड वालों के पास जाना चाहिए।

एक दिन ढब्बूजी केक खरीदने के लिए बाजार गए। मुश्किल से उन्होंने एक केक पसंद किया। बेकरी का कर्मचारी बोला, हां तो ढब्बूजी, आप केक कटा हुआ चाहेंगे या पूरा?

कटा हुआ– ढब्बूजी ने कहा।

कर्मचारी– कितने टुकड़े करूं, चार या आठ?

ढब्बूजी– चार ही करो जी, मुझे ज्यादा खाने की आदत नहीं है। आठ टुकड़े खाना जरा मुश्किल होता है!

हिन्दी अध्यापिका ने द्वंद्व शब्द की व्याख्या समझाते हुए कहा– द्वंद्व, ऐसे जोड़े को कहते हैं, जिसमें हमेशा विरोध रहता है। जैसे सुख–दुख, सर्दी–गर्मी, और धूप–छांव आदि–आदि। अब तुममें से क्या कोई छात्र इसका उदाहरण दे सकता है?

फजलू नामक एक छात्र तपाक से बोला– मैडम, जैसे पति–पत्नी।

मुन्ना स्कूल जा रहा था। ढब्बूजी ने देखा, उसने बस्ता भी उठा रखा है और सीढ़ी भी। उन्हें बड़ी हैरानी हुई। मुन्ने से पूछने लगे– यह सीढ़ी लेकर किधर जा रहे हो, छोटे साहब?

मुन्ने ने जवाब दिया– पापाजी, मास्टरजी ने कहा है कि मैं इम्तिहान में पास हो गया हूं और आज से ऊपर की क्लास में बैठूंगा।

ढब्बूजी रसोई में बैठे थे। चूल्हे पर रखा दूध उबल–उबलकर बरतन से बाहर उफन रहा था। श्रीमती ढब्बूजी गुस्से में फनफनाती हुई रसोई में दाखिल हुईं और बोलीं, क्या मैंने आपसे यह नहीं कहा था कि दूध उबलने के समय का ख्याल रखना?

हां, कहा था! दूध ठीक बारह बजकर चौदह मिनट बत्तीस सैकंड पर उबला है– ढब्बूजी ने कलाई पर बंधी घड़ी दिखाते हुए कहा।

बकवासी स्त्री से परेशान पति– अरे, सुनती हो, डॉक्टर का कहना है कि अधिक बोलने से उम्र काफी कम हो जाती है।

पत्नी ने मुस्कुराकर कहा– अब तो तुमको विश्वास हो गया कि मेरी उम्र पैंतालीस से घटकर पच्चीस कैसे हो गयी। आओ, बैठो न, इस बारे में तुम्हें विस्तार से बताऊं...।

राह चलते एक व्यक्ति की पीठ पर जोर से धौल जमाते हुए ढब्बूजी बोले, अरे मेरे प्यारे दोस्त चंदूलाल कैसे हो?

उफ्फ! मैं... मैं... मैं... चंदूलाल नहीं हूं जनाब– वह व्यक्ति कराहकर पलटा और आंखें फाड़–फाड़कर देखते हुआ बोला, अगर होता भी तो इतने जोर से कोई प्यारे दोस्त को मारता है!

मैं अपने प्यारे दोस्त चंदूलाल को कितने भी जोर से मारूं, तुम जैसे अजनबी को भला क्या मतलब? – ढब्बूजी ने तैश में आकर एक धौल और जमाते हुए कहा।

पहली– कहो बहिन, तुम्हारी मौत कैसे हुई?

दूसरी– ज्यादा ठण्ड लगने के कारण। और तुम्हारी?

पहली– भयानक शर्मिन्दगी के कारण। बात दरअसल यह हुई कि मुझे अपने पति पर शक था। एक दिन मुझे पता चला कि वो घर में किसी दूसरी औरत के साथ हैं। मैं फ़ौरन घर पहुंची तो देखा कि मेरे पति आराम से अकेले टीवी देख रहे हैं।

दूसरी– फिर क्या हुआ?

पहली– खबर पक्की थी इसलिए मुझे विश्वास नहीं हुआ। मैंने उस औरत को घर के कोने–कोने में, तहखाने में, पर्दों के पीछे, गार्डेन में यहाँ तक कि अलमारी और संदूक तक में तलाश किया पर वह नहीं मिली। मुझे इतनी शर्मिन्दगी हुई कि मेरा ब्लड प्रैशर बहुत बढ़ गया और मेरी मौत हो गई।

दूसरी– काश! तुमने फ्रिज और खोलकर देख लिया होता तो आज हम दोनों जिन्दा होते।

पति (पत्नी से)– मैंने रात को सपना देखा।

पत्नी– क्या देखा?

पति– कि तुम प्यार कर रही हो।

पत्नी– किससे?

पति– वही तो मैं पहचान नहीं सका! रात मैं बिना चश्मे के ही सो गया था।

पति– राजा दशरथ के तीन रानियाँ थीं।

पत्नी– तो?

पति– तो मैं अभी दो शादियाँ और कर सकता हूँ।

पत्नी– सोच लो, द्रौपदी के पांच पति थे।

पति– आज खाने में क्या बनाओगी?

पत्नी– जो तुम कहो।

पति– दाल चावल बनाओ।

पत्नी– अभी कल ही तो खाए थे।

पति– तो सब्जी बना लो।

पत्नी– बच्चे नहीं खाते।

पति– फिर कीमा।

पत्नी– मुझे एलर्जी है।

पति– पराठे?

पत्नी– रात को पराठे कौन खाता है।

पति– तो कढ़ी बना लो?

पत्नी– दही नहीं है।

पति– फिर क्या बनाओगी?

पत्नी– जो तुम कहो।

कृपया सिर के सिवा और कुछ भी खाइये

रोगी : 'मुल्ला, मैं कौन–कौन सी चीजें खा सकता हूं?'

मुल्ला नसरुद्दीन : खट्टी और चटपटी चीजें छोड़ कर बाकी सब खा सकते हैं।'

रोगी : 'फल खा सकता हूं?'

नसरुद्दीन : 'जी हां।'

रोगी : 'मिठाई खा सकता हूं?'

नसरुद्दीन : 'जी हां।'

रोगी : मूंग की खिचड़ी?'

नसरुद्दीन : 'जी हां।'

रोगी : 'केले भी खा सकता हूं?'

नसरुद्दीन : 'जी।'

रोगी : 'और अंगूर?'

नसरुद्दीन : 'जी जनाब, मेरा सिर छोड़ कर और सब कुछ खाइये।'

ढ़ोग या बीमारी

मुल्ला नसरुद्दीन दवा तैयार करने भीतर गया था। एक बीमार कवि अकेला ही

बैठकखाने में बैठा था। मुल्ला की पत्नी उसी बीच किसी काम से बैठकखाने में गई।

मुल्ला ने तभी जोर की आवाज सुनी तो वह भागा हुआ बाहर बैठकखाने में आया। उसने देखा कि कवि आंखें मूंदे बोल रहा हैः 'आह! ......किसी रूपसी के उंगली–स्पर्श से मेरे रोग का विष उतर गया है, मेरे मन में ज्योति जगी है, मेरा अंग–अंग निरोग होकर मतवाले की तरह झूम रहा है.......।'

'ठीक है, ठीक है, नाटक मत करो,' नसरुद्दीन ने कहा, 'मैंने मेरी पत्नी के द्वारा तमाचा मारे जाने की आवाज भलीं भांति सुन ली है।'

भलाई के पीछे छिपी बुराई

हवा जोर से आने कारण, पानी के जहाज की रेलिंग पर खड़ी हुई एक लड़की समुद्र में गिर पड़ी। उसके गिरते ही पानी में छप्पाक से एक व्यक्ति और कूदा तथा सहायता पहुंचने तक पानी में उस लड़की को सम्हाले रहा। बाहर निकाले जाने पर सबने आश्चर्य से देखा कि वह व्यक्ति है, मुल्ला दसरुद्दीन। जहाज के यात्रियों में सबसे वृद्ध व्यक्ति।

सबने मुल्ला के साहस की बहुत प्रशंसा की तथा जहाज के कैप्टेन ने उसके सम्मान में एक भोज दिया। भोजनोपरान्त सबने मुल्ला नसरुद्दीन से कुछ कहने को कहा।

नसरुद्दीन ने खड़े होकर कहा। 'वैसे तो अंत भले का भला परन्तु ऐसे मौके पर अगर स्वयं पचड़े में न पढ़कर किसी ओर को धक्का मारना ही हो तो जरा आदमी तो देख लिया करें, इसलिए मैं जानना चाहता हू कि वह कौन महानुभव हैं, जिन्होंने मुझे धक्का दिया था?'

जुबान को आराम की जरूरत

'मुल्ला' एक रोगी महिला ने कहा, 'मुझे कुछ हरारत महसूस हो रही है, दवा दे दीजिये।'

नब्ज देखने के बाद मुल्ला नसरुद्दीन बोला : 'कोई खास बात नहीं है। आपको बस थोड़ा आराम चाहिए। थकान है, मिट जाएगी।'

लेकिन महिला के चित्त को इससे शांति नहीं मिली और वह बोली : 'मेरी जबान भी देख लीजिये।'

मुल्ला ने चुपचाप उसकी जबान भी देख ली और फिर शांतिपूर्वक कहा : 'उसे भी आराम की जरूरत है।'

आने का कारण तो होगा ही

मरीज मुल्ला नसरुद्दीन के यहां काफी अरसे के बाद आया था।

'मैंने आपको बहुत दिनों से इधर नहीं देखा,' नसरुद्दीन बोला, 'क्यों, क्या तबीयत खराब थी?

अब तो लज्जा भी गई

मुल्ला नसरुद्दीन एक शराबघर में गया और बीयर का एक गिलास मांगा। आधा गिलास पीकर बाकी उसने शराबघर के मालिक पर फेंक दी। और फिर वह बहुत पछताया और उसने बहुत माफी मांगी। 'यह कुछ मानसिक दुर्बलता है' वह बोला। 'मुझे बड़ी लज्जा अनुभव होती है।'

'आप किसी मनोविश्लेषक के पास जायें।' शराबघर के मालिक ने सहानुभूति से सलाह दी।

कई मास बाद मुल्ला फिर उसी शराबघर में घुसा और फिर उसने वही काम दोहराया। इस बार स्वाभाविक ही था कि मालिक बहुत लाल-पीला हो गया। 'मुझे ख्याल है कि मैंने आपको किसी मनोवैज्ञानिक की सलाह लेने के लिए कहा था' वह गुर्राया।

मुल्ला ने कहाः 'मैं एक के पास फिर जा रहा हूं।'

'लेकिन ऐसे डाक्टर से इलाज का क्या फायदा?' मालिक ने कुछ ढीला पड़कर पूछा।

'वाह, फायदा क्यों नहीं है,' नसरुद्दीन बोला 'अब मैं बिल्कुल ही लज्जित नहीं होता हूं।'

झूठी सांत्वना

ठिठुराने वाले जाड़े में मुल्ला नसरुद्दीन को एक पुराने मरीज के घर बुलाया गया। घुसते ही मरीज की रोती हुई पत्नी ने उसका स्वागत किया। 'मुझे डर है मुल्ला कि अब वे अच्छे नहीं होंगे,' वह बोली। 'लेकिन, देखिये उन्हें इस बात का पता न लगने दीजिये।'

'हां, हां,' कह कर मुल्ला ने उसे सांत्वना दी और वह मरीज के कमरे में पहुंचा। वहां उसने मरीज की अच्छी तरह जांच की और फिर मुस्कुराते हुए बोलाः 'मेरे विचार से चार दिन बिस्तर पर, एक सप्ताह का आराम और फिर तुम कूदते फांदते नजर आओगे।' लेकिन मरीज की निगाह बचा कर उसने मरीज की पत्नी की ओर निराशा में सिर हिला दिया।

उसी पल नौकरानी कोयलों की अंगीठी लेकर कमरे में घुसी। वह द्वार बंद करना भूल गई और हड्डी कंपानेवाली हवा का झोंका कमरे में फैल गया।

'किवाड़ बंद कर,' नसरुद्दीन चीख कर बोला। 'क्या इनके साथ हमें भी स्वर्ग भेजना चाह रही है'।

भविष्य में छलांग

मैंने सुना है एक आदमी एक प्लेन में न्यूयार्क की तरफ सफर कर रहा था। एक बीच के स्टेशन पर एक युवक भी सवार हुआ। उस युवक के हाथ के बस्ते को देखकर लगता था वह किसी इंश्योरेंस का एजेंट होगा। उस बूढ़े आदमी के पास वह बैठा। फिर थोड़ी देर बाद उसने पूछा कि क्या महाशय आप बात कर सकोगे? आपकी घड़ी में कितना बजा हुआ है वह बूढ़ा थोड़ी देर चुप रहा और उसने कहा क्षमा करे, मैं न बता सकूंगा। उस युवक ने कहा, क्या आपके पास घड़ी नहीं है। उस बूढ़े ने कहा, घड़ी तो जरुर है, लेकिन मैं थोड़ा आगे का भी विचार कर लेता हूं, तभी कुछ करता हूं। अभी तुम पूछोगे कितना बजा है और मैं घड़ी में देखकर बताऊंगा कितना बजा है। हम दोनों के बीच बातचीत शुरु हो जाएगी। फिर तुम पूछोगे, आप कहां जा रहे हैं। मैं कहूंगा, न्यूयार्क जा रहा हूं। तुम कहोगे, मैं भी जा रहा हूं। आप किस मोहल्ले में रहते हैं। तो मैं अपना मोहल्ला बताऊंगा। संकोचवश मुझे कहना पड़ेगा, अगर कभी वहां आएं, तो मेरे घर भी आना। मेरी जवान लड़की है। तुम घर आओगे, निश्चित ही उसके प्रति आकर्षित हो जाओगे। तुम उससे कहोगे कि फिल्म देखने चलती हो। वह जरुर राजी हो जाएगी। और यह मामला यहां तक बढ़ेगा कि एक दिन मुझे विचार करना पड़ेगा कि बीमा एजेंट से अपनी लड़की की शादी करनी है या नहीं करनी है। और मुझे बीमा एजेंट बिल्कुल भी पसंद नहीं आते। इसलिए कृपा करो, मुझसे तुम घड़ी का समय मत पूछो।

इस आदमी पर जरुर हमें हंसी आ सकती है। लेकिन हम सब इसी तरह के आदमी हैं। हमारा चित्त प्रतिपल वर्तमान से छिटक जाता है और भविष्य में उतर जाता है। और भविष्य के संबंध में आप कुछ भी सोचें, सभी ऐसा ही फिजूल और व्यर्थ है। क्योंकि भविष्य है नहीं। जो भी आप सोचेंगे, सभी कल्पना, सभी इमेजिनेशन है। जो भी आप सोचेंगे, वह इसी तरह का झूठा और व्यर्थ है। जैसे इस आदमी का, इस छोटी सी बात से कि घड़ी में कितना बजा है, इतनी लंबी यात्रा पर कूद जाना। इसका चित्त हम सबका चित्त है।

हम सब प्रतिपल खड़े होते नहीं वर्तमान पर और भविष्य में कूद जाते हैं, या अतीत में कूद जाते हैं। लेकिन जो क्षण मौजूद होता है, उसमें हम मौजूद नहीं हो पाते। और उसकी ही सत्ता है, वही वास्तविक है। अतीत और भविष्य इन दोनों के बंधनों में मनुष्य की चेतना वर्तमान से अपरिचित रह जाती है। अतीत और भविष्य दोनों मनुष्य की ईजादें हैं। जगत की सत्ता में उनका कोई भी स्थान नहीं, उनका कोई भी अस्तित्व नहीं।

भविष्य और अतीत, पास्ट और फ्यूचर–कल्पित समय हैं, वास्तविक समय नहीं। वास्तविक समय, रियल टाइम तो केवल वर्तमान का क्षण है। वर्तमान के इस क्षण में जो जीता है, वह सत्य तक पहुंच सकता है, क्योंकि वर्तमान का क्षण ही द्वार है। लेकिन जो अतीत और भविष्य में भटकता है, वह सपने देख सकता है, स्मृतियों में खो सकता है। लेकिन सत्य, सत्य से उसका साक्षात् कभी भी संभव नहीं है।

–ओशो

चित्त और उसकी प्रतिक्रियाएं

चित्त को हम जितना दबाते हैं, उतनी उसकी प्रतिक्रियाएं, उसके रिएक्शंस होने शुरू होते हैं।

एक फकीर था नसरुद्दीन। एक सांझ अपने घर से निकलता था। किन्हीं दो–तीन मित्रों के घर उसे मिलने जाना था। निकला ही था घर से कि उसका एक मित्र जलाल, दूर गांव से द्वार पर आकर उपस्थित हो गया। नसरुद्दीन ने कहा, तुम घर में ठहरो, मैं जरूरी काम से दो–तीन मित्रों को मिलने जाता हूं, लौटकर फिर तुम्हारी सेवा–सत्कार कर सकूंगा। और तुम चाहो, थके न हो तो मेरे साथ तुम भी चल सकते हो।

जलाल ने कहा, मेरे कपड़े सब धूल–धूसरित हो गए रास्ते में। पसीने से मैं लथपथ हूं। अगर तुम कपड़े मुझे दूसरे दे दो तो मैं तुम्हारे साथ चलूं। यहां बैठकर मैं क्या करूंगा? अच्छा होगा, तुम्हारे मित्रों से मिलना हो सकेगा।

नसरुद्दीन ने अपने बहुमूल्य, जो कपड़े उसके पास श्रेष्ठतम थे, उसे दिए और वे दोनों मित्र गए। पहले घर में पहुंचे। नसरुद्दीन ने वहां कहा, ये हैं मेरे मित्र जलाल, इनसे आपका परिचय करा दूं। रहे कपड़े, कपड़े मेरे हैं। मित्र बहुत हैरान हुआ। इस सत्य को कहने की कोई भी जरुरत न थी। और यह क्या बेहूदी बात थी कि उसने कहा कि ये हैं मेरे मित्र जलाल और रहे कपड़े, कपड़े मेरे हैं। बाहर निकलते ही जलाल ने कहा, पागल तो नहीं हो तुम? कपड़ों की बात उठाने की क्या जरूरत थी? अब देखो, दूसरे घर में कपड़ों की कोई बात मत उठाना।

दूसरे घर में वे पहुंचे। नसरुद्दीन ने कहा, इनसे परिचय करा दूं। ये हैं मेरे पुराने मित्र जलाल, रही कपड़ों की बात, सो इनके ही हैं, मेरे नहीं हैं। जलाल हैरान हुआ। बाहर निकलकर उसने कहा, तुम्हें हो क्या गया है? इस बात को उठाने की कोई भी जरूरत नहीं थी कि कपड़े किसके हैं? और यह कहना भी कि इनके ही हैं, शक पैदा करता है, इसके उठाने की जरूरत क्या थी?

नसरुद्दीन ने कहा, मैं मुश्किल में पड़ गया। वह पहली बात मेरे मन में गूंजती रह गई, उसका रिएक्शन हो गया, उसकी प्रतिक्रिया हो गई। सोचा कि गलती हो गई– मैंने कहा, कपड़े मेरे हैं तो मैंने कहा, सुधार कर लूं, कह दूं कि कपड़े इन्हीं के हैं। उसके मित्र ने कहा, अब इसकी बात ही न उठे। यह बात खत्म हो जानी चाहिए।

वे तीसरे मित्र के घर में पहुंचे। नसरुद्दीन ने कहा, ये हैं मेरे मित्र जलाल। रही कपड़ों की बात, सो उठाना उचित नहीं है। अपने मित्र से पूछा ठीक है न, कपड़ों की बात उठानी बिल्कुल उचित नहीं है। कपड़े किसी के भी हों– क्या लेना–देना– मेरे हों कि इनके हों। कपड़ों की बात उठानी उचित ही नहीं है। बाहर निकलकर उसके मित्र ने कहा, अब मैं तुम्हारे साथ और नहीं जा सकूंगा। मैं हैरान हूं, तुम्हें हो क्या रहा है!

उस नसरुद्दीन ने कहा, मैं अपने ही जाल में फंस गया हूं। मेरे भीतर– जो मैं कर बैठा,

उसकी प्रतिक्रियाएं हुई चली जा रही हैं। मैंने सोचा कि ये दोनों बातें भूल हो गई, कि मैंने अपना कहा और तुम्हारा कहा। तो फिर मैंने कहा कि अब मुझे कुछ भी नहीं कहना चाहिए, यही सोचकर भीतर गया था। लेकिन बार–बार यह होने लगा कि यह कपड़ों की चर्चा उठानी बिल्कुल उचित नहीं है। और उन दोनों की प्रतिक्रिया यह हुई कि मेरे मुंह से यह निकल गया और जब निकल गया तो समझाना जरूरी हो गया कि कपड़े किसी के भी हों, क्या लेना–देना।

यह जो नसरुद्दीन जिस मुसीबत में फंस गया होगा बेचारा, पूरी मनुष्य जाति ऐसी मुसीबत में फंसी है। एक सिलसिला, एक गलत सिलसिला शुरू हो गया है। और उस गलत सिलसिले के हर कदम पर और गलती बढ़ती चली जाती हैं। जितना हम उसे सुधारने की कोशिश करते हैं, वह बात उतनी ही उलझती चली जाती है।

– ओशो, असंभव क्रांति –तीसरा प्रवचन

सत्य और असत्य में अन्तर

हिटलर ने अपनी आत्मकथा में स्पष्ट ही लिखा है कि मैंने बहुत दिनों के अनुभव से यह जाना कि सत्य और असत्य में एक ही फर्क है। जो असत्य बहुत बार जनता के सामने दोहराया जाता है, वह सत्य हो जाता है। बस बार–बार दोहराने का सवाल है। फिक्र न करो, दोहराए चले जाओ, दोहराए चले जाओ। धीरे–धीरे वह मन भूल जाएगा कि यह बात सच थी। बार–बार सुनने से, परिचित होने से, खुद ही भूल जाएगा। यहां तक होता है कि जो आदमी खुद प्रचार करता है, जब बात बहुत प्रचारित हो जाती है, तो वह खुद शक में आ जाता है कि कहीं यह सच तो नहीं है।

ऐसा मैंने सुना है, एक दफे ऐसी घटना हो गई।

एक आदमी जो कि एक बहुत बड़ा विज्ञापन सलाहकार था, एक्सपर्ट था एडवरटाइजमेंट का, वह मरा। वह स्वर्ग के द्वार पर पहुंचा। ईसाइयों का स्वर्ग रहा होगा। सेंट पीटर वहां दरवाजे पर होते हैं। तो सेंट पीटर ने कहा, महाशय तुम हो कौन? उसने कहा, मैं एक विज्ञापन का विशेषज्ञ हूं। सेंट पीटर ने कहा, विज्ञापन वाले लोगों का कोटा स्वर्ग का पूरा हो गया, पच्चीस आदमियों से ज्यादा हम नहीं लेते। तो आपको दूसरी जगह जाना पड़ेगा। और दूसरी जगह यानी नरक। पच्चीस हो गए।

उस विज्ञापनदाता ने कहा कि सेंट पीटर, तुम्हारे हम अखबारों में फोटो छपवा देंगे, कोई रास्ता नहीं हो सकता, कोई उपाय नहीं हो सकता कि मैं इसी जगह आ जाऊं? सेंट पीटर ने कहा, फोटो बड़े छपवाने पड़ेंगे, ठीक से। रास्ता बन सकता है। चौबीस घंटे का मैं तुम्हें मौका देता हूं। तुम पच्चीस विज्ञापनदाताओं में से किसी एक को राजी कर लो कि तुम्हारी जगह वहां चला जाए, तुम यहां आ जाओ।

उसने कहा, चौबीस घंटे! चौबीस घंटे बहुत हैं। वह आदमी भीतर गया। उसने जाकर पूरे स्वर्ग में अफवाह उड़ानी शुरू की कि नरक में एक बहुत नया अखबार निकल रहा है, उसके लिए बहुत अच्छे विज्ञापन एक्सपर्टस की जरूरत है। शैतान ने एक बहुत ही बड़ी एजेंसी खोली हुई है, विज्ञापन की। सब जगह उसने अफवाह उड़ा दी। दूसरे दिन चौबीस घंटे पूरे होने पर वह सेंट पीटर के पास गया। उसने कहा कि भाई कुछ हुआ? उसने कहा, क्या आश्चर्य कर दिया! तुमने तो हैरानी कर दी। पच्चीस ही चले गए।

वह आदमी बोला, पच्चीस ही चले गए! उसने कहा, माफ करो, मैं भी जाता हूं। अफवाहों का कोई भरोसा नहीं, सच भी हो सकती है बात। जब पच्चीस चले गए तो मैं भी अब जाता हूं, मैं भी यहां नहीं रह सकता हूं।

कमजोर है हमारा मन। बार–बार दोहराने से– खुद भी आदमी झूठ को बार–बार दोहराए, कुछ दिनों में वह खुद ही भूल जाता है कि मैंने इसकी यात्रा झूठ की तरह शुरू की थी। वह सच हो जाता है। मनुष्य के सामने हजारों सत्य इसी भांति खड़े हुए हैं, जो असत्य हैं और प्रचार ने जिन्हें सत्य की गरिमा दे दी है।

सच तो यह है, सत्य का कोई प्रचार ही नहीं हो सकता है। प्रचार मात्र असत्य का हो सकता है। सत्य का तो अनुभव करना होता है। प्रचार का कहां उपाय है? सत्य को तो एक–एक व्यक्ति को स्वयं ही जानना होता है, दूसरे के प्रचार से कोई सत्य को कभी नहीं जान सकता।

– ओशो, असंभव क्रांति –तीसरा प्रवचन

मन का चोर

मैंने सुना है, एक रात एक बिस्तर पर एक औरत और एक आदमी, दोनों प्रेम में संलग्न थे। और तत्काल उस औरत ने कहा, उठो, उठो। कार की आवाज सुनाई पड़ी यह मेरे पति की कार है। तुम जल्दी से पास की अलमारी में छिप जाओ। वह आदमी उठा और पास की अलमारी में छिप गया। और कार पति की ही थी। पति भीतर आया। वह आदमी अलमारी में जब खड़ा था तब उसने धीरे से एक आवाज सुनी। एक छोटा सा लड़का भी यहां अलमारी में बैठा हुआ है। और वह लड़का कह रहा है कि बहुत अंधेरा है। उसने कहा, भैया, तू जरा धीरे बोल। अंधेरा कितना ही हो, मैं यहां मौजूद हूं। ये पांच रुपए रख और शांत रह। उसने कहा, लेकिन अंधेरा ज्यादा है। दस रुपए ले मगर चुप तो रह। लड़का बोला, इससे काम नहीं चलेगा, अंधेरा बहुत–बहुत है। और मेरे मन में ऐसी घबराहट हो रही है कि जोर से चीख मार दूं। उस आदमी के पास पचास रुपए थे, उसने पूरे निकाल कर दे दिए कि बस अब ये आखिरी हैं। अब तू चीख मार या जो तुझे करना हो कर। अब मेरे पास कुछ भी नहीं है। उसने कहा, कोई फिकर नहीं, शांति से खड़े रहो। मेरे पिताजी ज्यादा देर नहीं रुकते।

उनकी रात की ड्यूटी है, वह जाने ही वाले हैं। और यह मेरा काम है।

दूसरे दिन इस लड़के ने अपनी दादी मां से कहा कि मुझे एक साइकिल खरीदनी है। उसकी दादी मां ने कहा कि साइकिल पचास से कम में न मिलेगी। तीन पहिए की साइकिल चाहिए थी। लड़के ने कहा कि तुम फिकर न करो, रुपए का मैंने इंतजाम किया हुआ है। उसने कहा कि तूने रुपए पाए कहां से? यह वह न बता सका कि रुपए उसने पाए कहां से। दादी ने कहा जब तक तू यह न बताए– वह बड़ी धार्मिक, हर रविवार को चर्च जाने वाली– जब तक तू यह न बताए, और रविवार का दिन था। उसने कहा कि तू चल मेरे साथ चर्च और पहले कन्फेशन कर पादरी से कि तूने रुपए कहां से पाए। मुझे नहीं बताता, मत बता लेकिन पादरी को तो बता। फिर मैं तुझे साइकिल की दुकान पर ले चलती हूं। वह उस कोठरी में गया जहां कन्फेशन करने वाले को खड़ा होना पड़ता है। और जरा सी खिड़की से दूसरी तरफ चर्च का पादरी खड़ा होता है। जैसे ही पादरी आया, लड़के ने कहा कि नमस्कार, बहुत अंधेरा है। उसने कहा, कम्बखत! तूने फिर शुरू कर दिया? और अब मेरे पास धेला भी नहीं है।

चित्त पर प्रचार की मार

मेरे एक मित्र थे। एक छोटे–मोटे महात्मा थे वे भी। ऐसे महात्मा हमारे यहां होते ही हैं। वे एक गांव में चंदा मांगने गए थे। मैं भी उस गांव में था। उन्होंने चंदा दिनभर मांगा, वे कोई पंद्रह–बीस रूपए मुश्किल से इकट्ठा कर पाए। वे मुझसे बोले कि इससे ज्यादा तो कुछ होता नहीं। मैंने कहा, आप बिल्कुल गलत ढंग से चंदा वसूल करते हैं– आपको कौन चंदा देगा? पहले ऋषि–मुनि हो जाइए, फिर चंदा मिल सकता है।

मैंने उनसे कहा, दस–पंद्रह लोगों को पहले कहिए कि एक महात्मा जी आए हुए हैं। सारे गांव में खबर करिए कि महात्मा जी आए हैं। फिर दस–पच्चीस लोग आपके साथ जाएं कि महात्मा जी आए हैं, फिर चंदा हो सकता है।

उनको बात समझ में आ गई। उनके दस–पंद्रह लोगों ने गांव में प्रचार किया कि एक बहुत बड़े महात्मा आए हुए हैं। जिन दुकानों पर उनको चार आने बामुश्किल से दुकानदार ने दिए थे, इसलिए ताकि ये यहां से हटें, उसी दुकान पर उनको बहुत रूपए भी मिले, उसने पैर भी छुए, उनके गले में माला भी डाली! वे तो उन्होंने दो–चार–आठ दिन में वहां सैकड़ों रूपए इकट्ठे किए।

तो मैंने उनसे कहा, आदमी को रूपए नहीं मिलते, ऋषि–मुनि को मिलते हैं। और ऋषि–मुनि प्रपोगेंडा के बिना तैयार नहीं होता, उसको तैयार करना पड़ता है। उसकी हवा फैलानी पड़ती है, उसका प्रचार करना पड़ता है, उसको बताना पड़ता है कि ये

महात्मा हैं, परम–ज्ञानी हैं; यह है, वह है। और जैसे लक्स टायलेट को बनाना पड़ता है, वैसे उसको बनाना पड़ता है।

प्रचार के इस खेल को, इस जाल को– समझदार आदमी को अपने चित्त से तोड़ देना चाहिए।

मार्क टण्वेन ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि मैं एक बहुत बड़े नगर में बोलने गया। कुछ मित्रों से गपशप करने में सांझ हो गई, बोलने का वक्त करीब आ गया और मैं उस दिन भूल ही गया दाढ़ी बनाना तो मैं एक नाईबाड़े में गया। नाई दुकान बंद ही कर रहा था। मैंने उससे कहा कि भाई एक दो क्षण रुक जाओ, मेरी दाढ़ी बना दो। उसने कहा, क्षमा करिए, मैं मार्क टण्वेन का भाषण सुनने जा रहा हूं। और मेरे मन में इतना आदर है उस व्यक्ति के लिए कि अब मैं एक क्षण भी यहां नहीं रुक सकता। अगर वहां देर से पहुंचा तो शायद हाल के बाहर ही खड़ा रहना पड़े, या भीतर भी घुस जाऊं तो खड़ा रहना पड़े। मैं जल्दी ही जाना चाहता हूं। आप क्षमा करें, आप कहीं और बाल बनवा लें।

मार्क टण्वेन ने कहा, ठीक ही कहते हो, यह मार्क टण्वेन का बच्चा जहां भी भाषण करता है, वहां जो लोग देर से पहुंचते हैं, उनको तो खड़ा रहना ही पड़ता है, लेकिन मुझे हमेशा ही खड़ा रहना पड़ता है। उसने कहा, मार्क टण्वेन का बच्चा! मार्क टण्वेन ने कहा, तो उस नाई को गुस्सा आ गया। उसने कालर पकड़ लिया। और उसने कहा, सम्हलकर बोलो। मार्क टण्वेन का मैं बहुत आदर करता हूं, इस तरह नहीं बोल सकते हो।

मार्क टण्वेन ने लिखा है– कि मैं खुद ही मार्क टण्वेन हूं, वह मेरा गला पकड़ लिया। लेकिन मार्क टण्वेन और ही बात है उसके मन में। वह एक प्रपोगेंडा और है, उससे इस आदमी का क्या संबंध?

जिन ऋषि–मुनियों की आप रोज पूजा करते हैं– आरती, वे अगर सड़क पर मिल जाएं, तो दो पैसा भी शायद ही आप उनको दें। बल्कि हो सकता है, पुलिस में रिपोर्ट करवा दें कि यह आदमी धोखा दे रहा है। जिसकी हम पूजा करते हैं, वह आदमी कहीं सड़क पर भीख मांग सकता है! यह धोखेबाज है कोई। एक प्रपोगेंडा होता है, एक हवा होती है।

चर्चिल ने लिखा है कि मैं एक दफा रेडियो से बोलने को था। एक स्टेशन पर उतरा। एक टैक्सी–ड्राइवर को कहा कि जल्दी मुझे रेडियो स्टेशन पहुंचा दो। उसने कहा, माफ करिए, मेरा प्यारा नेता चर्चिल आज रेडियो से बोलने को है। मैं अपने घर जा रहा हूं, रेडियो पर उसका भाषण सुनूंगा, आप कहीं और कोई टैक्सी कर लें।

चर्चिल बहुत खुश हुआ। इतना आदर एक टैक्सी–ड्राइवर भी उसका करता है। उसने खीसे में हाथ डाला, पांच पौंड के नोट निकालकर टैक्सी–ड्राइवर के हाथ में दिए– इनाम के तौर कि यह मेरा इतना आदर करता है। टैक्सी–ड्राइवर ने कहा, भाड़ में जाए चर्चिल! मालिक तुम पीछे बैठो, और जहां चलना हो चलो।

चर्चिल को ख्याल भी नहीं था कि यह पांच पौंड देने का यह फल होगा। चर्चिल से क्या लेना–देना है? चर्चिल का एक इमेज बना हुआ है, वह अलग ही है। इस आदमी से क्या मतलब?

प्रचार प्रतिमाएं खड़ी कर देते हैं, और फिर हम उनको हजारों साल तक पूजते रहते हैं। और जितना प्रचार लंबा होता जाता है, उतनी ही वे प्रतिमाएं दुर्गम होती जाती हैं, आकाश उठाने लगती हैं। फिर वह आदमी नहीं रह जाते, धीरे–धीरे परमात्मा हो जाते हैं; भगवान, अवतार हो जाते हैं; और न मालूम क्या। और उनके इतने पागल भक्त पीछे होते हैं कि कोई शक करे तो जिंदगी खतरे में डाले। तो कौन कहे? – ओशो

स्वर्ग की चाह में नरक का निर्माण

एक संन्यासी अपने भक्तों के बीच बोलता था। उसने एक प्रश्न किया। उसने अपने भक्तों से कहा, तुम में से कितने लोग स्वर्ग जाना चाहते हैं? सभी हाथ उठ गए, सिर्फ एक हाथ को छोड़कर। संन्यासी बहुत हैरान हुआ। हाथ नीचे गिरवाकर उसने कहा, अब वे लोग हाथ उठाएं, जो नरक जाना चाहते हैं। एक भी हाथ नहीं उठा। उस आदमी ने भी हाथ नहीं उठाया, जिसने स्वर्ग जाने के लिए भी हाथ नहीं उठाया था! संन्यासी हैरान हुआ, उसने कहा, महानुभाव, आप कहां जाना चाहते हैं?

उस आदमी ने कहा, न तो मैं स्वर्ग जाना चाहता हूं, न नरक। मैं इस जमीन पर रहना चाहता हूं। और इस जमीन को, और इस जमीन के जीवन को आनंदित देखना चाहता हूं। ये तुम्हारे स्वर्ग जाने वाले लोग इस जमीन को नरक बनाने के कारण बने हैं। और नरक तो जाने को कोई तैयार नहीं है, सारे लोग स्वर्ग जाने को तैयार हैं, इस कारण यह पृथ्वी नरक हो गई है। क्योंकि इस पृथ्वी को कौन स्वर्ग बनाए? इस जीवन को कौन सुंदरता दे? इस जीवन की कुरूपता को कौन मिटाए?

जो लोग जीवन को छोड़ने की शिक्षा देते हैं, वे तो जीवन को सुंदर न बनाना चाहेंगे, क्योंकि जीवन अगर सुंदर हो जाए, उसकी सारी अग्लीनेस, उसकी कुरूपता मिट जाए, तो शायद कोई जीवन को छोड़ने की, भागने की कल्पना भी न करे।

एक मुसलमान राजधानी में, एक आदमी ने आकर घोषणा कर दी कि मैं पैगंबर हूं। उसे पकड़ लिया गया। उस बादशाह ने उसे कैद में बंद करवा दिया और चौबीस घंटे बाद उसके पास गया। और उससे कहा स्मरण रखो, मोहम्मद के बाद अब कोई पैगंबर नहीं। इस तरह की बातें कहोगे, तो मौत के सिवाय और कोई सजा नहीं होगी। चौबीस घंटे में कुछ अकल आई? उसे बहुत कोड़े मारे गए थे, पीटा गया था, भूखा रखा गया था, लहूलुहान कर दिया था, चमड़ी कट गई थी, वह बंधा था एक खंभे से। होश आया हो, माफी मांग लो, तो छूट सकते हो?

वह पैगंबर हंसा। और उसने कहा कि तुम्हें पता नहीं, जब परमात्मा ने मुझसे कहा था मैं तुम्हें पैगंबर बनाकर भेज रहा हूं, तो उसने मुझे यह भी कहा था कि पैगंबरों पर मुसीबतें आती हैं। सो मुसीबतें आनी शुरू हो गई। इससे यह सिद्ध नहीं होता कि मैं पैगंबर नहीं हूं। इससे तो यह बिल्कुल सिद्ध होता है कि मैं पैगंबर हूं। क्योंकि हमेशा पैगंबरों पर मुसीबतें आती हैं, पत्थर मारे जाते हैं, चोटें की जाती हैं। यह बात वह कह ही रहा था कि पीछे सींखचों में बंद एक आदमी चिल्लाया कि यह बिल्कुल झूठ बोल रहा है। इस आदमी को एक महीने पहले बंद किया गया था।

उस सुलतान ने पूछा कि कैसे तुम कहते हो, यह झूठ बोल रहा है? उस आदमी ने कहा, आप भूल गए। मैं खुद परमात्मा हूं। मोहम्मद के बाद मैंने किसी को भेजा ही नहीं, यह आदमी बिल्कुल झूठ बोल रहा है। वे परमात्मा के जुर्म में गिरफ्तार किए गए थे एक महीने पहले। उसने कहा, यह बिल्कुल सरासर झूठ बोल रहा है कि यह पैगंबर है, मैंने इसको कभी पैगंबर बनाया ही नहीं। मोहम्मद के बाद मैंने किसी को बनाया ही नहीं।

अब इनको हम जानते हैं, इनका इलाज होना चाहिए। ये आदमी पागल हो गए। इनके अहंकार ने अंतिम घोषणा कर दी। इनका अहंकार फूलकर अंतिम गुब्बारा बन गया। अब यह विक्षिप्त स्थिति की अंतिम सीमा पर हैं।

जब आदमी पागल होते हैं, तो वे पैगंबर होने के दावे शुरू कर देते हैं। और जब किताबें पागल हो जाती हैं भक्तों के कारण, तो वे शास्त्र बन जाती हैं।

– ओशो,
असंभव क्रांति –चौथा प्रवचन

चुटकुलों का ध्यान के लिए उपयोग

मानव के इतिहास में पहली बार मैं चुटकुलों का उपयोग कर रहा हूं, क्योंकि इतने सुंदर चुटकुले... मगर किसी ने इनका ध्यान के लिए उपयोग नहीं किया। और ये चारों तरफ सुंदर महौल निर्मित करते हैं, व्यक्ति पूरी तरह निर्भीक हो जाता है। हंसता हुआ चित्त ज्यादा निर्भीक होता है, उदास चित्त से। उदास चित्त संदेह करता है, हिचकता है, दो बार सोचता है। हंसते हुए व्यक्ति का हृदय जुंआरी का होता है, वह बस कूद जाता है। और ध्यान अज्ञात में छलांग लगाने की तो बात है।

–ओशो, मात्सुः दि एम्प्टी मिरर

एक बजाज की दुकान में आग लग गई। ढब्बूजी उसके मालिक से सांत्वना प्रकट करने गए। बोले, आपकी साडि़यों की दुकान जल जाने से आपको काफी नुकसान हुआ होगा।

जी नहीं, सिर्फ आधा ही नुकसान हुआ, दुकानदार ने कहा।

ढब्बूजी– वह कैसे?

बजाज– भाई साहब, वह तो अच्छा हुआ कि आग तब लगी, जब सेल के कारण साडि़यों पर पचास प्रतिशत की छूट चल रही थी।

एक रोज संता ने अपने दोस्त बंता को कान में बाली पहने हुए देखा। चूंकि बंता बहुत ही सादगी पसंद इंसान था और किसी भी तरह के फैशन से परहेज रखता था इसलिए संता से पूछे बिना रहा नहीं गया।

संता– यार तूने ये कान में बाली पहनना कब से शुरू किया?

बंता– जब से मेरी बीवी मैके से वापिस आयी है।

संता– तो क्या वो मैके से तेरे लिए बाली लेकर आयी है?

बंता– नहीं, ये बाली उसने मेरे बिस्तर से बरामद की है।

भारतीय नारियां अपने पति को 'एजी' कहकर पुकारती हैं। जानते हैं क्यों? क्योंकि सरेआम'अबे गधे' कहकर तो नहीं पुकार सकती न! इसलिए शार्ट फार्म का इस्तेमाल करती हैं!

शादी के मौके पर जब दूल्हा दुल्हन की मांग में सिन्दूर भरने लगा तो एक बोला– यार, यह रस्म उल्टी होनी चाहिए। यानी दुल्हन दूल्हे की मांग में सिन्दूर भरे।

दूसरा बोला– अगर ऐसा हुआ तो दुनिया के तमाम गंजे कुंवारे ही रह जाएंगे।

शादी के कुछ दिन बाद ही बेटी ने अपनी मां को फोन किया– मां, मेरी उनसे लड़ाई हो गई है!

मां ने समझाया– बेटी, नई–नई शादी हुई है न, तो कभी–कभी झगड़े हो जाते हैं! तू फिकर मत कर, सब ठीक हो जाएगा।

बेटी– वो तो ठीक है मां, पर अभी तो इस लाश का क्या करूं!

विज्ञान की तरक्की से पेशे की इज्जत

'मुल्ला, रात को ढंग से नींद न आये तो उसके लिए मुझे क्या करना चाहिए? '

'आप सोने से पहले एक गिलास गरम दूध और सेब ले लिया करें,' मुल्ला नसरुद्दीन बोला।

'मगर मुल्ला, छः महीने पहले तो आपने कहा था कि मुझे सोने से पहले कुछ भी नहीं खाना चाहिए!'

'मगर भाई' नसरुद्दीन ने अपने पेशे की इज्जत बचाने के लिए बात बनाते हुए कहा, 'यह भी तो सोचो कि उन छः महीनें में चिकित्सा विज्ञान उन्नति करके कहां से कहां जा पहुंचा है।'

तकलीफ का पूर्व ज्ञान

मुल्ला नसरुद्दीन : 'कहिए, आप को क्या तकलीफ है? '

रोगी : 'मुल्ला, मेरी कमर में कभी–कभी अचानक दर्द होने लगता है।'

नसरुद्दीनः 'अच्छा, तो आपको मैं यह गोलियां दे देता हूं। दर्द शुरू होने के ठीक बीस मिनट पहले गोली खा लेना।'

एक यात्री टैक्सी वाले से'– भाई साहब, आप लाल किले के कितने पैसे लोगे? टैक्सी ड्राइवर– माफ करना, सर। मैं लाल किला नहीं बेच सकता। वह तो शासकीय खजाना है।

मैडम 'छात्र बंटी से'– बंटी, तुम बताओ कपड़ा किससे बनता है?

बंटी– पता नहीं मैडम।

मैडम– अच्छा बताओ, तुम्हारी यह पेंट किस कपड़े से बनी है?

बंटी– जी मैडम, मेरे पिता की पुरानी पेंट से।

एक साहब धोबी को डाँट रहे थे क्यों रे! एक तो तूने मेरी कमीज गुमा दी, ऊपर से धुलाई के पैसे माँग रहा है?

धोबी नरमी से बोला – साहब, आपकी कमीज, धुलने के बाद गुमी है।

एक फोटोग्राफर महाशय अपने नन्हे से बेटे के साथ किसी गार्डन में बैठे हुए थे। तभी एक नीग्रो व्यक्ति वहाँ से निकला। उसे देखकर बेटा चिल्लाया 'पापा, पापा! देखो फोटो का निगेटिव जा रहा है।

टीचर – बताओ, आउल को हिन्दी में क्या कहेंगे?

राजू – जी, उल्लू।

टीचर – बिल्कुल ठीक। रमेश तुम बताओ उल्लू कैसा होता है? रमेश सिर झुकाकर चुपचाप खड़ा रहा। यह देख टीचर गुस्से में चिल्लाए

क्यों? तुझे पता नहीं उल्लू कैसा होता है? सिर झुकाकर क्या खड़ा है? मेरी तरफ देख और बता उल्लू कैसा होता है?

एक कार्यक्रम के बाद अभिनेता से आटोग्राफ लेने के लिए भीड़ टूट पड़ी। देर तक आटोग्राफ देने के बाद जब अभिनेता थक गया तो उसने शरारत की और एक लड़के की कापी पर गधे की तस्वीर बना दी।

वह लड़का तपाक से बोला – थैंक्यू सर! मुझे आपका आटोग्राफ चाहिए, फोटोग्राफ नहीं।

बच्चों से प्यार एक डॉक्टर ने गांव में नई–नई प्रैक्टिस शुरू की। उसके दवाखाने के पीछे एक पेड़ था। उस पेड़ पर कई बच्चे आकर खेलते और खूब शोर मचाते। एक दिन कंपाउंडर ने डाक्टर से कहा– 'डॉक्टर साहब, ये बच्चे बहुत शोर करते हैं, कहिए तो इन्हें भगा दूं।

'कोई बात नहीं। बच्चे हैं, शोर तो करेंगे ही। डाक्टर ने जवाब दिया। 'आपको बच्चों से बहुत प्यार है। कंपाउंडर ने मक्खन लगाते हुए कहा।

'नहीं भाई, बात को समझो। आज ये खेल रहे हैं तो कल पेड़ से नीचे भी तो गिरेंगे। डाक्टर ने मुसकराते हुए कहा।

बंताजी प्लेटफार्म पर खड़े थे तभी ट्रेन आने की उद्घोषणा हुई और वे रेलवे ट्रैक पर कूद

पड़े। उन्हें देखकर एक आदमी चिल्लाया–'सरदारजी क्या कर रहे हो मर जाओगे! तो बंताजी बोले 'मरेगा तो तू! अभी–अभी सुना नहीं कि ट्रेन प्लेटफार्म पर आ रही है।

यह मेरा वफादार कुत्ता है। नित्य सुबह यह जाकर अखबार उठाकर लाता है और मुझे देता है।

इसमें वफादारी की क्या बात है?

वह यह कि अखबार पड़ोसियों के यहां से लाता है।

बारिश पड़ने लगी थीं। दो सरदार भींगते हुए जा रहे थे। संतोष सिंह ने कहा – सरदारजी, बारिश चालू हो गई है। छाता खोल लो।

भाई, कोई फायदा नहीं होगा। इसमें छेद हीं छेद हैं।

तो इसे लेकर क्यों चले थे?

मुझे क्या पता था कि बारिश पड़ने लगेगी?

एक उपन्यासकार ने अपनी विद्वता का रौब झाड़ते हुए अपने दोस्त संता सिंह से कहा– उपन्यास लिखना कोई आसान काम नहीं है। पता है, एक उपन्यास लिखने में कभी–कभी मुझे एक साल लग जाता है।

इस पर उपन्यासकार का दोस्त संता सिंह हंसते हुए बेफिक्री से बोला– तुम बेकार में इतनी मेहनत करते हो यार। पता है पंद्रह रूपये में तो लिखा– लिखाया उपन्यास मिल जाता है।

एक बार संतासिंह को 20 लाख की लॉटरी खुली। संतासिंह पैसे लेने लॉटरी वाले के पास गए। नंबर मिलाने के बाद लॉटरी वाले ने कहा कि ठीक है सर हम आपको अभी 1 लाख रुपए देंगे और बाकी के 19 लाख आप अगले 19 हफतों तक ले सकते हैं।

संतासिंह बोले– नहीं मुझे तो अपने पूरे पैसे अभी ही चाहिए नहीं तो आप मेरे 5 रुपए वापस कर दीजिए।

एक द्वीप पर तीन आदमी फंसे हुए थे। उनमें एक मुस्लिम था, एक हिंदू और संतासिंह। तीनों इसी सोच में थे कि 100 मील तक तैरकर घर तक कैसे पहुंचा जाए। मुस्लिम ने हिम्मत दिखाई और तैरता हुआ 50 मील का रास्ता पार कर लिया। लेकिन थकने के कारण वो डूब गया। अब हिंदू ने सोचा कि चलो एक बार कोशिश करके देख लूं। वो भी करीब 75 मील तक तैरकर डूब गया। दोनों के जाने के बाद संतासिंह बच गए। उन्होंने सोचा अब मैं अकेला यहां क्या करूंगा मैं भी हिम्मत कर ही लूं। यह सोचकर पानी में छलांग लगा दी। 50 मील तैरने के बाद उन्हें लगा कि अब मैं थक गया हूं आगे बढ़ूंगा तो डूब जाऊंगा यह सोचकर संता वापस द्वीप पर चले गए।

एक व्यक्ति ने वकील से कहा– 'वकील साहब, मैं अपनी पत्नी को तलाक देना चाहता हूँ।

वकील– 'पाँच सौ रुपए लगेंगे।

व्यक्ति ने कहा– 'पर शादी कराते समय तो पंडित ने दक्षिणा में 51 रुपए ही लिए थे। वकील ने जवाब दिया– 'सस्ते काम का नतीजा तुम्हारे सामने है।

एक परिवार अपने लड़के के लिए लड़की देखने गया। वहां लड़की के गुणों की प्रशंसा की जा रही थी–'हमारी लड़की की आवाज कोयल जैसी है, इसकी गर्दन मोरनी जैसी है, चाल हिरणी जैसी है और स्वभाव में तो एकदम गाय जैसी है।

इस पर लड़के ने पूछा– 'जी, इसमें कुछ गुण इंसानों जैसे भी हैं या नहीं।

बॉस– क्यों मिस्टर मुल्ला, आज फिर लेट?

मुल्लाजी – सर, कारण यह है कि कल रात मेरी पत्नी ने मुझे एक नवजात शिशु की, इस खानदान के कुलदीपक की सौगात दी है।

बॉस – बेहतर होता, वह तुम्हें अलार्म घड़ी की सौगात देती।

पी. डब्ल्यू. डी. का सीनियर इंजीनियर अपने जूनियर इंजीनियर से कहता है– 'वर्माजी, हमने एक महीने पहले जो पुल बनाया था, उसकी हालत बहुत खराब है। पुल कभी भी गिर सकता है।

जूनियर इंजीनियर– 'सर, आगाह करने के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद। कल से मैं दूसरे रास्ते से ऑफिस आया करूँगा।

वधू ने शादी में आए सारे गिफ्ट खुशी–खुशी खोलने के बाद जब आखिरी में एक बड़ा–सा पैकेट उठाया तो उस पर लिखा देखा –'इस उपहार को तुम सुहागरात में पहनना। तुम्हारा दूल्हा चकाचौंध रह जाएगा।

नव वधू ने धड़कते दिल से जिज्ञासा के साथ जब पैकेट खोला तो शरमा गई। पैकेट में कुछ भी नहीं था।

एक साहब बड़े क्रोध से चिल्ला–चिल्लाकर कह रहे थे– 'अब मैं इस कुत्ते को जाने से मार दूंगा।

पड़ोसी ने पूछा– 'इस बेचारे ने क्या अपराध किया है?

महाशय ने कहा– 'आप अपराध की बात कर रहे हैं। अरे साहब! मैंने मुर्गी पाली तो उसे यह खा गया। तोता पाला तो उसे इसने मार दिया। खरगोश पाले तो इसने उन्हें भगा दिया, पर अब मेरी सास एक महीने से यहां आई हुई है और यह कमबख्त अभी तक कुछ नहीं कर पाया।

बेटा : पापा, शादी पर कितना खर्च होता है?

पापा : पता नहीं बेटा, मैं अभी भी कीमत चुका रहा हूँ।

बेटा –'पापा, निराशवादी कौन होता है?
पापा –'एक ऐसा आशावादी, जिसकी शादी हो गई हो।

शादी के बाद दो सहेलियों की मुलाकात हुई। कुशलक्षेम पश्चात दोनों ने एक–दूसरे के पति के बारे में जानना चाहा। पहली सहेली ने कहा– 'मेरे पति तो टाइपिस्ट कम क्लर्क हैं, और तुम्हारे पति?

'मेरे पति हसबैंड कम सर्वेंट हैं –दूसरी सहेली ने जवाब दिया।

दो अय्याशी दोस्त लंबे समय बाद मिले।
पहला – 'भाई! शादी हो गई तुम्हारी?
दूसरा –'हाँ– हाँ! और मेरी बीवी तो फरिश्ता है।
पहला – 'भाग्यवान हो भाई! मेरी तो अभी तक मेरे ही साथ है।

प्रेमिका 'प्रेमी से'– 'शादी के बाद मैं तुम्हारे सारे दुःख बाँट लूँगी।
प्रेमी– 'मुझे तो कोई दुःख नहीं है।
प्रेमिका– 'लेकिन मैं तो शादी के बाद की बात कर रही हूँ।

शादी के तीन–चार महीनों बाद राजेश कुछ उखड़ा–उखड़ा सा लगने लगा। एक दिन उसके मित्र मनीष ने पूछा– 'मित्र शादी के बाद तुम्हारी जिंदगी में क्या बदलाव आया है? 'कुछ खास नहीं, राजेश ने बुझे स्वर में कहा– 'पहले तन्हाई काटने को दौड़ती थीं, अब बीवी।

संता सिंह को मनोविज्ञान पढ़ने की सूझी। वह उसी में डूब गए। एक दिन उनका एक मित्र मिला। संता सिंह ने उससे कहा, 'मैंने सुना था कि तुम्हारा देहांत हो गया है। मित्र ने कहा, 'लेकिन मैं तो तुम्हारे सामने जीवित खड़ा हूं।

'असंभव! जिसने मुझे यह बताया था, वह तुम्हारी तुलना में ज्यादा भरोसेमंद था। संता सिंह ने मनोविज्ञान बघारा।

हंसते हुए लोग ही परमात्मा के पास जा सकते हैं

रोम में एक सम्राट ने अपने बड़े वजीर को फांसी की आज्ञा दे दी थी।

उस दिन उसका जन्मदिन था, वजीर का जन्मदिन था। घर पर मित्र इकट्ठे हुए थे। संगीतज्ञ आए थे, नर्तक थे, नर्तकियां थीं। भोज का आयोजन था, जन्मदिन था उसका। कोई ग्यारह बजे दोपहर के बाद सम्राट के आदमी आए। वजीर के महल को नंगी तलवारों ने घेरा डाल

दिया। भीतर आकर दूत ने खबर दी, कि आपको खबर भेजी है सम्राट ने कि आज शाम छः बजे आपको गोली मार दी जाएगी।

उदासी छा गई। छाती पीटी जाने लगीं। वह घर जो नाचता हुआ घर था एकदम से मुर्दा हो गया, सन्नाटा छा गया, नृत्य, गीत बंद हो गए, वाद्य शून्य हो गए। भोजन का पकना, बनना बंद हो गया। मित्र जो आए थे वे घबरा गए। घर में एकदम उदासी छा गई। सांझ छः बजे, बस सांझ छः बजे आज ही मौत। सोचा भी नहीं था कि जन्मदिन मृत्यु का दिन बन जाएगा।

लेकिन वह वजीर, वह जिसकी मौत आने को थी, वह अब तक बैठा हुआ नृत्य देखता था। अब वह खुद उठ खड़ा हुआ और उसने कहा कि वाद्य बंद मत करो और अब नृत्य देखने से ही न चलेगा, अब मैं खुद भी नाचूंगा। क्योंकि आखिरी दिन है यह। फिर इसके बाद कोई दिन नहीं है। और सांझ को अभी बहुत देर है। और चूंकि यह आखिरी सांझ है, अब इसे उदासी में नहीं गंवाया जा सकता। अगर बहुत दिन हमारे पास होते तो हम उदास भी रह सकते थे। वह लक्जरी भी चल सकती थी। अब अवसर न रहा, अब उदास होने के लिए क्षण भर का अवसर नहीं है। बजने दो वाद्य, हो जाए नृत्य शुरू। आज हम नाच लें, आज हम गीत गा लें, आज हम गले मिल लें, क्योंकि वह दिन आखिरी है।

लेकिन वह घर तो हो गया था उदास। वे वाद्यकार हाथ उठाते भी तो वीणा न बजती। उनके हाथ तो हो गए थे शिथिल। वे चौंककर देखने लग। वह वजीर कहने लगा, बात क्या है? उदास क्यों हो गए हो?

वे कहने लगे कि, मौत सामने खड़ी है, हम कैसे खुशी मनाएं?

तो उस वजीर ने कहा, जो मौत को सामने देखकर खुशी नहीं मना सकता वह जिंदगी में कभी खुशी नहीं मना सकता। क्योंकि मौत रोज ही सामने खड़ी है। मौत तो रोज ही सामने खड़ी है। कहां था पक्का यह कि मैं सांझ नहीं मर जाऊंगा? हर सांझ मर सकता था। हर सुबह मर सकता था। जिस दिन पैदा हुआ उस दिन से ही किसी भी क्षण मर सकता था। पैदा होने के बाद अब एक ही क्षण था मरने का जो कभी भी आ सकता था। मौत तो हर दिन खड़ी है। मौत तो सामने है। अगर मौत को सामने देखकर कोई खुशी नहीं मना सकता तो वह कभी खुशी नहीं मना सकता। और वह वजीर कहने लगा, और शायद तुम्हें पता नहीं है, जो मौत के सामने खड़े होकर खुशी मना लेता है उसके लिए मौत समाप्त हो जाती है। उससे मौत हार जाती है, जो मौत के सामने खड़ा होकर हंस सकता है।

मजबूरी थी। वह वजीर तो नाचने लगा तो वाद्य–गीत शुरू हुए थके और कमजोर हाथों से। नहीं, सुर–साज नहीं बैठता था। उदास थे वे लोग, लेकिन फिर भी जब वह नाचने लगा था...!

सम्राट को खबर मिली, वह देखने आया। इसकी तो कल्पना भी न थी जानकर ही जन्मदिन के दिन वह खबर भेजी गई थी कि कोई गहरा बदला चुकाने की इच्छा थी कि जब सब खुशी का वक्त होगा तभी दुख की यह खबर गहरा से गहरा आघात पहुंचा सकेगी।

लेकिन जब दूतों ने खबर दी कि वह आदमी नाचता है और उसने कहा कि चूंकि सांझ मौत आती है इसलिए अब यह दिन गंवाने के लायक न रहा, अब हम नाच लें, अब हम गीत गा

लें, अब हम मिल लें। अब जितना प्रेम मैं कर सकता हूं कर लूं और जितना प्रेम मैं कर सकता हूं कर लूं और जितना प्रेम तुम दे सकेते हो दे लो, क्योंकि अब एक भी क्षण खोने जैसा नहीं है।

सम्राट देखने आया। वजीर नाचता था। धीरे-धीरे, धीरे-धीरे उस घर की सोई हुई आत्मा फिर जग गई थी। वाद्य बजने लगे थे, गीत चल रहे थे।

सम्राट देखकर हैरान हो गया। वह उस वजीर से पूछने लगा, तुम्हें पता चल गया है कि सांझ मौत है और तुम हंस रहे हो और गीत गा रहे हो?

तो उस वजीर ने कहा, आपको धन्यवाद! इतने आनंद से मैं कभी भी न भरा था जितना आज भर गया हूं और आपकी बड़ी कृपा कि आपने आज के दिन ही यह खबर भेजी। आज सब मित्र मेरे पास थे, आज सब वे मेरे निकट थे जो मुझे प्रेम करते हैं और जिन्हें मैं प्रेम करता हूं। इससे सुंदर अवसर मरने का और कोई नहीं हो सकता था। इतने निकट प्रेमियों के बीच मर जाने से बड़ा सौभाग्य और कोई नहीं हो सकता था। आपकी कृपा, आपका धन्यवाद! आपने बड़ा शुभ दिन चुना है, फिर मेरा यह जन्मदिन भी है। और मुझे पता भी नहीं था- बहुत जन्मदिन मैंने मनाए हैं, बहुत-सी खुशियों से गुजरा हूं लेकिन इतने आनंद से भी मैं भर सकता हूं, इसका मुझे पता नहीं था। यह आनंद की इतनी इन्टेंसिटी, तीव्रता हो सकती है मुझे पता नहीं था।

आपने सामने मौत खड़ी करके मेरे आनंद को बड़ी गहराई दे दी। चुनौती और आनंद एकदम गहरा हो गया। आज मैं पूरी खुशी से भरा हुआ हूं, मैं कैसे धन्यवाद करूं? वह सम्राट आवाक खड़ा रह गया। उसने कहा कि ऐसे आदमी को फांसी लगाना व्यर्थ है, क्योंकि मैंने तो सोचा था कि मैं तुम्हें दुखी कर सकूंगा। तुम दुखी नहीं हो सके, तुम्हें मौत दुखी नहीं कर सकती तो तुम्हें मौत पर ले जाना व्यर्थ है। तुम्हें जीने की कला मालूम है, मौत वापस लौट जाती है।

जिसे भी जीने की कला मालूम है वह कभी भी नहीं मरा है, और न मरता है, न मर सकता है। और जिसे जीने की कला मालूम नहीं वह केवल भ्रम में होता है कि मैं जी रहा हूं, वह कभी नहीं जीता, न कभी जीया है, न जी सकता है। उदास आदमी जी ही नहीं रहा है, न जी सकता है। उसे जीवन की कला का ही पता नहीं। केवल वे जीते हैं जो हंसते हैं, जो खुश हैं, जो प्रफुल्लित हैं, जो जीवन के छोटे से छोटे कंकड़-पत्थर में भी खुशी के हीरे-मोती खोज लेते हैं, जो जीवन के छोटे-छोटे रस में भी परमात्मा की किरण को खोज लेते हैं, जो जीवन के छोटे-छोटे आशीषों में, जीवन के छोटे-छोटे आशीषों की वर्षा में भी प्रभु की कृपा का आनंद अनुभव कर लेते हैं। केवल वे ही जीते हैं। केवल वे ही सदा जीए हैं और कोई भी आदमी जिंदा होने का हकदार नहीं है- जिंदा नहीं है।

तो चाहिए एक फैली हुई प्रफुल्लता सुबह से सांझ तक, दिन में, रात में, सपनों में भी। चाहिए एक गीत जो सारे जीवन को घेर ले उठते-बैठते-चलते सारा जीवन एक नृत्य बन जाए, एक खुशी का आंदोलन, तो हम प्रभु के निकट पहुंचना शुरू होते हैं। सिर्फ हंसते हुए लोग ही उसके पास बुलाए जाते हैं, सिर्फ मुस्कुराते हुए लोगों को ही वह आमंत्रण मिलता है।

– ओशो, साधना पथ

मुल्ला नसरुद्दीन और ग़रीब का झोला

एक दिन मुल्ला कहीं जा रहा था कि उसने सड़क पर एक दुखी आदमी को देखा जो ऊपरवाले को अपने खोटे नसीब के लिए कोस रहा था। मुल्ला ने उसके करीब जाकर उससे पूछा– 'क्यों भाई, इतने दुखी क्यों हो? '

वह आदमी मुल्ला को अपना फटा–पुराना झोला दिखाते हुए बोला– 'इस दुनिया में मेरे पास इतना कुछ भी नहीं है जो मेरे इस फटे–पुराने झोले में समा जाये।'

'बहुत बुरी बात है'– मुल्ला बोला और उस आदमी के हाथ से झोला झपटकर सरपट भाग लिया।

अपना एकमात्र माल–असबाब छीन लिए जाने पर वह आदमी रो पड़ा। वह अब पहले से भी ज्यादा दुखी था। अब वह क्या करता! वह अपनी राह चलता रहा।

दूसरी ओर, मुल्ला उसका झोला लेकर भागता हुआ सड़क के एक मोड़ पर आ गया और मोड़ के पीछे उसने वह झोला सड़क के बीचोंबीच रख दिया ताकि उस आदमी को ज़रा दूर चलने पर अपना झोला मिल जाए।

दुखी आदमी ने जब सड़क के मोड़ पर अपना झोला पड़ा पाया तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह खुशी से रो पड़ा और उसने झोले को उठाकर अपने सीने से लगा लिया और बोला– 'मेरे झोले, मुझे लगा मैंने तुम्हें सदा के लिए खो दिया।'

झाड़ियों में छुपा मुल्ला यह नज़ारा देख रहा था। वह हंसते हुए खुद से बोला– 'यह भी किसी को खुश करने का शानदार तरीका है!'

मुल्ला नसरुद्दीन का भाषण

एक बार शहर के लोगों ने मुल्ला नसरुद्दीन को किसी विषय पर भाषण देने के लिए आमंत्रित किया। मुल्ला जब बोलने के लिए मंच पर गया तो उसने देखा कि वहां उसे सुनने के लिए आये लोग उत्साह में नहीं दिख रहे थे।

मुल्ला ने उनसे पूछा– 'क्या आप लोग जानते हैं कि मैं आपको किस विषय पर बताने जा रहा हूँ? '

श्रोताओं ने कहा– 'नहीं।'

मुल्ला चिढ़ते हुए बोला– 'मैं उन लोगों को कुछ भी नहीं सुनाना चाहता जो यह तक नहीं जानते कि मैं किस विषय पर बात करने वाला हूँ।'– यह कहकर मुल्ला वहां से चलता बना। भीड़ में मौजूद लोग यह सुनकर काफी निराश हुए और अगले हफ्ते मुल्ला को एक बार और भाषण देने के लिए बुलाया। मुल्ला ने उनसे दोबारा वही सवाल पूछा– 'क्या आप लोग जानते हैं कि मैं आपको किस विषय पर बताने जा रहा हूँ? '

लोग इस बार कोई गलती नहीं करना चाहते थे। सबने एक स्वर में कहा– 'हाँ।'

मुल्ला फिर से चिढ़कर बोला– 'यदि आप लोग इतने ही जानकार हैं तो मैं यहाँ आप सबका और अपना वक़्त बर्बाद नहीं करना चाहता।' मुल्ला वापस चला गया।

लोगों ने आपस में बातचीत की और मुल्ला को तीसरी बार भाषण देने के लिए बुलाया। मुल्ला ने तीसरी बार उनसे वही सवाल पूछा। भीड़ में मौजूद लोग पहले ही तय कर चुके थे कि वे क्या जवाब देंगे। इस बार आधे लोगों ने 'हां' कहा और आधे लोगों ने 'नहीं' कहा।

मुल्ला ने उनका जवाब सुनकर कहा– 'ऐसा है तो जो लोग जानते हैं वे बाकी लोगों को बता दें कि मैं किस बारे में बात करने वाला था।' यह कहकर मुल्ला अपने घर चला गया।

मुल्ला नसरुद्दीन और बेचारा पर्यटक

मुल्ला नसरुद्दीन एक बार तीर्थयात्रा पर मक्का गए और रास्ते में मदीना में भी रुके। जब वह वहां की मुख्य मस्जिद में घूम रहे थे तब एक हैरान, परेशान विदेशी पर्यटक उनके पास आया और उसने मुल्ला से पूछा– 'जनाब, आप मुझे यहीं के बाशिंदे लगते हैं। क्या आप मुझे इस मस्जिद के बारे में बता सकते हैं? मेरी पर्यटन की पुस्तिका खो गई है और ये बहुत पुरानी और महत्वपूर्ण मस्जिद लगती है।'

नसरुद्दीन को भी उस मस्जिद के बारे में कुछ पता नहीं था लेकिन वह पर्यटक को यह जताना नहीं चाहता था। उसने बड़े उत्साह से पर्यटक को मस्जिद के बारे में बताना शुरू किया– 'आप सही कहते हो। यह मस्जिद वाकई बहुत पुरानी और ख़ास है। इसे सिकंदर महान ने अरब फतह करने की खुशी में बनवाया था।'

चुटकुले का उद्देश्य चुटकुला ही नहीं है। इससे पैदा होने वाला हास्य है क्योंकि हास्य के उन क्षणों में तुम्हारे विचार रुक जाते हैं। उस हंसी में, मन नहीं रह जाता और हंसी के बाद एक छोटा सा अन्तराल... और मेरी बात तुम्हारे गहनतम केन्द्र तक प्रवेश कर जाती है।

–ओशो

11

जीवन हंसने–हंसाने का अवसर

जीवन हंसने–हंसाने का अवसर है। आदमी खुद पर हंस नहीं सकता, क्योंकि वह मूर्ख बनने से डरता है। लेकिन मूर्खता में क्या खराबी है? ज्ञानी बनने की बजाय मूर्ख बनकर जीना ज्यादा बेहतर है। सच्चा मूर्ख वह है जो किसी बात को गंभीरता से नहीं लेता। मूर्ख आदमी अकारण हंसता रहता है। उसमें मिथ्या अहंकार नहीं होता। वह सहज, सरल होता है। यह बहुत बड़ा वरदान है। क्योंकि हमारी जिंदगी इतनी बोझिल है कि हंसने के कारण खोजने जाएं तो मिलने बहुत मुश्किल हैं। जो अकारण हंस सकता है उसका जीवन मधुमास बन जाता है; उसके जीवन में आनंद की फुलझड़ियाँ छूटती हैं। अकारण ही।

–ओशो

भारत की घड़ी

'एक आदमी ने धरती से किया प्रस्थान, और यमराज के कक्ष में घड़ियाँ ही घड़ियाँ देखकर रह गया हैरान।

हर देश की अलग घड़ी थी, कोई छोटी, कोई बड़ी थी, कोई दौड़ रही थी, कोई बंद कोई तेज थी, कोई मंद। उनकी अलग–अलग रफ्तार देखकर आदमी चकराया। कारण पूछा तो यमराज ने बताया हर घड़ी की उसी हिसाब से है रफ्तार, जिस हिसाब से हो रहा है उस देश में भ्रष्टाचार।

आदमी ने चारों तरफ नजर दौड़ाई पर भारत की घड़ी कहीं भी नजर नहीं आई। आदमी मुस्कुराया फिर यमराज के कान में फुसफुसाया– भारत वाले भ्रष्टाचार यहाँ भी ले आए। सच–सच बताओ भारत की घड़ी न रखने के कितने पैसे खाए?

यमराज बोले – बेटा तेरे शक की सुई तो बिना बात उछल रही है। नरक के बरामदे में जा देख पंखे की जगह भारत की घड़ी चल रही हैं।'

अफसर–क्या तुमने नोटिस नहीं पढ़ा कि बिना अनुमति के प्रवेश निषेध है?

मुल्ला–पढ़ा है सर, इसीलिए तो अनुमति मांगने अंदर आया हूं। बताइए क्या मैं आ सकता हूं?

चंदूलाल का बेटा–मेरे बाल झड़ने लगे, चांद निकलने लगी, मैं अपने पापा पर गया हूं। लेकिन यार, तू इतना बड़ा हो गया अभी तक तेरी दाढ़ी–मूछें नहीं आईं?

फजलू–यार, असल बात यह है कि मैं बिल्कुल अपनी मां पर गया हूं।

एक पंडित अपने कंधे पर तोता बिठाकर बाजार से गुजर रहा था। किसी ने पूछा–यह कौन सा जानवर है?

तोता बोला–यह उल्लू है।

पत्नी–डॉक्टर साहब ने मुझे स्वास्थ्य सुधारने के लिए एक माह कहीं विदेश घूम आने की सलाह दी है। हम लोगों को कहां जाना चाहिए?

सेठ चंदूलाल–किसी दूसरे अच्छे डॉक्टर के पास, जो ऐसी बेहूदी और मंहगी सलाह न दे।

कोर्ट में जब रावण से कहा कि गीता पर हाथ रखो तो वह बोला– 'न बाबा न, एक बार सीता पर हाथ रखा था तो इतना लफड़ा हुआ था।'

मुल्ला–अगर तुम्हारी बीबी को भूत पकड़ ले तो क्या करोगे?

चंदूलाल–मैं क्या करूंगा! जिसने पकड़ा है, वह बेवकूफ खुद अपनी करनी का फल भुगतेगा।

मुल्ला–यह बस कहां जाएगी?

कंडक्टर–दिल्ली

मुल्ला–लेकिन बोर्ड पर तो हरिद्वार लिखा है।

कंडक्टर–तुम्हें बस में बैठकर जाना है या बोर्ड पर बैठकर?

नसरुद्दीन की शादी की पहली सालगिरा पर उनकी पत्नी का चचेरा भाई महमूद खाने पर आमंत्रित था। अभी जब खाना चल ही रहा था, महमूद के हाथ से एक प्याली गिरी और टूट गई।

नसरुद्दीन ने दरियादिली दिखाई– 'अरे महमूद, डोंट वरी यार! यह तो एक मामूली और सस्ती सी प्याली थी! चलो, टूट गई तो हमारा भी पीछा छूटा। हा! हा! हा!

नसरुद्दीन की पत्नी ने उन्हें कसकर घूरा और फुसफुसाईं– 'हमारी शादी में इन प्यालियों का सेट, मेरे प्यारे महमूद भैय्या ने ही तो उपहार में दिया था, भलेमानस!

मनोवैज्ञानिक ने पूछा– 'अगर किसी दुर्घटना में आपका एक कान कट जाए तो क्या होगा? '

चंदूलाल– 'मैं ठीक से नहीं सुन सकूंगा।'

'अगर दोनों कान कट जाएं तो? '

'दोनों कान कट जाने के बाद मैं देख नहीं सकूंगा।'

'क्यों? '

'क्योंकि, दोनों कान कटने के बाद मेरा चश्मा जो गिर जाएगा जनाब! आपको इतनी भी अकल नहीं है और मनोवैज्ञानिक बनकर बैठे हो, हद हो गई!'

लेखिका ने प्रकाशक से कहा– 'महानुभाव, यह मेरा कहानी–संग्रह है। जनवरी 2008 में इसे छपवाने के लिए पिछले साल भी मैं आपके पास आई थी।

प्रकाशक– 'लेकिन महाशयजी, मैं तो पिछले साल ही इसे अस्वीकृत कर लौटा दिया था। आप दोबारा क्यों आईं?'

लेखिका– 'मैंने सोचा इस एक साल में आपके अनुभव, ज्ञान व बुद्धि में कुछ बढ़ोतरी जरूर हुई होगी।'

जज ने बंदी को घृणा से देखा और कहा– 'तुम्हें लज्जा नहीं लगती कि तुम बार–बार मेरी अदालत में ही लाए जाते हो!'

बंदी– 'हुजूर! शर्म तो आपको आनी चाहिए... आपका प्रमोशन नहीं होता है तो इसमें भला मेरी क्या गलती है?'

एक आदमी एक गली से गुजर रहा था कि अचानक एक आवाज आई– रुको! रुक जाओ! अगर तुमने एक कदम भी आगे बढ़ाया तो एक ईंट तुम्हारे सिर पर गिरेगी और तुम मर जाओगे।

आदमी ठिठक कर रुक गया। तभी सनसनाती हुई एक ईंट ठीक उसके आगे आकर गिरी। आदमी ने आवाज देने वाले की तलाश में चारों तरफ देखा पर कोई नजर नहीं आया।

आदमी आगे बढ़ गया। जब वह सड़क पार करने ही वाला था कि वही आवाज एक बार फिर गूंजी– रुक जाओ! अगर एक कदम भी आगे बढ़ाया तो एक कार तुम्हें कुचल देगी।

आदमी फिर रुक गया। तभी एक कार बेतहाशा भागती हुई लगभग उसे छूती हुई निकल गई। अब आदमी से नहीं रहा गया।

उसने पूछा– कौन हो तुम?

आवाज आई– मैं आपका सेवक और रक्षक देवदूत हूं। मेरा काम आपको मुसीबतों से बचाना है।

आदमी– ओह! अच्छा! कम्बख्त तुम उस वक्त कहां मर गए थे जब मेरी शादी हो रही थी।

पति– क्यों न आज की चाय बाहर चलकर पी जाए।
पत्नी– क्यों? तुम्हें क्या लगता है कि मैं चाय बनाते–बनाते थक गई हूं?
पति– अरे नहीं, दरअसल मैं ही कप प्लेट धोते–धोते तंग आ गया हूं

मीना और टीना दो सहेलियां काफी अरसे बाद मिलीं।
मीना– जब तेरा तलाक हुआ था तब तो एक ही बच्चा था, और अब तीन कैसे?
टीना– दरअसल वो कभी–कभी माफी मांगने आ जाते थे।

पत्नी– चलो आज बाहर घूमने चलते हैं। और हां, गाड़ी मैं ड्राइव करूंगी।
पति– अच्छा! इसका मतलब जाएंगे कार में और आएंगे अखबार में।

आदमी शादी क्यों करता है?
आदमी शादी इसलिए करता है ताकि मरने के बाद यदि वह स्वर्ग में जाए तो अच्छा अनुभव करे और यदि नर्क में जाए तो अपने घर जैसा अनुभव करे।

पति–पत्नी में झगडा हो रहा था। पत्नी सुबकते हुए बोली– काश मैंने अपनी मां की राय मानी होती और तुमसे शादी न की होती।
पति– क्या? तुम्हारा मतलब तुम्हारी मां ने तुम्हें मुझसे शादी न करने की राय दी थी?
पत्नी– और नहीं तो क्या?
पति– हे भगवान! और मैं आज तक उस औरत को कितना गलत समझता था!

जी भर कर हंसो

मेरा आश्रम हंसता हुआ होना चाहिए। हंसी यहां धर्म है। यह आनंद–उत्सव है। यहां उदास होकर नहीं बैठना है।

यह कोई उदासीन साधुओं की जमात नहीं। उदासीनता को मैं रोग मानता हूं, साधुता नहीं– रुग्णता!

जो उदासीन हैं, उनकी मानसिक चिकित्सा की जरूरत है। प्रफुल्लता स्वास्थ्य का लक्षण है! प्रफुल्लित होओ और धीरे–धीरे जैसे–जैसे तुम्हारे जीवन में हंसी की किरणें फैलेंगी, चकित होओगे कि कितना हंसने को है। खुद के जीवन में हंसने को है, औरों के जीवन में हंसने को है।

चारों तरफ हंसने ही हंसने की घटनाएं हैं। वह तो हम देखते नहीं, कंजूस हैं, कि कहीं हंसना न पड़े। तो हमने देखना ही बंद कर दिया है। नहीं तो चारों तरफ प्रतिपल क्या–क्या घट रहा है। हर चीज हंसने की है। कोई ऐसे ही थोड़े कि कभी–कभी कोई केले के छिलके पर फिसल कर गिर पड़ता है, हर आदमी यहां केले के छिलके पर फिसल रहा है। सड़कें केलों के छिलकों से भरी पड़ी हैं। यहां तुम हर आदमी को गिरते देखोगे।

और ऐसा नहीं है कि दूसरे ही गिर रहे हैं। दूसरों के लिए हंसे तो वह हंसी ठीक नहीं, काफी नहीं, पूरी नहीं, सम्यक् नहीं। तुम अपने को भी गिरते देखोगे। और हंसी तो तुम्हें तब आएगी कि उन्हीं छिलकों पर गिर रहे हो जो तुम्हीं ने बिछाए थे, कोई और नहीं बिछा गया। उन्हीं गड्ढों में गिर रहे हो, जो तुम्हीं ने बिछाए थे।

मेरे एक संन्यासी हैं, ईरानी हैं– डॉक्टर हमीद। दिव्या से उनका प्रेम था। फिर थक गए, ऊब गए। हर चीज उबा देती है। हर चीज थका देती है। मन का यह नियम है।

जब तक तुम मन के पार नहीं हो, ऐसी कोई चीज नहीं जो तुम्हें उबा न दे। और ये सब खेल, प्रेम हो कि घृणा हो, सब मन के ही खेल हैं। कभी एक ही सब्जी रोज–रोज खाओगे– भिंडी, भिंडी, भिंडी– एकदम घबड़ा ही जाओगे। एक दिन थाली फेंक कर खड़े हो जाओगे। मन घबड़ाएगा ही। फिर चाहे यह प्रेम हो तुम्हारे मन का और चाहे घृणा हो तुम्हारे मन की, मन जो भी करता है, उसमें जल्दी ही ऊब जाता है।

ऊबना मन का स्वभाव है। वह जल्दी ही नए की मांग करने लगता है। वह कहता हैः कुछ और। अब कुछ बदलाहट चाहिए। कुछ न कुछ बदलाहट।

डॉक्टर ने एक अभिनेत्री को सलाह दीः आपके लिए वातावरण–परिवर्तन बहुत आवश्यक है।

अभिनेत्री ने कहाः वातावरण परिवर्तन! मैं पिछले चार वर्षों में दो पति, चार नौकर, तीन सेक्रेटरी और पांच प्रेमी बदल चुकी हूं, अब और क्या परिवर्तन करना पड़ेगा?

सो हमीद थके, बहुत थके। दिव्या भी थक गई। दोनों थक गए। बार–बार मुझे लिखने लगे कि हम दोनों को अलग करवा दें। जब मैंने देख लिया कि अब थकान बिल्कुल सौ डिग्री पर आ गई, तो उन दोनों को अलग करवा दिया।

थोड़े ही दिनों में फिर दोनों एक–दूसरे की आकांक्षा करने लगे। मन तो पागल है! फिर मुझे पत्र लिखने लगे कि हमें तो फिर साथ रहना है। महीने दो महीने मैंने टाला। जब फिर देखा कि अब बात सौ डिग्री पर पहुंची जा रही है, अब बिल्कुल दीवाने ही हुए जा रहे हैं, तो दोनों को साथ कर दिया।

दूसरे दिन सुबह ही हमीद ने मुझे एक पत्र लिखा और कहा कि सूफियों की एक कहावत जो मैं बचपन से सुनता रहा था, कभी मेरी समझ में न आई; आज आपने अवसर दे दिया कि समझ में आ गई।

कहावत यह है कि आदमी ही एकमात्र गधा है, जो एक ही गड्ढे में दोबारा गिरता है। कोई गधा नहीं गिरता। एक गड्ढे में एक दफा गिर गया तो उस गड्ढे में फिर न गिरेगा। तुम गधे को धकाओ तो भी इन्कार करेगा, कि अब नहीं! अब गिरना ही है तो किसी और गड्ढे में गिरेंगे।

यह तुम्हारा जो मन है, इस मन से तो जो भी हो रहा है, वह मूढ़तापूर्ण है। एक ही गड्ढे में आदमी दोबारा नहीं, हजार बार गिरता है और जानता है कि यह गड्ढा है और जानता है कि इसमें गिरने से चोट लगती है। और कितनी ही बार तय कर चुका कि अब नहीं गिरेंगे, मगर कुछ बात

है। जैसे खाज को कोई खुजलाता है; जानता है, भलीभांति जानता है कि अभी खुजलाएगा, फिर अभी परेशान होगा, जलन उठेगी, लहू निकल जाएगा। मगर जब खुजलाहट उठती है तो ऐसी मिठास पकड़ती है।

तो तुम अपने ही बिछाए केले के पत्तों पर गिरते हो। अगर जिंदगी को जरा गौर से देखो तो यहां हंसने ही हंसने जैसा है। चारों तरफ घटनाएं ही घटनाएं बिखरी पड़ी हैं। चुटकुलों से पटी हुई पड़ी है पृथ्वी– पत्थरों से नहीं, चुटकुलों से। जरा देखो, जरा खोजो।

मुल्ला नसरुद्दीन शिकार को गया। बैठा था बंदूक वगैरह लेकर एक झाड़ के पास, उसका संगी–साथी एक भागा हुआ आया और उसने कहा कि नसरुद्दीन क्या कर रहे हो? अरे जल्दी आओ। जिस तंबू में तुम ठहरे हो, तुम्हारी पत्नी अकेली है और एक चीता अंदर घुस गया है।

नसरुद्दीन खिलखिला कर हंसा। उसने कहाः अब कंबख्त को पता चलेगा। अब करे अपनी आत्मरक्षा खुद ही। हम क्यों आएं। गया ही क्यों अंदर? हमारी कौन आत्मरक्षा करता है? हम अपने को बचाते हैं। अब बचाए अपने को। चीता हो कि कोई हो। वैसे भी हमें चीतों से कुछ लेना–देना नहीं है। अब बच्चे को छठी का दूध याद आएगा कि कहां पर घुस गए।

मैंने यह भी सुना है कि मुल्ला–नसरुद्दीन के गांव में एक बार सर्कस आया, उसमें से चीता छूट, भाग निकला। पूरे गांव में डुंडी पीटी, पुलिस सतर्क की गई, भोंपू बजाया गया कि सब लोग सावधान रहें। मुल्ला तो जल्दी से सीढ़ी लगा कर अपने छप्पर पर चढ़ गया और सीढ़ी भी खींच ली। उसकी पत्नी मोटी भी बहुत है, ऊंची भी बहुत है। वह चिल्लाई कि अरे, यह क्या करते हो? उसने कहा कि तू चढ़ेगी तो सीढ़ी तोड़ देगी।

और उसने कहा कि चीता आ गया, फिर, उसने कहाः तू क्यों घबड़ाती है? अरे चीता कोई क्रेन लेकर थोड़े ही आएगा। तेरा क्या बिगाड़ लेगा? ये भोंपू वगैरह तो हम जैसे गरीबों के लिए बज रहे हैं, तू बेफिक्री से रह। चीता आएगा तो खुद अपना बचाव करेगा।

जिंदगी पटी पड़ी है, अगर तुम गौर से देखो। यहां हंसने को बहुत है। लेकिन चूंकि तुम्हारे भीतर की क्षमता खो गई है, इसलिए बाहर देखने का भी मौका नहीं मिलता; दृष्टि भी खो गई है।

हंसो, जी भर कर हंसो। हर बहाने हंसो। न बहाने मिलें तो बिन बहाने हंसो।

मुल्ला नसरुद्दीन बैठा था एक स्टेशन पर। ट्रेन लेट थी। जैसा कि नियम है। दो–चार बार उठ कर भी गया, स्टेशन–मास्टर को पूछा भी; मगर जब जाए तभी और लेट होती जाए। आखिर उसने कहा कि मामला क्या है, क्या ट्रेन पीछे की तरफ सरक रही है? लेट होना भी समझ में आता है, मगर और–और लेट होता जाना...क्या ट्रेन उस तरफ जा रही है? फिर आएगी कैसे? और जब हर गाड़ी को लेट ही होना है तो टाइम–टेबिल किसलिए छापते हो?

उस स्टेशन मास्टर ने कहाः टाइम–टेबिल नहीं छापेंगे तो पता कैसे चलेगा कि कौन–सी गाड़ी कितनी लेट है?

नसरुद्दीन ने कहाः यह बात जंचती है। यह बात पते की कही। फिर उसने कहाः अब कोई

फिक्र नहीं। अब मैं बैठ कर राह देखता हूं।

बैठ कर वह राह देखने लगा। बीच–बीच में हंसे। कभी–कभी ऐसा झिड़क दे कोई चीज हाथ से। कभी–कभी कहे– छिः छिः। वह स्टेशन–मास्टर थोड़ी देर देखता रहा कि यह कर क्या रहा है। बार–बार आता था, वहीं अच्छा था पूछने, अब यह और उत्सुकता जगा रहा है। किसी चीज को हाथ से सरकाता है, किसी चीज को छिः छिः कहता है, कभी कुछ। और फिर बीच–बीच में हंसता है, ऐसा खिलखिला कर हंसता है।

आखिर वह आया, उसने कहा कि भाईजान, बड़े मियां। आप मुझे काम ही नहीं करने दे रहे हैं। मेरा दिल यहीं लगा है। इसमें कुछ गड़बड़ हो जाए, ट्रेन पटरी से उतर जाए कि दूसरी पटरी पर चढ़ जाए, कि दो ट्रेनें टकरा जाएं, जब तक मैं आपसे पूछ न लूं, मुझे चैन नहीं है। या तो आप जरा दूर जाकर बैठो। आप कर क्या रहे हो? आप हंसते क्यों हो बीच–बीच में? कुछ भी तो नहीं हो रहा है यहां। गाड़ी लेट है। सब सन्नाटा छाया हुआ है। रात आधी हो गई है। सब यात्री बैठे–बैठे सो गए हैं। कुली–कबाड़ी भी विश्राम कर रहे हैं। तुम हंसते किसलिए हो बीच–बीच में?

उसने कहा कि अब मैं बैठे–बैठे क्या करूं? अपने को कुछ चुटकुले सुना रहा हूं।

उसने कहाः चलो, यह भी समझ में आ गया कि चुटकुले। ये बीच–बीच में छिः छिः और यह हाथ से हटाना, यह क्या करते हो?

तो उसने कहा कि जो चुटकुले मैं पहले सुन चुका हूं, उन्हें कहता हूं...अरे हटो, रास्ते पर लगो। उनको ऐसा हटा देता हूं। बीच–बीच में घुस आते हैं।

हंसो– बहाने मिलें तो ठीक, न बहाने मिलें तो कुछ खोजो। मगर जिंदगी तुम्हारी एक हंसी का सिलसिला हो। हंसी तुम्हारी सहज अभिव्यक्ति बन जानी चाहिए।

मेरा संन्यासी हर हालत में मस्ती और आनंद को अभिव्यंजना दे। यही मेरी आकांक्षा है। सुंदर लत है। अगर लत है तो सुंदर है, प्यारी है, शुभ है। बड़ी धार्मिक लत है।

– ओशो, प्रीतम छवि नैनन बसी, प्रवचन 16

12

ध्यान की अनूठी विधि : हास्य–ध्यान

हंसना कुछ ऊर्जा तुम्हारे अंतर्केंद्र से परिधि पर ले आती है। ऊर्जा हंसने के पीछे छाया की भांति बहने लगती है। तुमने कभी इस पर ध्यान दिया? जब तुम वास्तव में हंसते हो, तो उन थोड़े से क्षणों के लिए तुम एक गहन ध्यानपूर्ण अवस्था में होते हो। विचार प्रक्रिया रुक जाती है। हंसने के साथ–साथ विचार करना असंभव है। वे दोनों बातें बिल्कुल विपरीत हैं: या तो तुम हंस सकते हो, या विचार ही कर सकते हो। यदि तुम वास्तव में हंसो तो विचार रुक जाता है। यदि तुम अभी भी विचार कर रहे हो तो तुम्हारा हंसना थोथा और कमजोर होगा। वह हंसी अपंग होगी।

जब तुम वास्तव में हंसते हो, तो अचानक मन विलीन हो जाता है। जहां तक मैं जानता हूं, नाचना और हंसना सर्वोत्तम, स्वाभाविक व सुगम द्वार हैं। यदि सच में ही तुम नाचो, तो सोच–विचार रुक जाता है। तुम नाचते जाते हो, घूमते जाते हो, और एक भंवर बन जाते हो–सब सीमाएं, सब विभाजन समाप्त हो जाते हैं। तुम्हें इतना भी पता नहीं रहता कि कहां तुम्हारा शरीर समाप्त होता है और कहां अस्तित्व शुरू होता है। तुम अस्तित्व में पिघल जाते हो और अस्तित्व तुममें पिघल आता है; सीमाएं एक–दूसरे में प्रवाहित हो जाती हैं। और यदि तुम सच ही नाच रहे हो–उसे नियंत्रित नहीं कर रहे बल्कि उसे स्वयं को नियंत्रित कर लेने दे रहे हो, स्वयं को वशीभूत कर लेने दे रहे हो–यदि तुम नृत्य से वशीभूत हो जाओ, तो सोच–विचार रुक जाता है।

हंसने के साथ भी ऐसा ही होता है। यदि तुम हंसी से आविष्ट और आच्छादित हो जाओ तो सोच–विचार रुक जाता है। निर्विचार की दशा के लिए हंसना एक सुंदर भूमिका बन सकती है।

हंसी ध्यान के लिए निर्देश

हर सुबह जब जागें, तो अपनी आंखें खोलने से पहले, शरीर को बिल्ली की तरह तानें। तीन या चार मिनट बाद, आंखें बंद रखे हुए ही, हंसना शुरू करें। पांच मिनट के लिए बस हंसें हीं। पहले–पहले तो आप इसे सप्रयास करेंगे, लेकिन शीघ्र ही आपके प्रयास से पैदा की गई ध्वनि प्रामाणिक हंसी को जगा देगी। स्वयं को हंसी में खो दें। शायद इस घटना को वास्तव में घटने में कई दिन लग जाएं, क्योंकि हम इससे बहुत अपरिचित हैं। परंतु शीघ्र ही यह सहज हो जाएगा और आपके पूरे दिन का गुण ही बदल जाएगा।

बस में सफर करते समय दो अध्यापकों की मुलाकात होती है। बातों–बातों में पहला जूनियर अध्यापक दूसरे से पूछता है, 'सर, यदि आपको रिलाएंस वालों की सारी दौलत दी जाए और फिर आपसे कहा जाए कि आपको रिलाएंस वालों से भी ज्यादा दौलत कमाना है तो आप क्या करेंगे?'

दूसरे सीनियर अध्यापक ने उत्तर दिया, 'सिम्पल यार, दौलत कमाने के साथ–साथ दो ट्यूशन और कर लूँगा।'

इस्तीफा

रामदीन निराश था कि अपने अफसरों को खुश नहीं कर पाया, इसी निराशा में उसने इस्तीफा दे दिया। अफसरों ने राहत की सांस ली। विदाई समारोह में उसकी प्रशंसा में सबने कुछ न कुछ कहा।

रामदीन मुग्ध भाव में बोला – सर! कितने आश्चर्य और अफसोस की बात है कि आप सब मुझे इतना चाहते रहे और मैं उल्टा ही समझता रहा। इस गलतफहमी की मैं माफी चाहता हूं और अपना इस्तीफा वापस लेता हूं।

स्वयं को भी नहीं जानते!

महमूद मियां– मेरी नजर कमजोर हो गई है। मैं सोचता हूँ, एक चश्मा बनवा लूँ।

प्रेमिका– अजी रहने दीजिए! इस पूरी कॉलोनी में मुझसे सुंदर और कोई नहीं है।

फाइनल एक्जाम

दादी को धार्मिक किताब पढ़ते देख पोता अपने मम्मी से बोला– माँ, दादी कौन से एक्जाम की तैयारी कर रही हैं?

माँ बोली– बेटा, फाइनल एक्जाम की।

अध्यापक और स्टूडेंट

अध्यापक– बताओ! शिव जी का धनुष किसने तोड़ा?

स्टूडेंट घबराते हुए– सर! मैं सही कह रहा हूँ, मैंने नहीं तोड़ा।

चिंटू– यार ऑन्सर शीट पर क्या लिखूँ?

बिट्टू– यहीं कि इस शीट पर लिखे गए सारे जवाब काल्पनिक हैं, जिनका किसी भी बुक से कोई संबंध नहीं है।

संता– अरे यार, पिछले वर्ष जो मोबाइल खरीदा था, वह तो मुझे कंगाल कर देगा!

बंता– क्यों? क्या हुआ?

संता– बार–बार दिखाता है– बैटरी लो (Battery Low), और मैं अब तक 256 बार बैटरी बदल चुका हूँ!

मुसीबत के वक्त अपने बाल नोचना बेवकूफी है। गंजे हो जाने पर दुःख–तकलीफें कम नहीं हो जातीं।

मनुष्य हजारों वर्षों से ये 5 गलतियाँ करता आ रहा है–

पहलीः उन चीज़ों की चिंता करना जिन्हें कोई भी न तो बदल सकता है और न ही सुधार सकता है।

दूसरीः यह समझना कि जो काम हमारे बस में नहीं हैं, वह नामुमकिन है।

तीसरीः तुच्छ प्राथमिकताओं को दरकिनार नहीं करना।

चौथीः अपने मन के परिमार्जन और परिवर्धन को महत्व न देना।

पांचवींः दूसरों पर खुद के विचार और जीवनशैली को थोपना।

–तूलियस सिसेरो

एक ग्रामीण महिला को वाक्य में कॉमा और फुल स्टॉप, अर्ध विराम एवं पूर्ण विराम सही स्थान पर लगाना नहीं आता था। उसने अपने पति को इस तरह पत्र लिखा–

मेरे प्यारे जीवन साथी। सैकड़ों चुंबन दे गया है आपका दोस्त राजेश। पचास रुपये वापस। आपने अभी तक चिट्ठी नहीं लिखी मेरी सहेली को। नौकरी मिल गई हमारी गाय ने। बछड़ा दिया है दादाजी ने। फिर शराब पीनी शुरु कर दी है मैंने। तुमको बहुत खत लिखे मगर तुम नहीं आए, कुतिया के बच्चे। भेडिया खा गया दो महीने का राशन। छुट्टी पर आते वक्त ले आना एक खुबसूरत औरत। इस समय टी. वी. पर गाना गा रही है हमारी बकरी। बेच दी गई है तुम्हारी मां। तुमको याद कर रही है एक पड़ोसन। हमें बहुत तंग करती है तुम्हारी

कुवारी बहन। पेटदर्द से प्रायः लेटी रहती है गर्भवती। पत्नी, प्रतीक्षा में अश्रु बहाती हुई।

वास्तव में वह महिला लिखना चाहती थी–

मेरे प्यारे जीवन साथी, सैकड़ों चुंबन। दे गया है आपका दोस्त राजेश पचास रुपये वापस। आपने अभी तक चिट्ठी नहीं लिखी। मेरी सहेली को नौकरी मिल गई। हमारी गाय ने बछड़ा दिया है। दादाजी ने फिर शराब पीनी शुरु कर दी है। मैंने तुमको बहुत खत लिखे मगर तुम नहीं आए। कुतिया के बच्चे भेड़िया खा गया। दो महीने का राशन छुट्टी पर आते वक्त ले आना। एक खुबसूरत औरत इस समय टी. वी. पर गाना गा रही है। हमारी बकरी बेच दी गई है। तुम्हारी मां तुमको याद कर रही है। एक पड़ोसन हमें बहुत तंग करती है। तुम्हारी कुवारी बहन पेटदर्द से प्रायः लेटी रहती है। गर्भवती–पत्नी, प्रतीक्षा में अश्रु बहाती हुई।

संता अपने दोस्त को बता रहा था– कल रात मेरी पत्नी नींद में जोर–जोर हाथ पांव पटक रही थी और बड़बड़ा रही थी 'नहीं रमेश, नहीं नहीं, प्लीज। मुझे बड़ा गुस्सा आया।

बंता– इसमें गुस्से की क्या बात है? आखिर उसने 'नहीं' कहा था।

संता की बीबी रोमांटिक मूड में पूरे बेड पर बांहें फैलाकर लेट गई और अर्थ भरी मुस्कान बिखेरते हुए बोली– कुछ समझे?

संता– हां समझ गया। तू आज पूरे बेड पर अकेली सोना चाहती है।

यदि आप अपने विवाहित जीवन को सुखी देखना चाहते हैं तो आपके लिए सलाह है कि–

जब भी आप गलत हों– अपनी गलती चुपचाप मान लें।

जब भी आप सही हों– तो कृपया चुप रहें।

संता– मेरी दोनों पत्नियों के साथ ही मेरा बुरा अनुभव रहा है।

बंता– वह कैसे?

संता– पहली वाली मुझे छोड़कर चली गई और दूसरी वाली मुझे छोड़कर जाना नहीं चाहती।

संता– यार मेरी बीबी की याददाश्त बहुत खराब है।

बंता– क्यों? क्या वह हर बात भूल जाती है?

संता– नहीं, बल्कि उसे हर बात याद रहती है।

संता की नई–नई शादी हुई थी लेकिन फिर भी उसे शाम को घर जाने की कोई जल्दी

नहीं रहती थीं। वह देर तक ऑफिस में बैठा रहता।

एक दिन उसके बॉस ने उससे कारण पूछा तो संता ने जवाब दिया– बात यह है सर कि मेरी पत्नी भी नौकरी करती है और हम दोनों में से जो भी घर पहले पहुंचता है खाना उसे ही बनाना पड़ता है।

दो सहेलियां

दो सहेलियां साथ साथ शंकरजी की पूजा और उपवास करती थीं। भगवान ने एक दिन प्रसन्न होकर एक–एक वरदान मांगने को कहा। पहली बोली– मुझे दुनिया की सबसे सुंदर स्त्री बना दो। भगवान के तथास्तु कहते ही वह विश्व सुंदरी बन गई। दूसरी उसे देख जल–भुन गई। बोली– प्रभु इसे वापिस वैसी ही बदसूरत कर दो। शंकरजी तथास्तु कहकर अदृश्य हो गए।

पत्नी चालीसा

नमो–नमो पत्नी महारानी,
तुम्हारी महिमा कोई न जानी... 1...
हमने समझा तुम अबला हो,
पर तुम तो सबसे बड़ी बला हो... 2...
जिस दिन हाथ में बेलन आवे,
उस दिन पति खूब चिल्लावे... 3...
सारी बेड पर पत्नी सोवे,
पति बैठ फर्श पर रोवे... 4...
तुमसे ही घर मथुरा काशी,
और तुमसे ही घर सत्यानासी... 5...
पत्नी चालीसा जो नर गावे,
सब सुख छोड़ परम दुःख पावै... 6...

सूनापन काटने को दौड़ता है

एक आदमी सरकस से एक खतरनाक शेरनी खरीदकर घर ले आया। इस विचित्र खूंखार जानवर को खरीदने का कारण पूछने पर वह मासूमियत से बोला– पिछले माह मेरी बीबी की मृत्यु हो जाने से घर में सूनापन काटने को दौड़ता है।

दो जादुई शब्द

देहात से आए एक अनपढ़ ग्रामीण को अंग्रेजी के केवल दो शब्द आते थे फिर भी उसने

मुंबई जाकर करोड़ों रुपये कमा लिए। क्या आप जानना चाहते हैं कि वे दो जादुई शब्द क्या थे–

'हैण्ड्स अप!'

सत्कार्य कर लिए

तीन कजूंस मित्र प्रवचन सुनने जाया करते थे। क्योंकि यही एकमात्र मुफ्त मनोरंजन का साधन शहर में उपलब्ध था। एक दिन प्रवचनकर्ता संत ने किसी सत्कार्य हेतु दान देने की पुरजोर अपील की। जैसे–जैसे दान की थाली उनके निकट आने लगीं, वैसे–वैसे वे अत्यंत बेचैन हो उठे। अंततः एक बेहोश होकर गिर पड़ा, बाकी दो उसे उठाकर ले लाने का सत्कार्य कर लिए।

परीक्षा

मुल्ला नसरुद्दीन के घर पर एक सरकारी सर्वेक्षण करने वाले का आगमन हुआ। उसने कहा कि महोदय, सरकार की ओर से हम लोगों की औसत समझ, आई.क्यू. के बारे में आंकड़े इक्कट्ठे कर रहे हैं तो हम आपकी बुद्धि की परीक्षा करेंगे। सर्वेक्षणकर्त्ता ने एक फोटो निकाला जिसमें किसी पक्षी की केवल टांगें और पंजे दिखाई दे रहे थे और वह चित्र मुल्ला को दिखाया गया और उससे पूछा गया की इस फोटों को देखकर पक्षी का नाम बताओ? मुल्ला को समझ में नहीं आया और उसने कहा– मैं नहीं जानता। इस पर सर्वेक्षणकर्त्ता कुछ रूखे से ढंग से बोला कि आपको इतना भी नहीं पता और अपने कागजों में सर्वेक्षण का नतीजा लिखने के लिए मुल्ला से पूछा, तुम्हारा नाम क्या है? मुल्ला ने फट से अपने पायजामें के दोनों पौंछे उठाकर अपनी टांगें दिखाते हुए कहा, 'मेरी टांगें देख लो और मेरा नाम जान लो।'

सालगिरह मुबारक हो

मुल्ला नसरुद्दीन ने अपनी शादी की सालगिरह पर अपनी पत्नी गुलजान को गुलाब का फूल भेंट करते हुए कहा, भाग्यवान सालगिरह मुबारक हो। गुलजान बड़े ही नखरीले अंदाज में बोली, शुक्रिया हजूर अल्लाह आप का इकबाल बनाये रखे, मुझे तो अब कोई सोने की चीज लाकर दीजिये। मुल्ला ने झट से तकिया उठाकर बेगम गुलजान की ओर फैंका और कहा ले लेजा, और जाकर सो जा।

नाम याद नहीं आ रहा

संता, शराब पीते–पीते रोने लगा।

बंता, 'क्या हुआ दोस्त'?

संता, 'यार जिस लड़की को भुलाने के लिए शराब पी रहा हूं, उसका नाम याद नहीं आ रहा'।

बहम था, है और रहेगा

टीचर (छातु से), 'तीनों काल का एक उदाहरण मैं देती हूं, और एक तुम देना।

(मैं सुंदर थी, सुंदर हूं और सुंदर ही रहूंगी)

छातु, 'ये आपका बहम था, बहम है और बहम ही रहेगा।'

इतना अच्छा हिसाब

एक दिन शेर, गीदड़ और गधे ने मिलकर खूब शिकार किया। शाम को सारा शिकार इकट्ठा करके शेर ने गीदड़ से उसे तीन बराबर हिस्सों में बांटने को कहा, गीदड़ ने शिकार के तीन बराबर ढ़ेर बनाये और शेर को कहा कि हो गए तीन हिस्से, शेर ने गीदड की गर्दन मरोड़ कर उसे भी शिकार में मिला दिया और बोला, 'मित्र गधे, तुम इस शिकार को दो बराबर हिस्सों में बांट दो' गधे ने पूरे शिकार को इकट्ठा किया। उसमें से एक मरा कौआ अलग करके कहा, 'महाराज, यह कौआ मेरे लिए, और बाकी सारा आपके लिए'।

शेर बहुत खुश हुआ, बोला, 'मित्र गधे, तुमने इतना अच्छा हिसाब कहां से सीखा?'

गधा, 'महाराज, इस गीदड़ से'।

आधी रात के वक़्त घर के बाहर दो व्यक्तियों के झगड़ने की आवाज़ सुनकर मुल्ला की नींद खुल गई। कुछ वक़्त तक तो मुल्ला इंतज़ार करता रहा कि दोनों का झगड़ा ख़त्म हो जाये और उसे फिर से नींद आ जाये लेकिन झगड़ा जारी रहा।

कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। मुल्ला अपने सर और बदन को कसकर रजाई से लपेटकर घर के बाहर आया। उसने उन दोनों झगड़ा करनेवालों को अलग करने की कोशिश की। वे दोनों तो अब मारपीट पर उतारू हो गए थे।

मुल्ला ने जब उन दोनों को न झगड़ने की सलाह दी तो उनमें से एक आदमी ने एकाएक मुल्ला की रजाई छीन ली और फिर दोनों आदमी भाग गए।

नींद से बोझिल और थका हुआ मुल्ला घर में दाखिल होकर बिस्तर पर धड़ाम से गिर गया। मुल्ला की बीबी ने पूछा– 'बाहर झगड़ा क्यों हो रहा था?'

'रजाई के कारण'– मुल्ला ने कहा– 'रजाई चली गई और झगडा खत्म हो गया'।

एक दिन मुल्ला नसरुद्दीन अपने गधे पर बैठकर किसी दूसरे शहर से अपने गाँव आया। लोगों ने उसे रोककर कहा– 'मुल्ला, तुम अपने गधे पर सामने पीठ करके क्यों बैठे हो? ' मुल्ला ने कहा– 'मैं यह जानता हूँ कि मैं कहाँ जा रहा हूँ लेकिन मैं यह देखना चाहता हूँ कि मैं कहाँ से आ रहा हूँ।

उसी शाम मुल्ला रसोई में कुछ बना रहा था। वह अपने पड़ोसी के पास गया और

उससे एक बर्तन माँगा और वादा किया कि अगली सुबह उसे वह बर्तन लौटा देगा।

अगले दिन मुल्ला पड़ोसी के घर बर्तन लौटाने के लिए गया। पड़ोसी ने मुल्ला से अपना बर्तन ले लिया और देखा कि उसके बर्तन के भीतर वैसा ही एक छोटा बर्तन रखा हुआ था। पड़ोसी ने मुल्ला से पूछा– 'मुल्ला! यह छोटा बर्तन किसलिए? ' मुल्ला ने कहा– 'तुम्हारे बर्तन ने रात को इस बच्चे बर्तन को जन्म दिया इसलिए मैं तुम्हें दोनों वापस कर रहा हूँ।'

पड़ोसी को यह सुनकर बहुत खुशी हुई और उसने वे दोनों बर्तन मुल्ला से ले लिए। अगले ही दिन मुल्ला दोबारा पड़ोसी के घर गया और उससे पहले वाले बर्तन से भी बड़ा बर्तन माँगा। पडोसी ने खुशी–खुशी उसे बड़ा बर्तन दे दिया और अगले दिन का इंतज़ार करने लगा।

एक हफ्ता गुज़र गया लेकिन मुल्ला बर्तन वापस करने नहीं आया। मुल्ला और पड़ोसी बाज़ार में खरीदारी करते टकरा गए। पड़ोसी ने मुल्ला से पूछा– 'मुल्ला! मेरा बर्तन कहाँ हैं? ' मुल्ला ने कहा– 'वो तो मर गया!' पड़ोसी ने हैरत से पूछा– 'ऐसा कैसे हो सकता है? बर्तन भी कभी मरते हैं!' मुल्ला बोला– 'क्यों भाई, अगर बर्तन जन्म दे सकते हैं तो मर क्यों नहीं सकते? '

एक दिन मुल्ला और उसका एक दोस्त कहवाघर में बैठे चाय पी रहे थे और दुनिया और इश्क के बारे में बातें कर रहे थे। दोस्त ने मुल्ला से पूछा– 'मुल्ला! तुम्हारी शादी कैसे हुई?'

मुल्ला ने कहा– 'यार, मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूँगा। मैंने अपनी जवानी सबसे अच्छी औरत की खोज में बिता दी। काहिरा में मैं एक खूबसूरत और अक्लमंद औरत से मिला जिसकी आँखें जैतून की तरह गहरी थीं लेकिन वह नेकदिल नहीं थी। फिर बग़दाद में भी मैं एक औरत से मिला जो बहुत खुशदिल और सलीकेदार थी लेकिन हम दोनों के शौक बहुत जुदा थे। एक के बाद दूसरी, ऐसी कई औरतों से मैं मिला लेकिन हर किसी में कोई न कोई कमी पाता था। और फिर एक दिन मुझे वह मिली जिसकी मुझे तलाश थी। वह सुन्दर थी, अक्लमंद थी, नेकदिल थी और सलीकेदार भी थी। हम दोनों में बहुत कुछ मिलता था। मैं तो कहूँगा कि वह पूरी कायनात में मेरे लिए ही बनी थी।' दोस्त ने मुल्ला को टोकते हुए कहा– 'अच्छा, फिर क्या हुआ? तुमने उससे शादी कर ली?'

मुल्ला ने ख्यालों में खोए हुए चाय की एक चुस्की ली और कहा– 'नहीं दोस्त, वो तो दुनिया के सबसे अच्छे आदमी की तलाश में थी।'

मनोरंजन नहीं उत्सव

ध्यान रहेः मनुष्य जितना दुखी होता जाता है, उतना ही मनोरंजन के ज्यादा साधनों की उसे जरूरत होती है। कारण सिर्फ इतना है कि दुखी आदमी अपने भुलाने के लिए कुछ

उपाय खोजता है। हमे चाहिए कि लोग सुखी हों और सुख में अगर उत्सव मनाएं, गीत गाएं, नाचें, काव्य का रस लें, संगीत का रस लें, तो और बात है। लेकिन लोग दुखी हों और सिर्फ मलहम–पट्टी की तरह मनोरंजन का उपयोग करें, तो घातक है। उचित नहीं है। अफीम का नशा है। लोगों को अफीम का नशा मत दो। लोगों को जागरण दो, सुलाओ मत।

और हमारी साधारणतः सारी कविताएं सिवाय लोरियों के और कुछ भी नहीं हैं। जैसे छोटे–छोटे बच्चों का हम लोरियां सुना देते हैं और सुला देते हैं, ऐसे बड़े–बड़े बच्चों को कविताएं सुनाई जा रही हैं, कहानियां सुनाई जा रही हैं, पुराण सुनाए जा रहे हैं, शास्त्र सुनाए जा रहे हैं। सब लोरियां हैं कि किसी तरह सोए रहो।

और तुम भी लोरियों की तलाश में हो। तुम भी सांत्वना चाहते हो, सत्य नहीं चाहते। मुश्किल से कभी कोई आदमी मिलता है जो सत्य का खोजी है। लोग सांत्वना खोज रहे हैं। लोग चाहते हैं किसी तरह राहत मिल जाए। किसी भी तरह हो, जीवन में थोड़ी देर के लिए समस्याओं से छुटकारा मिल जाए। मगर समस्याएं अपनी जगह खड़ी रहेगी। ऐसे समस्याएं छूट नहीं सकतीं। समस्याएं तो मिटती हैं समाधि से। उन्हें मिटाने का और न कभी कोई उपाय था, न आज है, न कभी आगे होगा।

तुम मन से छूटो तो तुम दुख से छूटो। तुम मन से छूटे तो तुम समस्याओं से छूटे।

और मैं मन से छूटने की कला ही सिखा रहा हूं। संन्यास का मेरा अर्थ इतना ही है केवलः मन से छूटो। अ–मनी अवस्था का अनुभव करो। साक्षी बनो इस मन के– जहां दुख है, जहां सुख हैं; जहां हंसी भी है और आंसू भी है; जहां सब तरह के द्वंद्व है। इन दोनों के साक्षी बनो। हंसी आए तो उसे भी जागकर देखना। रोना आएं तो उसे भी जाग कर देखना। और इतना स्मरण रखना निरंतर कि मैं तो वह हूं जो जागा हुआ देख रहा है– न आंसू हूं न मुस्कुराहट हूं, दोनों का साक्षी हूं। इस साक्षी–भाव में तुम रम जाओ, तो तुम्हारे जीवन में महा रस है। तो तुम्हारे जीवन में फिर दीवाली ही दीवाली है, फाग ही फाग है। फिर तुम्हारा जीवन सावन का महीना है। फिर डालो झूले, फिर गाओ गीत। फिर तुम्हारे गीतों का रंग और, ढंग और, प्रसाद और, सौंदर्य...! मगर उसके पहले क्या गीत गाओगे? गीत गाने वाली भूमिका कहां है? नाचने वाले पैर कहां हैं, हृदय कहां है, आत्मा कहां हैं? ऐसे ऊपर से लीपा–पोती करते रहोगे, उससे कुछ लाभ होने का नहीं है।

– ओशो, प्रीतम छवि नैनन बसी

13

हंसते हुए बुद्ध

जापान में हंसते हुए बुद्ध, होतेई की एक कहानी है। उसकी पूरी देशना ही बस हंसना थी। वह एक स्थान से दूसरे स्थान, एक बाजार से दूसरे बाजार घूमता रहता। वह बाजार के बीचों–बीच खड़ा हो जाता और हंसने लगता–यही उसका प्रवचन था।

उसकी हंसी सम्मोहक थी, संक्रामक थी–एक वास्तविक हंसी, जिससे पूरा पेट स्पंदित हो जाता, तरंगायित हो जाता। वह हंसते–हंसते जमीन पर लोटने लगता। जो लोग जमा होते, वे भी हंसने लगते, और फिर तो हंसी फैल जाती, हंसी की तूफ़ानी लहरें उठतीं और पूरा गांव हंसी से आप्लावित हो जाता।

लोग राह देखते कि कब होतेई उनके गांव में आए, क्योंकि वह अद्भुत आनंद और आशीष लेकर आता था। उसने कभी भी एक शब्द नहीं बोला–कभी भी नहीं। तुम बुद्ध के बारे में पूछो और वह हंसने लगता; तुम बुद्धत्व के बारे में पूछो और वह हंसने लगता; तुम सत्य के बारे में पूछते कि वह हंसने लगता। हंसना ही उसका एकमात्र संदेश था।

– ओशो, ध्यानयोगः प्रथम और अंतिम मुक्ति

किसी ने मुझसे पूछा कि 'हरि–सुमिरन कैसे करें कि कभी छूटे न?'

मैं बोला– परमात्मा की याद को अपने हृदय में ऐसे बसा लो जैसे सेठ चंदूलाल ने मारवाड़ी अंदाज में शायरी करते हुए अपनी इकलौती प्रेमिका से कहा–

तेरी याद मेरे दिल में, कुछ इस तरह बस गई है–
जैसे छोटे से रिक्शे में मोटी सी आंटी फंस गई है!

मुल्ला नसरुद्दीन ने अपने जन्म दिवस (एक अप्रैल) पर बीवी से कहा– पचास बरस का हो गया, नारकीय जीवन जीते–जीते। बेगम, अब तो तुम्हीं इस घर को जन्नत बना सकती हो। मेरी जिंदगी का चैनो–अमन और परिवार की शांति तुम्हारे हाथों में है।

गुलजान खुश होकर पूछने लगी– अच्छा, वो कैसे मियां जी?

नसरुद्दीन बोला– डार्लिंग, मजा आ जाएगा अगर तुम गर्मी की छुट्टियों में कुछ सप्ताह के लिए अपने मायके घूम आओ। और हां, बच्चों को भी लेती जाओ।

फेस बुक एडिक्शन

'क्षमा कीजिए, सड़क दुर्घटना में मृत एक महिला शायद आपकी पत्नी है'–पुलिस अधिकारी ने फोन पर दुखद स्वर में बताया–'पहचानने के लिए जल्दी से थाने आ जाइए।'

'थानेदार साहब, माफ कीजिए'–मुल्ला नसरुद्दीन ने जवाब दिया–'फिलहाल मैं फेसबुक पर बहुत व्यस्त हूं। आप उस औरत की फोटो लेकर मुझे टैग कर दीजिए। यदि मेरी बीवी नहीं होगी, तो मैं आदतवश तुरंत 'लाइक' पर क्लिक कर दूंगा।'

मुल्ला नसरुद्दीन टी. वी. के सामने बैठा सिसक–सिसक कर रो रहा था। बीवी ने कमरे में प्रवेश करते ही पूछा– 'मियां, कौन सा ट्रेजडी वाला सीरियल देखते हुए इतना फूट–फूटकर रो रहे हो? '

नसरुद्दीन बोला– डार्लिंग, यह सीरियल नहीं, हमारी शादी की डी. वी. डी. है।

पाखंड

पंडित जी ने शाम को कालेज से लौटे अपने युवा पुत्र की तलाशी ली। जैसी कि उम्मीद थी, कुरते की जेब में से सुंदर लड़कियों के फोटोग्राफ और फोन नम्बर निकले। वे क्रोध में आग–बबूला होते हुए चिल्लाए– 'नालायक, बेशर्म, कुलनाशी! कुलीन वंश परंपरा का नाम डुबा देगा दुष्ट!'

बेटे ने सिर झुकाकर कहा– 'क्षमा करिए पिताश्री। आज सुबह बिजली न होने से मैं अपने कपड़ों में प्रेस नहीं कर पाया था। मजबूरी में बिना बताए आपका यह कुरता पहनकर कालेज चला गया था।'

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा है–

मूर्ख इंसान से वाद–विवाद के संबंध में तीन सिद्धांत स्मरणीय हैं–

पहला– अगर कभी–कभार वही ''ठीक'' है तो उसकी अक्लमंदी पर खुश होकर चुप रह जाओ।

दूसरा– अक्सर वह ''गलत'' होगा, तब अपने पर रहम करो और अपनी खुशी की खातिर मौन रहो।

तीसरा– हमेशा याद रखो कि ''मूर्ख इंसान से तर्क–वितर्क करने वाला खुद महामूर्ख होता है।''

दुकान के बाहर लगे बोर्ड पर लिखा है– भारत रिपेयर वर्क शॉप

हमारे यहां हर प्रकार की चीज को गारंटी सहित शीघ्र सुधारा जाता है।

नोट– कृपया दरवाजा जोर से खटखटाइए। पिछले दिन से बिजली की घंटी खराब है।

महान समाज–सुधारकों, राष्ट्र–सेवकों और धर्मगुरुओं की स्थिति इस से अलग नहीं है।

स्वीमिंग पूल में कार

चंदूलाल– यार मैं बड़ी मुश्किल में फँस गया हूँ। मेरी कार के कॉर्बोरेटर में पानी भर गया है।

मुल्ला– कॉर्बोरेटर में पानी? बड़ी अजीब बात है।

चंदूलाल– हाँ, हाँ, कॉर्बोरेटर में पानी। तुम जल्दी से यहाँ आ जाओ।

मुल्ला– तुम्हें पता भी है कॉर्बोरेटर किसे कहते हैं। फिर से चेक करो। बताओ कार कहाँ है?

चंदूलाल– स्वीमिंग पूल में।

चिंटू– यार! तूने ये कान में बाली पहनना कब से शुरू किया?

बिट्टू– जब से मेरी बीवी मायके से लौटकर आई है।

चिंटू– तो क्या वो मायके से तेरे लिए बाली लेकर आई है?

बिट्टू– नहीं, ये बाली उसने मेरे बेडरूम से बरामद की है।

बैंक लोन

चंदूलाल ने बैंक से लोन लेकर कार ली, लेकिन लोन वापस न कर सके, तो बैंक वाले कार ले गए।

चंदूलाल बैंक कर्मी से बोला– पहले पता होता तो शादी भी बैंक से लोन लेकर करता।

थप्पड़ मारने से नाराज पत्नी से पति ने कहा– आदमी उसे ही थप्पड़ मारता है जिसे वो प्यार करता है।

पत्नी ने पति को दो थप्पड़ मारे और बोली– आप क्या समझते हैं मैं आपसे प्यार नहीं करती।

पति– पत्नी आपस में प्यार–मोहब्बत की बातें कर रहे थे।

पति– सुनती हो, कल को भगवान न करे यदि मुझे कुछ हो जाए तो तुम किसके साथ रहोगी?

पत्नी ने रोनी सूरत बनाकर उत्तर दिया– अपनी बहन के साथ।

अब पत्नी ने पूछा– और यदि मुझे कुछ हो जाए तो तुम किसके साथ रहोगे।

पति– मुझे भी भला और कहां ठौर मिलेगा। तुम्हारी बहन के साथ ही रह लूंगा।

आधी रात के समय अपने लेखक पति को बेचैनी से इधर–उधर टहलते देख पत्नी ने पूछा– क्या बात है जी? क्यों जाग रहे हो?

पति– मुझे अपने नए उपन्यास के लिए कोई नाम नहीं सूझ रहा है।

पत्नी– इसमें क्या है। मैं बता देती हूं।

पति– बताओ, बताओ।

पत्नी– क्या उसमें कहीं ढोल शब्द आया है?

पति– नहीं।

पत्नी– तो क्या उसमें कहीं नगाड़ा शब्द आया है?

पति– नहीं।

पत्नी– तो तुम उपन्यास का नाम रख दो न ढोल न नगाड़ा।

मुल्ला– कुत्ते शादी क्यों नहीं करते हैं?

चंदूलाल– क्योंकि वे पहले ही कुत्ते की ज़िंदगी जी रहे होते हैं।

मजेदार परिभाषाएं–

श्रेष्ठ पुस्तक– जिसकी सब प्रशंसा करते हैं परंतु पढ़ता कोई नहीं है।

सरकारी कार्यालय– वह स्थान जहां आप घर के तनावों से मुक्ति पाकर विश्राम कर सकते हैं।

आशावादी– वह शख्स, जो सिगरेट मांगने से पहले अपनी दियासलाई जला ले।

अति आशावादी– ऐसा गंजा जो बाल उगाने वाला वो ही तेल खरीदता है जिसके साथ कंघी फ्री हो।

मच्छर– इंजेक्शन की ऐसी सिरिंज जो उड़ सकती है।

कामयाब व्यक्ति– जिसे पहली बीवी की वजह से कामयाबी हासिल होती है उसे फिर कामयाबी की वजह से दूसरी बीवी हासिल होती है।

बीवी– वह स्त्री, जो शादी के बाद कुछ सालों में टोक–टोक कर आपकी सारी आदतें बदल दे और फिर कहे कि आप कितना बदल गए हैं।

समिति– ऐसे व्यक्ति जो अकेले कुछ नहीं कर सकते, परंतु यह निर्णय मिलकर लेते हैं कि साथ–साथ कुछ नहीं किया जा सकता।

परम आनंद– एक ऐसी अनुभूति जब आप अनुभव करते हैं कि आप एक ऐसी अनुभूति को अनुभव करने जा रहे हैं जो आपने पहले कभी अनुभव नहीं की है।

कॉन्फ्रेन्स रूम– वह स्थान जहां हर व्यक्ति बोलता है, कोई नहीं सुनता है और अंत में सब असहमत होते हैं।

समझौता– किसी चीज को बांटने का वह तरीका जिसमें हर व्यक्ति यह समझता है कि उसे बड़ा हिस्सा मिला।

व्याख्यान– सूचना को स्थानांतरित करने का एक तरीका जिसमें व्याख्याता की

डायरी के नोट्स, विद्यार्थियों की डायरी में बिना किसी के दिमाग से गुजरे पहुंच जाते हैं।

अधिकारी– आपके लेट होने पर, जो शख्स सदा पहले ऑफिस पहुंच जाता है और यदि कभी आप जल्दी पहुंच जाएं तो उस दिन वह काफी देर से आता है।

मनोवैज्ञानिक– वह व्यक्ति, जो किसी खूबसूरत लड़की के कमरे में दाखिल होने पर उस लड़की के सिवाय बाकी सबको गौर से देखता है।

अपराधी– दुनिया के बाकी लोगों जैसा ही मनुष्य, सिवाय इसके कि वह पकड़ा गया है।

कंजूस– वह व्यक्ति जो जिंदगी भर गरीबी में रहता है ताकि अमीरी में मर सके।

अवसरवादी– वह व्यक्ति, जो गलती से नदी में गिर पड़े तो नहाना शुरू कर दे।

अनुभव– भूतकाल में की गई गलतियों का दूसरा नाम।

कूटनीतिज्ञ– वह व्यक्ति जो किसी स्त्री का जन्मदिन तो याद रखे पर उसकी उम्र कभी नहीं।

दूसरी शादी– अनुभव पर आशा की विजय।

नयी साड़ी– जिसे पहनकर स्त्री को उतना ही नशा हो जितना पुरुष को शराब की एक पूरी बोतल पीकर होता है।

राजनीतिज्ञ– ऐसा आदमी जो धनवान से धन और गरीबों से वोट इस वायदे पर बटोरता है कि वह एक की दूसरे से रक्षा करेगा।

आमदनी– जिसमें रहा न जा सके और जिसके बगैर भी रहा न जा सके।

सभ्य व्यवहार– मुंह बन्द करके जम्हाई लेना।

ज्ञानी– जिसे प्रभावी ढंग से, सीधी सरल सी बात को भी उलझाना आता है।

विशेषज्ञ– वह आदमी है जो कम से कम चीजों के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानता है।

शादी– यह मालूम करने का तरीका कि आपकी बीबी को कैसा पति पसन्द आता?

पड़ोसी– वह महानुभाव जो आपके मामलों को आपसे ज्यादा समझते हैं।

नेतागण– वे लोग जो अपने देश के लिये आप सबकी जान की कुर्बानी देने के लिये हमेशा तैयार रहते हैं।

वृद्धावस्था– उस आयु को कहते हैं जब किसी खूबसूरत लड़की को देखकर आशाएं नहीं बल्कि यादें जागती हैं।

रेफ्रीजरेटर– वह उपकरण है जिसमें गृहणियों की बची–खुची चीजें तब तक रखी रहती हैं जब तक कि वह फैकने लायक न हो जावें।

अंतिम सूत्र– यदि किसी महिला की सही उमर जाननी है तो उसकी सास, देवरानी, ननद या जेठानी से पूछिये।

बेचारा मर्द– जब पैदा होता है तो लोग उसकी मां को बधाइयां देते हैं। जब उसका विवाह होता है तो लोग उसकी पत्नी को उपहार देते हैं और जब वह मरता है तो बीमे वाले आकर उसके बीमे का पैसा भी उसकी पत्नी को देते हैं।

एक दिन मुल्ला का एक दोस्त उससे एक–दो दिन के लिए मुल्ला का गधा मांगने के लिए आया। मुल्ला अपने दोस्त को बेहतर जानता था और उसे गधा नहीं देना चाहता था। मुल्ला ने अपने दोस्त से यह बहाना बनाया कि उसका गधा कोई और मांगकर ले गया है। ठीक उसी समय घर के पिछवाड़े में बंधा हुआ मुल्ला का गधा रेंकने लगा।

गधे के रेंकने की आवाज़ सुनकर दोस्त ने मुल्ला पर झूठ बोलने की तोहमत लगा दी।

मुल्ला ने दोस्त से कहा– 'मैं तुमसे बात नहीं करना चाहता क्योंकि तुम्हें मेरे से ज्यादा एक गधे के बोलने पर यकीन है।'

एक बार मुल्ला को लगा कि लोग मुफ्त में उससे नसीहतें लेकर चले जाते हैं इसलिए उसने अपने घर के सामने इश्तेहार लगायाः 'सवालों के जवाब पाइए। किसी भी तरह के दो सवालों के जवाब सिर्फ 100 दीनार में'

एक आदमी मुल्ला के पास अपनी तकलीफ का हल ढूँढ़ने के लिए आया और उसने मुल्ला के हाथ में 100 दीनार थमाकर पूछा– 'दो सवालों के जवाब के लिए 100 दीनार ज्यादा नहीं हैं?'

'नहीं'– मुल्ला ने कहा– 'आगे बोलिए, अब आपका दूसरा सवाल क्या है?'

मुल्ला अपने शागिर्दों के साथ एक रात अपने घर आ रहा था कि उसने देखा एक घर के सामने कुछ चोर खड़े हैं और ताला तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं।

मुल्ला को लगा कि ऐसे मौके पर कुछ कहना खतरे से खाली न होगा इसलिए वह चुपचाप चलता रहा। मुल्ला के शागिर्दों ने भी यह नज़ारा देखा और उनमें से एक मुल्ला से पूछ बैठा– 'वे लोग वहां दरवाजे के सामने क्या कर रहे हैं?

'श्श्शः'– मुल्ला ने कहा– 'वे सितार बजा रहे हैं।'

'लेकिन मुझे तो कोई संगीत सुनाई नहीं दे रहा'– शागिर्द बोला।

'वो कल सुबह सुनाई देगा'– मुल्ला ने जवाब दिया।

एक दिन बाज़ार में कुछ गाँव वालों ने मुल्ला को घेर लिया और उससे बोले– 'नसरुद्दीन, तुम इतने आलिम और जानकार हो। तुम हम सबको अपना शागिर्द बना लो और हमें सिखाओ कि हमें कैसी ज़िन्दगी जीनी चाहिए और क्या करना चाहिए'।

मुल्ला ने कुछ सोचकर कहा– 'ठीक है। सुनो। मैं तुम्हें पहला सबक यहीं दे देता हूँ। सबसे ज़रूरी बात यह है कि हमें अपने पैरों की अच्छी देखभाल करनी चाहिए और हमारी जूतियाँ हमेशा दुरुस्त और साफ–सुथरी होनी चाहिए'।

लोगों ने मुल्ला की बात बहुत आदरपूर्वक सुनी। फिर उनकी निगाह मुल्ला के पैरों की तरफ गई। मुल्ला के पैर बहुत गंदे थे और उसकी जूतियाँ बेहद फटी हुई थीं।

किसी ने मुल्ला से कहा– 'नसरुद्दीन, लेकिन तुम्हारे पैर तो बहुत गंदे हैं और तुम्हारी जूतियाँ भी इतनी फटी हैं कि किसी भी वक़्त पैर से अलग हो जाएँगी। तुम खुद तो अपनी सीख पर अमल नहीं करते हो और हमें सिखा रहे हो कि हमें क्या करना चाहिए!'

'अच्छा!'– मुल्ला ने कहा– 'लेकिन मैं तो तुम लोगों की तरह किसी से ज़िन्दगी जीने के सबक सिखाने की फरियाद नहीं करता!'

हंसने की भी दो विधियां

हंसना–हंसाना अच्छी बात है। सेहत के लिए अच्छी है। तंदरुस्ती के लिए अच्छी है। हंसना–हंसाना शुद्ध व्यायाम है। प्राणायाम है। हंसो–हंसाओ, कुछ हर्ज नहीं है। लेकिन इतना स्मरण रखो कि हंसने की भी दो विधियां हैं। एक तो आदमी इसलिए हंसता है कि अपने रोने को छिपा ले। वह गलत विधि है। वह गलत आयाम है। और या आदमी इसलिए हंसता है कि उसके भीतर हंसी के फव्वारे फूट रहे हैं। उसके भीतर आनंद जगा है। वह आनंद को बांट रहा है। तब हंसी में अध्यात्म है। तब हंसी में मुक्ति है। तब हंसी मोक्षदायी है।

दुख को भुलाने के लिए लोग हंस लेते हैं।

तो हंसना फिर एक नींद की दवा है।

दुख को कम कर लेने का एक उपाय है। थोड़े हंस लिए, अपने को भुलावा दे लिया, अपने को छलावा दे लिया। इसलिए हास्य–कवियों की बाढ़ आ गई है। क्योंकि लोग इतने दुखी हैं, लोग चाहते हैं कि किसी भी बहाने, किसी भी निमित्त हंस लें। चलो थोड़ी देर को तो भूल जाएंगे– जीवन की समस्याएं, जीवन की उलझनें, जीवन का विषाद, जीवन का संताप थोड़ी देर को तो भूल जाएंगे– जीवन की समस्याएं, जीवन की उलझनें, जीवन का विषाद, जीवन का संताप थोड़ी देर तक तो कम से कम स्मरण न रहेगा।

फ्रेड्रिक नीत्से ने कहा है कि मैं हंसता हूं इसलिए ताकि रोने न लगूं। तुम्हारी हास्य की कविताएं तुम्हारे आंसुओं को छिपाने का ढंग तो नहीं। अगर ऐसा हो तो मैं कहूंगा। रोना बेहतर, क्योंकि आंसू प्रामाणिक होंगे, सच्चे होंगे और हल्का करेंगे और आंखों की धूल बहा ले जाएंगे। झूठी हंसी सच्चे रोने से ज्यादा मूल्यवान नहीं हो सकती। झूठ कभी भी मूल्यावान नहीं होता। सच्चा रोना भी मूल्यवान है; झूठा हंसना भी आखिर झूठ ही है।

मुखौटा मत लगाओ।

हां, अगर तुम्हारे भीतर रस बहा हो, गीत उठे हों, तुम्हारे भीतर जीवन का उत्सव प्रकट हुआ हो, तुम्हें जीवन का रास अनुभव हो रहा हो– फिर हंसो, फिर बांसुरी बजाओ। फिर तुम जो करोगे वही काव्य होगा। तुम्हारे जीवन के ढंग में, तुम्हारे उठने–बैठने में फूल झरेंगे।

मुल्ला नसरुद्दीन भी हास्य की कविताएं लिखते हैं। कल ही नौकरी के लिए एक दफ्तर में हाजिर हुए थे। लौटकर मुझे कहने लगे–

कल जब था मेरा इंटरव्यू
प्रश्न हुआ – भूगोल पढ़ा है?
मैंने कहा, जी खूब पढ़ा है,
अच्छा तो बतलाओ भाई वर्षा जहां अधिक होती

वहा अधिक क्या पाया जाता?
उत्तर था – बरसाती छाता।
प्रश्न दूसरा – तुमने तो साहित्य पढ़ा है?
जी हां बिल्कुल,
बतलाओ वाद कौन–कौन से प्रिय हैं तुमको
और रस कितने होते हैं?
उत्तर था – सर, वाद सिर्फ दो प्रिय हैं मुझको
उखाड़वाद और पछाड़वाद
और जहां तक प्रश्न रसों का पूछ रहे
साहित्य–क्षेत्र में वह तो केवल एक बचा है
गन्ने का रस
शेष सभी दुनिया यह मुझको
श्रीमान्! नीरस ही लगती है।
प्रश्न तीसरा – कुछ जनरल नॉलेज भी है?
जी हां, जी हां।
तो बोलो इस वर्ष पद्मश्री किसको मिली है?
उत्तर था – सर, केवल मुझको,
तुमको? जी हां, इसी वर्ष श्रीमान!
विवाह हुआ है मेरा
पत्नी जी जो मुझे मिली हैं
नाम उन्हीं का पद्मश्री है।
अफसर गुस्से से झल्लाए और
प्रश्न अंतिम कर डाला – क्वालिफिकेशन?
उत्तर में तब कार्ड दे दिया,
लार्ड गिरगिटानंद, एम. ए. बी. एफ., आई. सी. एस.
अफसर बोले –
यह डिग्री कुछ समझ न आती
बोलो इसका मतलब क्या है?
बड़ी नम्रता से उत्तर था –
सर, पहले हम लैंडलार्ड थे पर कानून
बना है जब से सत्यानाशी
लैंडलार्ड की लैंड हो गई सरकारी
तब से बस लार्ड ही रह गए
एम. ए. बी. एफ. का मतलब है –
मैट्रिक ऐपियर्ड बट फेल्ड

आई. सी. एस. का अर्थ यहीं है –
आइसक्रीम सेलर सर।
अफसर गरजे– बड़े गधे हो।
मैंने कहा– नहीं–नहीं, श्रीमान!
आप तो माई–बाप हैं
मैं छोटा हूं, बड़े आप हैं।

करो जीं खोलकर। हास्य–रस की कविताएं करनी है, हास्य–रस की कविताएं करो। हंसो–हंसाओ।

इतना ही ख्याल रखना कि लोग इस तरह के कवियों से बहुत ऊब गए हैं, बहुत घबरा गए हैं। जिस गांव में कवि–सम्मेलन होता है, उस गांव में सभी सड़े केले, सड़े अंडे एकदम बिक जाते हैं। टमाटर। चले लोग सब। अब तो हास्य–रस के कवि भी होशियार हो गए हैं। वे पहले से ही जाकर सब खरीद लेते हैं– सड़े अंडे, सड़े केले, सड़े टमाटर, एकदम खरीद लेते हैं पूरे गांव में से, नहीं तो जनता फेंकती है ये चीजें।
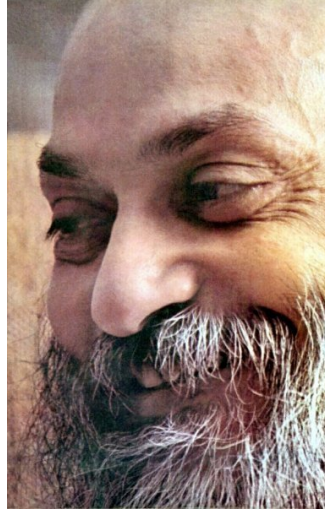
और एक हास्य–रस का कवि पकड़ ले माइक तो छोड़ता ही नहीं। जनता हूट करे, पैर पटके, शोरगुल मचाए, कोई फिक्र नहीं लोग जमे ही रहते हैं। लोग सुनाकर ही रहेंगे, कोई सुनने वाला हो या न हो। लोग सुनने वालों की तलाश में घूमते हैं, कहीं भी कोई मिल जाए।

ऐसे हास्य–कवि न होना। लोग वैसे ही परेशान हैं, उन्हें और परेशान न करना।

– ओशो, प्रीतम छवि नैनन बसी

14

हंसी कैसे बढ़ती और कैसे मरती है

जीवन का एक अद्भुत नियम समझो। बाहर के जगत की जितनी चीजें हैं, बांटोगे तो घट जाएंगी। भीतर के जगत की जितनी चीजें हैं, बांटो तो बढ़ जाएंगी। भीतर का अर्थशास्त्र अलग है।

एक भिखमंगे ने मुल्ला नसरुद्दीन से भीख मांगी। उसी दिन उसे लॉटरी मिली थी। तो नसरुद्दीन मौज में था। एकदम फिल्मी गाना गाता हुआ चला आ रहा था घर की तरफ, नोट ही नोट तैर रहे थे चारों तरफ– आंखों में नोट, जेबों में नोट, आत्मा में नोट, नोट ही नोट थे और इसी वक्त इसने मांगा। आज कृपणता न थी। और यह आदमी भला भी लगा, देखने से सुसंस्कृत लगता था, चेहरे से कुलीन लगता था। वस्त्र यद्यपि फटे थे, पुराने थे, मगर कभी शानदार रहे होंगे, कीमती रहे होंगे। सौ रुपये का नोट एकदम मुल्ला ने उसे दिया और पूछा कि मेरे भाई, तुम्हारी भाषा से, तुम्हारे खड़े होने के ढंग से, तुम्हारी आंखों में, तुम्हारे चेहरे से कुलीनता टपकती है। तुम्हारा यह हाल कैसे हुआ?

उसने कहा कि घबड़ाओ मत, अगर ऐसे ही सौ–सौ रुपये देते रहे तो यही हाल तुम्हारा हो जाएगा। इसी तरह मेरा हुआ।

अगर मेरी मानो तो– उसने कहा– जरा सोच–समझ कर देना। मैं अनुभव से कह रहा हूं।

बाहर तो बांटोगे तो कितना ही हो, तो भी बंट जाएगा। एक दिन तुम भिखमंगे हो जाओगे। बाहर कोई खजाना अकूत नहीं होता– कुबेर का भी नहीं। लेकिन भीतर का एक मजा है। भीतर अकूत खजाना है। तुम अगर प्रेम दो तो प्रेम घटता नहीं है, बढ़ता है। तुम अगर गीत गाओ तो गीत घटते नहीं बढ़ते हैं। तुम जितना गाओ उतनी गाने की क्षमता प्रगाढ़ होती है, उतना तुम्हारा कंठ सुरीला होता है।

तुम हंसो! बांटो हंसी के मोती! और तुम कुछ संकोच न करना कि बांटा तो कहीं हंसी बंट न जाए। कहीं ऐसा न हो कि एक दिन हंसी से हम खाली हो जाएं! नहीं, जितना हंसोगे उतना भरोगे।

और दूसरी बात भी समझ लो कि अगर डर के कारण, कंजूसी के कारण हंसी को रोका तो हंसी मर जाएगी। धीरे–धीरे तुम हंसना भूल ही जाओगे।

लोग बाहर के अर्थशास्त्र को भीतर भी लागू कर देते हैं और तब उनके जीवन से कुछ चीजें खो जाती हैं। प्रेम तक करने में लोग डरते हैं। प्रेम देने में लोग डरते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि बस कोई ले ले और हम खाली के खाली रह जाएं, उत्तर दे न दें। पहले तय कर लेते हैं कि प्रेम का उत्तर भी मिलेगा या नहीं। यही नहीं, यह भी तय कर लेते हैं कि जितना हम देते हैं उससे ज्यादा मिलेगा कि नहीं। क्योंकि वही धंधे का नियम हैः जितना हम दें, इसी तरह के लोग तुम देखते हो चारों तरफ– जितनी क्षमता थी कि जो प्रेम के आगार बनते; जिनकी क्षमता कि जिनके भीतर से आनंद की फुलझड़ियां फूटतीं; जिनकी क्षमता थी कि जिनके भीतर समाधि का संगीत बजता– वे सब सूने–सूने, खाली–खाली, रिक्त, उदास हैं। कारण? बाहर के अर्थशास्त्र को भीतर लगा रहे हैं। भीतर और बाहर के नियम उलटे होते हैं। जो बाहर सच है वह भीतर बिल्कुल सच नहीं होता। और जो भीतर सच है वह बाहर नहीं होता। बाहर के नियम को समझ कर तुम समझ लेना कि उससे ठीक उलटा नियम भीतर लागू होता हैः बांटोगे तो बढ़ेगा; बचाओगे, घटेगा। अगर बिल्कुल बचा गए, सड़ जाएगा, समाप्त हो जाएगा। तुम भूल ही जाओगे, हंसना ही भूल जाओगे।

ऐसे बहुत लोग हैं, जो हंसना भूल गए हैं। वे अगर मुस्कुराते भी हैं तो तुम देख सकते हो कि सिर्फ ओठों का अभ्यास कर रहे हैं, व्यायाम। कहीं कोई मुस्कुराहट नहीं। हृदय में कहीं कोई कली नहीं खिलती, कोई गंध नहीं उठती। चिपकाई हुई मुस्कुराहट है। खींच रहे हैं, तान रहे हैं होठों को। नेतागण जैसे मुस्कुरते हैं। नेतागणों का तो सभी झूठा है। हंसना झूठा रोना झूठा। राजनीति का धंधा झूठा है। झूठ की संपदा ही वहां चलती है।

कंजूसी न करे।

और हम बड़े कंजूस हैं। कंजूसों से पृथ्वी भरी हुई है। तरह–तरह की कंजूसी। और मैं पैसे, धन इत्यादि की बात नहीं कर रहा हूं। जो संपदा बांटने से बढ़ती है, उसमें भी कंजूस। कंजूसी ऐसी है कि लोग मरने को राजी हैं, अगर कुछ बचाने का उनको मौका मिले; जीवन देने को राजी हैं, कुछ बचाने का मौका मिले।

मुल्ला नसरुद्दीन को एक रात एक आदमी ने एकांत में पकड़ लिया। छाती पर पिस्तौल लगा दी और कहा कि रख दो जो भी तुम्हारे पास हो। चाबी भी दे दो। या तो सब दे दो जो है और नहीं तो जान से हाथ धो बैठोगे।

मुल्ला ने कहा कि भई, एक दो मिनट सोचने दो। वह आदमी भी थोड़ा हैरान हुआ। उसने कहाः मैंने बहुत लोगों को लूटा, मगर जहां जिंदगी और मौत का सवाल हो वहां कोई

सोचने की बात नहीं करता।

मगर मुल्ला ने कहा कि बिना सोचे मैं कोई काम नहीं करता। आंख बंद करके सोचा और फिर कहा कि ठीक है, तुम गोली मारो। वह आदमी और चौंका। पहली दफा जिंदगी में उसके हाथ ढीले पड़े कि इस आदमी को मारना कि नहीं मारना! उसने कहा कि भई मुझे भी सोचने दो, तुम आदमी कैसे हो? अरे थोड़े-से पैसों के पीछे...!

मुल्ला ने कहा कि सवाल यह है कि पैसे मैंने बचाए हैं बुढ़ापे के लिए, पैसे चले गए तो फिर मैं मुश्किल में पड़ूंगा। अरे जिंदगी का क्या है, यूं मुफ्त में मिली थी, मुफ्त में जाएगी, एक दिन जानी ही है।

मैं तत्वज्ञानी हूं, मुल्ला ने कहा। मैं कोई छोटा-मोटा ऐसा-वैसा ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा, उनमें मेरी गिनती मत करना। मैं तत्वज्ञानी हूं। ब्रह्मज्ञान जानता हूं। अरे जीवन का क्या, यह तो खेल है, अभिनय है। यह तो लीला है भगवान की। दिया है, फिर मिलेगा। मगर जो मैंने बुढ़ापे के लिए रखा है बचाकर, वह मैं नहीं दे सकता वह लीला नहीं है, वह खेल नहीं है। वह मामला गंभीर है। और फिर जीवन मुफ्त मिला है, मुफ्त तो जाना ही है। आज नहीं कल खत्म होना है ले ले, तू ही ले ले।

वह आदमी, कहते हैं, भाग गया। ऐसे आदमी को क्या करना अरे मरे को क्या मारना! मरे-मराए को क्या मारना! यह तो स्वर्गीय है ही।

कंजूसी न करना, कंजूस बाप को,
मरती हुई हालत में देखकर
बेटे ने लिया, दो गुना बड़ा कफन
और हुआ प्रसन्न
कि बाप जी ने जीवन-भर, बड़ा कष्ट पाया
न तरीके से पहना, न खाया
मैं आज कम से कम, जी भर उढ़ा तो सकूंगा कफन
परंतु कान में पड़ते ही, लड़के की बात
बाप जी ने खोली, धीरे से आंख
और बोले, कि बेटे! ठीक नहीं है तेरी मर्जी
क्यों करता है फिजूल-खर्ची
इस कफन के आधे से, मेरी लाश ढंकना
और आधा, जरा सम्हाल कर रखना
कपड़ा है, रखा रहेगा
बेकार नहीं जाएगा
तू जब मरेगा, तेरे काम आएगा

– ओशो, प्रीतम छवि नैनन बसी, प्रवचन 16

तीन शराबी एक शराबखाने में बैठे पी रहे थे। उनमें से दो इस बात पर शेखियां बघार रहे थे कि कौन अपनी बीबी पर कितना रौब जमाता है। तीसरा चुपचाप बैठा उनकी बातें सुन रहा था। कुछ देर बाद उन दोनों ने तीसरे से पूछा– यार, तू भी तो कुछ बता? कहीं तू अपनी बीबी से डरता तो नहीं?

तीसरे आदमी ने कहा– अरे, कैसी बात करते हो? मेरा अपनी बीबी पर पूरा कन्ट्रोल है। अभी कल ही की तो बात है, मेरी बीबी मेरे सामने घुटनों के बल चल कर आई।

उन दोनों की आंखे फैल गईं– वाह क्या बात है! ये हुई न मर्दों वाली बात्। फिर क्या हुआ?

तीसरा आदमी– फिर वह मुझसे बोली, 'अब बिस्तर के नीचे से बाहर निकलो और मर्द की तरह मुझसे लड़ो।'

मरीज मुस्कुराता हुआ आया तो डाक्टर साहब बोलेः वाह, लगता है मेरा इलाज काम कर गया।

मरीजः जी हां, आपने दवा की जो शीशी दी थी, उस पर लिखे डायरेक्शन पर अमल करने से कमाल हो गया।

डाक्टरः क्या लिखा था उस पर?

मरीजः यही कि शीशी का ढक्कन कसकर बंद रखें। सो मैंने अब तक खोला ही नहीं।

चुनाव के दौरान एक उम्मीदवार को साइकल का चुनाव चिह्न मिला। एक दिन वह अपने सहयोगियों को लेकर चुनाव प्रचार करने निकला। जब वह एक बुढ़िया के घर पहुंचा, तो उससे बोलाः माताजी साइकल का ख्याल रखना।

बुढ़िया तुरंत बोलीः बेटा, तू अपनी साइकल में ताला लगा जा। मैं तो दूध लेने जा रही हूं।

एक कामगार अपने वेतन का चेक लेकर अपने मालिक के पास पहुंचा– यह चेक मेरे वेतन से दो सौ रुपये कम का है– उसने कहा।

मुझे पता है– मालिक ने कहा– पिछले महीने जब मैंने तुम्हें दो सौ रुपये ज्यादा का चेक दिया था तब तो तुमने कोई शिकायत नहीं की थी।

ठीक है, वह आपकी पहली गलती थी इसलिए मैंने ध्यान नहीं दिया– कामगार ने जवाब दिया– लेकिन अगर गलती करना आप अपनी आदत बना लेंगे तो मुझे कहना ही पड़ेगा न!

एक आदमी ने अपने दोस्त से पूछाः तुम्हारे बेटे के क्या हालचाल हैं?

दोस्तः उसका प्रमोशन हो गया है।

आदमीः भई बधाई हो। अब क्या हो गया है वह?

दोस्तः पहले दस हजारी बदमाश था। अब पुलिस ने इनाम बढ़ाकर 25 हजारी कर दिया है।

कर्मचारी (अपने बास से): सर, मेरी सैलरी बढ़ा दीजिए।

बॉसः क्या बात करते हो? अभी पिछले महीने ही तो बढ़ाई थी।

कर्मचारीः सर, उसका पता मेरी बीवी को लग गया है।

टीचरः नेताजी, आपका बेटा फेल हो गया है और आप लड्डू खिला रहे हैं?

नेताजीः 70 लड़कों की क्लास में 60 फेल हैं, यानी बहुमत तो मेरे बेटे के साथ है।

मिस्टर बीन

चिंटू– बिट्टू बताओ अगर 'मिस्टर बीन' सो जाएगा तो उसे क्या कहेंगे?

बिट्टू– पता नहीं यार, बहुत मुश्किल है...

चिंटू– तब उसे बोलेंगे 'सोयाबीन'।

एक बहानेबाज कर्मचारी का दादा उसके ऑफिस जाकर उसके बॉस से बोला– इस दफ्तर में सुनील नाम का व्यक्ति काम करता है, मुझे उससे मिलना है, वह मेरा पोता है।

बॉस ने मुस्कुरा कर कहा– मुझे अफसोस है आप जरा देर से आए हैं, वह तो आपकी अर्थी को कंधा देने के लिए छुट्टी लेकर जा चुका है।

ड्राइवर और बीवी

चंदूलाल की बीवी उसके ड्राइवर के साथ भाग गई...

लोगों ने पूछा– चंदूलाल, अब तुम क्या करोगे...?

चंदूलाल बोला– अब करना क्या है, गड्डी मैं खुद ही चलाऊँगा।

मालकिन (नौकरानी से)– क्यों महारानी! आज आने में इतनी देर क्यों लगा दी?

नौकरानी– जी वो...! मैं सीढ़ियों से गिर गई थी।

मालकिन– तो क्या उठने में इतनी देर लगती है।

पता नही...

टीचर– बाबर इंडिया कब आया?

बंटी– पता नहीं सर।

टीचर– बोर्ड पर नहीं देख सकते, नाम के साथ ही लिखा है।

बंटी– मैंने सोचा, शायद वह उसका फोन नंबर है।

सब कुछ सच...

मरते समय पति ने अपनी पत्नी को सबकुछ सच बताना चाहा। उसने कहा– मैं तुम्हें जीवन भर धोखा देता रहा। मैंने बहुत गलत काम किए हैं।

पत्नी बोली– आज मैं भी सच बताना चाहती हूँ। तुम बीमारी से नहीं मर रहे हो, मैंने तुम्हें धीरे–धीरे असर करने वाला प्वाइजन दिया है।

टीचर– आज स्कूल में देर से आने का तुमने क्या बहाना ढूँढ़ा है?

चिंकी– सर! आज मैं इतनी तेज दौड़कर आई कि बहाना सोचने का समय ही नहीं मिला।

टीचर– बच्चों आयकर, बिक्रीकर, भूमिकर से मिलता–जुलता कोई और शब्द बताओ।

एक छात्र– सर! एक नहीं तीन शब्द सुने हैं– सुनील गावसकर, सचिन तेंडुलकर और उर्मिला मार्तोंडकर।

पहला विवाह

बड़ी उम्र में मैरिज कर रहे नेताजी से उनके परिचित ने पूछा– आप इतनी लेट विवाह क्यों कर रहे हैं? नेताजी ने गंभीरता से कहा– यह मेरा मध्यावधि चुनाव है, मेरा पहला विवाह भंग हो गया था।

डॉक्टर की मैरिज

एक डॉक्टर की मैरिज नर्स से हो जाती है। डॉक्टर के फ्रेंड ने पूछा– भाभी जी कैसी हैं?

डॉक्टर– यार! वो मेरी बात ही नहीं सुनती जब तक मैं उसे सिस्टर कहकर न बुलाऊँ।

मोहन अपने फ्रेंड से– क्या बात है, आजकल तुम्हारी प्रेमिका अक्सर चुप रहती है?

फ्रेंड– दरअसल एक दिन जब हम दोनों फोटो खिंचवा रहे थे, तो फोटोग्राफर ने मेरी प्रेमिका को कह दिया कि जब आप चुप रहती हैं, तो एकदम करीना कपूर की तरह लगती हैं।

पता नहीं दुर्घटना कैसे हो गयी

संता सिंह को पायलट की ट्रैनिंग देने के बाद हेलिकाप्टर उड़ाने को दिया गया, काफी ऊंचाई से विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान तो पूरा टूट गया लेकिन संता जी बच गये। होश आने पर उनसे दुर्घटना के बारे में पूछा गया।

संता, 'ऊंचाई पर मुझे ठंड लगी तो मैंने ऊपर का पंखा बंद कर दिया। उसके बाद

पता नहीं दुर्घटना कैसे हो गयी।'

कस्टमर से ऐसे बात करते हैं क्या

ट्यूशन सर, 'अबे गधे, होमवर्क क्यों नहीं करता है तू? '

स्टूडेंट, 'तमीज से बात कर साले, कस्टमर से ऐसे बात करते हैं क्या? '

दो ही तरह के तोहफे

एक दिन मुल्ला बाज़ार गया और उसने एक इश्तेहार लगाया जिस पर लिखा थाः 'जिसने भी मेरा गधा चुराया है वह मुझे उसे लौटा दे। मैं उसे वह गधा ईनाम में दे दूंगा'। – 'नसरुद्दीन!'

लोगों ने इश्तेहार पढ़कर कहा– 'ऐसी बात का क्या मतलब है? क्या तुम्हारा दिमाग फिर गया है? '

'दुनिया में दो ही तरह के तोहफे सबसे अच्छे होते हैं'– मुल्ला ने कहा– 'पहला तो है अपनी खोई हुई सबसे प्यारी चीज़ को वापस पा लेना, और दूसरा है अपनी सबसे प्यारी चीज़ को ही किसी को दे देना।'

हमेशा अपनी बात पर कायम

एक दिन मुल्ला के एक दोस्त ने उससे पूछा– 'मुल्ला, तुम्हारी उम्र क्या है? '

मुल्ला ने कहा– 'पचास साल।'

'लेकिन तीन साल पहले भी तुमने मुझे अपनी उम्र पचास साल बताई थी!'– दोस्त ने हैरत से कहा।

'हाँ'– मुल्ला बोला– 'मैं हमेशा अपनी बात पर कायम रहता हूँ'।

यह मजाक करने आदत

पत्नी : जी आपको मुझमें क्या अच्छा लगता है, मेरी समझदारी या मेरी सुन्दरता?

पति : मुझे तुम्हारी यह मजाक करने आदत बहुत अच्छी लगती है।

बच्चों का पालन पोषण

एक दस साल का बच्चा बड़े ध्यान से एक पुस्तक पढ रहा था, जिसका शीर्षक थाः 'बच्चों का पालन पोषण कैसे करें? '

मम्मी : तुम यह पुस्तक क्यों पढ रहे हो?

बच्चा : ताकि मुझे पता चल सके कि मेरा पालन पोषण ठीक तरह से हो रहा है कि नहीं?

पहले गधे की बात सुन लेने दो

एक साहब जी घबराए हुए आए और पत्नी से बोले : बेगम आज मैं कार्यालय से आ रहा था कि रास्ते में एक गधा... इतने में उसकी बच्ची बोल उठी मम्मी, श्याम ने मेरी गुड़िया तोड़ दी है। पति ने पुनः कहना शुरू किया हां, तो बेगम, मैं कह रहा था कि रास्ते में एक गधा... इतने में उनका लड़का बोला रीता ने मेरी कार तोड़ दी है। बीबी गुस्से में आकर बोली भगवान के लिए तुम सब चुप्प हो जाओ, मुझे पहले गधे की बात सुन लेने दो।

वक्त का पाबन्द

शादी में मुल्ला नसुरूद्दीन बहुत देर तक खाना खा रहा था कि किसी ने पूछा कब तक खाना खाओगे?

मुल्ला नसुरूद्दीनः मै तो खुद खा–खा कर दुखी हूँ, पर क्या करूं कार्ड में लिखा था डिनर का समय रात्रि 7 से 11 बजे तक।

हास्य–वृत्ति बुद्धिमत्ता का एक आवश्यक तत्व है। जैसे ही तुम इसे खो देते हो, तुम अपनी बुद्धिमत्ता भी खो दते हो। यह जितनी अधिक होती है तुम उतने ही ज्यादा बुद्धिमान होते हो।

–ओशो

अपना अपना नजरिया

एक सुनसान रास्ते में घूमते समय नसरुद्दीन ने घोड़े पर सवार कुछ लोगों को अपनी और आते देखा। मुल्ला का दिमाग चलने लगा। उसने खुद को लुटेरों के कब्जे में महसूस किया जो उसकी जान लेने वाले थे। उसके मन में खुद को बचाने की हलचल मची और वह सरपट भागते हुए सड़क से नीचे उतरकर दीवार फांदकर कब्रिस्तान में घुस गया और एक खुली हुई कब्र में लेट गया।

घुडसवारों ने उसे भागकर ऐसा करते देख लिया। कौतूहलवश वे उसके पीछे लग लिए। असल में घुडसवार लोग तो साधारण व्यापारी थे। उन्होंने मुल्ला को लाश की तरह कब्र में लेटे देखा।

'तुम कब्र में क्यों लेटे हो? हमने तुम्हें भागते देखा। क्या हम तुम्हारी मदद कर सकते हैं? तुम यहाँ क्या कर रहे हो? '– व्यापारियों ने मुल्ला से पूछा।

'तुम लोग सवाल पूछ रहे हो लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि हर सवाल का सीधा जवाब हो'– मुल्ला अब तक सब कुछ समझ चुका था– 'सब कुछ देखने के नज़रिए पर निर्भर करता है। मैं यहाँ तुम लोगों के कारण हूँ, और तुम लोग यहाँ मेरे कारण हो'।

मैं नाई हूं

मुल्ला एक दिन दूसरे शहर गया और उसने वहां एक दुकान के सामने एक आदमी खड़ा देखा जिसकी दाढ़ी बेतरतीब बढ़ी हुई थी। मुल्ला ने उस आदमी से पूछा– 'क्यों मियां, तुम दाढ़ी कब बनाते हो?'

उस आदमी ने जवाब दिया– 'दिन में 20–25 बार।'

मुल्ला ने कहा– 'क्यों बेवकूफ बनाते हो मियां?'

आदमी बोला– 'नहीं, मैं नाई हूँ।'

हंसने से तनाव मुक्ति

यदि आप तनाव ग्रस्त है तो आप हंस नहीं सकते और यदि आप हंसते है तो तनाव रहता ही नहीं। हंसते समय मस्तिष्क शून्य में पहंच जाता है, विचार शून्य हो जाता है जो मैडिटेशन का पहला चरण है। इसीलिए हंसना मैडीटेशन ही है। हंसने का सबसे बड़ा लाभ यही है कि तनाव झर से दूर हो जाता है और हमारे भीतर नया उत्साह उत्पन्न होता है। यह उत्साह। स्फूर्ति ही हमारी कार्यक्षमता बढ़ाती है, हमें सहज बनाती है, हमें क्रोध, भय, राग, द्वेष पीड़ा, हिंसा से दूर करती है। तनाव हिंसा की जन्मदाता है, हंसी हल्कापन लाती है। तनाव एकाकीपन को जन्म देती है हंसना मित्रता और उल्लास को।

हंसने में हमें निरोग रखने की अद्भुत शक्ति है। अभी कुछ महीने पहले ही टी. वी. समाचार पत्रों में एक समाचार आया था कि अमरीका में एक महिला चोट लगने के कारण मूर्छा में चली गई थी और कई वर्ष वह मूर्छित रही। अस्पताल के डाक्टरों ने उसके ठीक होने की आशा छोड़ दी थी। उस महिला का छोटा बेटा अपने स्कूल से आने के बाद नित्य–प्रतिदिन अपनी मां को मिलने अस्पताल आता था और उसे चुटकुले सुनाया करता था।

फिर एक दिन ऐसा चमत्कार हुआ कि डॉक्टर भी अंचम्भित हो गये। चुटकुले सुनते–सुनते वह महिला कोमा से बाहर निकल आई और सचेत हो गई। अब वह महिला पूर्णतयः स्वस्थ है। यह है हंसी का कमाल।

15

हास्य और जीवन

हास्य में अद्भुत क्षमता है – स्वास्थ्य प्रदान करने की और ध्यान में डुबाने की भी –
वह निश्चित ही आंतरिक रसायन में और मस्तिष्क की विद्युत–तरंगों में परिवर्तन लाता है,
प्रतिभा को प्रभावित करता है, तुम ज्यादा बुद्धिमान हो जाते हो।
मन के वे हिस्से जो सोए पड़े थे, अनायास जाग उठते हैं।
हंसी तुम्हारे दिलो–दिमाग की गहराइयों में प्रवेश कर जाती है।
हंसने वाले लोग आत्महत्या नहीं करते,
उन्हें दिल के दौरे नहीं पड़ते; वे अनजाने ही मौन के जगत को जान लेते हैं;
क्योंकि हंसी के थमते ही अचानक मन भी थम जाता है, स्तब्ध रह जाता है।
और जैसे–जैसे हंसी गहरी जाने लगती है, उतनी ही गहन शांति भी छाने लगती है।

हंसी तुम्हें निर्मल कर जाती है। रूढ़ियों व अतीत के कूड़े–कचरे को झाड़कर एक नई जीवन–दृष्टि देती है, तुम्हें ज्यादा जीवंत, ऊर्जावान तथा सृजनशील बनाती है।

अब तो चिकित्सा–विज्ञान भी कहने लगा है कि हंसी, मनुष्य को प्रकृति से भेट में मिली सर्वाधिक गहरी औषधि है।

यदि बीमारी के दौरान हंस सको तो जल्दी स्वस्थ हो जाओगे और अगर स्वस्थ रहकर भी न हंस पाए तो शीघ्र ही स्वास्थ्य खोने लगेगा और बीमारी घेर लेगी।

हास्य आंतरिक स्रोत से शक्ति जगाकर बाह्य–तल तक ले आता है। हंसी के पीछे, एक ऊर्जा की धारा प्रवाहित हो जाती है। क्या तुमने गौर किया, जब तुम वास्तव में गहराई

से हंसते हो तो क्षण भर के लिए ध्यानस्थ हो जाते हो, विचार–शृंखला टूट जाती है, क्योंकि हंसना और सोचना साथ–साथ संभव नहीं– वे बिल्कुल विपरीत चीजें है, या तो तुम हंस सकते हो या फिर विचार ही कर सकते हो। अगर सब में हंसे तो सोचना बंद हो जाएगा और यदि अभी भी विचारमग्न हो तो फिर जानो कि तुम्हारी हंसी झूठी है, खोखली, औपचारिक, बस ऊपर–ऊपर! प्राणों को गहराई से हंसते ही मन अकस्मात ठहर जाता है। 'अ–मन' की इस दशा में प्रवेश कराने के लिए ही जेन की सारी विधियां हैं– और हंसी सर्वाधिक सुंदर द्वार है उस अनूठे जगत में प्रविष्ट होने के लिए।

मेरे देख, हास्य और नृत्य– ये दो स्वाभाविक, सहज उपलब्ध, श्रेष्ठतम द्वार है। नृत्य में डूबकर भी विचार प्रक्रिया रुक जाती है। यदि तुम नाचते जाओ, नाचते जाओ, ऐसे मग्न होकर कि घूमते–घूमते केवल पुराना ही शेष रहे, तो सारी सीमाएं समाप्त हो जाती है, दीवारें ढह जाती हैं, यह भी पता नहीं चलता कि कहां तुम्हारी देह की परिधि खत्म होती है और कहां से यह अस्तित्व का सागर शुरू होता है। तुम अस्तित्व में घुल–मिल जाते हो और अस्तित्व तुम में; भेद–रेखाएं मिट जाती है। अगर वस्तुतः नृत्य में सराबोर हुए– नृत्य तुम्हारा कृत्य नहीं रहा बल्कि नृत्य ने तुम्हें आविष्ट कर लिया, 'पजेस' कर लिया, तो विचार थम जाएंगे...और एक बार 'मन के पार' की झलक पा ली तो वह झलक ही आश्वासन बन जाएगी कि आगे और–और प्रसाद बरसेगा। तुम्हें सिर्फ अ–मन में, उस मनातीत स्थिति में रमना है, निर्विचार में होने की कला सीखनी है, बस...हास्य सुंदरत्तम द्वार बन सकता है निर्विचार में प्रवेश का।

कुछ ज़ेन आश्रमों में प्रत्येक साधक दिवस की शुरुआत हंसी से करता है और रात्रि का समापन भी– प्रथम और अंतिम क्रिया– तुम भी प्रयोग करके देखो, बहुत बढ़िया प्रतीति होगी। थोड़ा पागलपन जैसा भी लगेगा, क्योंकि चारों तरफ इतने गमगीन लोग हैं, वे नहीं समझ सकेंगे, कोई प्रसन्न नजर आए तो वे प्रश्न पूछते हैं कि कारण क्या है? खुशी की वजह बड़ा बेहूदा सवाल है। उदासीनता का कारण वे कभी नहीं पूछते, कोई पीड़ित–परेशान है तो एकदम नैसर्गिंग–सा दिखाई देता है; सभी उदास हैं, सो कोई नई बात नहीं। तुम वजह बताना भी चाहो तो कोई उत्सुकता जाहिर नहीं करता, क्या फायदा? वे खुद भी कष्ट में हैं, कष्टों के बारे में उन्हें सब मालूम है। विस्तारपूर्वक दुख–कथा सुनाने का क्या लाभ, संक्षिप्त में बता दो। किंतु यदि कोई अकारण हंस रहा हो तो वे चौक जाएंगे... मामला कुछ गड़बड़ है। ये सज्जन कुछ पगला गए... सिर्फ पागल ही इस गंभीर दुनिया में हंसने का मजा लूटते हैं, केवल पागलखानों में ही विक्षिप्त व्यक्ति हंसते हुए मिलते हैं... यह दुर्भाग्यपूर्ण है, मगर वस्तुस्थिति यही है।

शुरु में कठिन होगा...तुम एक कुलीन–शिक्षित पति हो, या सुसंस्कृत पत्नी हो, अचानक सुबह से उठकर बेवजह हंसना थोड़ा मुश्किल लगेगा, संस्कारों के विपरीत पड़ेगा, लेकिन कोशिश करना, बड़े अनोखे परिणाम आएंगे, अत्यंत सुन्दर मनोदशा में तुम बिस्तर

से उतरोगे। अकारण...क्योंकि कारण तो कुछ भी नहीं है, बस तुम हो, आज फिर जीवित... चमत्कार है। कैसा मजा है– अभी तक श्वास चल रही है, और फिर वही संसार शुरू– वही घर, वही कमरा, खर्राटे भरती हुई वही पत्नी। हिंदुओं के अनुसार इस मायावी जगत में जहां सब निरंतर परिवर्तित हो रहा है, कम से कम आज रात कुछ नहीं बदला– सब ज्यूं का त्यूं– दूध वाले की पुकार, सड़क पर यातायात की आवाज, फिर वही शोरगुल प्रारंभ...इससे ज्यादा हास्यप्रद और क्या होगा।

निश्चय ही किसी दिन सुबह तुम नहीं उठोगे, ग्वाला द्वार खटखटाएगा, पत्नी खर्राटे भर रही होगी, राह पर ट्रैफिक शुरु हो जाएगा, लेकिन तुम शाश्वत नींद की गोद में पड़े होओगे। एक दिन तो मौत आएगी ही...उसके आने के पहले जी भर कर हंस लो, समय रहते पूरे प्राणों से हंस लो। और कैसी गजब की मूढ़ता है बस गौर तो करो– फिर दिन का उपद्रव आरंभ, पुनः वही कामकाज जो हजारों बार कर चुके...बिस्तर से उतरना, चप्पले पहनना, बाथरूम की तरफ भागना– किसलिए? फिर वही टुथपेस्ट, वही स्नान, वही वस्त्र पहनना– तुम्हें जाना कहा है? इतनी तैयारी, साज–शृंगार और पहुंचना कहीं भी नहीं। फिर जूते–मौजे, फिर टाई और फिर दफ्तर की तरफ दौड़– इतनी आपाधापी, आखिर क्यों? कल सुबह फिर इसी की पुनरावृत्ति होगी। इस मूर्खतापूर्ण खेल का मजा लो, जोर से अटट्हास करो। आंखें मत खोलो; नींद खुलते ही हंसना शुरू कर दो, आंखें बाद में खोलो, इससे पूरी दिनचर्या प्रभावित होगी। भोर के साथ ही हंस लिए तो फिर सारे दिन हंसी आती रहेगी। एक शृंखला बन जाएगी– कड़ी से कड़ी जुड़ती चली जाएगी– हंसी से और–और हंसी जन्मती है। मगर लोग अक्सर इससे उल्टा करते मिलेंगे, वे सुबह से ही पीड़ित–परेशान, शिकायतों से भरे उठते हैं, फिर एक दुख के साथ बंधा दूसरा दुख चला आता है, दिन भर व्यर्थ की मुसीबतों में घिरे रहते हैं, तो क्रोध भी आता है उन्हें, पर इस दुष्चक्र से जागते नहीं। उदास मनस्थिति पूरे दिन का माहौल बिगाड़ देती है, एक दुखद ढांचा निर्मित कर देती है जो दोहरता रहता है।

जैन फकीर ज्यादा समझदार हैं, वे अपने पागलपन में भी तुमसे कहीं ज्यादा अक्लमंद हैं। वे शुरुआत ही हंसने से करते हैं, फिर दिनभर हंसी की लहरें आती रहती हैं, हंसी के बुलबुले फूटते रहते हैं। चारों तरफ इतनी हास्यास्पद घटनाएं घट रही हैं, बेचारा परमात्मा हंस–हंस के लोटपोट हुआ जा रहा होगा– सदियों–सदियों से अनादि काल से जगत की मूढ़ता देखकर; अपनी सृष्टि, अपने ही हाथों से रचे गए लोग, दुनिया भर की नासमझियों और बेवकूफियों में संलग्न– क्या गजब की कामेडी है। वह निश्चित ही अटट्हास कर रहा होगा। यदि तुम हंसने के पश्चात् मौन में डूबे तो एक दिन परमात्मा की हंसी भी सुन लोगे, पूरे अस्तित्व को हंसते हुए सुन लोगे। ये वृक्ष, ये पत्थर, ये चांद–तारे, सब हंस रहे हैं, तुम भी इस जागतिक हास्य में शामिल हो जाओ।

जेन फकीर रात को हंसते हुए सो जाता है। दिन ढल गया, एक नाटक खत्म हुआ; वह

हंसकर कहता है– 'अलविदा, यदि कल सुबह जिंदा बचा तो फिर हंसी के साथ तुम्हारा अभिवादन करूंगा।'

तुम भी इसे करके देखो। दिन का शुभारंभ और समापन हंसी से करना प्रारंभ करो। धीरे–धीरे तुम पाओगे कि क्रमशः इन दोनों छोरों के मध्य में भी बहुत हंसी फूटने लगी; और जैसे–जैसे तुम हास्यपूर्ण होते जाओगे, वैसे–वैसे ही धार्मिक भी होने लगोगे।

करोड़ों–करोड़ों लोग भूल ही चुके हैं कि कैसे हंसा जाए? रूस के मनोविज्ञानिक तो स्कूल–कॉलेजो और अस्पतालों में हंसी सिखाने के लिए 'मेनुअल्स' तैयार कर रहे हैं; क्योंकि उन्होंने भी वही तथ्य खोज लिया है; जो मैं हमेशा तुमसे कहता रहा हूं– प्रेम और हास्य संयुक्त है तथा हास्य बड़ी अद्भुत दवाओं में से एक है। वह एक अनूठा ध्यान भी है। सिर्फ रूस के वैज्ञानिक ही इस पर गहराई से शोध कर रहे हैं कि जब लोग हंसते हैं तो वस्तुतः क्या घटित होता है? उनके रक्त संचार की गति तीव्र हो जाती है, मस्तिष्क की कोशिकाएं अधिक सक्रिय हो उठती हैं, हृदय ज्यादा लयपूर्ण ढंग से चलने लगता है। हंसी जैसी सामान्य सी घटना को वैज्ञानिकों ने अति–महत्वपूर्ण पाया है– लेकिन इस विषय में वे बड़े नासमझीपूर्ण निष्कर्ष पर पहुंचे हैं, वे कह रहे हैं कि हंसी की शिक्षा होनी चाहिए, हर स्कूल में बच्चों को प्रशिक्षित किया जाए कि वे कैसे हंसें? और अगर रूस जैसे मुल्क में, पाठ्यक्रम में हंसी की ट्रेनिंग अनिवार्य कर दी गई तो शायद वे हंसी का नामो–निशान ही मिटा डालेंगे। उनका सुझाव है कि हरेक अस्पताल में एक स्पेशल वार्ड हो– हास्य कक्ष– जहां सारे मरीज लतीफे सुनाएं, मजाक करें और हंसे। लेकिन वह बड़ी नियोजित, हिसाबी–किताबी बात हो जाएगी। दवाइयां जो काम नहीं कर सकतीं, वह हंसी कर सकती है; परंतु मेरे देखे...संभव है कि प्रशिक्षण से आने वाली हंसी से भी फायदा पहुंचे... मगर उससे पूर्ण रूपांतरण नहीं घट सकता, जहां क्षण भर में व्यक्ति को पूरी चेतना स्पंदित हो जाए, फैलकर विस्तार पा ले, पुनः युवा और जीवंत हो उठे; बगैर किसी साइड इफेक्ट या दुष्प्रभाव के।

आज ही मुझे जानकरी मिली कि दुनिया की एक तिहाई बीमारिया चिकित्सको द्वारा पैदा की हुई हैं– जान–बूझकर नहीं, लेकिन उनकी औषधियों से कुछ न कुछ साइड इफेक्ट्स तो होते ही हैं। तुरंत तकलीफ में आराम दिलाने में वे उपयोगी हो सकती हैं, किंतु शारीरिक प्रक्रियाओं पर, जैव–रासायनिक प्रक्रियाओं एवं हारमोन्स वगैरह पर भी वे असर डालती हैं; वह असर फौरन दिखाई नहीं देता इसलिए दवा और उसके दुष्प्रभाव में सीधा संबंध स्पष्ट भी नहीं हो पाता। तुमने तो सिरदर्द के लिए एस्प्रिन की गोली खाई...सच पूछो तो सिर्फ श्रीमती जी की कृपा के कारण...मगर वह एस्प्रिन अपने दुष्परिणाम लाएगी, हो सकता है पेट में अल्सर बना दे या ब्रेन हेम्रेज करा दें, क्योंकि शरीर बहुत जटिल संस्थान है।

बेचारी मनुष्यता बड़ी दरिद्र है, जिसे हंसी के प्रशिक्षण की जरूरत है। वह दुर्भाग्य का दिन होगा जब पक्षी पूछने लगेंगे कि गीत कैसे गाएं, पहले ट्रेनिंग तो दीजिए, तब हम चहचहाएंगे। 'मोर कहेंगे' आदलों–बादलों से हमें क्या मतलब, घिर जाने दो घटाओ को, जब

तक प्रशिक्षण न मिलेगा, हम पंख नहीं फैलाएंगे।' मगर जैसे ही वर्षा के मेघ उमड़ते हैं कि मोर नाच उठते हैं। न मोरों के कोई स्कूल हैं, न नृत्य-शिक्षण केंद्र हैं। न पशु-पक्षियों की पाठशालाएं हैं, न कहीं फूलों को खिलना सिखाने वाली संस्थाएं हैं। सिर्फ मनुष्य को ही हर चीज सिखाने की आवश्यकता क्यों है, वह क्यों नहीं सहजता में स्वीकृत हो पाता?

सहजता से हमें भय लगता है, क्योंकि सहज व्यवहार पूर्व-निर्धारित नहीं हो सकता, घोषणा नहीं की जा सकती कि सहज व्यक्ति क्या करेगा? हो सकता है तुम किसी बात पर खिलखिला कर हंस दो, और सामने वाला भौंचक्का तुम्हें घूरता देखता रह जाए जैसे कि तुम किसी पागलखाने से भाग आए हो। प्रत्युत्तर में उसका हंसना कतई जरूरी नहीं है, वह अपनी सहजता में जी रहा है– तुम्हें विक्षिप्त समझ रहा है, भला क्या गलत कर रहा है? वह उसकी समस्या है वह जाने। जहां तक तुम्हारा सवाल है तुम अपनी मस्ती में सरलतापूर्वक हंस रहे हो। इसमें समस्या कहां है? दोनों बातों में तालमेल बिठाना ही क्यों।

लेकिन ऐसी ही परिस्थितियों से बचने के लिए लोगों को सब तरह से प्रशिक्षित-संस्कारित किया गया है– कैसे चलना, उठना-बैठना, कैसे बोलना; क्या कहना, क्या नहीं कहना। स्वभावतः धीरे-धीरे वे बिल्कुल ही कृत्रिम और बनावटी हो गए हैं, मानो किसी नाटक के पात्र हो, रटे-रटाए, संवाद बोलने वाले अभिनेता हों।

एशिया के सबसे बड़े थियोलॉजिकल कॉलेज में घूमने एक दफे मैं गया, जहां से हजारों मिशनरियों को प्रशिक्षित करके पूरब के गरीब मुल्कों में भेजा जाता है, लोगों को ईसाई बनाने के लिए। उस कॉलेज के प्रिंसिपल मेरे मित्र थे, वे मुझे कैंपस में सब तरफ दिखाने ले गए। एक क्लास में तो मैं अपनी आंखों पर भरोसा ही न कर सका। ऐसा गजब का काम वहां चल रहा था कि मैं हतप्रभ रह गया। करीब साठ विद्यार्थियों को, जो कि मिशनरी बनकर बाहर जाने के लिए लगभग तैयार हो ही चुके थे; उन्हें प्रोफेसर सिखा रहा था कि जब वे जीसस क्राइस्ट का कोई वचन दोहराएं तो कौन सी मुद्रा हो, चेहरे पर कैसे हाव-भाव हों, कब मेज पर घूसा मारकर जोर देकर बोला जाए और कब धीमे से फुसफुसा कर कहें कि प्रेम ही परमात्मा है। 'जब तुम स्वर्ग की व्याख्या करो तो सिर्फ गद्यात्मक वर्णन ही न हो, बल्कि शुद्ध काव्य के अंदाज में, शब्द-शब्द में मधुरस घोलकर कहो, आंखें आकाश की ओर उठ जाएं, चेहरे पर चमक दिखाई दे, आभा प्रकट होनी चाहिए।' तभी एक विद्यार्थी ने पूछा 'जब हम नर्क का चित्र खींचें तब क्या करें, चेहरे पर कैसे भाव व्यक्त हों?' प्रोफेसर बोला– 'जहां तक नरक का सवाल है, तुम्हें कुछ विशेष अभिनय नहीं करना होगा, तुम जैसे हो वैसे ही पर्याप्त हो, तुम्हारे चेहरे काफी प्रमाण हैं।' मैंने प्रिंसिपल से कहा– 'इन लोगों में कोई अंतर्भाव नहीं है और उनके ऊपर से हर चीज थोपी जा रही है कि एक विशिष्ट शैली में बोला जाए, हाथों की मुद्राएं बनाई जाएं, चेहरे एवं आंखों से भाव अभिव्यक्त किए जाएं...क्या इसमें आपको निहायत नासमझी नजर नहीं आती?

मैंने कभी कोई ट्रेनिंग नहीं ली, मगर जब जरूरत पड़ती है तो हाथ स्वतः जानते हैं कि

क्या किया जाए, शब्द पहचानते हैं कि किस घड़ी रुकें और मौन को छा जाने दें। आंखें खुद सारे भाव प्रकट कर देतीं हैं। जब कोई अपने स्वयं के अनुभव को बतलाता है तो किसी प्रयास की आवश्यकता नहीं पड़तीं।

बस एक ही बात लोगों को समझाना आवश्यक है कि सहजता से जीयो। जब हंसी आए तो रोकना मत, और आंसू आएं तो उन्हें बह जाने देना। इस जगत में सभी व्यवहार नकली हो गए हैं, क्योंकि झूठ में तुम्हारी श्रद्धा है। मैं कहता हूं अभिनय छोड़ो, सरल हो रहो, जैसे तुम हो ठीक वैसे हीं। सहजता से जो भी कृत्य जन्मे, उसे होने दो, उसकी सुंदरता का आनंद लो। तब एक अनूठा प्रसाद, एक सौंदर्य होगा, स्वाभाविकता होगी, उसमें कुछ सचाई और प्रामाणिकता होगी– नकल नहीं, मिथ्या आचरण नहीं, और यह कितना सरल है...

मैंने सुना है, किसी किसान के पास एक महा–आलसी मुर्गा था, आलस्य–शिरोमणि ही समझो; सुबह सूर्य निकलता तो वह बांग न देता, बल्कि खेत में चुपचाप बैठा इंतजार करता रहता कि कोई दूसरा मुर्गा कुकडु–कूं बोल दे। दूसरे मुर्गे जब बांग दें तो वह सिर्फ सहमति में अपना सिर हिला देता था, बस! लेकिन यही उसके स्वभावानुकूल व्यवहार है तो इसमें भी एक सौंदर्य है। क्या चिंता सूरज की, कोई न कोई तो कुकडुं–कूं कहेगा ही! और न भी कहे तो सूर्योदय रुकने वाला है क्या? मैं स्वयं उस मुर्गे से पूर्णतः सहमत हूं; मैंने भी अपनी जिंदगी में कभी कुछ नहीं किया, यदि किसी ने कुछ कर दिया तो ठीक।

– ओशो फ्रॉम मेडिकेशन टू मेडिटेशन, चैप्टर 21

चुपके–चुपके मैरिज

प्रिये! अगर मैंने तुमसे मैरिज कर ली, तो मेरी नौकरी चली जाएगी–प्रेमी ने प्रेमिका से कहा।

प्रेमिका– नहीं जाएगी। हम अपनी मैरिज की बात गुप्त रखेंगे।

प्रेमी– लेकिन जब बच्चा होगा, तब?

प्रेमिका– तब क्या? हम सिर्फ अपने बच्चे को बता देंगे कि हमने मैरिज की है।

आज मैंने एक जान बचाई, पूछो कैसे?

एक भिखारी से मैंने पूछा– अगर मैं तुम्हें 1000 का नोट दूँ तो क्या करोगे? वो बोला खुशी से मर जाऊँगा! तो मैंने उसे पैसे नहीं दिए...!

स्टूडेंट्स की बात

चिंटू– वो कौन सी बात है जो हजारों साल पहले भी स्टूडेंट्स कहते थे, आज भी कहते हैं और कयामत तक कहते रहेंगे?

बिट्टू– बस! कल से पढ़ाई शुरू।

पॉकेट भारी

चंदूलाल– अपनी पॉकेट में चार–पाँच पत्थर लेकर घूम रहा था।

मुल्ला ने पूछा– तुमने अपनी पॉकेट में पत्थर क्यों रखे हुए हैं?

चंदूलाल– क्या तुम्हें नहीं पता, यहाँ जिसका पॉकेट भारी होती है उसी की चलती है।

बेटे का ग्रेट सरप्राइज

डैडी एक साल बाद विदेश के व्यापारिक काम से लौटकर घर आते हैं।

डैडी (पुत्र से बोले)– बेटा, तुम्हारी मॉम कहाँ है?

पुत्र– डैडी! वह तो पिछले महीने ही मर गई।

डैडी– तो तुमने मुझे बताया क्यों नहीं? फोन नहीं किया?

पुत्र– मैंने सोचा जब आप आओगे तो सरप्राइज दूँगा।

पिता–पुत्र और माँ

माँ (बच्चे से)– सारा दिन घूमते रहते हो। परीक्षाएँ आने वाली हैं, अब तो पढ़ाई कर लो।

(बच्चा गुस्सा होकर घर के बाहर आकर बैठ जाता है।)

बाहर से आए डैडी (बच्चे से)– क्या हुआ तुम्हें?

बेटा– डैडी जी...! अब मेरा आपकी पत्नी के साथ गुजारा नहीं हो सकता। मुझे मेरी पत्नी चाहिए।

डरने की क्या बात

रात को कब्रिस्तान में एक आदमी कब्र के ऊपर बैठा हुआ था। इतने में एक मुसाफिर उधर से गुजरा और पूछा इतनी रात को कब्रिस्तान में बैठे हो, तुम्हें डर नहीं लगता?

आदमी बोला, इसमें डरने की क्या बात है। कब्र के अंदर गरमी हो रही थी इसलिए थोड़ी देर के लिए बाहर आ गया।

प्रेमी का प्रेम संदेश

एक प्रेमी, कबूतर के पैर में संदेश बाँधकर अपनी प्रेमिका के पास भेजा करता था। एक दिन उसने बिना संदेश के ही कबूतर भेज दिया। मिलने पर प्रेमिका ने पूछा, तुमने कोई संदेश

क्यों नहीं भेजा? प्रेमी ने जवाब दिया– मैंने मिस कॉल किया था।

पहलवान बॉयफ्रेंड

चंदूलाल– तुम्हारा एक्सीडेंट हुआ क्या?

मुल्ला– हाँ भाई...! एक युवती से टकरा गया था।

चंदूलाल– तो क्या युवती से टकराने भर से हाथ टूट गया?

मुल्ला– नहीं भाई...! ये तो उसके पहलवान बॉयफ्रेंड ने तोड़ा है!

मिस कॉल

चंदूलाल (अपनी टीचर से)– मिस, क्या आपने मेरे मोबाइल पर फोन किया था?

टीचर– मैंने! नहीं तो, पर क्यों?

चंदूलाल– कल मैंने अपने मोबाइल को देखा तो स्क्रीन पर लिखा था, मिस कॉल।

डॉगी का चीखना

चंदूलाल– तुम्हारा डॉगी पूरी रात ऊँचे–ऊँचे चीखता रहा!

मुल्ला– यह तो अच्छा नहीं है...! किसी की मौत का संकेत है पर पता नहीं किसकी?

चंदूलाल– तुम्हारी! ... अगर आज रात भी वह चीखा तो समझ लो।

बहुत आसान

बेटा– क्या आप ऐसी कोई महान हस्ती बता सकते हो, जो आज से पचास वर्ष पहले नहीं थीं?

डैडी– बहुत आसान है! 'मैं... खुद!

मैरिज

गुलाबोरानी– शादी से पहले मैं तुम्हें बहुत बहादुर समझती थी।

चंदूलाल– तुमसे मैरिज करना क्या बहादुरी का काम नहीं है?

चंदूलाल– मारे गए मेरा पर्स घर पर ही छूट गया!

नरेश– अरे तुम तो कहते थे तुम्हारा नौकर बड़ा ईमानदार है?

चंदूलाल– तभी तो! वो मेरा पर्स उठाकर मेरी वाइफ को पकड़ा देगा!

खड्ड में गिरे चलो

एक नेताजी व्याख्यान दे रहे थे, बड़े जोश–खरोश में थे। सो बिना आगे देखे बोलते गए और जोश में थे सो चलते भी गए। कह रहे थेः तुम अमर बढ़े चलो! तुम अजर बढ़े चलो! आन पर चढ़े चलो! और गड़ाप से मंच के नीचे चले गए।

मुल्ला नसरुद्दीन भीड़ में था, खड़ा हो गया और कहा, खड्ड में गिरे चलो!

ढब्बूजी और केक

एक दिन ढब्बूजी केक खरीदने के लिए बाजार गए। मुश्किल से उन्होंने एक केक पसंद किया। बेकरी का कर्मचारी बोला, हां तो ढब्बूजी, आप केक कटा हुआ चाहेंगे या पूरा?

कटा हुआ– ढब्बूजी ने कहा।

कर्मचारी– कितने टुकड़े करूं, चार या आठ?

ढब्बूजी– चार ही करो जी, मुझे ज्यादा खाने की आदत नहीं है। आठ टुकड़े खाना जरा मुश्किल होता है!

द्वंद्व शब्द की व्याख्या

हिन्दी अध्यापिका ने द्वंद्व शब्द की व्याख्या समझाते हुए कहा– द्वंद्व, ऐसे जोड़े को कहते हैं, जिसमें हमेशा विरोध रहता है। जैसे सुख–दुख, सर्दी–गर्मी, और धूप–छांव आदि–आदि। अब तुममें से क्या कोई छात्र इसका उदाहरण दे सकता है?

फजलू नामक एक छात्र तपाक से बोला– मैडम, जैसे पति–पत्नी।

अजनबी को भला क्या मतलब

राह चलते एक व्यक्ति की पीठ पर जोर से धौल जमाते हुए ढब्बूजी बोले, अरे मेरे प्यारे दोस्त चंदूलाल! कैसे हो?

उफ्फ! मैं...मैं...मैं...चंदूलाल नहीं हूं जनाब– वह व्यक्ति कराहकर पलटा और आंखें फाड़–फाड़कर देखते हुआ बोला, अगर होता भी तो इतने जोर से कोई प्यारे दोस्त को मारता है!

मैं अपने प्यारे दोस्त चंदूलाल को कितने भी जोर से मारूं, तुम जैसे अजनबी को भला क्या मतलब? – ढब्बूजी ने तैश में आकर एक धौल और जमाते हुए कहा।

पूरा जीवन एक हंसी बन जाए

चीन में तीन फकीर हुए।
उन्हें तो लोग कहते ही थे– लॉफिंग सेंट्स।
वे हंसते हुए फकीर थे। वे बड़े अद्भुत थे।
क्योंकि हंसते हुए फकीर! ऐसा होता ही नहीं है,
रोते हुए ही फकीर होते हैं।

वे गांव–गांव जाते। अजीब था उनका संदेश। वे चौराहों पर खड़े हो जाते और हंसना शुरू कर देते। एक हंसता, दूसरा हंसता, तीसरा हंसता और उनकी हंसी एक–दूसरे की हंसी को बढ़ाती चली जाती। भीड़ इकट्ठी हो जाती और भीड़ भी हंसती और सारे गांव में हंसी की लहरें गूंज जातीं।

लोग उनसे पूछते, तुम्हारा संदेश, तो वे कहते कि तुम हंसो। इस भांति जीयो कि तुम हंस सको। इस भांति जीयो कि दूसरे हंस सकें। इस भांति जीयो कि तुम्हारा पूरा जीवन एक हंसी का फव्वारा हो जाये। इतना ही हमारा संदेश है, और वह हंसकर हमने कह दिया। अब हम दूसरे गांव जाते हैं। हंसो कि तुम्हारा पूरा जीवन एक हंसी बन जाये। इस भांति जीयो कि सारी जिंदगी एक हंसी के खिलते हुए फूलों की कतार हो जाये।

हंसते हुए आदमी ने कभी पाप किया है? बहुत मुश्किल है कि हंसते हुए आदमी ने किसी की हत्या की हो, कि हंसते हुए आदमी ने किसी को भद्दी गाली दी हो, कि हंसते हुए आदमी ने कोई अनाचार, कोई व्यभिचार किया हो। हंसते हुए आदमी और हंसते हुए क्षण में पाप असंभव है। सारे पाप के लिए पीछे उदासी, दुख, अंधेरा, बोझ, भारीपन, क्रोध, घृणा– यह सब चाहिए। अगर एक बार हम हंसती हुई मनुष्यता को पैदा कर सकें तो दुनिया के नब्बे प्रतिशत पाप तत्क्षण गिर जाएंगे। जिन लोगों ने पृथ्वी को उदास किया है, उन लोगों ने पृथ्वी को पापों से भर दिया है। वे तीनों फकीर गांव–गांव घूमते रहे, उनके पहुंचने से सारे गांव की हवा बदल जाती। वे जहां बैठ जाते वहां की हवा बदल जाती।

फिर वे तीनों बूढ़े हो गये। फिर उनमें से एक मर गया। जिस गांव में उसकी मृत्यु हुई, गांव के लोगों ने सोचा कि आज तो वे जरूर दुखी हो गये होंगे, आज तो वे जरूर परेशान हो गये होंगे। सुबह से ही लोग उनके झोपड़े पर इकट्ठे हो गये। लेकिन वे देखकर हैरान हुए कि वह फकीर जो मर गया था, उसके मरे हुए ओंठ भी मुस्कुरा रहे थे। और वे दोनों उसके पास बैठकर इतना हंस रहे थे, तो लोगों ने पूछा, यह तुम क्या कर रहे हो? वे कहने लगे, उसकी मृत्यु ने तो सारी जिंदगी को हंसी बना दिया, जस्ट ए जोक। आदमी मर जाता है, जिंदगी एक जोक हो गयी है, एक मजाक हो गयी है। हम समझते थे कि जीना है सदा, आज पता चला कि बात गड़बड़ है। यह एक तो हममें से खत्म हुआ, कल

हम खत्म हो जाने वाले हैं। तो जिन्होंने सोचा है कि जीना है सदा, वे ही गंभीर हो सकते हैं। यह गंभीर रहने का कोई कारण न रहा। बात हो गयी सपने की। एक सपना टूट गया। इस मित्र ने जाकर एक सपना तोड़ दिया।

अब हम हंस रहे हैं, पूरी जिंदगी पर हंस रहे हैं अपनी, कि क्या-क्या सोचते थे जिंदगी के लिए और मामला आखिर में यह हो जाता है कि आदमी खत्म हो जाता है। एक बबूला टूट गया, एक फूल गिरा और बिखर गया। और फिर अगर हम आज न हंसेंगे, तो कब हंसेंगे? जबकि सारी जिंदगी मौत बन गयी और अगर हम न हंसेंगे तो वह जो मर गया साथी, वह क्या सोचेगा? कि अरे! जब जरूरत आयी हंसने की तब धोखा दे गये। जिंदगी में हंसना तो आसान है, जो मौत में भी हंस सके- वे लोग कहने लगे- वहीं साधु है।

फिर वे उसकी लाश को लेकर मरघट की तरफ चले। गांव के लोग तो उदास हैं लेकिन वे दोनों हंसे चले जाते हैं। और रास्ते में उन्होंने कहा, कि जो उदास हैं वे लौट जायें, क्योंकि उसकी आत्मा तो बड़ी दुखी होगी कि जिंदगी भर जो आदमी हंसा, लोग इतना भी धन्यवाद नहीं देते कि उसकी कब्र पर कम से कम हंसकर विदा दे जायें। लेकिन लोग कैसे हंसते? हंसने की तो आदत न थी और फिर मौत के सामने कौन हंसेगा? मौत के सामने वही हंस सकता है जिसे मौत से ऊपर की किसी चीज का पता चल गया हो। मौत के सामने कौन हंस सकता है? मौत के सामने मरने वाला कैसे हंस सकता है। मौत के सामने वहीं हंस सकता है जिसे अमृत का बोध हो गया। वे गांव के लोग कैसे हंसते, मौत ने तो उदासी फैला दी। हम भी जब मौत में उदास हो जाते हैं तो इसलिए नहीं कि कोई मर गया है, बल्कि इसलिए कि अपने मरने की खबर आ गयी। वह जो मौत की उदासी है वह हमारे प्राणों को डरा जाती है, भयभीत कर जाती है। नहीं, पर वे दो फकीर हंसते ही चले गये।

फिर लाश चढ़ा दी गयी अर्थी पर और लोग कहने लगे, जैसा रिवाज था, कि कपड़े बदलो, स्नान करवाओ। उन्होंने कहा कि नहीं, वह हमारा मित्र कह गया है कि कपड़े मेरे बदलना मत, स्नान मुझे करवाना मत। ऐसे ही जैसा मैं हूं चढ़ा देना, तो उसकी बात तो पूरी रखनी पड़ेगी। उसको चढ़ा दिया। और फिर थोड़ी ही देर में उस भीड़ में हंसी छूटने लगी, क्योंकि वह आदमी जो मर गया था अपने कपड़ों में पटाखें, फूलझड़ी छिपाकर मर गया था।

उसकी लाश चढ़ गयी है अर्थी पर और पटाखें, फूलझड़ियां छूटनी शुरू हो गयी हैं। कपड़ों में अंदर उसने सब छिपा रखा है। धीरे-धीरे वह भीड़ जो वहां इकट्ठी थी, वह हंसने लगी। और कहने लगी, कैसा आदमी था, जिंदगी भर हंसाता था और मर गया है अब, अब है भी नहीं, फिर भी इंतजाम कर गया है कि तुम अंतिम क्षण में भी हंसना।

– ओशो, साधना पथ, प्रवचन 29

हास्य के क्षणों में विचार रुक जाते हैं

चुटकुले का उद्देश्य चुटकुला ही नहीं है। इससे पैदा होने वाला हास्य है क्योंकि हास्य के उन क्षणों में तुम्हारे विचार रुक जाते हैं। उस हंसी में, मन नहीं रह जाता और हंसी के बाद एक छोटा सा अन्तराल...और मेरी बात तुम्हारे गहनतम केन्द्र तक प्रवेश कर जाती है।

– ओशो

स्वास्थ्यप्रद प्रफुल्लता

प्रफुल्लता स्वास्थ्य का लक्षण है। प्रफुल्लित होओ और धीरे–धीरे जैसे–जैसे तुम्हारे जीवन में हंसी की किरणें फैलेगी, चकित होओगे कि कितना हंसने को है। खुद के जीवन में हंसने को है, औरों के जीवन में हंसने को है। चारों तरफ हंसने ही हंसने की घटनाएं हैं। वह तो हम देखते नहीं, कंजूस है, कि कहीं हंसना न पड़े। तो हमने देखना ही बंद कर दिया है। नहीं तो चारों तरफ प्रतिपल क्या–क्या नहीं घट रहा है। हर चीज हंसने की है।

हंसी और स्वास्थ्य

जब हम हंसते हैं तो हमारे शरीर में क्या प्रतिक्रिया होती है –आईए इसे जाने।

हंसते समय हमारा मुंह खुलता है, चेहरे की मांसपेशियां का व्यायाम होता है।

सदैव हंसते रहने से चेहरे की मांसपेशियां मजबूत होती हैं, उनपर झुर्रियां नहीं पड़ती। चेहरे पर चमक आती है।

हंसते समय अधिक वायु फेफड़ों में जाकर फेफड़ों को स्वस्थ बनाती है और हम शक्ति से फेफड़ों में उपस्थित कार्बन डायआक्सायड को बाहर फैंकते हैं। इससे रक्त की शुद्धिकरण तेज़ी से होती है और शुद्ध रक्त बड़ी तेजी से हृदय की रक्तवाहिनियों और मस्तिष्क भी रक्तवाहिनियों में जाता है, रक्त वाहिनियों के अवरोध दूर होते हैं, उसमें शलेस्मा (Cholesterol) नहीं जमता और रक्तवाहिनियां लचीली बनी रहती हैं।

इसीलिए हंसने–हंसाने से हृदय रोग की संभावना बहुत कम हो जाती है, रक्तचाप सामान्य रहता है और निद्रा की शिकायत नहीं रहती है।

हंसना सम्पूर्ण व्यायाम है

जब हम खिलखिलाकर हंसते है. तो फेफड़ों के अतिरिक्त हृदय की मांसपेशियां भी सबल बनती हैं। साथ ही हृदय और पेट के बीच में स्थित डायफ्राम की भी गति बढ़ती है और पेट की गति भी बढ़ती है। अतः हृदय डाफ्राम और पेट के सभी अंगों की आंतरिक मालिश हो जाती है और वे सभी अंग अपना कार्य सुचारु रूप से करते हैं – पाचन शक्ति मजबूत होती है, यकृत ठीक से काम करता है। इन सभी अंगों का प्राकृतिक तरीके से व्यायाम हो जाता है। जब हम खुलकर हंसते हैं तो हमारे शरीर में कम्पन होता है। जिस प्रकार जोगिंग

(Jogging) करने से हमारे शरीर के बाहरी अंगों का व्यायाम होता है, उसी तरह हंसने से शरीर के आन्तरिक अंगों की मालिश होती है। डायफ्राम के तेजी से फैलने सिकुड़ने से पेट के सभी अंग, फेफड़े हृदय, त्वचा भी बार–बार खुलती सिकुड़ती है जो मालिश का काम करती है।

जब हम समूह में मिलकर हाथों को ऊपर उठाते हुए बार–बार हंसते है तो भुजाओं, कन्धों, पीठ की मांसपेशिया का भी व्यायाम हो जाता है। अतः हंसना एक सम्पूर्ण व्यायाम है। यदि आप 10 मिनट के लिए मिलकर खुली हवा में हंस लेते हैं तो आपको किसी और व्यायाम की आवश्यकता नहीं रहती। हंसने से हारमोन पैदा होते हैं जो दर्द निवारण का कार्य करते हैं। हंसने से मन की पीड़ा और शरीर की पीड़ा भी समाप्त होती है – हम अवसाद – डिप्रेशन से बच जाते है।

नींद खुलते ही

हंसना शुरू कर दो, आंखें बाद में खोलो, इससे पूरी दिनचर्या प्रभावित होगी।
भोर के साथ ही हंस लिए तो फिर सारे दिन हंसी आती रहेगी।
एक शृंखला बन जाएगी– कड़ी से कड़ी जुड़ती चली जाएगी।

दो बहनें

चंदूलाल– मुल्ला, अगर तुम्हारी प्रेमिका को भूतनी लिपट जाए तो तुम क्या करोगे?

मुल्ला– उसमें मुझे क्या करना है, यह दोनों बहनों का आपसी मामला है, खुद ही निपटा लेंगी।

वकील और सुंदर युवती

एक वकील अपनी पत्नी के साथ गार्डन में घूम रहा था तभी एक सुंदर युवती वहाँ से गुजरी और हँसकर वकील का अभिवादन किया। पत्नी ने वकील से पूछा– 'उस युवती को तुम कैसे जानते हो? ' वकील ने अपना बचाव करते हुए कहा– 'एक बार पेशे के सिलसिले में उससे मुलाकात हुई थी।' 'अपने पेशे या उसके पेशे के सिलसिले में?' वकील की पत्नी चिल्लाई।

अभी–अभी

प्रेमी– 'डॉर्लिंग! यह सच है न कि एक बार देखा हुआ चेहरा तुम कभी नहीं भूलतीं?'

प्रेमिका– हाँ...! मगर क्यों?'

प्रेमी– वह दरअसल तुम्हारे ड्रेसिंग टेबल का महँगा आईना अभी–अभी मुझसे टूट गया है और नए आईने की जुगाड़ होने तक तुम्हें अपनी याददाश्त से ही काम चलाना पड़ेगा।

नई–नई शादी

पति–पत्नी हनीमून मना रहे थे। कुछ दिनों बाद पत्नी ने जरा ऊँघते हुए कहा– 'हम लोग जरूरत से अधिक हरकतें करते हैं। बिना बताए ही लोगों को मालूम हो जाता है कि हमारी नई–नई शादी हुई है।

'तो? ' पति ने उसकी ओर देखा।

'मैं चाहती हूँ कि लोगों का व्यवहार ऐसा हो, जिससे लगे कि हमारी शादी को अनेक वर्ष गुजर चुके हैं।'

पति ने जरा सोचकर कहा– 'मैं इस समय जो सूटकेस उठाए हुए हूँ, क्या तुम उसे उठा लोगी और होटल की सारी सीढ़ियाँ भी चढ़ जाओगी?'

चंदूलाल का डेटिंग टाइम

चंदूलाल अहमदाबाद में एक बार अपनी गुजराती प्रेमिका के साथ डेट पर गया। बातचीत के दौरान चंदूलाल ने प्रेमिका के कान में कहा– डार्लिंग, मेरे कान में कुछ हल्का–सा, कुछ नर्म और नमकीन–सा, कुछ खट्टा–मीठा कहो ना प्लीज। प्रेमिका ने टाइम वेस्ट किए बिना कहा– ढोकला!

पति–पत्नी का झगड़ा

झगड़े के बीच पति बोला– 'शादी के बाद पहले साल तुम मुझे चंद्रमुखी लगीं, दूसरे साल सूरजमुखी और अब तो एकदम ज्वालामुखी नजर आती हो।'

पत्नी तपाक से बोली– 'और तुम पहले साल मुझे प्राणनाथ नजर आए, दूसरे साल सिर्फ नाथ नजर आए और अब तो एकदम अनाथ लगते हो। समझे?'

ले ली जान

पतिदेव बेहद दुबले थे। पत्नीदेवी जरूरत से ज्यादा मोटी थीं। एक रात जब दोनों सो रहे थे पत्नी ने करवट बदली और एक पैर पति के पैर पर रख दिया। पति की तो जान ही निकल गई। उसने पत्नी को जगाकर कहा– 'जूही! घुट– घुटकर मरना अच्छा है? या अचानक मरना? '

पत्नी ने कहा– 'अचानक मरना अच्छा है।'

पति ने प्रार्थना की– 'तो ऐसा करो, अपना दूसरा पैर भी मेरे ऊपर रख दो।'

धीमा जहर!

एक महिला ने फोटोग्राफर से कहा– 'मुझे हीरे–माणक के जड़ाऊ गहने पहने हुए फोटो खिंचवाना है।' फोटोग्राफर ने कहा– 'परंतु मैडम, आपने तो वैसे गहने पहने नहीं हैं, फिर वैसा फोटो किसलिए? ' महिला ने कहा– 'किराए से ले आओ। ताकि यदि मेरे पति ने मुझे छोड़कर दूसरा विवाह किया, तो उनकी दूसरी पत्नी मेरे फोटो में इतने गहने देखकर जलेगी और मेरे पति को गहने के लिए निरंतर सताती रहेगी।'

चंदूलाल और गर्लफ्रेंड

चंदूलाल गर्लफ्रेंड के साथ जुहू बीच पर बैठा था। दोनों आँखों में आँखें डाले हुए थे। तभी गर्लफ्रेंड ने पूछा– चंदूलाल...! शादी के बाद क्या तुम मुझे रिंग दोगे। चंदूलाल– शादी के बाद की क्या बात है, मैं तो तुम्हें अभी रिंग दे सकता हूँ। बस अपना मोबाइल नंबर बता दो।

शादीशुदा

एक बार मुल्ला नसरुद्दीन अपनी बीवी के साथ होटल में गया तभी एक सुंदर महिला ने मुस्कुराकर नसरुद्दीन से हैलो किया।

बीवी आग बबूला होकर बोली– कौन थी वो चुड़ैल?

नसरुद्दीन– बेगम, तुम मेरा दिमाग खराब मत करो। मैं पहले ही परेशान हूं क्योंकि वो भी यही सवाल तुम्हारे बारे में पूछेगी। वह बेचारी मासूम औरत नहीं जानती कि मैं शादीशुदा हूं।

विषादग्रस्त पति– मैं तुम्हारे संग एक दिन भी नहीं जी सकता। अभी साड़ी का फंदा बनाकर फांसी लगा लूंगा।

पत्नी– अजी क्या गजब करते हो, मेरी नई साड़ी है पांच हजार की!

एडवांस पनिशमेंट

एक समाज सुधारक संत ने एक आदमी को थप्पड़ मार दिया।

आदमी ने पूछाः महाराज, मैंने क्या गलती की?

संत ने समझायाः वत्स, तुम गलती करो, उसके लिए हम इंतज़ार थोड़ी करेंगे! गलती करने के बाद दंड देने से क्या फायदा? हम तो एडवांस पनिशमेंट देकर पाप की संभावना रोकने का प्रयास कर रहे हैं।

किसके लिए?

ग्राहकः एक लेडीज़ घड़ी दिखाइए।

दुकानदारः बीवी के लिए चाहिए या ब्रांडेड दिखाऊँ?

कितनी पी ली?

संताः हर एक पैग के बाद अपनी जेब में क्या देखते हो?

बंताः बीवी की फोटो है यार। जब सुन्दर लगने लगती है तो इसका मतलब... दारू काफी चढ़ चुकी है और घर जाने का वक्त हो गया है!

खुशी के मारे

संताः तुम्हारे होंठ क्यूँ जले हुए हैं?

बंताः उफ क्या बताऊं यार, बीवी को मायके जाने के लिए स्टेशन छोडने गया था, खुशी के मारे रेल के इंजन को चूम लिया!

उनके लिए नहीं, आपके लिए

डाक्टर : आपके पति को ज्यादा रेस्ट की जरूरत है, ये स्लीपिंग टेबलेट्स लिजिए।

पत्नी : उनको ये कब देना है डाक्टर साहब?

डाक्टर : ये उनके लिए नहीं, आपके लिए है।

एक सेकेण्ड में

पत्नी : सुनो जी मेरे साथ तुम्हारे दस साल कैसे बीते?

पति : एक सेकेण्ड की तरह।

पत्नी : अगर मैं तुमसे दस हजार रू. मांगू तो कैसा लगेगा?

पति : चवन्नी की तरह।

पत्नी : जरा दस हजार रू, तो देना।

पति : अभी देता हूं एक सेकेण्ड में।

बीबी और घड़ी

एक आदमी दूसरे आदमी से बोला : बीबी और घड़ी में क्या फर्क है?

दूसरा आदमी बोला : एक बिगड़ती है तो बंद हो जाती है, दूसरी बिगड़ती है तो शुरू हो जाती है।

बहुत आसानी से

'जब मैं रेगिस्तान में था तब मैंने खूंखार लुटेरों की पूरी फौज को भागने पर मजबूर कर दिया था'– मुल्ला ने चायघर में लोगों को बताया।

'वह कैसे मुल्ला? '– लोगों ने हैरत से पूछा।

'बहुत आसानी से'– मुल्ला बोला– 'मैं उन्हें देखते ही भाग लिया और वे मेरे पीछे दौड़ पड़े।'

एक गधे के बोलने पर यकीन

एक दिन मुल्ला का एक दोस्त उससे एक–दो दिन के लिए मुल्ला का गधा मांगने के लिए आया। मुल्ला अपने दोस्त को बेहतर जानता था और उसे गधा नहीं देना चाहता था। मुल्ला ने अपने दोस्त से यह बहाना बनाया कि उसका गधा कोई और मांगकर ले गया है। ठीक उसी समय घर के पिछवाड़े में बंधा हुआ मुल्ला का गधा रेंकने लगा।

गधे के रेंकने की आवाज़ सुनकर दोस्त ने मुल्ला पर झूठ बोलने की तोहमत लगा दी। मुल्ला ने दोस्त से कहा– 'मैं तुमसे बात नहीं करना चाहता क्योंकि तुम्हें मेरे से ज्यादा एक गधे के बोलने पर यकीन है।'

दूसरा सवाल क्या है

एक बार मुल्ला को लगा कि लोग मुफ्त में उससे नसीहतें लेकर चले जाते हैं इसलिए उसने अपने घर के सामने इश्तेहार लगायाः 'सवालों के जवाब पाइए। किसी भी तरह के दो सवालों के जवाब सिर्फ 100 दीनार में।'

एक आदमी मुल्ला के पास अपनी तकलीफ का हल ढूँढने के लिए आया और उसने मुल्ला के हाथ में 100 दीनार थमाकर पूछा– 'दो सवालों के जवाब के लिए 100 दीनार ज्यादा नहीं हैं? '

'नहीं'– मुल्ला ने कहा– 'आपका दूसरा सवाल क्या है? '

दूध और पानी

गाँव के एक सरपंच ने वाटर सप्लाई के अफसर से शिकायत की कि, हमारे गाँव में कई दिनो से पानी नहीं आ रहा है, जिसकी वजह से गाँव के लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पडता है।

अफसर : देखो सरपंच साहब, मैं आप की बात बिल्कुल नहीं मान सकता कि आपके गांव में पानी नहीं आ रहा है।

सरपंच–क्यों नहीं मान सकते?

अफसर–क्योकि आप के गांव का दूध वाला मुझे हर रोज पानी मिला दूध दे कर जाता है।

जैसे को तैसा

चोर–बन्दूक तानते हुए –जिन्दगी चाहते हो तो अपना पर्स मेरे हवाले कर दो।

व्यक्ति–यह लो।

चोर–कितने मुर्ख हो तुम, मेरी बंदूक में तो गोली ही नहीं थी। हा हा हा।

व्यक्ति–और मेरे पर्स में भी कहां रुपये थे। हो हो हो।

पुण्य का काम

एक लडका साइकिल पर बड़ी तेजी से जा रहा था कि एक बूढे से टक्कर हो गयी तथा दोनों गिर पड़े। बूढ़ा फोरन उठा और लड़के को एक रुपये देते हुए कहा, लो बेटा! अंधो को भीख देना बड़े पुण्य का काम है।

वी. आई. पी.

क्या बात है पापा! आप हर नए साल बड़े–बड़े नेताओं को और अधिकारियों को ग्रिटिंग कार्ड भेजते हैं, जबकि वे लोग आप को जानते तक नहीं? दस साल के बेटे ने पूछा।

अरे तू नहीं समझेगा बिटवा! मुझे जब इन कार्डो के जवाब में उन लोगो के धन्यवाद पत्र आते आते है तो मैं भी उस समय अपने आप को वी. आई. पी. समझने लगता हूं। पिता ने मुस्कुराते हुए रहस्यमयी आवाज में बेटे को पते की बात बताई।

खिडकी के शीशे

बेटा– क्या बताऊं पापा, सामने वाले मकान में एक लडकी हर रोज खिडकी में से रुमाल हिलाती है पर खिडकी का शीशा कभी नहीं खोलती।

पिता–बहको मत बेटे, वह तुझे देख कर रुमाल नहीं हिलाती। दरअसल वह इस मकान की नौकरानी है जो रोज खिडकी के शीशे साफ करती है।

हम जिम्मेदार नहीं हैं

मैनेजर साहब! अब तो मेरी पगार बढ़ा दीजिए क्योंकि मेरी शादी हो गई है। कर्मचारी ने निवेदन किया।

नहीं, मिल के बाहर होने वाली किसी भी दुर्घटना के लिए हम जिम्मेदार नहीं है, मैनेजर

ने मुसकुराकर जवाब दिया।

हमारे होटल की नहीं है

बैरा, इधर आओ! ग्राहक चिल्लाया। बैरा सहमता हुआ ग्राहक के पास आ खडा हुआ।

देखो चाय के प्याले में मक्खी पडी हुई है! बैरे ने तर्जनी उंगली से मक्खी प्याले से निकाली और बहुत गौर से देखने लगा। फिर बडी गंभीरता से उत्तर दिया-

हमारे होटल की नहीं है।

तूफ़ान तेजी पर था। बड़ी हवेली की खिड़कियां जोर–जोर से खड़खड़ा रही थीं। एक बूड़ा नौकर मेहमान को शयनकक्ष की तरफ ले जा रहा था। रहस्यमय और भयानक वातावर्ण से डरे हुए मेहमान ने बूड़े नौकर से पूछा, क्या इस कमरे में कोई अप्रत्याशित घटना घटी है?

चालीस साल से तो नहीं। नौकर ने जवाब दिया।

आशवस्त होते हुए मेहमान ने पूछा, चालीस साल पहले क्या हुआ था? बूड़े नौकर के आखों में चमक पैदा हुई और वह फुसफुसाते हुए बोला,

एक आदमी सारी रात इस कमरे में ठहरा था और सुबह बिल्कुल ठीक–ठाक उठा था।

मजदूर–मालिक से–गधे की तरह काम कराया और मजदूरी सिर्फ बीस रुपया कुछ तो न्याय कीजिए।

मालिक–मुनीम से–ठीक है यह न्याय मांगता है तो इसके सामने घास डाल दो और रुपये ले लो।

मुझे यह कार खरीदे दो साल से ज्यादा हो चले हैं, लेकिन आपको यह जान कर हैरत होगी कि अभी तक इस की सर्विसिंग और मरम्मत का मैंने एक भी पैसा नहीं दिया है।

जी नही, बिल्कुल हैरत नहीं हुई।

क्यों?

क्योंकि मुझे सर्विस स्टेशन के मालिक ने पहले ही बता दिया था कि आपने दो साल से उसके बिलों का भुगतान नहीं किया है।

फौज के एक सिपाही ने बड़े अरमान से अपनी पत्नी के नाम व पत्ते के लेटरपैड छपवाए ताकि वह जब उसे पत्र भेजे तो उन छपे हुए खूबसूरत कागजों पर ही भेजे। जब लेटरपैड छप

कर आ गए तो अपने एक साथी को दिखाते हुए उसने पूछा, कहो कैसे छपे हैं?

साथी बोला, छपे तो अच्छे हैं लेकिन साथ ही इन पर संबोधन की जगह अपना नाम भी छपवा लेते तो बेहतर था।

वह क्यों?

इसलिए कि इन कागजों पर किसी और को पत्र न लिखा जा सके।

एक व्यक्ति की अपने तोते से तबियत भर गई। उसने उसे निलाम किया। बोली 100 रुपये पर छूटी।

खरीददार मुस्करा कर कहने लगा, खैर, ले लेता हूं लेकिन इतना बता दें कि यह बोलेगा भी?

अजी, यही तो आपके खिलाफ बोली बढ़ा रहा था।

हंसी पूरी दुनिया के हर समाज में सदियों से सर्वाधिक दबाई गई है। समाज तुम्हें गंभीर बनाना चाहता है। मां–बाप अपने बच्चों को गंभीर बनाना चाहते हैं, शिक्षक अपने छात्रों को गंभीर बनाना चाहते हैं, अधिकारी अपने कर्मचारियों को गंभीर बनाना चाहता है, सेनापति अपने फौजियों को गंभीर बनाना चाहता है। गंभीरता सभी की जरूरत है।

हंसी खतरनाक व विद्रोही है। गंभीरता का सम्मान है, आदर है।

स्वाभाविक ही हंसी का दमन करना होगा यद्यपि चारों तरफ जीवन हंसी से भरा है, कोई भी हंस नहीं रहा है। यदि तुम्हारी हंसी जंजीरों से मुक्त हो जाये, बंधनों से मुक्त हो जाये, तुम आश्चर्यचकित होओगे– हर कदम पर हास्य घट रहा है।

जीवन गंभीरता नहीं है।

मात्र कब्रें गंभीर हैं, मौत गंभीर है।

हास्य में महान खूबसूरती है, एक हल्कापन। यह तुम्हें हल्का कर देता है, और यह तुम्हें पंख देगा ताकि तुम उड़ सको।

– ओशो, वियांड एनलाइटेनमेंट

सद्गुरु ओशो सिद्धार्थ जी की 1988 में प्रकाशित किताब 'घर आ गया मैं' से ली गयी 3 कविताएं –

हास्य और व्यंग्य

एक दिन मेरी पत्नी ने, बड़ी अदा से पूछा
कि ए जी सुनते हो, अपनी कविताओं में
हरिनाम की तरह, क्यों मेरा नाम गुनते हो?
मैं प्रसन्न हुआ, कि इतने दिनों में
पत्नी ने मुझसे, कुछ जिज्ञासा तो की
पति में अक्ल की बात सुनने की,
आशा तो की, वरना जो पति बाजार से साड़ी और हरी सब्जियों की खरीदारी
भी ठीक से नहीं कर सकता
उस पर कौन पत्नी, भरोसा कर सकती है
अपने को अर्जुन और
पति को कृष्ण के आसन पर बिठाकर
गीता सुन सकती है!
अतएव मैं पत्नी को इस अदा पर
न्योछावर हुआ और उसके सवाल का जवाब
देने को तत्पर हुआ।
मैंने कहा– हे आर्य पुत्री, हास्य और व्यंग्य
दो मिलते–जुलते प्रदेश हैं
जिनके बीच पत्नी, एक विभाजक रेखा है
जैसे चीन और हिन्दुस्तान के बीच मैकमोहन रेखा है!
अगर अब भी नहीं समझी, तो फिर से समझाता हूं
अपनी उमर को बीस वर्ष पहले ले जाता हूं
तब तुम भी खुश थीं और मैं भी खुश था
जिन्दगी में हास्य ही हास्य था फिर हमारी शादी हुई,
और न जाने कैसी बरबादी हुई कि
तुम मुझ पर मुस्कुराती हो,
और मैं तुम पर मुस्कुराता हूं
अब जिन्दगी में व्यंग्य ही व्यंग्य है

अर्थात् शादी के पहले का
जीवन एक हास्य है,
और उसके बाद का जीवन एक व्यंग्य
बस इतना–सा हो तो है हास्य और व्यंग्य।

इतने राम कहाँ से लाऊँ

घर से आफिस चला ज्यों ही, श्रीमती मुस्काई
समझ गया कोई खास बात है, तभी ये आफत आई।
साली, सरहज, माशूका, मुस्काए बात जमती है
पत्नी की मुस्कान भला, किस पति को प्रिय लगती है?
प्रगट कहा मुझको लगता है, तेरा मुस्काना एक जादू
तेरा एक इशारा हो तो, आसमान के तारे ला दूँ।
बोली पत्नी गैस खतम है, बस तुम एक सिलिंडर ला दो
छुट्टी ले लो आधे दिन, और गेहूं भी थोड़ा पिसवा दो।
बिजली का भी बिल आया है, जा कर पैसे जमा करा दो
सांझ दूध वाला आएगा, बैंक से पैसे भी तुम ला दो।
पत्नी की बोली कितनी मीठी लगती थी हनीमून में
आज उत्तप्त वही लगती है जैसे पानी पड़े चून में
भूवैज्ञानिक होने का, पत्नी से क्या मैं रोना रोता
इससे तो अच्छा था थाने का, मैं कहीं दरोगा होता
पत्नी घर में ताना, बचत न करते फूटी कौड़ी
ऑफिस में जी. एम. धमकाता, बदली कर दूंगा सिंगरौली।
भू का पढ़ विज्ञान, पता क्या था भू पर अपमानित होंगे।
नेता, अभिनेता, विक्रेता, ही जग में सम्मानित होंगे।
उस पर है ये हाल, कि जी. एम. की कुर्सी पर जो भी आता
मुझको अपनी आंख दिखाता, और किसी से नैन लड़ाता
रावण, कुंभकर्ण हों राजा, उस लंका में कौन बचेगा
साख–साख पर उल्लू बैठे, कौन वृक्ष फूलेगा, फलेगा?
हे बजरंगबली बतलाओ, नौकरी अपनी कैसे बचाऊँ?
कुर्सी–कुर्सी रावण शोभित, इतने राम कहाँ से लाऊँ?

घर आ गया मैं

सुबह का भूला, शाम घर आया, पंछी अकेला, दिन ढलते–ढलते।
न शिकवा किसी से, न कोई शिकायत, कि घर आ गया मैं, भटकते–भटकते।
न डर है किसी का, न है खौफ कोई, अमर हो गया मैं, जहर पीते–पीते।
न लेना किसी से, न है मांग कोई, कि खुशियां मिली सब, बिलखते–बिलखते।
न बीते का गम, आए की कोई चिंता, समय में ठहर मैं, गया चलते–चलते।
मान सबका मन में, स्वीकार सबका, संतत्व पाया, लड़ते–झगड़ते।
न घर–बार छोड़ा, न संसार त्यागा, कि या रब मिला सब यहीं रहते रहते।
न सुख कोई आगे, न दुख कोई पीछे, कि 'आनंद' हर क्षण, हुआ जीते–जीते।

यह हास्य व्यंग्य कविता ओशो शैलेन्द्र जी द्वारा लिखी गई है, जो ओशो ने अपने प्रवचन में कही है–

असली चीज से नकली अधिक चलती है!

रोती है बुद्धिमानी, चालाकी हंसती है
मुस्कुराती बेईमानी, ईमानदारी फंसती है
दीप सभी चुक जाते, अंधियारी नहीं मिटती है
सच का खरीददार नहीं, झूठ खूब बिकती है।
जिंदगी का अंत है पर, मौत नहीं मरती है।
पैर थक जाएं मगर, बैसाखी नहीं थकती है।
क्योंकि असली चीज से नकली अधिक चलती है! ...

प्यारे!
सिर पीट रहे हैं असमान के तारे
आजकल उन्हें कोई पूछता नहीं
चमक रहे हैं फिल्मी सितारे!
हजारों किस्मत के मारे तारों को
फिल्म–स्टारों की चमक खलती है।
वास्तविक चंद्रमा की ओर लोग देखते ही नहीं

और चांद–सी सूरत देखने को तबियत मचलती है।
क्योंकि असली चीज से नकली अधिक चलती है! ...

अब परिश्रमी विद्यार्थियों की सुनिए कथा
दशा उनकी देखकर होती है व्यथा।
रात–रात आंखें फोड़ी सारी गर्मी के सीजन
दस–दस दफे किया, पूरे कोर्स का रिवीजन
फिर भी न हुए पास, टूट गई आश
जो मस्ती मारे साल भर, वे ही मार ले गए फर्स्ट–डिवीजन
समझे प्रियजन!
विद्या के अध्ययन से नकल अधिक फलती है।
क्योंकि असली चीज से नकली अधिक चलती है।

जैसा कि बता चुके
चांद से ज्यादा चंद्रमुखियों की कद्र होती है।
राजसिंहासन बना झूठ का आसन, सच्चाई कब्र में सोती है
कच्चे मोती तो सुंदरियों के वक्षों पर शोभित हों
और वैद्यराज के खल में बेचारा पिसता पक्का मोती है
भ्रष्टाचारी–पड़ोसिन के गहनों को देख–देख
ईमानदार हरिशचंद्र की पत्नी भी रोती है
कहती है 'सुनो जी, हमें खाने को तेल नसीब नहीं
और ये अपने कुत्ते के बालों में शुद्ध घी मलती है।'
हाय रे हाय! असली चीज से नकली अधिक चलती है! ...

गांव की महासुन्दरी भी शहर में नहीं फबती है
और शहर की प्रौढ़ भी बच्ची सी लगती है।
पावडर का लेप, माडर्न वेश, चमचमाता फेस,
ओठों पे लिपिस्टिक की लाली, आंखों में काजल की काली
केशों के नकली विग से जवानी नहीं ढलती है।
झड़ जाते असली बाल, विग नहीं झड़ती है
बरखुरदार, असली चीज से नकली अधिक चलती है! ...

आगे सुनिए व्यापारियों के हाल
शुद्धतावादी दुकानदार, हो गए हैं फटेहाल
खूब फल–फूल रहे हैं अशुद्धिकरण के धंधे
शासन, प्रशासन, कानून, संविधान सब हो गए हैं अंधे।
आटे में नमक, सोडे में चूना, गरम मसाले में कचरा भूना
दाम लिया दूना
तो कूड़ामल सिंधी का व्यवसाय बढ़ा दिन–दूना रात–चौगुना।
जीरों में लकड़ी का बुरादा, उच्च विचार जीवन सादा।
मिर्च में घिसी ईंटा शक्कर में पानी सींचा, खूब पैंसा खींचा।
मिस्टर प्योर सिंह जब कहते हैं, तो उनकी आंखों से आंसू बहते हैं।
कि बेकार गए जिंदगी के पचास साल
हम बेवकूफ बेचते रहे असली माल।
सुनो भैया, प्योर तंबाकू, प्योर गुड़, प्योर लैया
हाय, ले डूबी मेरी नैया।
ओरीजिनल है मंहगी, डुप्लीकेट है सस्ती
महंगी कौन लेगा, पागल है क्या बस्ती?
मंहगी से जनाब, सस्ती अधिक खपती है।
हुजूर, असली चीज से नकली अधिक चलती है! ...

होशियार लोग समझते हैं
कि नकली में असली से ताकत होती ज्यादा
तभी तो डालडा खाने वाला फूलता जाता।
जीवित राम जंगल जाते, रामलीला का राम पूजा जाता।
ईसा का गला सूली पर लटकता, ईसाई गले में सूली लटकाता।
आत्मकथा होती सच्ची, व्यंग्य कथा झूठी
इसलिए आटोबायोग्राफी से ज्यादा व्यंग्य पढ़ा जाता।
बेचारे पहलवान रियाज करते रह जाते
नकली मूंछों वाले बन जाते दादा
नेताजी को वोटें कैसे मिलीं? राज है उसका झूठा वादा।

गाने को लोग भूल जाते, पर पैरोडी चलती है।
झूठों के आगे सच्चे की दाल नहीं गलती है।
क्योंकि साहेबान, असली चीज से नकली अधिक चलती है! ...

जरा डॉक्टरी सलाह पर भी गौर फरमाइए
बच्चों को असली दूध मत पिलाइए।
गर लिखा होगा उनके भाग्य में
तो अमूल, लेक्टोजन या बोर्नबिटा मिल जाएगा बाजार में
उसी को घर लेते आइए।
डिब्बों के मिल्क–पाउडर से बच्चों की हैल्थ बनती है
टिन्ड–फुड की आदत बचपने में डलती है।
सिर्फ नासमझों के घर आजकल गाय पलती है।
सुनिये साहब, असली चीज से नकली अधिक चलती है! ...

असली फूल से बेहतर कागज के फूल जीते हैं।
शराब से ज्यादा लोग काकटेल पीते हैं।
क्योकि अर्धनारीश्वर को पूजने वाले हम भारतवासी हैं।
समन्यवादी हैं, आदिकाल से ही मिलालट के आदी हैं।
मेलजोल से रहो– कह गए हमारे दादा–दादी हैं।
अतः 'अपनी' से ज्यादा 'पराई' हमें जंचती है।
पतिव्रता से ज्यादा मिली–जुली भली लगती है।
अजी दूध में कहां वो मजा, हमें तो चाय अच्छी लगती है।
समझो मित्रो, असली चीज से नकली अधिक चलती है! ...
–स्वामी शैलेन्द्र सरवती की यह व्यंग्य रचना सद्गुरु ओशो ने
'सुमिरन मेरा हरि करैं' नामक प्रवचनमाला में सुनाई है।

हास्य की क्षमता स्वयं की ओर इंगित होनी चाहिए– स्वयं पर हंसना बहुत बड़ी बात है और जो स्वयं पर हंस सकता है वह धीरे–धीरे दूसरों के प्रति करुणा और उत्तरदायित्व से भर जाता है। पूरी दुनिया में कोई भी हास्य को इस भांति से नहीं लेता है।' **–ओशो**